तीर्थभारतम्



रहसविहारी द्विवेदी

तीर्थभारतम्

राष्ट्र की एकता, अखण्डता, पारस्परिक सद्भाव, सुख-शांति और भावनात्मक एकता के लिए किये जाने वाले उपायों में भारत राष्ट्र के ऋषियों और मनीषियों ने जो प्रयत्न किये हैं उनमें तीर्थों की स्थापना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। भारतीय कन्या पत्नी बनना तब स्वीकार करती है जब विवाह मंडप में स्थापित देवताओं वहाँ उपस्थित वर और वधू पक्ष के कनिष्ठ और वरिष्ठ सदस्यों, कुलपुरोहितों के समक्ष अग्नि को साक्षी मानकर होने वाले पति से यह प्रतिज्ञा कराती है कि उसे वह अपने साथ वैष्णवी देवी से कन्या कुमारी और जगन्नाथपुरी से द्वारिकापुरी तक स्थित सभी तीर्थों में लेकर जायेगा, तभी वह वामाङ्गी बनेगी। वैसे तो विवाह पद्धति में कन्या के सात वचन हैं जिनमें राष्ट्रभावना, पर्यावरण और सद्भाव आदि का निरूपण है, उसमें प्रथम वचन इस प्रकार है :-

तीर्थव्रतोद्यापनयज्ञदानं मया सह त्वं यदि कान्त! कुर्याः ।
वामाङ्गमायामि तदा त्वदीयं जगाद वाक्यं प्रथमं कुमारी ।।

गृहस्थ होने के पूर्व ऐसी प्रतिज्ञा का विधान भारतराष्ट्र की तीर्थ-व्रत की आस्था को आरेखित करता है। इसीलिए तीर्थों में जाने की ललक प्रत्येक भारतीय गृहस्थ में होती है। तीर्थों में जाने पर वहाँ के इतिहास की जिज्ञासा और समाधान प्राप्त करने से अपने आप सत् पर असत् की विजय राष्ट्रभूमि के प्रति ममत्व, सौहार्द्र, एकता और अखण्डता, राष्ट्र-रक्षा आदि की भावना स्वयं उत्पन्न हो जाती है। सेतुबन्ध रामेश्वर जाने पर कौन ऐसा तीर्थयात्री होगा जिसे यह न ज्ञात हो की एक निर्वासित भारतीय युवक ने यह विशाल सेतु भारत में आतंकवादी राक्षसों को भेजने वाले रावण के देश में घुसकर उसे समूल नष्ट करने के लिए बनाया था। इसी प्रकार सभी तीर्थों से प्रेरणा प्राप्त होती है। अतः इनका महत्त्व स्वतः सिद्ध है इस ग्रंथ में कुछ प्रमुख तीर्थों का परिचय दिया गया है। इसके अध्ययन से तीर्थों में जाने पर उन स्थलों को देखा जा सकेगा और न जाने पर भी वहाँ क्या है इसकी जानकारी प्राप्त होगी। इसी उद्देश्य से इसकी रचना की गई है।

ये न जानन्ति वेदं न रामायणं,
नैव गीतां महाभारतीयां कथाम् ।
कालिदासं न गोस्वामिनो मानसं,
तन्मनोभारतीयं कथं कल्प्यताम् ।।

तीर्थभारतम्

TĪRTHABHĀRATAM



तीर्थभारतम्

(स्वोपज्ञहिन्दीटीकया सहितम्)

प्रणेता सम्पादकश्च

महामहोपाध्याय आचार्य रहसबिहारी द्विवेदी

आचार्याध्यक्षचरः संस्कृतविभागे

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालयस्य जाबालिपुरम् (म.प्र.)

निदेशकचरश्च

अनुसन्धानसंस्थानस्य

सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालये

वाराणसी (उ.प्र.)



प्रकाशकः

वागीश द्विवेदी, समहन, मेजारोड, इलाहाबाद - 212303 (उ.प्र.)

तीर्थभारतम्
TĪRTHABHĀRATAM

By : Prof. Rahas Bihari Dwivedi
Mobile : 09425383962, 0761-2902404

PUBLISHED WITH THE FINANCIAL ASSISTANCE FROM THE RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN, NEW DELHI

पुस्तक प्राप्ति स्थान
1. वागीश द्विवेदी
समहन मेजारोड, इलाहाबाद – 212303 (उ.प्र.)
दूरभाष – 9935660766
2. शिवेश द्विवेदी
615, ग्रीनसिटी, माढ़ोताल, जबलपुर – 482002 (म.प्र.)
दूरभाष – 09826963859, 0761–2902404

प्रथम संस्करण, 500 प्रतियाँ
दिसम्बर, 2009 ई.
मूल्य –......
66/– (छाछठ रूपये मात्र)

टंकण – अंजली कम्प्यूटर्स, सदर जबलपुर (म.प्र.) 0761–4069759

विषय-सूची

प्राक्कथनम्

ज्ञानार्थं किल तीर्थभारतमिदं राष्ट्रस्य भव्यात्मनां
भक्तानामथ तीर्थगन्तुमनसां सामान्यबोधार्थिनाम् ।
जिज्ञासाशमनाय राष्ट्रधरणीं तीर्थास्पदोद्भासितां
प्रस्तोतुं रचितं पठन्तु कृतिनस्तीर्थात्मकं भारतम् ।।1।।

राष्ट्र के भव्य-आत्मा वाले महापुरुषों के ज्ञान के लिए, भक्तों, तीर्थयात्रा करने वालों और सामान्यज्ञान की इच्छावालों की जिज्ञासा की पूर्ति के लिए तथा तीर्थस्थलों से देदीप्यमान स्वराष्ट्र भारत की धरती (के स्वरूप) को प्रस्तुत करने के लिए इस तीर्थ का परिचय देने वाली कृति की रचना की गई है भाग्यशाली लोग इसका अध्ययन करें।

एतत्पद्यमयं विलोक्य रचितं मा सम्भ्रमो जायतां
वक्रोक्तिध्वनिरीत्यलङ्कृतिरसौचित्यावलोके क्वचित् ।
तीर्थानां गतिरेव चात्र घटिता धर्मात्मनां ज्ञप्तये
तीर्थं यान्त्वथवा तदर्थमहितं स्वं ज्ञानमातन्वताम् ।।2।।

इसे पद्यमय देखकर (इसे काव्य मानने) का सम्भ्रम नहीं होना चाहिए, (क्योंकि ऐसा होने पर) वक्रोक्ति, ध्वनि, रीति, अलङ्कार, रस और औचित्य की खोज करने लगेंगे। इसमें तो धर्मात्माओं के अवबोध के लिए केवल तीर्थों की अवस्थिति का वर्णन किया गया है। (इसको पढ़कर) इसके पाठक तीर्थयात्रा करें अथवा तीर्थों के सन्दर्भ में अपने ज्ञान का विस्तार करें।

किं शम्भुर्हि दिगम्बरोऽपि जगतः कल्याणकृन्नो मतः ?
किं तीर्थङ्कर आत्मभक्तमहितो मान्यो न भूषां विना ?
किं वेदा अभिधामयाश्च सततं न क्वापि सम्मानिताः ?
किं भूषारहितोऽपि बोधमहितो नो मन्यते प्रातिभः ।।3।।

क्या भगवान् शिव दिगम्बर होते हुए भी संसार का कल्याण करने वाले नहीं माने जाते ? क्या तीर्थङ्कर (स्वामी महावीर आदि) आभूषण के बिना भी अपने भक्तों में महत्त्वपूर्ण नहीं माने जाते ? क्या अभिधा में लिखे गए वेद कहीं भी निरन्तर सम्मानित नहीं हैं ? क्या वस्त्राभूषण से रहित ज्ञान के कारण श्रेष्ठ प्रतिभाशाली (विद्वान्) सर्वत्र सम्मान नहीं प्राप्त करता ?

कोषव्युत्पत्योः समृद्धिमहिमाऽयं संस्कृताया गिरः
यस्माद्भावसमर्थवाक्यरचना गद्ये च पद्ये समा ।
एवं चोभयथा समग्रविषयग्रन्था विभान्त्युत्तमा
यद्यत्पद्यमयं बुधैर्विरचितं तत्तन्न काव्यं मतम् ।।4।।

यह संस्कृत भाषा के शब्दकोष और व्युत्पत्ति की समृद्धि की महिमा है कि उसके माध्यम से गद्य और पद्य दोनों में किसी प्रकार के भाव (चाहे वह काव्यात्मक हो विवरणात्मक हो या शास्त्रीय सभी) में समर्थ वाक्यरचना समान रूप से की जा सकती है। इसी का परिणाम है कि (संस्कृत की) गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में सभी विषय के उत्तम ग्रंथ सुशोभित हैं। जहाँ-जहाँ पद्यमयता दिखाई दे, वहीं काव्य मान लेना उचित नहीं है। (इसी प्रकार गद्यमय ग्रन्थ को काव्य न मानना भी उचित नहीं। काव्य होने के लिए आवश्यक है रचना का लोकोत्तराह्लाद सामर्थ्य)

आस्वाद्यं कुरुते सदा सहृदयो भास्याच्च नैजात्मनः
भक्तो देवगुणेषु कामरसिकः स्त्रीविभ्रमार्थेषु च।
तीर्थार्थी निजतीर्थमार्गसरणौ जिज्ञासुरास्ते सदा
भाषालङ्करणाद्वरं स मनुते स्वाराध्यमूर्तिस्थितिम् ॥5॥

सहृदय (काव्यरसिक) अपने साक्षिभास्य से सदा आस्वाद करता है। भक्त देवगुणों का और कामरसिक स्त्रियों की विलासचेष्टाओं का आस्वादन करता है किन्तु तीर्थ करने का इच्छुक अपने तीर्थ के मार्ग (के सही ज्ञान) का जिज्ञासु होता है वह भाषा के चमत्कार और अलङ्कार से श्रेष्ठ अपने आराध्य की मूर्ति की अवस्थिति को मानता है।

यथार्थवस्तुस्थितिवर्णनाय प्रौढोक्त्यलङ्कारमयं प्रपञ्चम्।
विहाय बन्धोः! ह्यभिधामयं सद्विलिख्यते भारततीर्थरूपम् ॥6॥

प्रौढोक्ति और अलङ्कार के प्रपञ्च पर न ध्यान देते हुए यथार्थ वस्तुस्थिति का वर्णन करने के लिए मित्रो! अभिधा में ही भारत के तीर्थों की स्थिति और स्वरूप का वर्णन किया जा रहा है।

कश्चिद्रसालङ्कृतिदत्तचित्तो न प्रक्ष्यतीहात्मसमीहितं तत्।
तथापि चेद्भारतभावकोऽयं प्रसन्नतामेष्यति किन्न तीर्थैः ॥7॥

कोई (सहृदय जो) रस और अलङ्कार में आनन्द का अनुभव करता है, यह अपने समीहित को यदि यहाँ नहीं प्राप्त करेगा तथापि अगर वह भारत के तीर्थों में आस्था रखता है तब क्या उसे तीर्थों का वर्णन पढ़कर प्रसन्नता नहीं होगी?

आरुह्य दिव्यं नववाहनं यो नव्यं च वासः परिधाय हृष्टः।
प्राग्भिक्षुकः स्वं बहुमन्यमानः प्रायः समेषां मनुतेऽक्षिपात्रम् ॥8॥

नए सुन्दर वस्त्र पहनकर तथा नए दिव्य वाहन पर बैठकर (किन्तु) पूर्व समय का भिक्षुक अपने को बड़ा मानता हुआ प्रायः (अपने को) सभी की आँखों का पात्र मानता है। अर्थात् वह समझता है कि सब उसी को देख रहे हैं।

नाहं कविर्नैव च शास्त्रवेत्ता भाषाविधिं सम्यगवैमि नैव ।
सत्संस्कृतिस्पन्दनतीर्थरूपं भद्रङ्करं किञ्चिदिहालपामि ।।9।।

मैं न कवि हूँ, न शास्त्र का ज्ञाता, भाषाविधि (व्याकरण का ज्ञान) भी हमें सम्यक् रूप से नहीं है, तथापि भारतीय संस्कृति के हृदय की धड़कन रूप कल्याणकारी तीर्थों का वर्णन थोड़ा बहुत (अपनी क्षमता के अनुसार) कर रहा हूँ।

चन्द्रनिधिग्रहब्रह्मविक्रमे वत्सरे कृता ।
तीर्थयात्रा सुधीमद्भिः श्रीहरिहरकृपालुभिः ।।
तैस्तीर्थस्थितिरालेखि वासरिकादिनाङ्कने ।
तेषां वासरिकातो मे पित्रा सा चाङ्किता पुनः ।।
तीर्थं गत्वा स्वयं पित्रा तीर्थानां वर्णनं कृतम् ।
कृपालोश्चरिते काव्यं व्यलेखि श्रीत्रिपाठिना ।।
श्रीरघुनन्दनेनेदं चम्पूकाव्यं मनोहरम् ।
अस्मिन्नुत्तरकाण्डे च तीर्थानां वर्णनं कृतम् ।।
एतत्काव्यं हि काशीतश्चौखम्बातः प्रकाशितम् ।।
एतयोर्वर्णनं दृष्ट्वा स्वयं गत्वा क्वचित् क्वचित् ।
तीर्थानां वर्णनं तद्वन्मया चात्र प्रकाश्यते ।।

विक्रम संवत् उन्नीस सौ इक्यानवे में हमारे पारिवारिक पितामह महामहोपाध्याय पं. हरिहर कृपालु द्विवेदी ने तीर्थयात्राएँ की तथा तीर्थों का वर्णन अपनी डायरी में लिखा। पिताजी (पं. रामाभिलाष द्विवेदी) उन्हीं के साथ रहकर वाराणसी में पढ़ते थे। अतः उनकी डायरी से उन्होंने इस वर्णन को नोट कर लिया। 1978 ई. में पिताजी स्वयं तीर्थ करने गये, उन्होनें स्वयं भी सभी तीर्थों की स्थिति अपनी डायरी में अंकित की। श्री रघुनन्दन त्रिपाठी पं. हरिहरकृपाल द्विवेदी के शिष्य थे उन्होंने हरिहरचरितचम्पू काव्य लिखा है जो पं. हरिहरकृपाल द्विवेदी पर आधारित है। उसके उत्तरकाण्ड में उनकी तीर्थ यात्रा का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। यह काव्य वाराणसी के चौखम्बा संस्कृत सिरीज से प्रकाशित है। पिताजी की मौखिक सूचना तथा उनकी डायरी और पं. रघुनन्दन श्रीपाठी द्वारा वर्णित तथा अनेक तीर्थों का स्वतःदृष्ट वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है।

•••••

प्रयागमण्डलान्तर्गतसमहनग्रामनिवसिनः पण्डितश्रीरामाभिलाषद्विवेदिनः
सूनुना महामहोपाध्यायेनाचार्यरहसविहारिद्विवेदिना प्रणीतमिदं -

तीर्थभारतम्

कश्चिद्भक्तो भरतवसुधातीर्थयात्राचिकीर्षु -
स्तीर्थस्थानभ्रमणविमलं स्वाग्रजं पृच्छतीति -
भ्रातर्मां त्वं कथय कृपया पुण्यतीर्थानि यानि
भान्त्याराष्ट्रं सकलदुरितक्षालने विश्रुतानि ॥1॥

भारतभूमि के तीर्थों के भ्रमण का इच्छुक कोई भक्त तीर्थस्थानों में भ्रमण करने से पवित्र अपने बड़े भाई से पूँछता है – 'भइया ! हर प्रकार के कल्मषों के प्रक्षालन के लिए प्रसिद्ध सारे भारत में अवस्थित तीर्थों का वर्णन कीजिए।'

(तदनन्तर बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से भारत राष्ट्र इसकी आध्यात्मिकता और यहाँ अवस्थित तीर्थों का वर्णन करते हुए कहा –)

जानीहि त्वं भरतमनलं तस्य सम्पूजका ये
विश्वामित्रानुसरणरता आगता यत्र भूमौ ।
तेषां क्षेत्रं भरतमहितं भारतं नाम राष्ट्रं
दिव्यैस्तीर्थैर्जगति विदितं श्रीहरेर्जन्मपूतम् ॥2॥

तुम यह जानो कि भरत शब्द अग्नि का पर्यायवाची है, अर्थात् भरत अग्नि को कहते हैं, जो लोग भरत (अग्नि) के उपासक थे वे विश्वामित्र का अनुसरण करते हुए जहाँ (आर्यावर्त में 'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैवदक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥') आए उस क्षेत्र को भरत के उपासकों (अर्थात् अग्नि में आहुति देकर यज्ञ करने वालों की बहुलता) के कारण भारत नाम का राष्ट्र कहा जाता है। यह दिव्य तीर्थों के कारण जगत् में प्रसिद्ध है तथा भगवान् के जन्म के कारण पवित्र है अर्थात् भगवान् ने विविधरूपों में यहाँ अवतार धारण किया है।

'माता भूमिः' भरतभरितो 'भूमिपुत्रोऽहमे' वं
मन्यन्ते स्वं भुवनमहितं राष्ट्रमासेतुशैलम् ।

राष्ट्रे यस्मिन् प्रतिपदमहो ! दिव्यतीर्थानि भान्ति
तेषु श्रद्धानिरतमनुजा आसते भारतीयाः ॥3॥

माता हमारी भूमि है और अग्नि के उपासक हम उसके पुत्र हैं ऐसी अवधारणा रखने वाले यहाँ के निवासी हिमालय से कन्याकुमारी तक अपनी मातृभूमि को विश्व में सर्वोत्तम मानते हैं। जिस राष्ट्र में पद-पद पर दिव्यतीर्थ सुशोभित हो रहे हैं। उनमें श्रद्धावान् मनुष्य भारतीय कहे जाते हैं।

ज्योतिर्लिङ्गैरविरलजलाभिर्नदीभिश्च पीठैः
सिद्धक्षेत्रैरमरजनुषा पावनैरास्पदैश्च ।
आकैलासात्सगरजलधिं यावदास्ते पवित्रं
आर्यावर्तो भरतभुवनं भारतं विश्वतीर्थम् ॥4॥

यहाँ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग गङ्गा आदि सदा नीरा पवित्र नदियाँ, अनेक सिद्धपीठ, राम-कृष्ण आदि की पवित्र जन्मस्थलियाँ तथा कैलास पर्वत से सागर तक जो भूभाग पावन है। यह आर्यावर्त भरतभुवन भारत विश्वतीर्थ है।

अस्याध्यात्मे विलसति महत्तत्त्वमेकं प्रसिद्धम् -
ईशा वास्यं यदपि जगति भ्राजमानं जगत्याम् ।
तेनात्रत्या भरतधरणीसूनवो धर्मनिष्ठा
मन्यन्ते सत्सुहृदुपनताः प्राणिमात्रं प्रियं स्वम् ॥5॥

भारतीय अध्यात्म में एक महनीय तत्त्व विद्यमान है वह यह है कि जगत् या ब्रह्माण्ड में जो कुछ है सब ईश्वरमय है अर्थात् धरती के कण-कण में ईश्वर हैं। ऐसी मान्यता आभ्यन्तर में बद्धमूल होने से भारतमाता के पुत्र (भारतीय) धर्मनिष्ठ हैं और प्राणिमात्र के प्रति सौहार्द्र का भाव रखते हैं अर्थात् चेतन और जड़ किसी से घृणा नहीं करते।

तीर्थं पूतं भवति मनुजं चापि पूतं विधत्ते
तत्त्वज्ञानाद्रहितमनुजेभ्योऽपि मुक्तिं ददाति ।
तीर्थस्थानभ्रमणविधिना भारतं रम्यराष्ट्रं
दर्शं दर्शं प्रभवति सुखी शंसते भागधेयम् ॥6॥

तीर्थ पवित्र होता है और वहाँ जाने पर मनुष्य को भी पवित्र करता है। 'ऋते ज्ञानान्न

मुक्तिः' (ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती) इस सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती किन्तु तत्त्वज्ञान के बिना भी तीर्थ मुक्ति प्रदान करते हैं। (कालिदास ने रघुवंशचतुर्दश सर्ग के गङ्गायमुना के संगम के वर्णन में लिखा है - 'समुद्रपत्न्योर्जलसन्निपाते पूतात्मनामत्र किलाभिषेकात्। तत्त्वावबोधेन विनाऽपि भूयस्तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्धः ।।' (रघुवंश 13.) गङ्गायमुना के सङ्गम में पूतात्माओं (पवित्र भावना वाले भक्तों) के स्नान करने पर तत्त्वावबोध (ब्रह्मज्ञान) के बिना भी उनके शरीर का बंधन समाप्त हो जाता है अर्थात् वे मुक्ति प्राप्त करते हैं। तीर्थ स्थान में भ्रमण के विधान से मनोहर भारत राष्ट्र की निसर्गश्री को देखकर तीर्थयात्री सुख का अनुभव करता है और अपने भाग्य को सराहता है।

श्रावं श्रावं भवभयहरं सत्फलं तीर्थजातं
ध्यायं ध्यायं परिणयपणं स्वञ्च तीर्थव्रतानाम् ।
पायं पायं प्रवचनरसं मुक्तिदं ज्ञानदञ्च
नूनं तीर्थेष्वटनमनसः प्रायशो भारतीयाः ।।7।।

संसार के भय को समाप्त करने वाले तीर्थों से प्राप्त सात्त्विक फलों को सुन-सुन कर, विवाह के समय सप्तपदी विधान में की गई प्रतिज्ञा - (तीर्थव्रतोद्यापनयज्ञदानं मया सह त्वं यदि कान्त ! कुर्याः इत्यादि) बार-बार ध्यान रखते हुए और तीर्थों में मुक्तिप्रदान करने वाले और ज्ञानवर्धक सन्त महात्माओं और विद्वानों के प्रवचन रस का बार-बार पान करके प्रायः भारतीयों को तीर्थयात्रा करने की इच्छा होती है।

एका जातिर्निखिलवसुधावर्तिनां मानवानां
वर्णो भिन्नो विलसतितरां कर्मणा जीवनार्थम् ।
देवोऽप्येकः सकलहितकृन्नामरूपैर्विभिन्नश् -
चैकैवास्ते सकलजनतामातृरूपा धरित्री ।।8।।

सम्पूर्ण धरती पर रहने वाले मनुष्यों की एक ही जाति है, जीवनयापन के लिए कर्म की दृष्टि से उनके अलग-अलग वर्ण हैं (गीता में कहा गया है - 'चातुर्वण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः') सभी का कल्याण करने वाला देव भी एक है भले ही वह नाम और रूप से भिन्न दिखाई देता हो। सम्पूर्ण जनता की माता-रूप धरती भी एक है।

दिव्या शक्तिर्हृदमनुवसेदेतदर्थं स एको
देवो जातो बहुतनुधरो भक्तवाञ्छाऽनुरूपः ।

एवं जातिं निजकुलगतां कुर्वते नाम भिन्नां
मातुर्भूमेरपि विदधति स्थाननामानि तद्वत् ॥9॥

सभी उपासकों में (उनकी अपेक्षा के अनुसार) दिव्यशक्ति उनके भीतर अवस्थित हो इसलिए वह एक देव भक्त की कामना के अनुसार अपने अनेक रूप धारण करता है। इस प्रकार समग्र मानव जाति एक है, किन्तु विविध समुदायों में निवास के कारण उनके परिचय के लिए जाति का नामकरण भी विविध प्रकार का है, इसी प्रकार धरती भी एक है किन्तु विविध स्थलों (खण्डों/क्षेत्रों) के परिचय के लिए उसका नामकरण कर दिया गया है।

बदरीनाथधाम

प्रालेयाद्रौ लसति बदरीनाथधामाख्यतीर्थं
यस्मिन् शान्त्यै नरतनुधरो देववर्गोऽप्यतुष्यत् ।
मुक्तिं प्राप्तौ किल कृतयुगे ना च नारायणश्च
रामव्यासौ तपसि निरतौ त्रेतया द्वापरेण ॥10॥

हिमालय पर्वत पर बदरीनाथधाम नामक तीर्थ सुशोभित है। जहाँ शान्ति प्राप्त करने के लिए आकर देवता भी कृतार्थ हुए हैं। सत्-युग में नर और नारायण ने यहाँ तपस्या करके मुक्ति प्राप्त की थी। त्रेतायुग में श्रीराम और द्वापर युग में (महाभारतपुराणादि के रचयिता) वेद व्यास ने भी यहाँ तपस्या की थी। (इस प्रकार यह मनुष्यों का ही नहीं देवताओं का भी तीर्थ स्थल है।)

वेदव्यासानुसरणपरः शङ्कराचार्यवर्यो
ब्रह्मज्ञानं सकलजगतोऽस्मिन् कलौ बोधनाय ।
अत्राम्नायाश्रममिह स्वकं स्थापयित्वाऽन्यदिक्षु
धामान्येवं प्रवचनचणैर्योग्यतीर्थैर्बभार ॥11॥

वेदव्यास की परम्परा का अनुसरण करते हुए भगवान् आदि शङ्कराचार्य ने इस कलियुग में ब्रह्मज्ञान को सारे विश्व में ज्ञात कराने के लिए यहाँ अपना आम्नायाश्रम (ज्योतिष्पीठ) स्थापित किया तथा चारों दिशाओं में तीन अन्य धामों (शङ्कराचार्य पीठों) की स्थापना की तथा प्रवचन में पटु विद्वानों को (शङ्कराचार्य प्रतिनिधि जिन्हें शङ्कराचार्य ही कहा जाता है और यह परम्परा आज भी प्रवर्तमान है।) स्थापित कर सभी धामों को पुष्ट किया।

मध्येशैलं विलसति हिमाच्छादितं प्रायशोऽदो
धारास्तिस्रः परमविमला द्वे च कुण्डे पवित्रे ।
श्राद्धस्थानं प्रथितमलकाब्रह्मकापालिकाख्यं
तत्रैवास्ते दिविषदनघं तच्छिला पञ्चकञ्च ।।12।।

हिमालय पर्वत के मध्य स्थित यह बदरीनाथधाम प्रायः वर्फ से आच्छादित रहता है। यहाँ तीन पवित्र जल वाली धाराएँ हैं तथा दो पवित्र कुण्ड हैं अलका का ब्रह्मकपाली नामक पितरों के श्राद्ध और पिण्डदान का स्थान यहीं है और यहीं पर देवताओं के चरणरज से पावन पाँच शिलाएँ है।

नन्दान्तां तामलकसरितं दक्षिणेनाति रम्यं
तत्रागारं कनककलशं चारु नारायणीम् ।
यस्मिन् पद्मासनधृतवपुर्योगमुद्राकरश्च
शालिग्रामोपलकृततनुः श्यामलो भाति विष्णुः ।।13।।

अलकनन्दा नदी के दक्षिण की ओर भगवान विष्णु (नारायण) का भव्य मन्दिर है जिसका ऊपरी सुन्दर कलश (गुम्बद) सोने का है। उस मन्दिर में शालिग्राम वाली शिला (कालेपत्थर) में शरीर धारण कर पद्मासन लगाए हुए और योग की मुद्रा में अपने हॉथों को किए हुए श्यामल मूर्ति भगवान् विष्णु विराजमान हैं।

मूर्तेःपार्श्वे धनदगरुणावुद्धवः श्रीगणेशः
देवर्षिर्भूर्जलधितनया ना च नारायणश्च ।
राराज्यन्ते तपसि निरता योगमुद्रासु लग्ना
मन्ये योगादिह निजवपुस्ते स्थिरीकृत्य हृष्टाः ।।14।।

विष्णु भगवान् की मूर्ति के पास कुवेर, गरुण, उद्धव, गणेश, नारद, पृथिवी, लक्ष्मी तथा नर और नारायण की मूर्तियाँ विराजमान हैं। ये सभी तपस्या में लीन योगमुद्राओं में स्थित हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी योग से अपने शरीर को यहीं स्थिर कर प्रसन्न हैं।

किञ्चिद्दूरं तपसि विदितानां वसूनां सुतीर्थं
वारेर्धारा प्रवहति यतो दुर्गमो यस्य मार्गः ।
एकं नारायणसर इहाभाति शास्त्रे प्रसिद्धं
तीर्थं चैतत्प्रथितमधुना पञ्चमं यत्सरस्सु ।।15।।

यहाँ से कुछ दूरी पर सुप्रसिद्ध वसुतीर्थ है, जहाँ से जल की धारा प्रवहमान है और यहाँ जाने का मार्ग भी जटिल है, यहीं एक नारायण सर है जिसका वर्णन पुराणादि ग्रन्थों में प्राप्त होता है इस प्रसिद्ध तीर्थ की गणना पाँच सरों में की जाती है।

धाम्नो मार्गे बहुलयजना भान्ति पञ्चप्रयागाः
देवो रुद्रस्तदनु कथितौ कर्णनन्दौ च विष्णुः ।
भागीरथ्या अलकसरितः सङ्गमादेकधारा
गङ्गानाम्ना प्रसृतसलिला भाति देवप्रयागे ॥16॥

बदरीनाथधाम के मार्ग में प्रयाग नामक पाँच स्थल हैं। यहाँ श्रेष्ठ यज्ञों के सम्पन्न किए जाने के कारण इन्हें प्रयाग कहा जाता है। इनके नाम इस प्रकार हैं - देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग। यहीं भागीरथी और अलकनन्दा दोनों का सङ्गम होता है। देव प्रयाग के आगे प्रवाहित एक धारा को गङ्गा कहा जाता है। (वैसे भागीरथी और अलकनन्दा को भी गङ्गा के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।)

अत्रागारं किल रघुपतेर्देवभक्तैः प्रपूर्णं
मन्दाकिन्याश्चरमपदगश्चात्र रुद्रप्रयागः ।
स्थानादस्माद् वदरिवनगतं वर्त्मकेदारधाम्नः
मन्दाकिन्यास्तटमनुगता राजते गुप्तकाशी ॥17॥

यहाँ भगवान् श्रीराम का मन्दिर है जो निरन्तर भक्तों से परिपूर्ण रहता है, मन्दाकिनी जहाँ भागीरथी में मिलती है वहाँ रुद्र प्रयाग नामक तीर्थ है। यहीं से बदरीवन में स्थित केदारनाथ धाम का मार्ग है। मन्दाकिनी के तट पर एक अन्यतीर्थ गुप्तकाशी है।

अत्रागस्तास्पदनिकटतो दुर्गमं वर्त्म काश्याः
बाणस्यात्र प्रथितनगरी शोणिता भग्नशेषा ।
अस्यां काश्यां मणिकरणिकाकुण्डमेकं प्रसिद्धं
तत्साम्मुख्ये विलसतितरां विश्वनाथालयोऽपि ॥18॥

यहाँ अगस्त के आश्रम के पास से गुप्तकाशी का दुर्गम मार्ग है। यहीं पर बाण की विख्यात शोणित नगरी भी है जो कि आज भग्नशेष है। इस काशी में मणिकर्णिका नामक एक पवित्रजल कुण्ड है। कुण्ड के सामने विश्वनाथ (भगवान् शिव) का मन्दिर है।

शैत्ये जोशीमठपरिसरे जङ्गमा विष्णुमूर्ति:
पूजाहेतौ प्रयतधरणौ स्थाप्यते भक्तवर्यैः।
अत्र ज्योति: शिवगृहयुतं भक्तवात्सल्यधाम
तप्तं कुण्डं सहितसलिलं तापसानां वनेऽपि ॥19॥

शीतकाल में (अधिक वर्फ गिरने से मन्दिर के ढक जाने की संभावना के कारण) जोशीमठ के परिसर में श्री विष्णु भगवान् जङ्गम मूर्ति नीचे मैदानी भाग में भक्तों द्वारा पूजा करने हेतु लाई जाती है। यहाँ भक्तों की आस्था का केन्द्र अखण्ड ज्योति शिव मन्दिर के साथ निरन्तर प्रज्वलित रहती है। यहीं तापस वन है जिसमें गर्म जल का कुण्ड है।

तीर्थे चास्मिन् तपसि निरतानामृषीणां निवासा:
राराज्यन्ते प्रतिपदमहो मन्दिराणीश्वराणाम्।
सिंहो गोविन्द इह भगवतीसाधनायै तपस्यां
कृत्वाऽकार्षीदिह च परमं श्रीगुरो रम्यद्वारम् ॥20॥

इस तीर्थ में तपस्या में संलग्न अनेक सन्त-महात्माओं के निवास स्थल हैं। पद-पद पर अनेक देवी-देवताओं के मन्दिर सुशोभित हैं यहाँ पर गुरुगोविन्द सिंह (सिक्खों के गुरु) ने भगवती की साधना के लिए तपस्या की थी और (सिक्खों के धार्मिक स्थल) सुन्दर गुरुद्वारे का निर्माण कराया था।

हेम्न: कुण्डं विविधकुसुमानां मनोहारि दृश्यं
दृष्ट्वा नूनं भवति बदरीनाथमालोक्य तृप्त:।
अस्यौदीच्यां वसतिरलका श्रीकुबेरस्य चास्ते
दिव्यं तीर्थं प्रिय ! बदरिकाधाम गन्ताऽसि धन्य: ॥21॥

यहाँ स्वर्णकुण्ड, विविध प्रकार के फूलों का मनोहारी दृश्य तथा बदरीश भगवान् का दर्शन कर भक्त अवश्य ही तृप्ति का अनुभव करता है। इसके उत्तर में श्रीकुबेर (धनद) की निवास स्थली अलका नगरी है। प्रिय ! इस दिव्य तीर्थ बदरीनाथ में जो यात्रा करता है वह धन्य होता है।

द्वारकाधाम

सौराष्ट्रे तज्जलधिपुलिने काठियावाड़भागे
श्रीकृष्णस्य स्वकृतवसतिर्द्वारकाधाम तीर्थम् ।
शान्त्यै यस्मिन् चरमदिवसान् यापितुं वासुदेवो
राज्यं कुर्वन्नतिविभवमयं मन्दिरं स्वं चकार ।।22।।

गुजरात प्रदेश के काठियावाड़ क्षेत्र में समुद्र के किनारे भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा स्वयं बनाई नगरी द्वारकापुरी नामक तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है। इसमें अपने अन्तिम समय में सुख-शान्ति के लिए वासुदेव (श्रीकृष्ण) ने निवास किया था और अपना स्वयं का अत्यन्त वैभवपूर्ण मन्दिर बनवाया था।

रत्नैर्युक्ते कनकभवने राजमानोऽपि कृष्णो
दीनं मित्रं गृहपरिसरे श्रीसुदामानमाप्त्वा ।
सद्यस्तस्य स्वनयनजलैः पादपद्माभिषेकं
कृत्वा राज्ञो विनयसरणिं दर्शयामास देवः ।।23।।

रत्नजटित सोने के भवन में राजा के रूप में सुशोभित होने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने गरीब मित्र श्री सुदामा को अपने भवनपरिसर में प्राप्त कर शीघ्र ही अपने प्रेमाश्रुओं से उनका पादप्रक्षालन करके (भारतीय) राजाओं की विनम्रता की श्रृङ्खला का परिचय दिया।

यत्रासीत्तत् कनकमणिभिर्मन्दिरं भ्राजमानं
सम्प्रत्येतज्जलधिजठरे श्रूयते मग्नभूतम् ।
शास्त्रेष्वेवं करुणपतनं वर्णितं यादवानां
व्यक्ताव्यक्ता भवति जगतो दृश्यमाना समृद्धिः ।।24।।

कभी जहाँ पर सोने और माणिक्य से निर्मित दिव्य मन्दिर सुशोभित हो रहा था, वर्तमान में वह समुद्र के गर्भ में समा गया है। शास्त्रीय ग्रन्थों में इस प्रकार यादवों के करुण पतन का वर्णन है। संसार की सारी समृद्धि जो दृश्यमान है वह भविष्य में समाप्त हो जाती है। (यह संसार का अनिवार्य क्रम है।)

रेलस्थानाज्जलधिपुलिने योजनार्द्धान्तरेण
दिव्यागारं किल भगवतस्त्यक्तयुद्धस्य विष्णोः

पार्श्वे चाब्धेर्भरित सरसी गोमतीद्वारकाऽऽस्ते
एवं रम्या लसति नगरी द्वारकातीर्थरूपा ॥25॥

रेलवे स्टेशन से छः किलोमीटर की दूरी पर समुद्र के किनारे रणछोड़ भगवान् श्रीकृष्ण का दिव्य मन्दिर है, इसी के पास एक गोमतीद्वारका है इसमें पवित्र जल से पूतित तालाब हैं इस प्रकार पवित्र जलाशय और मन्दिरों से रम्य द्वारकापुरी है।

कच्छद्वीपे विलसति परा द्वारका बेटनाम्नी
नौभिर्यात्रा जलधिजलतो यात्रिभिश्चात्र साध्या।
युद्धाशान्त्या विरमितरणागारमास्तेऽत्र भव्यं
शङ्खोद्धारेत्यभिधमपरं मन्दिरं चैकमत्र ॥26॥

कच्छद्वीप में बेट द्वारका नामक अन्य तीर्थ सुशोभित है यात्री समुद्रमार्ग की यात्रा नाव से करके यहाँ पहुँचते हैं युद्ध की अशान्ति को देखकर जिन श्रीकृष्ण ने युद्ध करना बन्द कर दिया था। (इसी कारण इन्हें रणछोड़ भी कहा जाता है।) उनका भव्य मन्दिर यहाँ बना हुआ है। यहीं पर एक और सुप्रसिद्ध मन्दिर है जिसे शंखोद्धार कहा जाता है।

मार्गे चास्मिन् धवलधरणीचन्दनाङ्कस्तडागः
भक्तेभ्यो यत्सहजसुलभं चन्दनं गोपिकाभम्।
मन्ये याते प्रियसहचरे नन्दसूनौ तमाप्तुं
आलिङ्गन्त्यः प्रियसखममुं चन्दनीभूय गोप्यः ॥27॥

इसके मार्ग में धवल धरती है, (धवल मिट्टी के) चन्दन वाले परिसर में तालाब है। गोपिकाओं के गोरे अङ्ग की कान्ति बिखेरने वाली इस मिट्टी का सहज रूप से भक्तगण उपयोग करते है अर्थात् यहाँ की सफेद मिट्टी पवित्र चन्दन के रूप में भक्तगण उपयोग के लिए ले आते हैं, ऐसा लगता है अपने प्रियतम नन्दपुत्र श्रीकृष्ण के चले जाने पर इस धरती का आलिङ्गन करते हुए गोपिकाएँ चन्दन बन गई हैं जिसे भक्तगण अपने आराध्य श्रीकृष्ण को लगाते हैं तथा स्वयं अपने शरीर में लगाया करते हैं।

रामेश्वरधाम

कूलेऽवाच्यामरबजलधेर्द्वीपरामेश्वराख्यं
लङ्कां जेतुं रघुवरकृतः सागरे सेतुरत्र।

ज्योतिर्लिङ्गं किल रघुपतेः स्थापितं राजमानं
शम्भोराराधनमिहकृतं श्रद्धया राघवेण ।।28।।

अरबसागर के उत्तरीतट पर एक द्वीप के रूप में रामेश्वर धाम है, यहाँ पर लङ्का पर विजय प्राप्त करने के लिए श्रीराम द्वारा बनाया सेतु है, वस्तुतः यह तीर्थ इसीलिए सेतुबन्धरामेश्वर के नाम से जाना जाता है यहाँ रघुपति द्वारा स्थापित ज्योतिर्लिङ्ग विद्यमान है यहाँ पर श्रीराम ने शिव की आराधना की थी।

एकं सीतारचितसिकतानिर्मितं लिङ्गमास्ते
चाऽन्यं नीतं किल हनुमता विश्वनाथाख्यमस्ति ।
प्रायो गङ्गाजलमिह शिवायार्प्यते भक्तवर्यैः
पापान्मुक्तिं दधति मनुजाः शम्भुपूजाविधानात् ।।29।।

एक शिव लिङ्ग ऐसा है जिसे सीता ने रेत से बना कर स्थापित किया था, एक अन्य विश्वनाथ नाम का शिवलिङ्ग है जिसे हनुमान् ने ले आकर स्थापित किया है। यहाँ शिव को अर्पित करने के लिए अर्थात् उनको जल चढ़ाने के पूजाविधान में प्रायः भक्तों द्वारा गङ्गाजल का उपयोग किया जाता है। जो भक्त मनुष्य यहाँ भगवान् शिव की पूजा करते हैं वे पाप से मुक्ति प्राप्त करते हैं।

देवागारैं ततपरिसरंस्त्रीणि तद्गोपुराणि
मुख्यं द्वारं प्रसृतगगनस्पर्शि यल्लम्बमानम् ।
शम्भोस्तीर्थे विलसतितरां वैष्णवं मन्दिरं यत्
पाण्ड्यव्यूढं गुणनिधिरमायाः पतेर्माधवस्य ।।30।।

यहाँ अत्यन्त विस्तृत परिसर वाले मन्दिर हैं, तीन गोपुर (मुख्यद्वार) हैं, प्रमुख द्वार अत्यन्त विशाल लम्बा एवं गगनचुम्बी है। इस शिवतीर्थ में भी जो वैष्णव मन्दिर है वह पाण्ड्य के द्वारा बनवाया गया है। इसमें गुणनिधिरमा और माधव विद्यमान हैं।

मध्यागारं कनकगरुड स्तम्भरम्येऽतिभव्ये
दीर्घाक्ष्यम्बासहितमहितो भ्राजते विश्वनाथः ।
पार्वत्यम्बा प्रियरघुपतिः पूज्यरामेश्वरश्च
भक्तो नन्दी विपुलवपुषा राजमानोऽग्रपार्श्वे ।।31।।

सोने के गरुडस्तम्भ से मनोहर मन्दिर के मध्य में दीर्घाक्षी अम्बा के साथ महनीय श्री विश्वनाथ भगवान् विराजमान हैं। जगदम्बा पार्वती और जो श्रीराम को प्रिय हैं अथवा जिन्हें श्रीराम प्रिय है ऐसे श्रीरामेश्वर स्थित हैं। पास में ही शिवभक्त नन्दी भी विराजमान हैं, जिनका आकार विशाल है।

गर्भागाराद्बहिरतितता मण्डपाः स्तम्भरम्या-
स्तीर्थान्यन्यान्यपि सुवितान्यत्र संस्थापितानि ।
यात्रारम्भक्रम इह जनैर्निश्चितः श्रीगणेशाद्
देव्यागारं प्रति गमनतः श्रीधनुष्कोटितीर्थम् ॥32॥

गर्भगृह के बाहर विशालकाय खम्भों से रमणीय अत्यन्त विस्तृत मण्डप (हाल) हैं इनमें स्थान-स्थान पर राष्ट्र के सभी तीर्थ स्थापित हैं। यहाँ तीर्थयात्री देवदर्शन का शुभारम्भ श्रीगणेश के दर्शन से प्रारम्भ करते हैं। देवी के मन्दिर की ओर जाते समय श्री धनुष्कोटितीर्थ दिखाई देता है।

लङ्कां गन्तुं रघुपतिकृतः सेतुरासीत् प्रशस्तः
शत्रोर्भ्रातुर्विनयवचनैर्मित्रसम्मानदात्रा ।
लङ्कारक्षा भवतु जलधौ तेन रमेण सेतु-
र्विश्वश्रेष्ठः स्वविहितधनुष्कोटितः खण्डितोऽयम् ॥33॥

लङ्का में (सेनासहित) प्रवेश के लिए (भारत को लङ्का से जोड़ने वाले) प्रशस्त सेतु का निर्माण राम ने कराया था। रावण के भाई विभीषण के निवेदन पर उसका सम्मान करते हुए (सागर द्वारा) लङ्का की सुरक्षा हो सके इसलिए राम ने इस विश्वश्रेष्ठ सेतु को अपने धनुष द्वारा खण्डित कर दिया। इसीलिए इसे धनुष्कोटि तीर्थ कहा जाता है।

कोटौ स्नानं तदनु सिकतापिण्डदानं विधानं
भक्तैर्मान्यं मकरसमये वा ग्रहग्रस्तसूर्ये ।
अश्वत्थामा शिशुहननतः पापमुक्तो ह्यशान्तो
व्यासादिष्टः सवनविधिना प्राप्तवानत्र शान्तिम् ॥34॥

धनुष्कोटितीर्थ में स्नान करके पिण्डदान करने का विधान भक्तों द्वारा किया जाता है। मकर-सङ्क्रान्ति या सूर्यग्रहण के समय विशेष रूप से यह विधान सम्पन्न किया जाता है। पाण्डव के नवजात शिशुओं की हत्या करने के कारण उद्विग्न अश्वत्थामा ने ब्रह्मा के आदेश से यहाँ स्नान

करके पाप से मुक्ति प्राप्ति की थी।

आषाढे वा ग्रहणसमये माघमासे विशेषं
स्नानं कृत्वा सकलमनुजाः शान्तिमन्तो भवन्ति।
शान्तोद्दामोर्मिभिरिह महासागरासङ्गरम्यं
तीर्थं दृष्ट्वा चपलमनसः पूर्णशान्तिं भजन्ते ॥35॥

अषाढ़ और माघ के महीने में तथा ग्रहण के समय धनुष्कोटितीर्थ में स्नान करके सभी भक्त शान्ति का अनुभव करते हैं। यहाँ समुद्र (महासागर) में शान्त और उद्दाम दोनों प्रकार की लहरें अत्यन्त मनोमोहक हैं, अतः इस तीर्थ में देवदर्शन के साथ समुद्र की लहरों का अवलोकन कर चञ्चल मन वाले लोग भी पूर्ण शान्ति का अनुभव करते हैं।

श्रीजगन्नाथ धाम

प्राच्यामस्त्युत्कलितधरणौ श्रीजगन्नाथधाम
अब्धेः कूले विलसति पुरी यत्र जातौ न भेदो।
आसीन्नीलाचलगिरिवरे कल्पवृक्षः पुराऽत्र
पुण्यं स्रोतः प्रवहदभवद्रोहिणीनामकं यत् ॥36॥

राष्ट्र की पूर्व दिशा में उत्कल (उड़ीसा) प्रदेश में समुद्र के किनारे श्री जगन्नाथ धाम है जिसे केवल पुरी भी कहते हैं यहाँ जाति में कोई भेद नहीं है (यहाँ जो भात बंटता है उसे कोई किसी के हाँथ से सहर्ष ग्रहण कर खाता है)। यहाँ पर ऐसा कहा जाता है कि पहले गिरिवर नीलाचल पर कल्पवृक्ष था यहाँ से एक पुण्य स्रोत प्रवाहित होता है जिसे रोहिणी कहा जाता है।

श्रीमद्विष्णुर्धृतमणिरतो माधवो नीलनामा
इन्द्रद्युम्नो तनयरहितः श्रीजगन्नाथभक्तः।
देवस्यार्चा विहितविधिना येन तीर्थे प्रवृत्ता
तस्य श्राद्धं स्वयमकुरुत श्रीजगन्नाथदेवः ॥37॥

श्रीविष्णुभगवान् ने यहाँ नीलमणि धारण किया था अतः उन्हे लीलमाधव कहा जाता है। यहाँ श्रीजगन्नाथ का परम भक्त इन्द्रद्युम्न था, जिसकी कोई सन्तति नहीं थी। इन्द्रद्युम्न ने ही इस तीर्थ में विधिवत् पूजा प्रारम्भ कराई थी, अतः जब उसका स्वर्गवास हुआ तब पुत्ररहित

इन्द्रद्युम्न का श्राद्ध स्वयं श्रीजगन्नाथ स्वामी ने किया।

इन्द्रद्युम्नप्रथितनिलयो ध्वंसितस्तद्विपक्षै :
गङ्गावंशप्रभवतनयानङ्गभीमेन नव्यम् ।
देवागारं कृत इह पुनर्ब्रह्महत्याविमुक्त्यै
पूजाकार्ये विनतवचनैर्विप्रवर्या नियुक्ताः ।।38।।

इन्द्रद्युम्न ने यहाँ जो मन्दिर बनवाया था उसे उसके विरोधियों ने ध्वस्त कर दिया। उसके बाद ब्रह्महत्या से मुक्ति प्राप्त करने के लिए पुनः गङ्गावंश में उत्पन्न अनङ्गभीम ने यहाँ नए मन्दिर का निर्माण कराया और उन्होंने अत्यन्त विनम्रता-पूर्वक व्यक्त वचनों द्वारा श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भगवान् की पूजा में नियुक्त किया।

विष्णोर्भोगग्रहणसमये नात्र जातेर्विभेदः ।
सर्वे भक्ता निजकुलगतं जातिभेदं विहाय ।
बन्धुप्रीत्या सकलमिलितैः सार्द्धमीशं भजन्ते
श्रद्धावन्तोऽन्यकरमिलितं चाऽपि भुञ्जन्ति भोगम् ।।39।।

विष्णु भगवान् के भोग के वितरण के समय यहाँ (छुआ-छूत का) जातिभेद नहीं दिखाई देता। सभी भक्त अपने जातिगत विभेद को छोड़कर परस्पर भाईचारे की भावना से सभी मिलकर भगवान् की पूजा-अर्चना करते हैं तथा भगवान् के प्रति ही नहीं वहाँ आए भक्तों के प्रति भी श्रद्धाभाव रखते हुए किसी भी जाति के व्यक्ति से मिला हुआ भगवान् का प्रसाद ग्रहण करते हैं।

देवागाराननपरिसरे भोगकक्षं विशालं
शाला चास्ते तदनुललिता मोहिनीनृत्यहेतौ ।
मुख्या दीर्घा विलसति ततो दर्शकानां कृते या
अन्तर्गर्भं शिखरसहितं राजते देवधाम ।।40।।

मन्दिर के प्रथम परिसर में एक विशाल भोगकक्ष है, उसके बाद मोहिनी (आट्टम्) नृत्य के आयोजन के लिए ललितशाला है। उससे लगी हुई मुख्य दीर्घा है जिसमें कार्यक्रम देखने के लिए दर्शक बैठते हैं और भीतर के गर्भ-गृह में भगवान् विराजमान हैं, जो शिखर से समन्वित है।

पापान्मुक्त्यै शुभपरिसरे दक्षिणीभूय भक्ता
देवागारं परित इह सदा भक्तिगानैर्भ्रमन्ति
वारं वारं क्रमपरिणतौ पूज्यदेवं नमन्तो
भोगं लब्ध्वा फलमविकलं जन्मनस्ते लभन्ते ॥41॥

दुरित से मुक्ति प्राप्त करने के लिए (यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि-तानि विनश्यन्ति प्रदिक्षणं पदे-पदे) मन्दिर के शुभ परिसर में भगवान् के गर्भगृह को दाहिने हाँथ की ओर करके भक्तगण भजन गाते हुए चारों ओर परिक्रमा करते हैं प्रत्येक बार परिक्रमा का क्रम पूरा होने पर भगवान् को प्रणाम करते रहते हैं। यहाँ भगवान् का भोग (भात का प्रसाद) प्राप्त कर वे अपने जन्म का अविकल फल प्राप्त करते हैं।

सद्भोगायोदनमिह सदा श्रीजगन्नाथहेतौ
तालङ्कार्थं ददति मधुरं पायसं भक्तवर्याः ।
सत्पक्वान्नं बहुविधमिह श्रीसुभद्रा भुनक्ति
क्रीत्वा भोगं निलयसुलभं यात्रिणो भुञ्जते तम् ॥42॥

यहाँ निरन्तर श्रीजगन्नाथ स्वामी के लिए चावल के भात का भोग लगाया जाता है। तालंक भोग के लिए भक्त गण मधुर पायस प्रदान किया करते हैं। विविध प्रकार के सात्त्विक पकवान श्री सुभद्रा जी के लिए अर्पित किए जाते हैं यहाँ यह व्यवस्था है कि तीर्थयात्री जिस प्रकार का भोग खरीदना चाहे उन्हें मन्दिर द्वारा उपलब्ध कराया जाता है ।

प्रातः काले भवति सुलभं दर्शनं मङ्गलायाः
मध्याह्नप्रागिह सुविहितो राजभोगः सुभव्यः ।
भोगश्छत्राख्य इह सुलभो वादनेऽत्रद्वितीये
भूयो भोगः प्रचलति चतुर्वादने मन्दिरेऽत्र ॥43॥

ब्राह्म मुहूर्त में यहाँ भगवान् की मंगला आरती में भक्तगण सम्मिलित होते हैं। दोपहर के कुछ पहले राजभोग का भव्य कार्यक्रम आयोजित होता है। अपराह्न दो बजे छत्रभोग का आयोजन किया जाता है, पुनः चार बजे सायं भोग का कार्यक्रम होता है।

आरार्तिक्यं दिनमणिगते सप्तमे वादने च
रात्रौ भोगस्तदनु घटते चन्दनालेपनं च ।

शृङ्गारार्चा भवति परमा वादने सा द्वितीये
सुप्तं देवं नमति जनता वादने तं तृतीये ॥44॥

सूर्यास्त के बाद सात बजे भगवान् की आरती की जाती है उसके बाद रात्रि में भोग लगाया जाता है, भोग के कार्यक्रम के बाद भगवान् को चन्दन-आलेपन का विधान किया जाता है। रात्रि में दो बजे भगवान् का शृङ्गार करके पूजा की जाती है। उसके बाद रात्रि में तीन बजे शयनयुक्त भगवान् को जनता प्रणाम करती है।

एवं नित्यं किल भगवतो भाति पूजाविधानं
तीर्थे चाऽस्मिन् भवति महती या हि यात्रा रथस्य।
प्रायो लक्षाधिकजनततिर्याति यात्राविधाने
सेऽयं भव्या जगति विदिता विद्यते साऽद्वितीया ॥45॥

उक्तानुसार प्रतिदिन भगवान् जगन्नाथ की पूजा आरती आदि का विधान किया जाता है। इस तीर्थ में बहुत विशाल पैमाने पर एक रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। इसमें प्रायः एक लाख से अधिक लोग सम्मिलित होते हैं यह जगन्नाथ स्वामी की रथयात्रा सारे विश्व में प्रसिद्ध है, इस तरह व्यापक स्तर की रथयात्रा का कहीं आयोजन नहीं किया जाता अतः यह रथयात्रा अद्वितीय है।

तीर्थे स्नानं विदधति जना अत्र पूर्वं महाब्धौ
श्वेता गङ्गा सुविमलजलं चात्र सच्चक्रतीर्थम्।
सत्कासारा जगति विदिता इन्द्रद्युम्नादयोऽपि
यत्र स्नात्वा मनुजजनुषः सत्फलं चालभन्ते ॥46॥

इस तीर्थ में भक्तगण पूर्वस्थित सागर में स्नान करते हैं। यहाँ एक पवित्र श्वेत गंगा है। एक पावन चक्रतीर्थ है जिसका जल अत्यन्त निर्मल और पावन है। यहाँ इन्द्रद्युम्न आदि के नाम से विख्यात अनेक तालाब हैं इन पवित्र तालाबों में स्नान करके तीर्थयात्री मनुष्यजन्म का फल प्राप्त करते हैं।

किञ्चिद्दूरे किल भगवतः साक्षिभूतस्य विष्णोः
दिव्यागारं विलसतितरां विप्रभक्तेः प्रमाणम्।
साक्षी गोपाल इति वदतां कोविदानां कथायां
साक्ष्यं दत्वा प्रणतकथनं संपुपोषात्र देवः ॥47॥

कुछ दूरी पर साक्षी गोपाल (विष्णु भगवान्) का दिव्य मन्दिर सुशोभित है जो ब्राह्मण की भक्ति का प्रमाण है। विद्वानों में यह कथा प्रचलित है कि भक्त ब्राह्मण पर आरोप लगाए जाने पर स्वयं भगवान् ने गवाही देकर अपने भक्त के कथन की पुष्टि की थी, अतः उनको साक्षी गोपाल के नाम से जाना जाता है। (एक गरीब ब्राह्मण युवक ने तीर्थयात्रा में धनी वृद्धब्राह्मण की बहुत सेवा की। तब वृद्ध ने उसे वचन दिया कि वह तीर्थयात्रा के बाद अपनी कन्या का विवाह सेवा करने वाले ब्राह्मण युवक से कर देगा। किन्तु वह अपने वादे से मुकर गया और गरीब ब्राह्मण युवक का उसके बच्चों ने परिहास भी किया। इससे दुःखी होकर गवाही के लिए भगवान् से प्रार्थना की और उसकी गवाही के लिए भगवान् आए इसी से साक्षी गोपाल नाम पड़ा।)

विश्वख्यातो मिहिरनिलयश्चन्द्रभागातटस्थः।
कोणार्काख्यो भरतधरणावुत्कले राजमानः।
कुष्टान्मुक्तो भवति मनुजः सूर्यपूजाविधानैः
भक्तः साम्बो द्युमणिसदनं कुष्टमुक्त्यै चकार ।।48।।

भारत की धरती पर उड़ीसा में चन्द्रभागा नदी के किनारे (जो जगन्नाथ पुरी से 33 कि.मी. दूर है) कोणार्क मन्दिर नाम से विख्यात सूर्य भगवान् का मन्दिर सुशोभित है, यहाँ सूर्य की विधानपूर्वक आराधना करने से कुष्ट रोग से छुटकारा मिलता है। साम्ब ने कुष्टरोग से मुक्ति की कामना से यहाँ सूर्य का भव्यमन्दिर बनवाया है। अपनी पत्नियों के स्नान के समय प्रेमचेष्टा करने को नारद से सूचना पाकर साम्ब को श्रीकृष्ण ने कोढ़ी हो जाने का शाप दे दिया था किन्तु साम्ब ने अपने को निर्दोष बताया तब श्रीकृष्ण ने मैत्रेयवन (जहाँ यह मन्दिर है) में सूर्यमन्दिर बनवाने की प्रेरणा दी, अतः उन्होंने मन्दिर का निर्माण कराया जिससे वे शाप मुक्त हुए।

सूर्यस्यायं रचितनिलयः स्यन्दनाकाररूपः
सप्ताश्वैर्यश्चलरथ इवास्ते चतुर्विंशचक्रैः।
अस्मिन् सूर्यप्रथमकिरणा गर्भमायान्ति नित्यं
आराध्यास्ते दिनमणिकरा नात्र मूर्तेः प्रतिष्ठा ।।49।।

यह सूर्यमन्दिर रथ के आकार में बनाया गया है इसमें चौबीस चके और सात घोड़े हैं और यह चलते हुए रथ के समान प्रतीत होता है। यह पूर्वाभिमुख है इसके गर्भगृह में सूर्य की प्रथम किरणें पहुँचती हैं उन्हीं (भीतर आने वाली) किरणों की पूजा की जाती है इस मन्दिर में कोई मूर्ति प्रतिष्ठित नहीं है।

गुप्ता काशी लसति भुवनेतीश्वरे शम्भुतीर्थं
ख्यातं काशीसदृशमहितान्यत्र शम्भोर्गृहाणि ।
काश्यां वासो बहु दिविषदां विद्यते तेन शम्भु -
रेकान्तेऽस्मिन् परमभुवने वासमेकं चकार ।।50।।

उड़ीसा के भुवनेश्वर नगर में प्रसिद्ध शिवतीर्थ है। काशी के समान यहाँ शंकर के अनेक मन्दिर बने हैं। (इसे 'उत्कल वाराणसी' या 'गुप्त काशी' भी कहा जाता है। पुराणों में इसे 'एकाग्रक्षेत्र' भी कहा जाता है) वाराणसी में अनेक देवताओं का निवास होने से एकान्त में निवास करने की इच्छा से शिव ने यहाँ अपना स्थान बनाया।

पूतैरद्भिर्भरितबहुशश्चात्र तीर्थानि सन्ति
येषु स्नानैर्विकृतिरहिता भक्तिमन्तो भवन्ति ।
ईशागारप्रमुखबहुधाऽनन्तलिङ्गादियुक्तं
शम्भोर्नेतुर्विलसतितरां वासुदेवस्य गेहम् ।।51।।

पवित्र जलों से भरे हुए अनेक स्नानीय तीर्थ यहाँ हैं। (विन्दुसरोवर, पापनाशिनी, गङ्गायमुना, कोटीतीर्थ, पायहरादेवी, मेघतीर्थ, अलावुतीर्थ, अशोक कुण्ड, ब्रह्मकुण्ड आदि) इन तीर्थों में स्नान करने से भक्तों का कल्मष समाप्त हो जाता है। श्री लिंगराज (शिव) का मन्दिर भुवनेश्वर का प्रमुख मन्दिर है यहाँ अनेक मन्दिर बने हैं। (लिंगराज मन्दिर के पीछे पार्वती का मन्दिर है तथा मन्दिर के ऊपरी भाग में कीर्तिमुख, नाट्येश्वर दशदिक्पाल आदि की मूर्तियाँ हैं) भगवान् शिव को यहाँ ले आने वाले और रहने की अनुमति प्रदान करने वाले अनन्त वासुदेव का भी सुन्दर मन्दिर यहीं हैं। (यहाँ सैकड़ों मन्दिर बने हैं प्राय: सभी बड़े मन्दिरों में भोग कक्ष भी बनाए गए हैं।)

द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

ज्योतिर्लिङ्गैर्भरतधरणी द्वादशख्याततीर्थैः
राष्ट्रैकात्म्यं भरति भरतानामियं मातृरूपा ।
आकैलासादुदधिमहितं सेतुमागन्तुकामाः
नूनं राष्ट्रं निजपरिसरं मन्वते तीर्थनिष्ठाः ।।52।।

भरत की धरती जिसे यहाँ के निवासी भारत माता कहते हैं। राष्ट्र की एकता का पोषण करती है। कैलास (हिमालय) से लेकर श्रेष्ठतीर्थ समुद्र से पावित रामेश्वरतीर्थ तक तीर्थ यात्रा

में निष्ठा रखने वाले (भारतीय) निश्चय ही सारे राष्ट्र को अपना गृह-परिसर मानते हैं।

ज्योतिष्पीठादुदधिलसितं तीर्थरामेश्वराख्यं
प्राच्याः पुर्या विरमितरणद्वारकामाप्तुकामः ।
मध्येराष्ट्रं बहुदिविषदां प्राप्य पूजापदानि
भव्यं राष्ट्रं परममनघं को विभक्तुं समर्थः ॥53॥

उत्तर में ज्योतिष्पीठ बदरिकाश्रम से दक्षिण में सागर के तट पर स्थित रामेश्वर तक तथा पूर्व में जगन्नाथपुरी से पश्चिम में रणछोड़ भगवान् की द्वारका पुरी तक और भारत राष्ट्र के मध्य में सर्वत्र अनेक देवताओं के पूजास्थलों में पूजा करने का अवसर प्राप्त करने वाला कौन ऐसा व्यक्ति है जो अपने भव्य, (अखण्डित) और पवित्र राष्ट्र को टुकड़ों में बाँटना चाहेगा।

सोमनाथज्योतिर्लिङ्गम्

सौराष्ट्रस्थः परममहितो राजते सोमनाथः,
ऋग्वेदेऽपि प्रथितमहिमा यः पुराणादिषूक्तः ।
कश्चिच्चन्द्रो ललितवपुषा दक्षपुत्र्याः प्रियत्वात्
शापग्रस्तो गहनतपसा तस्य सोमः शिवोऽभूत् ॥54॥

सौराष्ट्र में अत्यन्त श्रेष्ठ श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिङ्ग है। ऋग्वेद में भी जिसकी महिमा का वर्णन किया गया है तथा जिसका वर्णन पुराण आदि में भी उपलब्ध है कोई चन्द्र नाम के सुन्दर शरीर वाले राजा दक्षपुत्री (सती) के प्रिय होने से शापग्रस्त हो गए और उन्होने गहन तपस्या करके सोमनाथ नामक भगवान् शिव को यहाँ प्राप्त कर स्थापित किया।

स्कान्दे प्रोक्तं धरणिविततं श्रीप्रभासाख्यतीर्थं
अस्मिन् क्षेत्रे वरणविधिना चार्जुनाप्ता सुभद्रा ।
आनीता सा किल भगवतः श्रीलकृष्णस्य युक्त्या
प्राभासोऽयं प्रथितगिरिशो भद्रकालाग्निरुद्रः ॥55॥

स्कन्दपुराण में धरती पर फैले हुए प्रभास तीर्थ का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इसी प्रभास क्षेत्र में अर्जुन ने भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा बताई गई युक्ति से सुभद्रा को प्राप्त कर (अपनी पत्नी के रूप में) घर ले आए थे। प्राभास ही सुप्रसिद्ध शिव और भद्रकालाग्निरुद्र कहे जाते हैं।

रत्नस्तम्भैस्त्रिभुवनगुरोः श्रीलसोमेश्वरस्य
दिव्यागारं कनककलशैर्भ्राजमानं यदासीत् ।
क्रूरैर्ध्वस्तं मुहुरिदमकार्यत्र भक्तैर्नरेशैः
नव्यं भव्यं विलसति पुनः शम्भुपूजाविधानैः ॥56॥

श्रीसोमनाथ शिव का मन्दिर रत्नजटित खम्भों से बना था और इसका कलश सोने से सुशोभित थे किन्तु क्रूर विधर्मियों ने इसे ध्वस्त कर दिया था। शिवभक्त राजाओं ने पुनः नए और भव्य रूप में इसका निर्माण कराया जिससे भक्तों द्वारा पुनः विविधत् पूजा प्रारम्भ की गई।

अत्रादित्यैः परममनघं स्थापितं सोमकुण्डं
यस्मिन् ब्रह्मा गिरिशसहितो नित्यशो राजमानः ।
अस्मिन् कुण्डे सवनविधिना पापरोगादिनाशं
कृत्वा भक्ता हर-हर-रवैः सोमनाथं भजन्ते ॥57॥

यहाँ सभी देवताओं ने मिलकर अत्यन्त पवित्र सोमकुण्ड की स्थापना की है, इसमें ब्रह्मा और शिव सदा निवास करते हैं। इस कुण्ड में स्नान करके भक्त अपने पाप और रोगादि से मुक्ति प्राप्त कर हर हर महादेव का उच्चारण करते हुए सोमनाथ की पूजा करते हैं।

मल्लिकार्जुनज्योतिर्लिङ्गम्

आन्ध्रे कृष्णाविमलपुलिने मण्डले कृष्णनाम्नि
कैलासोऽयं गिरिरभिहितो दक्षिणः श्रीलशैलः ।
श्रीशैलेशः पशुपतिरिहाऽस्तेऽर्जुनो मल्लिकाख्यः
यस्यार्चाभिः फलमविकलं चाश्वमेधस्य लभ्यम् ॥58॥

आन्ध्रप्रदेश के कृष्णा जिले में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल नामक पर्वत पर श्रीशैलेश पशुपति मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग प्रतिष्ठित है। श्रीशैल को दक्षिण कैलास भी कहा जाता है। इनकी पूजा से अश्वमेध यज्ञ का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है।

उद्वाहार्थं किल गणपतिः कार्तिकेयश्च पुत्रौ
शम्भोः पार्श्वं प्रथमतमतां स्वां गदन्तौ गतौ तौ ॥
पित्रा प्रोक्तं धरणिपरिधिं यः परिक्रम्य पूर्वं
मामागच्छेदिह परिणयं तस्य पूर्वं करिष्ये ॥59॥

एक बार गणेश और कार्तिकेय से विवाद हो गया कि पहले विवाह किसका हो, इसलिए दोनों पुत्र अपने पिता शिव के पास पहुँचे। पिता (शंकर) ने कहा कि जो पहले पूरी धरती की परिक्रमा करके मेरे पास लौट कर आएगा उसका विवाह पहले करूँगा।

शीघ्रं विश्वभ्रमणमनसा कार्तिकेयः प्रयातः
श्रीहेरम्बो जनकजननीविश्वतीर्थं हि मत्वा।
श्रद्धानम्रो जगति पितरौ तौ परिक्रम्य हृष्टः
भ्रान्त्वा स्कन्दो गणपतिमिहाग्रे स्थितं वीक्षय खिन्नः ॥60॥

शीघ्र विश्वभ्रमण करने के लिए कार्तिकेय निकल पड़े किन्तु गणेश अपने माता-पिता को ही समग्र विश्व का तीर्थ मानकर श्रद्धापूर्वक उन्हीं की परिक्रमा करके प्रसन्न होकर बैठ गए। विश्व का भ्रमण करके आने पर गणेश को अपने से पहले माता-पिता के सामने बैठा देखकर कार्तिकेय खिन्न हो गए।

तेन स्कन्दो हिमगिरिगृहादागतः श्रीलशैलं
पुत्रस्नेहान्नगपतिसुता शंभुना साकमत्र।
याता, स्कन्दो मिलनविमुखः प्रस्थितश्चान्यशैलं
पुत्रप्रेम्णाऽर्जुन इह शिवः पार्वती मल्लिकाऽभूत् ॥61॥

इस घटना से खिन्न कार्तिकेय हिमालय पर्वत के अपने निवास से श्रीशैल पर्वत पर आ गए पुत्र के स्नेह के कारण पार्वती भी शिव के साथ यहाँ आ गईं। अपने माता-पिता से स्कन्द नहीं मिलना चाहते थे अतः वे यहाँ से दूसरे पर्वत पर चले गए। यहाँ पुत्र के प्रेम के कारण शिव अर्जुन और पार्वती मल्लिका बन गईं।

देव्याः शम्भोर्ज्वलितमनिशं ज्योतिराभाति दिव्यं
लिङ्गागारे भवभयहरं दर्शनात्कामदं यत्।
द्वारे नन्दी लसति महितो मल्लिकापृष्ठभागे
वर्षे-वर्षे परिणयमहो योज्यते शम्भुरात्रौ ॥62॥

इस ज्योतिर्लिङ्ग में शिव और पार्वती की ज्योतियाँ निरन्तर प्रज्वलित रहती हैं अतः ज्योतियों के दर्शन से संसारिक भय से मुक्ति मिलती है तथा कामनाओं की पूर्ति होती है। मल्लिकार्जुन मन्दिर के पीछे पार्वती का मन्दिर है जिसके द्वार पर नन्दी की विशाल प्रतिमा है

प्रतिवर्ष शिवरात्रि के पर्व पर शिव पार्वती के विवाह का उत्सव आयोजित किया जाता है।

पूर्वद्वाराज्जटिलपदवी याति कृष्णापगां या
सा सोपानैर्विरचितपदा नाम पातालगङ्गा।
अस्यां नित्यं हर-हर-रवैर्यात्रिणो यान्ति कृष्णां
तस्यास्तोयैर्भरितकलशान् शम्भवे चार्पयन्ति ॥63॥

पातालगंगा मन्दिर के पूर्व द्वार से एक पगदण्डी कृष्णा नदी की ओर गई है (उसे ही पाताल गंगा कहा जाता है) यहाँ सीढ़ियाँ बनी है उसी के सहारे उतरना पड़ता है। यहाँ प्रति दिन हर-हर-महादेव का कीर्तन करते हुए यात्री आते-जाते रहते हैं पातालगंगा (कृणा) के जल को कलशों में भरकर तीर्थयात्री ले जाकर शंकर भगवान् को चढ़ाते हैं।

कृष्णाखातद्वयमिलनतो जायतेऽत्र त्रिवेणी
पूर्वं यस्या दिविषदनघा मन्दिरा कन्दराऽस्ते।
दूरे किञ्चिल्लसति शिखरे मन्दिरं यच्छिवस्य
स्थित्वा तस्मिन्नचलशिखरं दृश्यते मुक्तिकामैः ॥64॥

यहाँ कृष्णा नदी में दो नाले आकर मिलते हैं जिससे त्रिवेणी का दृश्य बन जाता है। कृष्णा नदी के पूर्व में एक मन्दिरमयी कन्दरा है जिसमें विविध देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं। यहाँ से कुछ दूरी पर शिव का एक मन्दिर है जो पर्वत की चोटी पर है। मुक्ति की कामना करने वाले भक्त जन यहाँ आकर पर्वतशिखर की रमणीयता का अवलोकन करते हैं।

महाकालज्योतिर्लिङ्गम्

ज्योतिर्लिङ्गं परमफलदं पुण्यपुर्युज्जयिन्याः
शिप्रातीरे विलसति महाकालनाम्नः शिवस्य।
विप्राह्वानादजगवधरो राक्षसाद्दूषणाख्यात्
त्रातुं लोकानधितटभुवं क्षिप्रमुद्भिद्य जातः ॥65॥

सात पवित्र पुरियों में एक उज्जयिनी (उज्जैन म.प्र.) में स्थित महाकाल ज्योतिर्लिङ्ग परम फल प्रदान करने वाला है। महाकालनामक शिव का ज्योतिर्लिंग शिप्रानदी के तट पर है। ब्राह्मण के आवाहन करने पर दूषण नामक राक्षस से तीनों लोकों की रक्षा करने के लिए शिप्रा की

तटवर्तिनी भूमि का भेदन करके भगवान् अजगव धनुषधारी शिव प्रकट हुए।

शिवपुराण की कथा के अनुसार अवन्ती (उज्जयिनी) नामक नगरी भगवान् शिव को बहुत प्रिय है जो समस्त देहधारियों को मुक्ति प्रदान करती हैं। यहीं एक धर्मात्मा ब्राह्मण रहते थे। रत्नमाला पर्वत पर निवास करने वाला दूषणनामक राक्षस उज्जयिनी को घेर कर जनता को त्रस्त करने लगा। जनता ने योगसिद्ध उस धर्मात्मा ब्राह्मण की शरण में आकर राक्षस से रक्षा करने का निवेदन किया। ब्राह्मण ने शिव के आवाहन के लिए तपस्या की। उससे प्रसन्न होकर पृथ्वी को फाड़कर शिव प्रकट हुए और राक्षस का संहार किया। जनता ने अनुरोध किया कि 'हे भगवान् शिव ! हम लोग निरन्तर आप की पूजा का अवसर प्राप्त कर सकें इसलिए आप यहीं निवास करें।' अत: शिव उज्जयिनी में महाकाल ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में स्थित हो गए ।

मध्यप्रान्ते कविबुधभरा मालवाराजधानी
भव्यावन्ती कनकशिखरा श्रीविशालादि नाम्ना ।
बुद्धाशोकोदयनकथया विक्रमादित्यकीर्त्या
तीर्थीभूता जगति विदिता कालिदासादिकाव्यै: ।।66।।

मध्यप्रदेश में कवियों और विद्वानों से युक्त मालवाक्षेत्र की राजधानी उज्जयिनी है इसे कनकश्रृङ्ग, कुशस्थली, अवन्ती, पद्मावती, कुमुदवती, अमरावती और विशाला आदि के नामों से भी जाना जाता है। भगवान् बुद्ध के समय उज्जैन मगध सामाज्य की राजधानी राजगीर के दक्षिण के पैठन जाने वाले मार्ग का प्रमुख विश्राम स्थल था। युवराज अशोक की तथा महाराज विकमादित्य की यह राजधानी थी। कालिदास ने मेघदूत में लिखा कि उदयन और वासवदत्ता की प्रसिद्ध कथा प्राय: यहाँ ग्रामवृद्ध कहते रहते हैं। यह संसार का प्रसिद्ध शैवतीर्थ है महाकवि कालिदास आदि के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल एकादशी से एक सप्ताह तक कालिदास समारोह का आयोजन किया जाता है।

दिव्या वापी सुविमलजला श्रीमहाकालपार्श्वे
ज्योतिर्लिङ्गं धरणितलगं मन्दिरे राजमानम् ।
अन्तर्गर्भस्तिमिरहरणैर्दीपकैर्भासमान:
यन्निर्माल्यं पुनरपि महाकालपूजासु मान्यम् ।।67।।

श्री महाकालमन्दिर से लगी हुई निर्मल जल की एक वापी (बावली) है। ज्योतिर्लिङ्ग मन्दिर में सामान्य धरातल से 10-12 फीट नीचे तहखाने में है। ज्योतिर्लिङ्ग के गर्भगृह में प्रकाश

के लिए एकाधिक ज्योतिर्याँ जलती रहती हैं। यहाँ की विशेषता यह है कि निर्माल्य (मूर्ति पर चढ़ाकर उतारी गई माला) का पुन: प्रयोग किया जा सकता है।

क्रीडालग्ने सह गिरिजया शङ्करे शैलराजे
विघ्नं चक्रात इह बहुशो दुष्टचण्डप्रचण्डौ।
त्रातुं ताभ्यां शिवविनयतो या ररक्षाम्बिकेशौ
तस्याः शम्भोर्लसति महितं मन्दिरं सिद्धिदेव्याः ॥68॥

एक बार भगवान् शङ्कर अपनी पत्नी गौरी के साथ (पासा) खेल रहे थे। चण्ड और प्रचण्ड नाम के दो असुरों ने उनके खेल में बाधा डाली, उनसे रक्षित होने के लिए हर ने देवी का ध्यान किया जिससे देवी ने उनकी (शिवपार्वती) रक्षा की। देवी ने हर का कार्य सिद्ध किया अत: हर सिद्धि माता के रूप में इन देवी की प्रसिद्धि हुई। उनका मन्दिर भी उज्जैन में बना है।

एकः सिद्धो वटतरुरिहाकारतो यो लघीयान्
ख्यातः कुम्भो भवति महितो द्वादशाब्दे सदाऽत्र।
ज्योतिर्विद्याध्ययनमपरा वेधशालाऽत्र भव्या
कृष्णस्यासीदिह गुरुवरः श्रीलसन्दीपनिश्च ॥69॥

यहाँ एक (यात्री) सिद्ध वट वृक्ष है ऐसा बताया जाता है वर्षों से उसका यही लघु आकार है। यहाँ प्रत्येक बारहवें वर्ष कुम्भ का मेला हुआ करता है। यहाँ एक ज्योतिषविद्या की वेधशाला भी है। (जयपुर नरेश जयसिंह 1693 ई. में शासन करते थे वे ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् थे, ज्योतिष के ग्रहनक्षत्रों के ज्ञान के लिए उन्होंने जयपुर, दिल्ली, उज्जैन काशी और मथुरा में वेधशालाएँ बनवायीं थीं, उसी में से एक उज्जैन में है।) यहाँ संदीपनि का आश्रम है। महर्षि सन्दीपनि श्रीकृष्ण भगवान् के गुरु थे। सम्प्रति महर्षि सान्दीपनि वेद विद्या-प्रतिष्ठान के नाम से राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा यहाँ एक संस्था स्थापित है, जिसके माध्यम से वैदिक मूलपाठ का संरक्षण और अनुसन्धान का कार्य कराया जाता है। आज भी उज्जैन एक विद्या केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित है यहाँ विक्रम विश्वविद्यालय तथा कालिदास अकादमी जैसी प्रतिष्ठित संस्थाएँ हैं। कार्तिक शुक्ल एकादशी से यहाँ प्रतिवर्ष अखिल भारतीय कालिदास समारोह आयोजित होता है।

ओङ्कारेश्वरज्योतिर्लिङ्गम्

ओङ्काराख्यं जगति विदितं तीर्थमास्ते यदत्र
ज्योतिर्लिङ्गं किल बहुमतं शैवतत्त्वाप्तविद्भिः ।
रेवामाप्त्वा विलयितजला यत्र कावेरिकास्ते
वानस्पत्यं हरितभरितं क्षेत्रमेतत्प्रफुल्लम् ।।70।।

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग सारे संसार में प्रसिद्ध हैं, शैवतत्त्व के वेत्ताओं द्वारा इस ज्योतिर्लिङ्ग को अत्यन्त महत्त्व प्रदान किया गया है। यहाँ कावेरी नदी नर्मदा में मिल कर अपना अस्तित्व समाप्त करती है। नैसर्गिक सौन्दर्य की दृष्टि से यह क्षेत्र हरा-भरा और रमणीय है।

बालः कश्चित् नृपतिविहितं शम्भुपूजाविधानं
दर्शं दर्शं स्वयमपि शिलाखण्डमेकं समार्चत् ।
क्रुद्धा माता सुतशिवशिलां नर्मदायाममुञ्चत्
तेनार्तं तं द्रावितुमनघं शम्भुरोङ्कार आङ्गत् ।।71।।

(उज्जयिनी के) राजा को अपने कल्याण के लिए एक मन्दिर में शिव की पूजा करते देख देख कर एक बालक उसी प्रकार एक प्रस्तर खण्ड की उपासना करने लगा। बालक की माँ को यह अच्छा नहीं लगा, अत: उसने नाराज होकर अपने बेटे की पूजा करने की शिला को नर्मदा में फेक दिया, जिससे बालक बहुत आर्त हो गया उस निष्पाप पुजारी बालक के पास ओङ्कारेश्वर शिव प्रकट हो गए। इस प्रकार तभी से ओङ्कारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग की पूजा की जाने लगी।

ज्योतिर्लिङ्गंह्यपरमिह यद्वर्णितं स्कान्दखण्डे
मान्धातुर्यद् वरुणयजनेऽत्रागतं शम्भुरूपम् ।
ऋक्षाद्विन्ध्यं विभजनपरा नर्मदोङ्काररूपा
मान्धातुर्या तनयलसिताऽत्रैव माहीष्मतीति ।।72।।

यहीं पर एक दूसरा शिवलिङ्ग है, जिसे अमलेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग कहा जाता है स्कन्दपुराण के रेवाखण्ड में इसका विस्तृत वर्णन है। मान्धाता द्वारा यहीं वैदूर्य पर्वत पर वरुण यज्ञ करने पर यहाँ भगवान् शिव प्रकट हुए। (इन्द्र की अनावृष्टि की योजना विफल कर लगातार बारह वर्ष तक वृष्टि कराई) नर्मदा नदी ऋक्ष पर्वत (सतपुड़ा) और विन्ध्याचल को विभक्त करती हुई यहाँ प्रवाहित होती है उसकी जलधारा ऊँकार के आकार की दिखाई देती है। बाद में यहाँ मान्धाता के पुत्र ने माहिष्मती नगरी बसायी।

रेवाकूलच्छविरनुपमां ताम्रवर्णोपलाभां
शम्भोर्भव्यं धवलशिखरं मन्दिरं चातिरम्यम् ।
दर्शं दर्शं निजजनिफलं यात्रिणो मन्यमानाः
नौषु स्थित्वा हर-हर रवैर्मन्दिरं यान्ति भक्ताः ।।73।।

नर्मदानदी के किनारे की ताम्र के रंग वाली शिलाएँ अनुपम छटा बिखेरती हैं। भगवान् शिव का भव्य मन्दिर धारा के मध्य में स्थित है, जिसका धवल शिखर अत्यन्त रमणीय दिखाई देता है, इसका अवलोकन कर यात्री अपने जीवन को धन्य मानते हैं। मन्दिर पर जाने के लिए नाव पर बैठे हुए भक्तगण हर-हर महादेव का नारा लगाते हुए मन्दिर की ओर प्रस्थान करते हैं।

किञ्चिद् दूरे लसति सुतदं यत्त्रिशूलाख्यकुण्डं
तत्पार्श्वस्थं धनदतपसा पूतमास्ते सुतीर्थम् ।
स्तम्भैरत्रोपलगजकृतैः सिद्धिनाथेशगेहं
शास्त्रार्थेऽत्रानुपदविदितौ शङ्कराचार्यमिश्रौ ।।74।।

कुछ दूरी (1 कि.मी.) पर त्रिशूलकुण्ड नामक तीर्थ है जिसमें स्नान करने से पुत्र की प्राप्ति होती है। इसी के निकट कुवेर ने तपस्या की थी जो उनकी तपस्या से पवित्र होने के कारण कुवेरेश्वर तीर्थ कहा जाता है। यहीं सिद्धिनाथ का मन्दिर है जिसमें पत्थर के हाथियों वाले (76) खम्भे लगे हैं। इसी ओङ्कारेश्वर तीर्थ में स्वामी शङ्कराचार्य और मण्डन मिश्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था।

केदारनाथज्योतिर्लिङ्गम्

केदाराद्रौ लसति महितः शम्भुकेदारनाथः
आर्चीदीशं किल कृतयुगे यत्र शैवोपमन्युः ।
शम्भोः पूजां पुनरकुरुतां ना च नारायणश्च
ज्योतिर्लिङ्गं स्वमिह कृतवान् शङ्करस्तेन तुष्टः ।।75।।

केदार पर्वत पर शिव का केदारनाथ नामक ज्योतिर्लिङ्ग सुशोभित है, सत्युग में शैव उपमन्यु ने यहाँ शिव की पूजा की थी। उसके अनन्तर नर और नारायण ने भी यहाँ भगवान् शिव की आराधना, की इनकी पूजा से प्रसन्न होकर शिव स्वयं ही अपने को यहाँ प्रतिष्ठित कर ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में विराजमान हो गए।

पाण्डोः पुत्रास्तपसि निरताः शम्भुमाराधयन्तो
मुक्तिं प्राप्ताः सुचरितफला द्वापरे योगसिद्धाः ।
शम्भोरस्मान्महिषवपुषः पञ्चकेदारनाथाः
जाता येभ्यः पशुपतिरितो भाति नेपालदेशे ॥76॥

पाण्डवों ने तपस्यारत रहकर यहाँ भगवान् शिव की आराधना करते हुए द्वापर युग में योगसिद्ध होकर मुक्ति प्राप्त की है। यहाँ से महिषरूपधारी शिव के विभिन्न अङ्ग पाँच स्थानों पर प्रतिष्ठित हुए (प्रथम-शिर केदार पशुपतिनाथ नेपाल में, द्वितीय नाभि मदमाहेश्वर में, तृतीय बाहु तुङ्गनाथ में, चतुर्थ मुख रुद्रनाथ में, पञ्चम जटा कपिलेश्वर में)। इन्हीं में प्रथम मुख भाग वाले शिव पशुपतिनाथ के रूप में नेपाल में प्रतिष्ठित हैं।

वक्त्रं रुद्राऽलकपशुपतिर्बाहुरूपश्च तुङ्गः
कल्पेशाख्योऽभवदिहजटा पृष्ठकेदारनाथः ।
तीर्थे चास्मिन् ददति वलयं शम्भवे श्रद्धया ये
तेभ्यो नित्यं स्मरहरकृपा प्राप्यते मुक्तिदात्री ॥77॥

महिषरूपधारी भगवान् शिव के मुख भाग से रुद्रनाथ, शिरोभाग से पशुपतिनाथ (नेपालस्थित) बाहु से तुङ्गनाथ, जटा से कलपेश्वर और पृष्ठ भाग से केदारनाथ ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में शिव प्रतिष्ठित हुए। इस तीर्थ में जो भक्त शिवलिङ्ग अंकित कड़ा चढ़ाता है, उसे भगवान् शिव की मुक्तिप्रदान करने वाली कृपा प्राप्त होती है।

केदाराद्रौ विलसति शिलाखण्डमेकं त्रिकोणं
तस्यैवार्चां विदधति जना अङ्कमालां ददानाः ।
मन्दाकिन्या मुकुटमिवयन्मन्दिरं दृश्यमानं
तस्मिन्नास्ते नहि पशुपतेर्निर्मिता काऽपि मूर्तिः ॥78॥

केदारपर्वत पर एक बहुत बड़ा त्रिकोण पर्वत खण्ड है उसी की पूजा भक्तगण करते हैं तथा अङ्कमाला (आलिङ्गन करना) देते हैं। मन्दाकिनी नदी के मुकुट के समान यहाँ केदारनाथ हैं जो एक मन्दिर के समान ही दिखाई देते हैं, मन्दिर में कोई मूर्ति निर्मित रूप में प्रतिष्ठित नहीं है।

क्षेत्रं सर्वं परमविमलं भाति केदारधाम्नः
राराज्यन्ते विरचितपदा मूर्तयः पाण्डवानाम् ।

यत्र स्थित्वा प्रवचनपरः शङ्कराचार्यवर्यः
शम्भौ लीनो भवदिह नगे तस्य चास्ते समाधिः ॥79॥

इस पूरे परम पवित्र क्षेत्र को ही केदारधाम कहा जाता है। यहाँ पाण्डव भी मुक्तिप्राप्ति और तपस्या के लिए आए थे, अत: उनकी भी मूर्तियाँ हैं। यहाँ स्थित होकर आदि शंकराचार्य ने वैदिक धर्म का प्रवचन किया था। अन्ततः यहीं शिव सायुज्य प्राप्त करने के कारण उनकी भी समाधि बनाई गई है।

शैत्ये प्राप्ते हिममयनगे शम्भुमूर्तिश्चला या
सानीतोषीमठपरिसरे पूज्यते भक्तिमद्भिः ।
यत्रान्येषामपि दिविषदां मूर्तयः सन्ति दिव्याः
मन्दाकिन्या अपरतटगो भाति कालीमठश्च ॥80॥

शीतकाल में हिमालय पर्वत जब बर्फ से आच्छादित हो जाता है तब शिव की जो चलायमान मूर्ति है वह ऊषीमठ परिसर में लाई जाती है, वहीं भक्तगण उसकी पूजा करते हैं यहाँ अन्य अनेक देवताओं की दिव्य मूर्तियाँ हैं, मन्दाकिनी के दूसरे तट पर कालीमठ सुशोभित है।

काल्याम्नाये भवति सततं चाश्विने चैत्रमासे
शुक्ले पक्षे प्रथमनवदिनेषूत्सवश्चाम्बिकायाः ।
सिद्धं पीठं परमफलदं विद्यतेऽदो भवान्याः
कालीं प्रापुस्त्विह दिविषदो रक्तबीजं निहन्तुम् ॥81॥

यहाँ काली-आम्नाय में अश्विन और चैत्र के नवरात्रों में अम्बिका का उत्सव हुआ करता है। यहाँ अम्बिका का परमफल प्रदान करने वाला सिद्धपीठ है। ऐसा कहा जाता है कि देवताओं ने रक्तबीज के बध के लिए यहाँ देवी से प्रार्थना की थी।

अत्रैवास्ते प्रकृतिसुभगं तुङ्गनाथास्पदं यत्
शम्भोर्लिङ्गैरमरतनुभिर्भाजमानं यदास्ते ।
यस्योत्तुङ्गादचलसुषमा दृश्यते नेत्रपेया
अद्रेरस्माद्वहति शिशिरा दिव्यपातालगङ्गा ॥82॥

यहीं पर तुङ्गनाथ (पञ्च केदार में तृतीय) का सुन्दर प्राकृतिक परिवेश में मन्दिर है। यहाँ अनेक शिवलिङ्ग स्थापित हैं। यहाँ के ऊँचे शिखर से पर्वत के अनेक सुन्दर शिखर अत्यन्त सुन्दर दिखाई देते हैं, यहीं से शीतल जलवाली दिव्य पाताल गङ्गा प्रवाहित होती है।

भीमशङ्करज्योतिर्लिङ्गम्

सह्याद्रौ यल्लसति महितं मन्दिरं भीमशम्भो
ज्योतिर्लिङ्गं हितकरमिदं दर्शनेनापि पुण्यम् ।
मूर्तेः पार्श्वात्स्रवति सलिलं याति भीमापगां यत्
पार्श्वे कुण्डे सततजलयुते मन्दिरस्यान्तिके स्तः ।।83।।

सह्याद्रि पर्वत पर भीमशङ्कर ज्योतिर्लिङ्ग का मन्दिर स्थित है। (एक भीमशंकर का मन्दिर आसाम में गोहाटी के पास ब्रह्मपुर की पहाड़ी पर बताया जाता है, यहाँ जिसका वर्णन 85 पद्यों के बाद किया जा रहा है।) यह महाराष्ट्र राज्य में बम्बई से 320 कि.मी. दूर सह्याद्रि पर्वत पर है। इस ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन मात्र से पुण्य की प्राप्ति होती है और भक्त का हित होता है। मूर्ति के निकट से थोड़ा-थोड़ा जल रिसता रहता है जो भीमा नदी में जाकर मिल जाता है। मन्दिर के समीप दो जलकुण्ड हैं, जिनमें हमेशा जल रहता है।

वन्ये मार्गे ह्यचलशिखरे विद्यते भीमशम्भुः
शम्भोरात्रौ जनततिगतिर्वर्द्धते प्रायशोऽत्र ।
प्राच्यागारं कलितमहितं जीर्णजातं सुरम्यं
धर्मागारैरिह विरचितैर्वाससौविध्यमास्ते ।।84।।

जंगली रास्ते से चलने पर पर्वत के शिखर पर भीमशङ्कर ज्योतिर्लिङ्ग का मन्दिर मिलता है, शिवरात्रि पर्व पर यहाँ भक्तों की लम्बी कतारें और भीड़ दिखाई देती है। प्राचीन मन्दिर जीर्ण हो गया है किन्तु फिर भी बहुत सुन्दर लगता है, यहाँ बहुत सी धर्मशालाएँ बनाई गई हैं जिससे तीर्थयात्रियों को निवास की सुविधा प्राप्त होती है।

धातुर्भक्त्या प्रणिहितबलः कुम्भकर्णस्य पुत्रः
जित्वा सर्वान् दिविषदनघानागतः कामरूपम् ।
तद् राजानं शिवविनयिनं वन्दिगेहे बबन्ध
ज्योतिर्लिङ्गं नृपतितपसाऽत्रागतं शाश्वतं यत् ।।85।।

ब्रह्मा की भक्ति से शक्ति प्राप्त कर कुम्भकर्ण के पुत्र ने सभी देवताओं पर विजय प्राप्त कर कामरूप आकर वहाँ के राजा जो शिव के परम भक्त थे उन्हें कैद कर जेल में बन्द कर दिया राजा ने कारागार में शिव की तपस्या की जिससे प्रसन्न होकर भगवान् शिव वहाँ प्रकट हुए और भीमज्योतिर्लिङ्ग के रूप में सदा के लिए प्रतिष्ठित हो गए।

क्षेत्रे चास्मिन् प्रवहति नदो यो वरो ब्रह्मपुत्रः
कामाख्याम्बा विलसति परा नागरे भूमिभागे ।
भीमः शम्भोरभिहितपदं भीमरक्षो विनाशात्
नैनीतालोज्जनकपरिधौ भीमलिङ्गं तदन्यम् ॥86॥

इसी क्षेत्र से ब्रह्मपुत्र नद प्रवाहित होता है, कामाख्या देवी का श्रेष्ठ मन्दिर (गोहाटी) नगर में स्थित है। (ब्रह्मपुर पहाड़ी पार कर नीचे उतरते समय एक प्राचीन मन्दिर पड़ता है इसे भीमज्योतिर्लिङ्ग का मन्दिर कहा जाता है।) इन्हें भीमशंकर इसलिए कहा जाता है क्योंकि भीम (भयंकर) राक्षसों का इन्होंने वध किया था। एक भीमशंकर का अन्य ज्योतिर्लिङ्ग उत्तरांचल के नैनीताल के उज्जनक नामक स्थान पर प्रतिष्ठित माना जाता है।

विश्वनाथज्योतिर्लिङ्गम्

ज्योतिर्लिङ्गं विलसति परं विश्वनाथस्य शम्भोः
काश्यां मध्ये नगरपरिधौ विद्यते मन्दिरस्थम् ।
गङ्गानीरं मिलितकुसुमं ह्यर्पते यत्र भक्तैः
यस्यागारं कनककलशं भ्राजते दीप्यमानम् ॥87॥

भगवान् विश्वनाथ नामक शिव का ज्योतिर्लिङ्ग वाराणसी नगर के मध्य में स्थित है। यहाँ भक्तगण पुष्पमिला हुआ गङ्गाजल अर्पित करते रहते हैं। मन्दिर का गुम्बद सोने की परत से समन्वित होने के कारण अत्यन्त दीप्तियुक्त दिखाई देता है।

यत्रान्यासां भवति गणना त्रिस्थलीनां पुरीणां
काशी तासु प्रथितपरमा विद्यया शम्भुना च ।
पञ्चक्रोशैर्विततमहिते क्षेत्रमेतत्पवित्रं
येन ज्ञानादृत इहजनोऽप्यश्नुते दिव्यमुक्तिम् ॥88॥

जहाँ त्रिस्थली की गणना की जाती है उनमें काशी विद्या और विश्वनाथ के कारण श्रेष्ठ और प्रसिद्धतम मानी जाती है। पाँच कोस (15 कि.मी.) में फैली हुई प्राचीन काशी अत्यन्त पवित्र मानी जाती है। जहाँ रहने वाले लोग ज्ञान के बिना भी दिव्य मुक्ति प्राप्त करते हैं।

भव्या काशी भरतधरणीसंस्कृते राजधानी
यस्या वेदध्वनिषु सकलं विश्वमाकृष्यमाणम् ।

विद्याभ्यासैः कृतवसतयो यत्र शास्त्रे धुरीणाः
ज्ञानोत्सेधैर्भुवनविदिता विश्वविद्यालयैश्च ।।89।।

काशी भारत वर्ष की संस्कृति की राजधानी है, जिसकी वेदध्वनि के प्रति सारा जगत् आकृष्ट रहा करता है। विद्याभ्यास द्वारा शास्त्रों के महान् पण्डित यहाँ अपना स्थायी निवास बनाकर रहते हैं और विश्वविद्यालयों (हिन्दूविश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ) के ज्ञान प्रसार से सारे जगत् में काशी विख्यात है।

धर्मोद्धारं कृतवति पुनः शङ्कराचार्यवर्ये
काशीकेन्द्रं विलसति सतां भूरिसंन्यासिनाञ्च ।
सद्भिः पूर्णा मठपरिसरा देवतामन्दिराणि,
ह्येतेष्वापद्धरहनुमतश्चान्नदायाः प्रसिद्धे ।।90।।

शङ्कराचार्य द्वारा धर्म की पुनः प्रतिष्ठा किए जाने के बाद काशी विद्वान् सज्जनों और सन्यासियों के केन्द्र के रूप में शोभायमान है। यहाँ के अनेक मठ उच्च-अध्यात्मिक आस्था वाले महात्माओं से परिपूर्ण हैं तथा देवताओं के मन्दिर गली-गली में पाए जाते है जिनमें अनेक देवों और देवियों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। यहाँ संकटमोचन हनुमान्, अन्नपूर्णा मन्दिर, दुर्गा मन्दिर, मानस मन्दिर, बिड़ला मन्दिर (बी.एच.यू.) आदि अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

ज्ञातं चैतद् भवति वृहदारण्यके स द्वितीय-
मैच्छद्येनोभयतनुरभूच्छक्तिरेका शिवोऽन्यः ।
एतौ कृत्वा प्रकृतिपुरुषौ चेतनौ सृष्टिकामौ
पञ्चक्रोशैर्विततनगरी तेजसा खे चकार ।।91।।

वृहदारण्यक से ऐसा ज्ञात होता है वह परमात्मा अपने अतिरिक्त एक दूसरे की अपेक्षा की अतः परमशिव ही स्त्री और पुरुष रूप में प्रकट हो गए, उसमें जो पुरुष था उसका नाम शिव और स्त्री का नाम शक्ति हुआ। इन्हीं शिव और शक्ति ने दो चेतनों की प्रकृति और पुरुष के रूप में सृष्टि की। परमेश्वर ने उन्हें तपस्या करने को कहा तो उन्होंने एक स्थान की कामना की, अतः परमेश्वर ने पाँच कोश (15 कि.मी.) विशाल नगरी का आकाश में निर्माण कर दिया।

ईशस्येयं रचितनगरी पूरुषं तं समाङ्गद्
यस्मात्सृष्टौ तपसि निरतात्कर्णमाणिक्यमेकम् ।

भ्रष्टं तस्मान्मणिकरणिका घट्टनाम प्रसिद्धं
तद्रक्षार्थे प्रमथपतिना धारितेयं त्रिशूले ॥92॥

वह नगरी आकाश में पुरुष के पास आकर स्थित हो गई (उसमें वह पुरुष तपस्या करने लगा), सृष्टि के लिए तपस्यारत उसके कान का एक मणि धरती पर गिर पड़ा जिसके कारण गङ्गा का एक तट मणि कर्णिका नाम से प्रसिद्ध है। जब वह पंचक्रोशी (नगरी) जल में डूबने लगी तब उसकी रक्षा के विचार से भगवान् शिव ने उसे त्रिशूल पर धारण कर लिया।

पञ्चक्रोशी भरतधरणौ स्थापिता लोकसृष्टौ
क्रोशीमात्रोच्चरितपदतो वाश्यते केन काशी।
कर्माकर्षादुत च वरुणास्योर्हि वाराणसीति
ज्योतिर्लिङ्गत्रयमिह परं भ्राजते मोक्षदं यत् ॥93॥

जगत् की सृष्टि के लिए भारत की धरती पर पञ्चक्रोशी की स्थापना (ईश द्वारा) की गई। क्रोशी मात्र के उच्चरित पद से केन वास्यते - इति काशी अर्थात् क्रोशी से काशी शब्द प्रचलित हो गया। कर्मों के कर्षण के कारण भी काशी कही आती है। वरुणा और असी नदियाँ यहाँ प्रवाहित होती हुई गंगा में मिलती है इसलिए वरुणाअसी से वाराणसी नाम प्रचलित हो गया। यहाँ तीन ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं - (पुराना विश्वनाथ मन्दिर, करपात्री जी का नया विश्वनाथ मन्दिर और विड़ला विश्वनाथ मन्दिर)।

अत्राहल्याप्रथितनिलयं ज्ञानवाप्यां परं यत्
आनन्दश्रीहरिहरकृतं मन्दिरं मीरघट्टे।
उद्योगश्रीविरलविहितं विश्वविद्यालये च
भव्ये चास्मिन् लिखितसुलभा बाह्यभित्तौ च गीता ॥94॥

विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के तीन मन्दिरों में सर्वाधिक प्रसिद्ध और मान्य मन्दिर ज्ञानवापी में है जिसका निर्माण इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने कराया है। दूसरा मन्दिर मीरघाट में है जिसका निर्माण स्वामी करपात्री श्रीहरिहरानन्द सरस्वती जी ने कराया है। तीसरा मन्दिर काशीहिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में है। इसका निर्माण उद्योगपति श्री बिड़ला ने कराया है इसकी दीवालों पर श्रीमद्भगवद्गीता अंकित है।

राष्ट्रैकात्म्यं विलिखितमिवाभाति भद्रङ्करं यत्
काश्या घट्टाः प्रतिनिधिसमाः प्रान्तनाम्नाः प्रसिद्धाः।

ऐतिह्येऽपि प्रथितपरमा अश्वमेधादिनाम्ना
धर्मप्राणाः सुकृतिन इहासन् हरिश्चन्द्रमुख्याः ।।95।।

यहाँ घाटों पर हितकारिणी राष्ट्रीय एकता मानो अंकित है (ब्रह्मघाट, पञ्चगंगाघाट और दुर्गाघाट में महाराष्ट्रीय समाज, मणिकर्णिका और गाय घाट में पंजाबी, रामघाट, भोंसलाघाट और सिन्धियाघाट में गुजराती, दशाश्वमेधघाट और अहिल्याबाई घाट में बंगाली तथा केदारघाट, हनुमानघाट और हरिश्चन्द्र घाट में दक्षिणभारतीय समाज की बस्तियों का आधिक्य है।) इस प्रकार काशी के घाट भारत के विविध प्रान्तों के नाम से प्रसिद्ध हैं। भारतीय इतिहास भी इन घाटों से आरेखित होता है अश्वमेधघाट तथा हरिश्चन्द्रघाट। हरिश्चन्द्र जैसे धार्मिक और सत्यवादियों का यह निवास स्थल रहा है।

काशीगङ्गाविमलसलिलं दर्पणीकृत्य नित्यं
स्वीयं बिम्बं वलितसुभगं दृश्यतेऽट्टालिकाभिः ।
नक्षत्राणां गगनगतयो भान्ति रात्रौ जलेऽस्मिन्
दत्ता दीपा उत तदनुभा भ्राजमाना विभान्ति ।।96।।

गंगा काशी की बस्ती से सटकर प्रवाहित होती है अतः उसके निर्मल जल को दर्पण बनाकर अट्टालिकाएँ अपने हिलते हुए रमणीय प्रतिबिम्ब का उसमें अवलोकन सा करती हैं। रात्रि में नक्षत्रों की गति गंगाजल में प्रतिबिम्बित होती है और भक्तों द्वारा गंगा को समर्पित दीपक भी आकाश रूप जल में नक्षत्रों की भाँति फैलकर सुशोभित होते रहते हैं।

किञ्चिद्दूरेऽपरभगवतो गौतमस्यास्ति तीर्थं
यस्यस्तूपो विरचित इहाभात्यशोकेन राज्ञा ।
सारङ्गाख्यं प्रथितमधुना सारनाथेति नाम्ना
बौद्धागारातिथिगृहयुतं विद्यते स्थानमेतत् ।।97।।

कुछ दूरी (5 कि.मी.) पर भगवान् गौतमबुद्ध का तीर्थ है वहाँ राजा अशोक द्वारा निर्मित गौतमबुद्ध का स्तूप है इसका परिष्कृत नाम सारङ्ग है किन्तु वर्तमान में इसे सारनाथ के नाम से जाना जाता है यहाँ बौद्ध मन्दिर का अतिथिगृह भी बना हुआ है।

त्र्यम्बकेश्वरज्योतिर्लिङ्गम्

ज्योतिर्लिङ्गं प्रथितपरमं त्र्यम्बकाख्येश्वरस्य
गोदावारिप्रणिहितकणैः पावितं दक्षिणस्थम् ।
गङ्गानीता सगरतनयैः किन्तु गोदावरीयं
शम्भोर्भक्त्या प्रवहति परा गौतमर्षे तपोजा ।।98।।

दक्षिण भारत में अत्यन्त विख्यात त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग गोदावरी नदी के तट पर स्थित है गङ्गा का आगमन भगीरथ के प्रयास से हुआ था किन्तु गोदावरी का उद्गम महर्षि गौतम की तपस्या से हुआ है शिव की कृपा से महर्षि गौतम गोदावरी को ले आने में सफल हुए थे। उत्तरभारत में जिस प्रकार गंगा का महत्त्व है उसी प्रकार दक्षिण भारत में गोदावरी का महत्त्व है।

ब्रह्माहार्ये तपसि निरतं गौतमर्षिं द्विषन्तः
सन्तो 'गोघ्नोऽयमिति' निजकं द्रोहभावं वितेनुः ।
प्रायश्चित्तं विहितमृषये नेतुमत्रापि गङ्गां
शम्भोः पूजां कृतवति मुनौ चाशुतोषस्तुतोष ।।99।।

ब्रह्मगिरि पर तपस्या करने वाले गौतम ऋषि पर उनसे द्वेष करने वाले महात्माओं ने गोहत्या का आरोप लगा दिया और प्रायश्चित करने में शर्त रखी किउन्हें यहाँ गंगा को ले आना पड़ेगा इसके लिए गौतम ऋषि ने शिव की आराधना की उससे शिव उन पर प्रसन्न हुए।

गङ्गा माता विहिततपसं गौतमं बोधयन्ती
ब्रूते 'नाहं शिवविरहिता तत्र यास्यामि तात !'
तेनाऽयातः शिव इह मुदा त्र्यम्बकेशस्वरूपे
गङ्गाऽयाता विमलसलिला गौतमी सैव गोदा ।।100।।

शिव की कृपा से गौतम की तपस्या से प्रसन्न गंगा ने कहा- शिव के बिना मैं वहाँ नहीं जाऊँगी। अतः (गंगा को दक्षिण भारत में गोदावरी के रूप में पहुँचाने के लिए) शिव स्वयं यहाँ आकर त्र्यम्बकेश्वर के रूप में रहने लगे। इस प्रकार गंगा ही गोदावरी के रूप में यहाँ प्रकट हुई हैं।

गङ्गां दृष्ट्वा दिविषदनघैः पुष्कराद्यैश्चतीर्थैः
तस्या मानो विनतवचनैः कल्पितश्चादरेण ।

तस्मात्कालाद् गुरुरिह सदा सिंहराशौ विभाति
गोदावर्या भवति परमो द्वादशाब्दो हि कुम्भः ॥101॥

गंगा को यहाँ आयी हुई देखकर देवताओं से पवित्र पुष्कर आदि तीर्थों ने आदरपूर्वक गंगा की प्रार्थना की। उसी समय से यहाँ गुरु सदैव सिंह राशि पर विराजमान रहते हैं। गोदावरी नदी का प्रत्येक बारह वर्ष में पवित्र कुम्भपर्व हुआ करता है।

अस्मिन् कुम्भे जगति विदिता सर्वतीर्थाः समेत्य
गोदातीर्थे स्वयमपि मुदा पूर्णपुण्यं लभन्ते ।
तीर्थान्यन्यान्यपि शिवमये चेह कुम्भे वसन्ति
तेनान्यस्मिन् न खलु गमनं सम्मतं पुण्यदं वा ॥102॥

कुम्भ के समय विश्वप्रसिद्ध सभी तीर्थ स्वयं गोदावरी तीर्थ में उपस्थित होकर पूरा पुण्यलाभ करते हैं। अन्य तीर्थ भी इस शिवतीर्थ में आकर निवास करते हैं अतः इस कुम्भ के अतिरिक्त अन्य तीर्थों में जाना उचित नहीं माना जाता और न ही वहाँ जाने से कोई पुण्य मिलता है।

मुख्यागारो विलसति परस्त्र्यम्बकेशस्य शम्भोः
लिङ्गान्यस्मिन्नवनितलगतान्येकभागे विभान्ति ।
विष्णोर्धातुस्त्रिपुरजयिनः सुप्रतीकानि तानि
देवैकात्म्यं विलिखितमिव प्राप्यते मन्दिरेऽस्मिन् ॥103॥

यहाँ मुख्य त्र्यम्बकेश्वर शिव मन्दिर सुशोभित है। मन्दिर के भीतर एक तरफ गड्ढे में तीन छोटे-छोटे शिवलिङ्ग है। ये तीनों लिङ्ग ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवों के प्रतीक माने जाते हैं। त्रिदेवों की एकात्मकता इस मन्दिर में विलिखित सी दिखाई देती है।

कुण्डं चैकं निलयपरिधौ पृष्ठभागे चकास्ति,
किञ्चिद्दूरे विमलकसरो यत्कुशावर्तमास्ते ।
गोदावर्यास्तलगसलिलैस्तद्धि पूतं समृद्धं
स्नात्वा लिङ्गार्चनमभिमतं बाह्यनीतैर्यदद्भिः ॥104॥

त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर परिसर में एक कुण्ड है और पीछे की ओर कुछ दूरी पर एक स्वच्छ जल वाला सरोवर है जिसे कुशावर्त कहा जाता है। गोदावरी का जल इसमें नीचे से आता रहता

है अत: इसमें हमेशा जल रहता है तथा पवित्र भी है। इसमें स्नान करके शिवलिङ्ग की पूजा का विधान है। इस सरोवर के जल को किसी पात्र में बाहर निकालकर स्नान करने का विधान है अर्थात् सरोवर में घुसकर स्नान करने की अनुमति नहीं है।

गङ्गाद्वारादिगिरिसरणि: ब्रह्मनीलादियुक्ता
चक्रात्तीर्थात्प्रवहति नदी सा च गोदावरीति।
क्षेत्रेचास्मिन् बहुदिविषदां मन्दिराण्युत्तमानि
हर्तुं सीतामिह दशमुखो नासिके चागतोऽभूत् ।।105।।

त्र्यम्बकेश्वर के तीन पर्वत बड़े पवित्र माने जाते हैं - ब्रह्मगिरि, नीलगिरि और गङ्गाद्वार। चक्रतीर्थ (10 कि.मी. दूर जंगल में) से गोदावरी नदी प्रकट होती है ऐसी श्रुति है कि कुशावर्त से गुप्त हुई गोदावरी यहाँ निकलती जो नासिक से आई है। त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर के समीप प्राय: सभी देवी और देवताओं के मन्दिर हैं। यहाँ (नासिक में) सीता का हरण करने के लिए रावण आया था।

श्रीवैद्यनाथज्योतिर्लिङ्गम्

ज्योतिर्लिङ्गं प्रथितमहितं वैद्यनाथस्य शम्भो:
सत्या देहात्स्खलितहृदयं यत्र भूमौ पपात।
सत्सङ्कल्पैरनशनकरा निर्जला भक्तवर्या:
शम्भोरर्चां विदधति मुदा कामनापूर्तयेऽत्र ।।106।।

शंभु का वैद्यनाथ नामक ज्योतिर्लिङ्ग अत्यन्त प्रसिद्ध है सती के शरीर से यहाँ की धरती पर उनका हृदय गिरा था। अपने शुभसङ्कल्पों के साथ भक्तगण उपवास और निर्जल व्रत करते हुए यहाँ अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए सहर्ष भगवान् शिव की आराधना करते हैं।

कैलासाग्रौ तपसि निरतो रावणश्चाशुतोषाल्-
लिङ्गं नेतुं ह्यभिमतवरं लब्धवान् किन्तु शम्भु:।
तं प्रत्यूचे प्रयतधरणौ स्थास्यति प्राक् ततोऽद:
यत्नं कृत्वाऽपि न गमयितुं शक्ष्यसि त्वं दशास्य ।।107।।

कैलास पर्वत पर भगवान शिव की आराधना करते हुए रावण ने उनके प्रसन्न होने पर ज्योतिर्लिङ्ग को लङ्का ले जाने का वरदान प्राप्त किया। शिव ने ज्योतिर्लिङ्ग ले जाने की अनुमति

प्रदान कर दी किन्तु यह शर्त रखी कि मार्ग में यदि कहीं इसे जमीन पर रखोगे तब बहुत प्रयत्न करने पर भी वहाँ से उठाकर नहीं ले जा सकोगे।

सश्रीकण्ठं द्रुततरगतिं रावणं पश्य देवा
व्यग्राः सन्तो वरुणमगमत्, पाशिना तेन सद्यः।
प्रस्रावार्तः कृत इह ततो मायिने विष्णवे तद्
विप्रायादादिह भगवता स्थापितस्तेन शम्भुः ।।108।।

ज्योतिर्लिङ्ग शिव को लेकर तेजी से जाते हुए रावण को देखकर देवगण व्यग्र होकर वरुण के पास पहुँचे, वरुण ने रावण के शरीर में जल की मात्रा बढ़ा दी जिससे उसे बहुत तेज लघुशंका लगी। वहीं पर विष्णु माया से ब्राह्मण का रूप धारण कर प्रकट हुए, पेशाब करने के लिए व्यग्र रावण ब्राह्मण को शिवलिङ्ग प्रदान कर लघुशंका करने लगा। अवसर का लाभ उठाकर ब्राह्मण रूप धारी विष्णु ने शिव लिंग जमीन पर रख दिया।

शङ्कामुक्तोत्थितदशमुखो नो शशाकेशमाप्तुं
किञ्चिदूर्ध्वं ह्यधिकतलगं लिङ्गमासिष्ट शम्भोः।
तीर्थाम्भोभिर्भरितविमलं चन्द्रकूपं विधाय
तैरेवाद्भिःस इह गिरिशं पूजयित्वा जगाम ।।109।।

लघुशंका से निवृत्त होकर रावण ने शिवलिङ्ग उठाने का बहुत प्रयास किया किन्तु उसे सफलता नहीं मिली, शिवलिङ्ग थोड़ा सा धरती के ऊपर और अधिक धरती के भीतर स्थित हो गया। तब रावण ने चन्द्रकूप का निर्माण कर उसे सभी तीर्थों के जल से पूर्ण किया, उसी तीर्थ जल से शिव की पूजा की और लंका को चला गया।

बैजूर्भिल्लो भवभयरुजः शम्भुभक्त्याऽत्रमुक्तः
तेनात्रत्यं शिववपुरिदं कथ्यते वैद्यनाथः।
दूरान्नीतै रचितपरिधिश्चाश्मभिः श्यामलाभै-
रीशागारो बहुदिविषदां मन्दिरैर्भ्राजमानः ।।110।।

बैजू नामक भील ने प्रथमतः शिव की भक्ति करके सांसारिक बन्धनों से मुक्ति प्राप्त की थी (ऐसी जनश्रुति है कि पशु चराने के लिए वह रोज शिवलिंग की ओर जाया करता था उस पर रोज डण्डे मारता था। एक बार चावल खाने के बाद उसने शिव लिंग पर कुल्ला कर दिया उसमें कुछ चावल मिले थे। इसी पर शिव प्रसन्न हो गए उन्होंने कहा - प्रतिदिन तुम मेरे ऊपर कुल्ला

करके जल चढ़ाया करते थे आज चावल भी चढ़ा दिया अतः मैं प्रसन्न हूँ। बैजू की नियमित दिनचर्या में शिवलिंग का दर्शन सम्मिलित था बाद में वह शिव का परम भक्त बन गया) इसलिए इस ज्योतिर्लिङ्ग का नाम वैद्यनाथ पड़ गया। (यह स्थल पटना-हावड़ा रेल मार्ग पर जसीडीह के पास है जसीडीह से स्थानीय रेलगाड़ी दिन भर चलती रहती है।) बाहर से लाए गए काले खुरदुरे पत्थरों से मन्दिर की चहार दिवारी और फर्श बना है। वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग के परिसर में पार्वती तथा अनेक देवी देवताओं के मन्दिर बने हैं।

त्रीणीशस्य प्रथितपरिधौ त्रीण्युमाया गृहाणि
क्षौमैः सूत्रै परिणयविधौ ग्रन्थिवद् बन्धितानि।
ज्योतिर्लिङ्गाभिमुखभवनं चास्ति गौर्याः प्रसिद्धं
शक्तेः पीठं परमफलदं श्रीत्रिपुर्या भवान्याः ॥111॥

वैद्यनाथधाम के मुख्य परिसर में तीन शिव तथा तीन पार्वती के मन्दिर हैं, शिव और पार्वती के मन्दिरों के गुम्बदों में एक से दूसरे मन्दिर में रक्षासूत्र (लालरंग के धागे) बँधे रहते है जैसे शिव पार्वती का वैवाहिक ग्रन्थि बन्धन हुआ हो। ज्योतिर्लिंग मन्दिर के सामने गौरी का मन्दिर है यह भवानी त्रिपुर सुन्दरी का श्रेष्ठ फल देने वाला शक्तिपीठ कहा जाता है।

क्षेत्रे चास्मिन् बहुदिविषदः कार्तिकेयादि देवाः
राराज्यन्ते भवभयहराः स्थापिता मन्दिरेषु।
किञ्चिद् दूरे हरिलयुगलं भीलगेहं त्रिकूटं
दोलं मञ्चं नवलखगृहं छिन्नमस्ता च देवी ॥112॥

इस परिसर में कार्तिकेय प्रभृति अनेक देवता जो संसार के भय को दूर करने वाले हैं मन्दिरों में प्रतिष्ठित हैं। मन्दिर से कुछ दूर हरिलाजोड़ी नामक ग्राम है (ऐसा कहा जाता है कि यहीं वृक्ष के नीचे रावण ने शिवलिंग को ब्राह्मण के हाथ में दिया था) यहीं मन्दिर से पश्चिम की ओर दोलमंच है जहाँ होली के दिन श्रीराधाकृष्ण का झूला लटकाया जाता है तथा रंग खेलने का उत्सव होता है। दोलमंच के पश्चिम में बैजू भील की समाधि है, वैद्यनाथ मन्दिर से 15 कि.मी. दूर त्रिकूट पर्वत है जहाँ से मयूराक्षी नदी निकलती है। कुछ दूरी पर नौलखा मन्दिर और छिन्न मस्ता देवी का मन्दिर है।

ज्योतिर्लिङ्गं कतिपयमते हैदराबादभूमौ
मान्यः शम्भुर्विलसति परो मन्यते वैद्यनाथः।

ईशागारं हि परभनीरेलकेन्द्रस्य मार्गे
किञ्चिद् दूरं प्रथितपरलीस्थानकस्याति पार्श्वे ।।113।।

कहीं 'पारल्यां वैद्यनाथं च' ऐसा पाठ मिलता है कुछ लोगों के मत से इसे वैद्यनाथज्योतिर्लिंग कहा गया है। यह स्थान हैदराबाद के पास है। हैदराबाद नगर के पास परभनीजंक्शन से परली तक एक ब्रांच रेलवे लाइन है, स्टेशन के समीप ही वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग का मन्दिर बना हुआ है।

नागेश्वरज्योतिर्लिङ्गम्

ज्योतिर्लिङ्गं प्रथितमपरं भाति नागेश्वरस्य
यद्गोमत्या निकटवसतेर्द्वारकायाः समीपे ।
पूतैरद्भिर्भरितकलशैः प्रायशो भक्तवर्या
यानारूढाः पदगतिमया यान्ति नागेश्वरेशम् ।।114।।

प्रसिद्ध दशम ज्योतिर्लिङ्ग नागेश्वर शिव का है यह गोमती द्वारका से 20 किलोमीटर उत्तर पूर्व की ओर है । (राजकोट (गुजरात) के पश्चिम रेलवे के तारभगाम - ओखा लाइन द्वारा द्वारका जाया जा सकता है। द्वारका जाने वाले अधिकांश यात्री यहाँ भी अवश्य जाते हैं।) पवित्र जल से भरे कलशों को लेकर यात्री बस द्वारा अथवा पैदल नागेश्वर शिव को जल चढ़ाने तथा दर्शन करने जाते हैं।

वैश्यः कश्चिद्धरपदरतो धार्मिकः सुप्रियाख्यः
कारागारे स च निगडितो रक्षसा दारुकेण ।
तत्रापीशो निजपदरतिं पश्य भक्ताय तस्मै
रक्षो हन्तुं पशुपतिभवं दातुमस्त्रं समापत् ।।115।।

कोई सुप्रिय नामक धार्मिक वैश्य जो शिव के चरणों में आस्था रखता था, उसे दारुक राक्षस ने जेल में बन्द कर दिया किन्तु कारागार में भी अपनी आराधना में निरन्तर संलग्न देखकर, उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर शिव ने पाशुपतास्त्र प्रदान किया। उस अस्त्र से सारे राक्षसों को मार कर वह शिवलोक को चला गया।

उच्चस्थाने यदिह पशुपतेर्ज्योतिराविर्बभूव
भद्रं कर्तुं स्वभजनकृतां गुर्जरे दिव्यभूमौ ।

ज्योतिर्लिङ्गं तदिह दुरितक्षालने विश्रुतं यत्
नागेशाख्यं प्रणतफलदं राजकोटाददूरम् ।।116।।

एक ऊँचे स्थान पर पशुपति शिव का ज्योतिर्लिङ्ग प्रकट हुआ, यह ज्योतिर्लिंग गुजरात की दिव्य भूमि पर अपने भक्तों के कल्याण के लिए प्रकट हुआ। यह ज्योतिर्लिंग हर प्रकार के पापों के प्रक्षालन में समर्थ है। इस ज्योतिर्लिंग का नाम नागेश है जो भक्त की कामनाओं को सिद्ध करता है। गुजरात के राजकोट के समीप में यह स्थित है।

घुश्मेश्वरज्योतिर्लिङ्गम्

ज्योतिर्लिङ्गं प्रथितपरमं श्रीलघुश्मेश्वरस्य
घृष्णेशो वा घुसृण इति वा चापरं नाम यस्य ।
एलोराया जगति विदिताया गुहायाः समीपे
मध्येदुर्गं गिरिशभवनं भाति देवाद्रिलग्नम् ।।117।।

अत्यन्त प्रसिद्ध घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग जिसका अन्य नाम घृष्णेश अथवा घुसृण भी है। विश्वविख्यात एलोरा गुफा के पास में स्थित है। देवगिरि से लगे हुए किले में भगवान् शिव का मन्दिर बना हुआ है।

बौद्धा जैना अपि सुरुचिरं स्थानमेतद्विलोक्य
श्रीदेवाद्रौ कृतवसतयोऽन्यान्यधर्मे धुरीणाः ।
कैलासाख्यं प्रथितभवनं चात्र लिङ्गं सहस्रं
पातालेशो दिनकरमणिश्चापि भातोऽन्तराले ।।118।।

देवगिरि में स्थित इस भव्य परिसर का अवलोकन करके बौद्ध, जैन और अन्यधर्मावलंबी भी यहाँ निवास स्थान बनाकर रहते हैं। घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग का मन्दिर कैलास नाम से जाना जाता है इसी को मुख्य ज्योतिर्लिङ्ग मन्दिर माना जाता है। देवगिरि दुर्ग के बीच सहस्रलिंग, पातालेश्वर और सूर्येश्वर हैं।

श्रीदेवाद्रेर्निकटवसतौ विप्र आसीत्सुधर्मा
पातिव्रत्ये जगति विदिता यस्य पत्नी सुदेहा ।
पुत्राभावे व्यथितहृदया सन्तन्तिं चेहमाना
पत्युद्वाहं पुनरनुजया घुश्मया साकमैच्छत् ।।119।।

देवगिरि के निकट सुधर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहा करता था उसकी पत्नी का नाम सुदेहा था, वह पतिपरायणा पतिव्रता स्त्री थी किन्तु कोई सन्तान न होने से उसका हृदय व्यथित था, अत: सन्तति की कामना से पति का दूसरा विवाह कराने का विचार किया, अत: उसने अपनी छोटी बहन घुश्मा से कराना चाहा।

नव्यां पत्नीं हरपदरतां प्राप्य विप्रः प्रसन्नः
काले जातः सुभगतनयस्तस्य घुश्माप्तकुक्षौ ।
पुत्रे जाते प्रथमगृहिणी जातरोषा सुदेहा
घुश्मापुत्रं हननमनसा प्राक्षिपत् तं तडागे ॥120॥

शिव की भक्ति में रत नई पत्नी को पाकर विप्र प्रसन्न हुआ। कुछ समय बीतने पर नई पत्नी घुश्मा की कोख से एक सुन्दर बालक उत्पन्न हुआ। पुत्र के उत्पन्न होने पर पहली पत्नी सुदेहा रुष्ट हो गई और जान से मारने की इच्छा से घुश्मा के पुत्र को तालाब में फेक दिया।

यत्राक्षिप्तोऽम्भसि सुतनयस्तत्र घुश्मार्पयन्ती
शम्भोर्मूर्तिर्निजकरकृताः पार्थिवीरास्त नित्यम् ।
भक्त्यास्तस्या इह पशुपतेर्ज्योतिराविर्बभूव
तस्मात्पुत्रोऽभवदसुमयस्तेन घुश्मेश्वरोऽभूत् ॥121॥

(सुदेहा ने) जहाँ जल में उस सुन्दर शिशु को फेंक दिया था, वहीं घुश्मा अपने हाथों से शिव का पार्थिव लिंग बना कर प्रतिदिन अर्पित करती थी। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर पशुपति (शिव) की ज्योति प्रकट हुई जिससे घुश्मा का पुत्र प्राणवान् हो गया इसी से वहाँ के ज्योतिर्लिङ्ग का नाम घुश्मेश्वर पड़ गया।

यत्राक्षिप्तो मृतशिशुरभूज्जीवितस्तत् सरोऽपि
तीर्थीभूतं सवनविधिना मुक्तिदं नित्यनीरम् ।
नाम्नाऽद्यापि प्रथितकृतिभिर्शालयोऽयं शिवस्य
ज्योतिःपूजां सरसि सवनं कुर्वते मुक्तिकामाः ॥122॥

जहाँ फेका गया शिशु भगवान् शिव की कृपा से जीवित हो गया, वह तालाब भी तीर्थ बन गया उसमें हमेशा जल रहता है उसमें स्नान करने से मुक्ति मिलती है। विद्वान् भक्तगण इस तालाब को शिवनाम से अभिहित करते हैं। मुक्ति की कामना से तीर्थयात्री यहाँ आकर ज्योतिर्लिङ्ग की पूजा करते हैं तथा तालाब में स्नान करते हैं।

कैलासाख्ये स्मरहरगृहे पूर्वशिल्पिप्रकल्पैः
ज्योतिर्लिङ्गे स्रवति सततं प्राकृतं वारि पूतम् ।
एलोरायां लसति निपुणं मूर्तिशिल्पं सुरम्यं
चैत्रं शिल्पं जगति विदितं भात्यजन्तागुहासु ।।123।।

यहाँ कैलास नामक शिव मन्दिर में पुराने अभियन्ताओं द्वारा जल की एक ऐसी पतली धारा कैलास मन्दिर में घुमा दी गई है जिसकी एक जल धारा बूँद-बूँद के रूप में शिव के ऊपर टपकती रहती है। (यह मन्दिर घुश्मेश्वर मन्दिर से एक किलोमीटर दूरी पर है यहाँ जाने का सुगम मार्ग है) यहाँ एलोरा की गुफाएँ हैं जिसके सुन्दर मूर्ति शिल्प विश्व प्रसिद्ध हैं तथा यहाँ का चित्र शिल्प भी विश्व विख्यात है।

घुश्मेशस्य प्रथित वसतिर्बेरुलग्रामपार्श्वे
अन्ये देवा अपि बहुविधा मन्दिरस्था विभान्ति ।
क्षेत्रे चास्मिन् सुगतजिनयोः सन्ति पूर्वावशेषाः
धर्मैकात्म्यं हरति हृदयं भग्नशेषावलोके ।।124।।

घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग का प्रसिद्ध मन्दिर बेरुलग्राम के समीप है। इस तीर्थ में अनेक देवताओं के मन्दिर हैं। उनमें उनकी भव्य मूर्तियाँ हैं। इस क्षेत्र में गौतम बुद्ध और स्वामी महावीर अर्थात् बौद्ध और जैन धर्म के अनेक अवशेष दिखाई देते हैं। एक ही स्थान पर विविध धर्मों के मन्दिर या तीर्थ राष्ट्र की धार्मिक एकता और सहिष्णुता के प्रमाण हैं।

रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्गम्

पूर्वप्रोक्तं प्रथितपरमं श्रीलरामेश्वराख्यं
ज्योतिर्लिङ्गं रघुपतिकरैः स्थापितं सेतु पार्श्वम् ।
तीर्थं चान्यं विलसति धनुष्कोटिनाम्ना प्रसिद्धे
सेतुश्चायं महति जलधौ रामबाणेन भग्नः ।।125।।

पहले जसका वर्णन (28 से 35 पद्य तक) किया जा चुका है वह अत्यन्त प्रसिद्ध रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग है। इसकी स्थापना स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने की है। इसी के समीप धनुष्कोटि नाम का प्रसिद्ध तीर्थ है। हिन्द महासागर में एक सेतु राम ने लंका विजय के अभियान के लिए बनाया था और बाद में विभीषण के अनुरोध करने पर अपने ही बाण से इसे तोड़ दिया था,

इसीलिए इसको धनुष्कोटि तीर्थ कहा जाता है।

सप्तपुर्यः
(सात पुरियाँ)

काशी हरिद्वारमवन्तिका च काञ्ची ह्ययोध्या मथुरा ततश्च ।
द्वारावती भारततीर्थभूमौ पुण्या महत्यः किल सप्तपुर्यः ।।126।।

भारत की तीर्थभूमि पर श्रेष्ठ सात पुरियाँ (प्रसिद्ध) हैं - 1. काशी, 2. हरिद्वार, 3. उज्जयिनी, 4. काञ्ची, 5. अयोध्या, 6. मथुरा, और 7. द्वारकापुरी।

हरिद्वारम्

हरस्य पुण्ड्रान्वितभीमगौण्डः गङ्गाङ्गितुं भीम इहागतोऽभूत् ।
तद्घोटकोत्पादितपादकुण्डं भीमस्य गौण्डं कथयन्ति सन्तः ।।127।।

यहाँ हर की पौड़ी नामक तीर्थ के समीप भीमगौड़ा नामक प्रसिद्ध तीर्थ है। कभी पाण्डुपुत्र भीम यहाँ गङ्गा में स्नान करने आए थे, उनके घोड़े की टाप से एक गढ्ढा बन गया जिसे सन्त लोग भीम कुण्ड या भीमगौड़ा कहा करते हैं।

जलाशयश्चात्र परः पवित्रो गङ्गाम्भसा पूरित एष भाति ।
तत्पार्श्वभागे शिवलिङ्गमेकं विराजते पूतजलाभिषिक्तम् ।।128।।

यहाँ एक अन्य पवित्र जलाशय है। यह (निरन्तर) गङ्गाजल से परिपूर्ण रहता है। इसके समीप एक (पवित्र) शिवलिङ्ग है, जो गङ्गा के जलाभिषेक से समन्वित होकर सुशोभित है।

तदुत्तरस्यां दिशि सप्तधाराः शैवालिकी पर्वतराजिरम्या ।
हिमालयात्पश्चिमदिग्विभागे दृश्यं मनोहारि विलोभनीयम् ।।129।।

इस जलाशय के उत्तर की ओर सात (निर्मल जलवाली) धाराएँ तथा सुन्दर शैवालिक पर्वत श्रेणियाँ हैं। हिमालय के पश्चिम की ओर का यह दृश्य मन को हरने वाला और आवर्जक है।

सर्वासु दिक्ष्वागतसप्तधारा अङ्गन्ति गङ्गामृषिकेशपार्श्वे ।
सुनिर्मला मन्दिरबिम्बरम्या धारा धरादर्शिजला पवित्रा ।।130।।

ऋषिकेश के समीप ये सातों धाराएँ सभी दिशाओं में गङ्गा में आकर मिलती हैं। ये धाराएँ इतनी स्वच्छ हैं कि इनमें तटपर स्थित मन्दिरों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है तथा जल के नीचे धरती दिखाई देती है। इनका जल पावन है।

सद्ब्रह्मकुण्डं हरपौण्ड्रमेव नीलाचलो बिल्वक ईश्वरश्च।
खलं कनार्दि च कुशादिवर्तं पुनर्भवान्मुक्तिदतीर्थकानि ॥131॥

हर की पोड़ी को ही ब्रह्मकुण्ड कहा जाता है, यहाँ नीलाचल और बिल्वकेश्वर विराजमान हैं, कनखल और कुशावर्त यहाँ ऐसे तीर्थ हैं जो भक्तों को पुनर्जन्म से मुक्ति दिलाने में समर्थ हैं।

तपस्यया श्वेतनृपस्य तुष्टो धाता ददौ चात्र वरं नृपाय।
तदाप्रभृत्येव विधिः सदाऽत्र हरो हरिश्चात्र वसन्ति तीर्थे ॥132॥

श्वेत राजा की तपस्या से सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा ने उन्हें वरदान दिया था, तभी से ब्रह्मा शिव तथा विष्णु (ये तीनो देव) यहाँ निरन्तर निवास किया करते हैं।

राजा श्रीविक्रमादित्य ने अपने तपस्वी अनुज विद्वान् भर्तृहरि, जिन्होंने यहाँ मुक्ति प्राप्त की थी, की स्मृति में यहाँ ब्रह्मकुण्ड के मार्ग का निर्माण कराया था।

गाङ्गं जलं कुण्डगतं प्रकामं निःसृत्य गङ्गां पुनरेति कुण्डात्।
अत्रैव विष्णोः शुभपादुके स्तः साक्षी शिवः श्रीमनसा च देवी ॥133॥

गंगा का जल पर्याप्त मात्रा में इस कुण्ड में आता है तथा उससे बह कर पुनः गंगा की धारा में मिल जाता है। यहीं विष्णु की पादुकाएँ हैं तथा साक्षी शिव और मनसा देवी की प्रतिमाएँ हैं।

श्रीविक्रमादित्यनृपोऽग्रजस्य तपस्विनो भर्तृहरेर्बुधस्य।
मुक्तिङ्गतस्यात्र परं प्रसिद्धं स्मृतावकार्षीदिह कुण्डमार्गम् ॥134॥

सम्राट् श्री विक्रमादित्य के अनुज भर्तृहरि ने यहाँ तपस्या करके मुक्ति प्राप्त की थी, अतः उनकी स्मृति में नृपति विक्रमादित्य ने कुण्ड तक पहुँचने का मार्ग बनवाया था।

गवां सुघट्टे सवनादिहस्थे गोघ्नोऽपि मुक्तिं लभते निकामम्।
पिण्डैः कुशावर्ततटं करोति पुन्त्राणतः पुत्रपदं यथार्थम् ॥135॥

यहाँ का तट गऊघाट के नाम से प्रसिद्ध है। किसी ने यदि गोहत्या जैसा जघन्य पाप किया

है तो उसे भी यहाँ स्नान करने से मुक्ति मिल जाती है। कुशावर्त के तट पर पितरों को पिण्डदान किया जाता है। पुंनामनरकात् त्रायते-इति पुत्र; (अर्थात् जो पुम् नामक नरक से रक्षा करे उसे पुत्र कहते हैं) पुत्र द्वारा जब पिण्डदान किया जाता है तब उसका दिवंगत पिता पुम् नामक नरक में नहीं पड़ता। यहीं पुत्र नाम की सार्थकता है।

दक्षेश्वरो धूर्जटिरालयस्थः शक्तेश्च सत्यङ्गजमत्र पीठम्।
पुराऽत्र दक्षोऽजमुखो बभूव परोत्सवाढ्याऽत्र शिवस्य रात्रिः ।।136।।

यहाँ दक्षेश्वर शिव का मन्दिर है, सती के अंग से निर्मित यहाँ शक्तिपीठ है। यहीं पर शिव ने दक्ष को अजमुख किया था, यहाँ शिवरात्रि पर्व का बहुत विशाल आयोजन किया जाता है।

श्रीमद्भागवत आदि पुराणों में यह कथा है कि एक बार दक्षप्रजापति ने शिव से अप्रसन्न होने के कारण अपने द्वारा समायोजित यज्ञ में उन्हें आमन्त्रित नहीं किया किन्तु दक्ष की पुत्री तथा शिव की प्रथम पत्नी सती बिना बुलाए वहाँ आ गई। सती ने शिव को छोड़कर सभी देवताओं को उपस्थित देखा तो उन्हें बहुत ग्लानि हुई और उन्होनें योगाग्नि द्वारा अपने को भस्मसात् कर दिया। इस पर क्रुद्ध शिव के गणों ने यज्ञ विध्वंस कर दिया तथा दक्ष का शिर काट कर हवन कुण्ड में फेंक दिया। ब्रह्मा आदि के मनाने पर शिव ने बकरे का शिर जोड़ कर दक्ष को जीवित कर दिया। शिव ने सती के जले शरीर को कंधे पर रखकर घूमना प्रारंभ कर दिया। तब भगवान् विष्णु ने सती के शरीर को सुदर्शन चक्र से इक्यावन खण्डों में विभक्त कर उसे भारत भूमि पर इक्यावन स्थानों पर गिरा दिया। इस प्रकार जहाँ-जहाँ सती के शरीर के पवित्र टुकड़े गिरे वहाँ शक्ति पीठ बन गए। यहाँ भगवान् की माया से यह सब कार्य किया गया, अतः इस स्थल को मायापुरी भी कहा जाता है।

मथुरा

श्रीकृष्णजन्मार्चितपुण्यभूमिः तीर्थस्थलीयं मथुरा पवित्रा।
कलिन्दकन्याऽत्र विमुक्तिदात्री श्रीकृष्णपादाम्बुजपावनीयम् ।।137।।

मथुरा श्रीकृष्ण की जन्मभूमि होने से परम पवित्र और पूजित पुण्यभूमि है। मुक्ति प्रदान करने वाली यमुना नदी भी यहाँ है जो श्रीकृष्ण के चरणकमलों से पावित है।

यः सात्त्वते वृष्णिकुले च धर्मः ततः प्रसिद्धः किल यादवेषु ।।
आराष्टमानङ्ग पुनर्गृहीतः पाण्ड्यैश्च येषामिह राजधानी ।।138।।

मथुरा के यादव, सात्त्वत तथा वृष्णि वंश में आविर्भूत (भागवत) धर्म लगभग सारे राष्ट्र में फैल गया। पाण्ड्य राजाओं की जब यह मथुरा (मदुरा/मधुरा) राजधानी बनी तब पुनः इस भागवत् धर्म को उन लोगों ने भी स्वीकार किया।

बुद्धस्य कच्चायनशिष्यवर्गैः प्रचारितो धर्म इह स्वकीयः ।
फाह्यानदृष्टा शिखिभिर्मनोज्ञा जैनप्रभावोऽपि कुषाणकाले ।।139।।

बुद्ध के शिष्यों में एक महाकच्चायन के शिष्य वर्ग द्वारा यहाँ अपने बौद्धधर्म का पर्याप्त प्रचार किया गया। चीनी यात्री फाह्यान के यात्रा वर्णन से ज्ञात होता है कि उसने यहाँ इस नगरी को मयूरों की बहुलता से सौन्दर्यपूर्ण माना था। कुषाण काल में यहाँ जैनधर्म का भी पर्याप्त प्रभाव था।

सिकन्दरध्वस्तगृहं च विष्णोः श्रीवीरसिंहेन पुनर्व्यधायि ।
प्राचीरयुक्तं भवनं मुरारेरुच्चं महद्यज्जगति प्रसिद्धम् ।।140।।

सिकन्दर ने श्रीकृष्ण के मन्दिर को ध्वस्त कर दिया था जिसका ओरछा के राजा श्री वीरसिंह ने पुनः निर्माण कराया। परकोटे से घिरा भगवान् श्रीकृष्ण का भव्य मन्दिर ढाई सौ फीट ऊँचा है।

यन्मन्दिरं सर्वपरं विशालं तद्वारकाधीशनिवासदिव्यम् ।
श्रीवल्लभाचार्यविधानभव्या श्रीशस्य पूजाऽत्र विधीयमाना ।।141।।

सबसे श्रेष्ठ और अत्यन्त विशाल द्वारकाधीश का मन्दिर है। यहाँ स्वामी श्री वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित प्रणाली से भगवान् की पूजा की जाती है।

वनानि तालं मधु-लौहयुक्तं वृन्दावनं भद्रवनं च काम्यम् ।
भाण्डीरकं बाहुलकं च ढोलं कुमुद्वनं खादिरमोहके च ।।142।।

मथुरा के समीप में बारह वन हैं - मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बहुलवन, कामवन, खदिरवन, वृन्दावन, भद्रवन, भाण्डीरवन, ढोलवन, लोहवन और मोहवन। गोकुल और गोवर्धन की गणना भी यहाँ के वनों में ही की जाती है।

वैशाखमासस्य च पूर्णिमायां सदुत्सवो भाति वने विहारः ।
मेलापकं श्रावणशुक्लपक्षे पञ्चाह्निकं राजति पञ्चतीर्थम् ॥143॥

यहाँ वैशाख महीने की पूर्णिमा को वनविहार का उत्सव होता है। श्रावण में शुक्ल पक्ष (की पञ्चमी से) पाँच दिनों का पञ्चतीर्थ मेला होता है। (इसमें यात्री मथुरा से वृन्दावन जाते हैं।)

उत्तानपादस्य सुतो ध्रुवोऽत्र विमात्र्यधिक्षेप निवारणार्थम् ।
तपस्यया विष्णुकृपामवाप्य स्वाभीष्टसिद्ध्या ध्रुवतामुपेतः ॥144॥

उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव ने मथुरा में ही अपनी सौतेली माँ के व्यवहार से रुष्ट होकर तपस्या की थी, विष्णु भगवान् की कृपा से उन्होंने अटल (ध्रुव) पद प्राप्त किया था।

वृन्दावने भान्ति सुमन्दिराणि पदे-पदे सन्ति च येषु देवाः ।
महाप्रभुर्योगिवरो महात्मा चैतन्यनामाऽत्र समागतोऽभूत् ॥145॥

वृन्दावन में पग-पग पर अनेक मन्दिर बने हैं, जिनमें देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं। महान् योगी चैतन्य महाप्रभु भी इस तीर्थ में आए थे।

वृन्दावनस्याध्वनि वृक्षराजिः कुञ्जादिभिर्भाति मनोहरा या ।
श्रीमानसिंहस्य च माधवस्य विनिर्मितान्यत्र सुमन्दिराणि ॥146॥

मथुरा से वृन्दावन के मार्ग में वृक्षों की कतारें है तथा अनेक मनोहर सघन कुंज हैं। (मार्ग में यहाँ पहले बिड़ला मन्दिर पड़ता है उसके बाद) जयपुर के महाराजा सवाई माधो सिंह द्वारा बनवाया गया राधाकृष्ण का मन्दिर तथा जयपुर के ही महाराजा मानसिंह द्वारा बनवाया गया गोविन्ददेव जी का मन्दिर है इस मार्ग में अनेक अन्य दर्शनीय मन्दिर भी हैं।

अयोध्या

आभारतं भारतराष्ट्रमाप्तं व्यधायि येनार्यवरेण पूर्वं ।
रक्षांसि हत्वेह समागतानि तज्जन्मभूमिः किल भात्ययोध्या ॥147॥

लंका से भारत में आए हुए राक्षसों को मारकर जिस आर्य श्रेष्ठ राम ने सारे भारत को पावन (श्रेष्ठ/आतंक रहित) बनाया था उनकी जन्मभूमि अयोध्या पुरी सुशोभित है।

इक्ष्वाकुवंशप्रभवा महान्तो रघ्वादयो दिग्विजये प्रसिद्धाः ।
राष्ट्रं समग्रं किल शासयन्तः प्रजानुरागे जगति प्रसिद्धाः ॥148॥

इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न महान् राजा रघु आदि जो दिग्विजय के लिए प्रसिद्ध हैं इन्होंने पूरे भारत राष्ट्र पर शासन किया था सारे संसार में इनका जनता के प्रति अनुराग प्रसिद्ध है।

रामेण साकं पशुपक्षिणोऽपि गताः परं धाम ततः पुनर्या ।
आवासभूमी रचिता कुशेन रामानुगाभिः प्रथितप्रजाभिः ॥149॥

श्रीराम के परमधाम प्रस्थान के समय उनके साथ पशु-पक्षियों सहित सभी चले गए। इनके बाद पुनः राम की नीतियों का अनुसरण करने वाली सुप्रसिद्ध प्रजा के साथ कुश ने उस आवास भूमि को व्यवस्थित किया।

या मानवेन्द्रेण सुधर्मवेत्रा विनिर्मिता श्रीमनुना पुरीयम् ।
मान्यः सदादर्श इहैव तेन शान्त्यै मनुष्येषु पुरा प्रयुक्तः ॥150॥

मानवश्रेष्ठ सनातनधर्म के ज्ञाता मनु ने इस पुरी का निर्माण कराया। यहीं पर मानवमात्र की सुखशान्ति के लिए मान्य आदर्शों का प्रयोग किया।

सुदर्शने चक्र इयं स्थितेति ब्रह्मा शिवो विष्णुरिहाविभान्ति ।
ब्रह्मप्रणीतं ह्रदमेकमन्यं सीताकृतं रामवरेण सिद्धम् ॥151॥

यह अयोध्या नगरी सुदर्शन चक्र पर स्थित है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव यहाँ सदा निवास करते हैं। यहाँ ब्रह्मा द्वारा निर्मित एक ब्रह्म कुण्ड तथा दूसरा सीता द्वारा निर्मित सीता कुण्ड है जिसे भगवान् राम ने वरदान देकर कामनाओं को पूरा करने की शक्ति प्रदान की है।

श्रीलोमशर्षे ऋणमुक्ततीर्थं श्रीरुक्मिणीकुण्डजलं पवित्रम् ।
पुत्रेष्टिसिद्धं च पयः प्रकुण्डं वसिष्ठकुण्डं सरयूसरिच्च ॥152॥

यहाँ ऋणमोचन तीर्थ है, जहाँ कभी लोमश ऋषि ने स्नान किया था। सरयू में जहाँ श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणी ने स्नान किया था वह रुक्मिणी कुण्ड कहा जाता है। इसी के उत्तरपूर्व की ओर क्षीरोद कुण्ड है जहाँ राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। इसी के पश्चिमोत्तर में वसिष्ठ कुण्ड है इन कुण्डों का वर्णन स्कन्द पुराण में मिलता है इसमें से कुछ अब अल्प प्रसिद्ध रह गए हैं।

सरित्तटान्यत्र शिलामयानि श्रीरामसीताद्यभिधानि भान्ति ।
हनूमतो मन्दिरमत्र रम्यं सोपानयुक्तं किल राजमानम् ।।153।।

यहाँ पत्थरों से बने सरयू नदी के अनेक पक्के घाट हैं जो श्रीराम, सीता आदि के नाम पर बने हैं -

ऋणमोचन, सहस्रधारा, लक्ष्मण, स्वर्गद्वार, गंगामहल, शिवाला, जटाई, अहल्याबाई, रूपकलाघाट, नयाघाट जानकी और राम - घाट। इस समय सरयू की धारा प्राय: घाटों से दूर चली गई है। यहाँ हनुमान जी का सुन्दर मन्दिर (हनुमान गढ़ी) है। यह ऊँचे टीले पर है। मन्दिर में जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं।

सिन्दूरलिप्ता पद्मासनस्था मूर्तिः परा सङ्कट मोचिनी या ।
सुग्रीवकूटाङ्गदकूटभूमिः हनूमतो दक्षिणतो विभाति ।।154।।

इस मन्दिर में सिन्दूर से लिप्त पद्मासन में बैठी हुई मूर्ति है इस परम शक्ति सम्पन्न मूर्ति के दर्शन से संकट दूर हो जाता है। हनुमान् गढ़ी के दक्षिण की ओर सुग्रीव टीला तथा अंगदटीला है।

मणेर्गिरेर्दक्षिणपश्चिमस्थो बौद्धो मठः कश्चिदिहास्ति पूर्वम् ।
संज्ञायतेऽत्रापि पुरा कदाचित् बौद्धोऽपि धर्मः किल राजमानः ।।155।।

मणि गिरि के दक्षिण पश्चिम तरफ यहाँ पहले बौद्ध मठ था ऐसी प्रसिद्धि है इससे पता चलता है कि यहाँ बौद्ध धर्मावलम्बी भी अपने धर्म का प्रचार प्रसार करने के लिए रहते थे।

यदोरछा भूपतिना प्रणीतं सन्मन्दिरं तत्तकनकाख्यमास्ते ।
सर्वाधिकं भव्यमिदं विशालं रामप्रियान्तःपुरमेतदस्ति ।।156।।

ओरछा के महाराजा द्वारा बनवाया गया मुख्य मन्दिर कनकमन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है यह सबसे अधिक सुन्दर और विशाल है इसे सीता का महल या राम का अन्त:पुर भी कहा जाता है।

अन्तःपुराग्रे पुरुषोत्तमस्य विष्णोर्नृजन्मस्थलमस्ति पूतम् ।
रामप्रियाणां भजनस्थलं यत् त्रेता युगादेव प्रमाणितं तत् ।।157।।

अन्त:पुर के आगे बढ़ने पर भगवान् विष्णु जो राम के रूप में धरती पर अवतरित हुए थे उनका जन्म स्थल है। (वहाँ बाबर द्वारा मस्जिद बना दी गई थी जो इस समय टूट चुकी है भग्नावशेष पर राम लला की मूर्ति स्थापित है - जिसकी पूजा की जाती है।) राम के भक्तों का यह पूजन-भजन का स्थल रहा जो त्रेता युग से ही हिन्दूओं का प्रमुख तीर्थ रहा है यह रामायणादि ग्रन्थों से प्रमाणित होता है।

अत्रैव जातेन रघूत्तमेन सतां बधं कर्तुमिहोद्यतानाम्।
दशाननात्प्रेषितराक्षसानां दृढप्रतिज्ञेन बधं व्यधायि ।।158।।

इसी पुण्यभूमि पर उत्पन्न रघुवंश के उत्तम महापुरुष दृढ़प्रतिज्ञ श्रीराम ने रावण द्वारा प्रेषित आतंकवादी राक्षसों (विराध, कबन्ध, सुबाहु, त्रिशिरा, खर दूषण, ताड़का आदि) जो सज्जनों (ऋषियों, मुनियों) का वध करते थे, का वध किया था।

आराष्ट्रमातङ्ककरान् समाप्य तेषां हि सञ्चालनकेन्द्रलङ्काम्।
प्रविश्य हन्तुं किल भारतारीन्सेतुं समुद्रे कृतवानपूर्वम् ।।159।।

श्रीराम ने सारे भारत राष्ट्र से आतंकवादियों को समाप्त कर उनके संचालन के केन्द्र लंका में प्रविष्ट होकर भारत के शत्रुओं को मारने के लिए समुद्र और लंका के बीच अपूर्व विशाल सेतु का निर्माण किया था।

निर्वासितोऽप्यार्यवरो हि रामो लब्ध्वा सहायं खलु वानराणाम्।
दशाननं तत्र जघान दुष्टं प्रसेतुमार्गेण प्रविश्य लङ्काम् ।।160।।

घर से निर्वासित आर्यश्रेष्ठ श्रीराम ने वानर भालुओं की सहायता लेकर अपने बनाए सेतु से लंका में घुसकर रावण को मारा था। (ज्ञातव्य है अश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को श्रीराम ने रावण बध किया था। अत: आतंक से पूर्ण मुक्ति का यह पर्व भारतीयों द्वारा त्रेता युग से आज तक विजय पर्व (विजयदशमी) के रूप में मनाया जाता है। चन्द दिनों बाद भारत की धरतीपुत्री सीता (राष्ट्रलक्ष्मी) के साथ श्रीराम पुष्पक विमान से भारत (अयोध्या) लौटे थे, अत: यह पर्व राष्ट्रलक्ष्मी के आगमन तिथि को उनके स्वागत में आज तक घरों को सजाकर और सायंकाल दीप जलाकर मनाया जाता है, जिसे दीपावली कहते हैं। ये दोनों ही राष्ट्रीय पर्व हैं, विजय दशमी स्वतन्त्रता दिवस और दीपावली गणतन्त्र दिवस, क्योंकि श्रीराम के आने से रामराज्य का शुभारम्भ हुआ था।)

शुभेऽश्विने मासि सिते दशम्यां हतो दशास्यो रघुनन्दनेन ।
तदा प्रभृत्येव जयोत्सवस्य स्वतन्त्रतावासर एष राष्ट्रे ॥161॥

अश्विन शुक्ल पक्ष दशमी को रघुनन्दन श्रीराम द्वारा रावण का बध किया गया था अत: तभी से विजयोत्सव का यह पर्व सारे राष्ट्र में (विजय दशमी के रूप में) मनाया जाता है।

चैत्रे नवम्यां शुभशुक्लपक्षे श्रीरामजन्मोत्सव आर्यमान्य: ।
पुन: पर: श्रावणशुक्लपक्षे दोलोत्सवोऽप्यत्र विधीयमान: ॥162॥

चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को श्रीराम का जन्मोत्सव यहाँ मनाया जाता है तथा श्रावण शुक्ल पक्ष में यहाँ झूला का उत्सव मनाया जाता है।

पुण्यं महत् कार्तिकपूर्णिमायां सरित्सरय्वां सवनेऽत्र सिद्धम् ।
श्रीरामसीताऽगमनात्प्रसिद्धा दीपावलिर्भात्यनुवर्षमत्र ॥163॥

कार्तिक की पूर्णिमा को सरयू नदी में स्नान करने से अत्यन्त पुण्य प्राप्त होता है, ऐसी प्रसिद्धि है। लंका विजय के बाद श्रीराम और सीता के अयोध्या में आगमन की तिथि कार्तिक अमावस्या थी, अत: यहाँ प्रतिवर्ष दीपावली का पर्व बड़े उत्साह से मनाया जाता है।

काञ्ची

काञ्चीपुरीयं परमा पवित्रा कामाक्षिदेव्या इह शक्तिपीठम् ।
सत्यस्थिनां पञ्जरपातभूमि: भूतत्त्वलिङ्गान्वितीर्थमेतत् ॥164॥

यह काञ्चीपुरी अत्यन्त पवित्र है। कामाक्षी देवी का यह शक्तिपीठ है, यहाँ सती का अस्थिपंजर कंकाल गिरा था अत: इसे शक्तिपीठ माना जाता है। भारत के दक्षिणी भाग के पंचतत्त्व लिंगों में भूतत्त्व लिंग यहाँ कुछ लोग मानते हैं, किन्तु इसमें विद्वान् एक मत नहीं हैं।

काञ्चीद्वयी विष्णुशिवाभिधाना शिवस्य काञ्च्यामिह सर्वतीर्थम् ।
सरोवर: स्नानकृते पुनीत: मध्ये सरो मन्दिरमस्ति शम्भो: ॥165॥

इस पुरी के दो भाग हैं विष्णुकाञ्ची और शिव काञ्ची। शिवकाञ्ची में सर्वतीर्थ नामक सरोवर है जो स्नान के लिए अत्यन्त पवित्र माना जाता है। सरोवर के मध्यभाग में शिव का मन्दिर है।

विष्णोश्च काञ्च्यामपि तीर्थभूतः सरोवरो भाति परः पवित्रः ।
वाराहविष्णुप्रवरप्रदानां सुदर्शनस्यापि गृहाणि सन्ति ।।166।।

विष्णुकाञ्ची में तीर्थ सरोवर है जो अत्यन्त पवित्र माना जाता है। सरोवर के तट पर श्रीवरदराज, विष्णु वाराह मन्दिर, नृसिंह मन्दिर और उसके पीछे सुदर्शन मन्दिर है।

एकस्य चाम्रेश्वरनामकस्य सन्मन्दिरं तन्महतां महच्च ।
द्वारस्थितस्तम्भविनिर्मितानां सद्विग्रहाणां परमाऽस्ति शोभा ।।167।।

काञ्ची का मुख्य मन्दिर एकाम्रेश्वर मन्दिर है जो सबसे विशाल और भव्य है। इस मन्दिर के दक्षिण वाले परकोटे के स्तम्भों में अनेक देवताओं की सुन्दर मूर्तियाँ बनी हैं।

ब्रह्मण्यलम्बोदरमूर्तियुक्तं द्वारं तदाम्रेश्वरमन्दिरस्य ।
शिवाख्यगङ्गासर एकमाप्तं द्वितीयकक्षाश्रितमेतदस्ति ।।168।।

आम्रेश्वर मन्दिर के द्वार के दोनों ओर सुब्रह्मण्य तथा गणेश के मन्दिर हैं। इसकी दूसरी कक्षा में पवित्र शिवगंगा सरोवर है।

अम्भोविहारोत्सव आर्यवर्यैर्विधीयते मूर्तिजलाभिषेकः ।
ज्येष्ठे च मासेऽस्य महोत्सवस्य मेलापकायोजनमत्र भव्यम् ।।169।।

ज्येष्ठ के महीने में यहाँ भक्तों द्वारा जलविहार का उत्सव किया जाता है, इस उत्सव में मूर्तियों का जलाभिषेक किया जाता है। इस अवसर पर मेले का आयोजन भी होता है।

एकाम्र ईशे न जलाभिषेकः सुवासितं तैलमिहास्ति मान्यम् ।
शिवस्य यात्रा प्रतिसोमवारं भक्तैः समायोज्यत एव नित्यम् ।।170।।

एकाम्रेश्वर महादेव का जलाभिषेक नहीं किया जाता इनका अभिषेक चमेली के सुगन्धित तेल से किया जाता है। प्रत्येक सोमवार को भक्तों द्वारा भगवान् की सवारी निकाली जाती है।

देवालयास्य परिक्रमाया महन्महत्त्वं प्रथितं पृथिव्याम् ।
परिक्रमायायां बहुदेवतानां सद्दर्शनैस्तुष्यति भक्तवर्गः ।।171।।

इस मन्दिर की परिक्रमा करने का अत्यन्त महत्त्व प्रसिद्ध है। परिक्रमा करते समय अनेक देवी-देवताओं के दर्शन का लाभ भक्तों को प्राप्त होता है।

कामाक्षिरूपा गिरिजा पुराऽत्र ह्यधो रसालस्य समाधिभग्ना ।
स्वशापमुक्त्यै तपसि प्रवृत्ता तेनाऽत्र तीर्थं परमं प्रसिद्धम् ॥172॥

पहले कभी कामाक्षी रूपा पार्वती ने यहाँ आम के पेड़ के नीचे शाप से मुक्ति के लिए तपस्या करती हुई समाधि में तल्लीन थीं, अत: यह स्थल परम तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

तीर्थेष्ववाच्यां दिशि शक्तिपीठं मीनाक्षिदेव्या: परमं विभाति ।
समग्रलक्ष्मीयुतकामकोटियन्त्रं शुभं द्वारि विनिर्मितं यत् ॥173॥

भारतीय तीर्थों में दक्षिण दिशा का सर्वश्रेष्ठ पीठ मीनाक्षी - शक्ति पीठ है। मन्दिर की दृष्टि से भी यह विशाल है। इस मन्दिर के द्वार पर कामकोटि यंत्र में विद्यालक्ष्मी, सन्तान लक्ष्मी, सौभाग्य लक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी तथा विजयलक्ष्मी अंकित है।

शिवस्य काञ्च्या सममन्दिराणि द्वाराणि कोटिं प्रति निर्मितानि ।
एतेषु सर्वाधिकमान्यमास्ते श्रीकामकोटेरिह मन्दिरं यत् ॥174॥

शिव काञ्ची के सभी शैव एवं वैष्णव मन्दिर इस प्रकार बने हैं कि सभी के मुख कामकोटि पीठ की ओर है। इन सभी मन्दिरों में प्रसिद्ध और मान्य श्रीकामकोटि का मन्दिर है।

श्रीकामकोटेर्निकटं विभाति श्रीवामनागारमिहैव रम्यम् ।
त्रिविक्रमस्यात्र विशालमूर्तिर्बले: शिरस्यङ्घ्रियुता प्रशस्ता ॥175॥

श्रीकामकोटि मन्दिर के समीप श्रीवामन भगवान् की रम्य मूर्ति सुशोभित है। त्रिविक्रम भगवान् की मूर्ति जो बलि के शिर पर पैर रखे हुए है, अत्यन्त विशाल है। (यह मूर्ति दस हाथ (पन्द्रह फीट) ऊँची है पुजारी एक बाँस में मशाल जलाकर इस मूर्ति के मुख का दर्शन कराता है।)

श्रीकार्तिकेयस्य च वामनाग्रे विनिर्मितं मन्दिरमस्ति भव्यम् ।
ब्रह्मण्यशक्त्याऽस्य परा प्रतिष्ठा शिवस्य काञ्च्यां बहुमन्दिराणि ॥176॥

वामन मन्दिर के कुछ आगे एक भव्यमन्दिर कार्तिकेय का बनाया गया है। ब्रह्मण्य शक्ति के कारण इनकी बहुत अधिक प्रतिष्ठा है। शिवकांची में और अनेक मन्दिर बने हैं। (चेंगलपेट जंक्शन से अरकोनम की ओर पैंतीस किलोमीटर पर कांचीपुरम् स्टेशन है। मद्रास आदि नगरों से बसें भी यहाँ आती हैं।)

त्रिस्थली-तीर्थ

या त्रिस्थली भारततीर्थमुख्या मोक्षप्रदा पितृविमोक्षसिद्धा ।
काशीं प्रयागञ्च गयां हि तस्यां पिण्डं प्रदातुं गणयन्ति सन्तः ।।177।।

तीर्थों में प्रमुख तीन स्थलों को सर्वाधिक महत्त्व प्राप्त है। ये तीनों मोक्ष प्रदान करने वाली त्रिस्थली कहीं जाती हैं। इसमें काशीधाम (वाराणसी) प्रयागराज और गया की गणना भक्तों और सन्तों ने की है। काशी के लिए कहा जाता है कि यहाँ मरने में मुक्ति मिलती है - 'काश्यां मरणान्मुक्तिः'। कबीर जब मरने लगे तो लोगों से कहा 'मुझे वाराणसी के उस पार कर दो।' लोगों ने पूछा- क्यों ? कबीर ने कहा - 'ज्यो कबिरा काशी मरै रामहिं कौन निहोर।' कबीर तपस्वी थे भगवान् का भजन करते थे वे कहीं अन्यत्र मरते तो भगवान् की आराधना का फल मिलता। इससे सिद्ध होता है कि पापी भी काशी में मरता है तो उसे मुक्ति मिलती है। इसी प्रकार प्रयाग के बारे में कालिदास ने लिखा है - 'तत्त्वावबोधेन विनाऽपि भूयस्तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्धः।' (रघुवंश त्रयोदश सर्ग) अर्थात् गंगायमुना के संगम में स्नान करने से मुक्ति मिलती हैं। सामान्य सिद्धान्त है - 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती, किन्तु संगम स्नान से, विना ज्ञान के भी मुक्ति मिल जाती है। गया महात्मा गौतम बुद्ध की तपस्थली है। सारे राष्ट्र के लोग पितरों की मुक्ति के लिए यहाँ पिण्डदान करने आते हैं, प्रेतयोनि में पड़े व्यक्ति का गया में पिण्डदान करने पर उसे मुक्ति मिल जाती है, ऐसा भारतीय जनता का अनुभूत विश्वास है।

गया

पुंनामकात्त्रायत इत्यभिज्ञः पुत्रो हि शब्दो जगति प्रसिद्धः ।
उद्धारिता येन सुपिण्डदानैः स्वपूर्वजा धन्यतमः स पुत्रः ।।178।।

पुम् नामक नरक से रक्षा करता है - (पुम्नामकात् नरकात् त्रायते - इति पुत्रः) इसी कारण उसकी जगत में 'पुत्र' यह संज्ञा प्रसिद्ध है। अन्त्येष्टि का क्रिया-कर्म और पिण्डदान करके जो अपने पितरों का उद्धार करता है वहीं धन्यतम पुत्र है।

मुक्त्यै कुरुक्षेत्रगयाधिवासः ब्रह्मज्ञता श्राद्धमथो गयायाम् ।
प्राणार्पणेनापि गवां सुरक्षा चत्वारि मुक्तेः किल साधनानि ।।179।।

1. मुक्ति के लिए कुरुक्षेत्र में निवास, 2. ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति, 3. गया में श्राद्ध, 4. प्राणों की परवाह न करते हुए गाय की रक्षा ये चार मुक्ति के साधन शास्त्रों में बताए गए हैं।

गयासुरस्यात्र तपः प्रभावै रेतद्वपुःस्पर्शकृतान् मनुष्यान् ।
स्वर्गप्रयातानवलोक्य विष्णुस्तं मृत्यवे प्रेरितवानिहैव ।।180।।

वर्तमान गया तीर्थस्थल पर गयासुर ने तपस्या की। परिणाम यह हुआ कि उसके शरीर का स्पर्श करने से लोग स्वर्ग जाने लगे ऐसा देखकर यमराज तथा देवताओं को चिन्ता हुई, अतः विष्णु ने उसे मृत्यु के लिए प्रेरित किया।

गयासुरे मृत्युकृते प्रपन्ने पादाववाच्यां च विधाय सुप्ते ।
शयानमालोक्य तदीय भाले संस्थापिता धर्मशिला विधात्रा ।।181।।

विष्णु के समझाने पर जब गयासुर मृत्यु के लिए तैयार हुआ, तब वह दक्षिण की तरफ दोनों पैर करके लेट गया। उसे लेटा हुआ देखकर ब्रह्मा ने उसके शिर पर धर्म शिला रख दी।

तथापि मृत्युर्न बभूव येन स्थितः शिलायामिह देववर्गः ।
तेनासवस्तस्य गता अभूवन् भूमिश्च साऽभूत्किल तीर्थरूपा ।।182।।

धर्मशिला के रखने पर भी जब गयासुर की मृत्यु नहीं हुई तब सभी देवता उसके ऊपर चढ़ गए जिससे भार अधिक हो जाने से उसकी मृत्यु हो गई (प्राण निकल गए) और वह धरती तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हो गई।

श्रीविष्णुनाऽस्मै च वरं प्रदत्तं गयासुरस्यास्य हि मृत्युभूमौ ।
श्राद्धं विधायात्र हि पूर्वजानां ते ब्रह्मलोकं खलु चाप्नुवन्ति ।।183।।

श्री विष्णु भगवान् ने यह वरदान दिया कि जो गयासुर की मृत्युभूमि पर पितरों का श्राद्ध करेगा, उसके पूर्वज तो ब्रह्मलोक प्राप्त करेंगे वह भी मृत्यु के बाद ब्रह्मलोक को प्राप्त करेगा।

गयाशिरो विष्णुपदं पवित्रं समागतो यत्र च देववर्गः ।
अहिल्यया निर्मितमन्दिरं यत् तत्साम्प्रतं विष्णुपदं प्रसिद्धम् ।।184।।

गयासुर के शिर पर जहाँ देववर्ग खड़ा हुआ था वहीं पर इन्दौर की होल्कर की महारानी अहिल्या बाई ने मन्दिर का निर्माण कराया है। उसे इस समय विष्णुपद कहा जाता है।

कुण्डैर्नदीभिर्गिरिभिश्च दिव्यं तीर्थं द्विधा भाति विभाजितं यत् ।
तदन्तरं प्राक् प्रथितं द्वितीयं फल्गोश्च नद्यास्तटमन्तिकस्थम् ।।185।।

जल कुण्डों, नदियों और पर्वतों से सुन्दर यह तीर्थ दो भागों में विभक्त है (इसे नया गया तथा पुराना गया कहा जाता है) एक भाग गया स्टेशन के समीप और दूसरा साहिबगंज (गया) फल्गुनदी के किनारे है। (विष्णुभगवान् के पावन शरीर से सुवासित फल्गु नदी) में स्नान का महत्त्व है। वर्तमान में सभी नदियों की तरह वह भी प्रदूषण से मुक्त नहीं है।)

वटेऽक्षये धर्मशिलासु पिण्डं दत्वाऽत्मपूर्वान् परितोषयद्भिः ।
श्राद्धं निजस्यापि तिलं विनेह कृत्वाऽस्य पिण्डं हरये प्रदेयम् ।।186।।

अक्षय वट और धर्मशिलाओं पर पिण्डदान कर पूर्वजों को तृप्ति प्रदान करने वाले अपना भी श्राद्ध बिना तिल के करते हैं यह पिण्डदान विष्णु के लिए प्रदान किया जाता है।

गयां गतः पितृविमोक्षणाय पूर्वं तदावाहनमत्र कार्यम् ।
दत्त्वासनं पितृजनेभ्य आद्यं दानं विधायारभतां स्वकृत्यम् ।।187।।

गया जाने पर पितरों की मुक्ति के लिए पहले उनका आवाहन करना चाहिए उसके बाद उन्हें आसन प्रदान करना चाहिए फिर दान देकर पिण्डदान का कृत्य प्रारंभ करना चाहिए।

तपस्विरूपेण भवेद् गयायां भूमौ शयानो न मुधा प्रजल्पेत् ।
हितं समेषां परिकल्प्य धीरो न मादकं द्रव्यमथो भुनक्तु ।।188।।

पिण्डदान के लिए गया जाने पर व्यक्ति को तपस्वी की तरह रहना चाहिए।। जमीन पर सोना चाहिए तथा झूठ नहीं बोलना चाहिए। सभी के हित की कल्पना करके धैर्यपूर्वक यदि नशे की लत हो तब भी मादक पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। (वैसे गया में श्राद्ध कराने वाले पण्डित किसी एक प्रिय खाद्य या पेय पदार्थ को पूरे जीवन के लिए छोड़ देने की प्रतिज्ञा भी कराते हैं।)

देवर्षिवर्यान् यमचित्रगुप्तौ प्रपूज्य तेषामपि तर्पणञ्च ।
पूर्वं विदध्यात् तदनन्तरं च सुतर्पणं पितृजनस्य कुर्यात् ।।189।।

सर्वप्रथम देवर्षियों, यम और चित्रगुप्त की पूजा करके उनका भी तर्पण करना चाहिए। तत्पश्चात् अपने पूर्वजों का तर्पण करना चाहिए।

अकालमृत्युङ्गतवंशजानां प्रेतादिबाधागतपार्श्वगानाम् ।
कृते विधानं किल तर्पणस्य विशेषरूपेण कृतं गयायाम् ।।190।।

परिवार के जो लोग अकालमृत्यु से मरे हैं अथवा निकट सम्बन्ध रखने वाले जो प्रेत बाधा से परेशान है उसके लिए गया में विशेष प्रकार का विधान विहित है।

सुतर्पणानन्तरमग्रिमेऽह्नि पिण्डस्य दानं क्रियतेऽत्र पुत्रैः ।
श्राद्धं हि तद्विष्णुपदस्य पार्श्वे सङ्कल्पपूर्वं च विधीयते तैः ।।191।।

पहले दिन के विधिवत तर्पण के बाद अगले दिन पुत्रों द्वारा जो पिण्डदान किया जाता है वह विष्णुपद के समीप सम्पन्न किया जाता है। श्राद्ध के पूर्व संकल्प अवश्य किया जाना चाहिए।

पिण्डस्य दानाय बहुस्थलानि कुण्डानि वृक्षान् प्रति यान्ति पुत्राः ।
विष्णोः पदाद्रामशिलां गतैस्तैर्देयं यमायास्य च कुक्कुराभ्याम् ।।192।।

गया में पिण्डदान करने के बहुत से स्थान है कहीं कुण्डों के पास कहीं वृक्षों के नीचे श्राद्ध और पिण्डदान किया जाता है। विष्णुपद से रामशिला की ओर जाकर पुत्रगणों द्वारा यम और उनके दो कुत्तों को पिण्डदान किया जाता है।

ततः शिलापूर्वदिशि स्थितेऽस्मिन् सरोवरे स्नानविधिर्विधेयः ।
पुनर्गतः प्रेतशिलाञ्च प्रेतान् प्रति पिण्डदानं सवनं च कुण्डे ।।193।।

उसके बाद शिला के पूर्व की ओर स्थित सरोवर में स्नान करने का विधान है। वहाँ प्रेतशिला पर जाकर प्रेतों के लिए पिण्डदान और कुण्ड में स्नान करने का नियम है।

अतः परं काकबलिः प्रदेयः वटेऽक्षये पूर्वजपिण्डदानम् ।
अन्ते यथाशक्ति च दक्षिणाऽपि विप्राय नूनं सुफलाय देया ।।194।।

इसके बाद काकबलि देना चाहिए और अक्षय वट जाकर पूर्वजों को पुनः पिण्डदान करें। अन्त में अवश्य ही ब्राह्मण (जो कर्मकाण्ड विधि सम्पन्न कराता है) को सुफल प्राप्ति के लिए दक्षिणा देनी चाहिए।

सर्वोत्तमः श्राद्धकृते सुकालः कृष्णेऽश्विने पितृदले तु मान्यः ।
चैत्रे च पौषेऽपि विधीयमानं श्राद्धं गयायां तनयस्य धर्मः ।।195।।

वैसे तो गया में श्राद्ध के लिए सर्वोत्तम समय अश्विन मास का कृष्ण पक्ष (जिसे पितृपक्ष भी कहा जाता है) माना गया है तथा चैत्र और पौष में भी श्राद्ध किया जा सकता है। गया में श्राद्ध करना पुत्र का परम कर्त्तव्य है।

विष्णोर्गृहं वैतरणीह्रदं च मासाङ्कहस्तेह च मुण्डपृष्ठा।
अत्रैव भात्यादिगया शिला चसूर्यस्य सन्मन्दिरमत्र चास्ते ॥196॥

यहाँ मुख्य मन्दिर विष्णु भगवान् का है। गया के सभी कुण्डों में महत्त्वपूर्ण वैतरणी कुण्ड माना जाता है क्योंकि इसे स्वर्ग और मर्त्यलोक के बीच बहने वाली नदी कहा जाता है। मुण्डपृष्ठा का मन्दिर गयासिर के पास है जिसमें बारह हाथों वाली मुण्डपृष्ठा देवी विराजमान है। यहाँ पर आदि गया शिला तथा धौतपाप नाम सफेद शिला है। लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर सूर्य मन्दिर है।

बौद्धी गया योजनमेकमास्ते बुद्धस्य बोधस्थलमेतदस्ति।
अशोकसन्निर्मितमन्दिरं यत् ख्यातं महाबोध्यभिधानमस्य ॥197॥

पिण्डदान वाली गया से बुद्धगया बारह किलोमीटर दूर है। यह भगवान् गौतम बुद्ध की तपोभूमि है जहाँ उन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी यहाँ सम्राट अशोक ने एक मन्दिर बनवाया था जिसे महाबोधि मन्दिर कहा जाता है।

श्रीगौतमस्यात्र विशालमूर्तिः संस्थापिता राजति ध्यानमग्ना।
बिहारराज्ये चान्यं हि बौद्धं तीर्थं तु वैशाल्यभिधं प्रसिद्धम् ॥198॥

सम्राट अशोक द्वारा बनवाए गए मन्दिर में महात्मा गौतम बुद्ध की विशाल मूर्ति है जो ध्यान मग्न मुद्रा में स्थित है। बिहार में ही अन्य बौद्ध तीर्थ है जिसे वैशाली कहा जाता है। (यह बिहार की राजधानी पटना से 260 किलोमीटर दूर है।) यहाँ बुद्ध कई बार आए थे और उपदेश दिया था अतः इसे भी बौद्ध तीर्थ माना जाता है।

जैनस्य तीर्थङ्करजन्मभूमिः जातो महावीर इहैव पूर्वम्।
नालन्दनाम्नेह च विश्वविद्यालयोऽवशेषैरधुनाऽनुमेयः ॥199॥

वैशाली ही जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थङ्कर महावीर की जन्मस्थली है। विश्व प्रसिद्ध नालन्दा विश्वविद्यालय भी यहीं था जिसके अवशेषों से उसका अनुमान किया जा सकता है।

इस्लामधर्मस्य परं बिहारशरीफतीर्थं किल राजगीरे।
त्रियोजनेऽन्यं जिनतीर्थमास्ते पञ्चाचलैः शोभितमन्दिराणि ।।200।।

इस्लाम धर्मावलम्बियों का बिहार शरीफ तीर्थ राजगिर नामक स्थान पर पटना से 24 किलोमीटर है। यहाँ जैन मन्दिर भी हैं जिससे यह जैन तीर्थ भी है। पाँच पर्वतों (वैभार, विपुलाचल, रत्नगिरि, उदयगिरि और स्वर्णगिरि) से घिरे इस राजगिर नामक स्थान पर अनेक जैन मन्दिर बने हैं।

प्रयागतीर्थम्

प्रकृष्टयागैः प्रथितप्रयागः त्रिवेणिका यत्र सदाप्तनीरा।
भागीरथीसूर्यसुताङ्गसङ्गा सान्तः प्रवाहा च सरस्वतीह ।।201।।

अनेक श्रेष्ठ यज्ञों के निरन्तर सम्पन्न किए जाने के कारण इसे प्रयाग कहा जाता है जो आज भी अपने नाम का अन्वर्थक है। यहाँ गंगा तथा यमुना दो पवित्र नदियों का संगम है तथा सरस्वती अन्तःप्रवाह वाली है। अतः गंगा यमुना तथा सरस्वती के मिलन के कारण इसे त्रिवेणी कहा जाता है। वैसे प्राकृतिक दृष्टि से एक ओर गंगा आकर आगे की ओर प्रवाहित होती है उसमें यमुना मिलती है ये दो धाराएँ एक होकर आगे बढ़ती है अतः संगम के मध्य से देखने पर तीन धाराएँ दिखाई देती हैं। अतः त्रिवेणी नाम सार्थक होता है।

प्रोक्तं महाभारत आदिपर्वे सोमस्य धातुर्वरुणस्य चात्र।
जनिस्थलं, वारिधिमन्थनोत्थः सुधाघटादत्र पपात बिन्दुः ।।202।।

महाभारत के आदि पर्व में यह वर्णन प्राप्त होता है कि यह सोम, ब्रह्मा और वरुण का जन्म स्थान है। समुद्रमन्थन में अमृत निकला था उसे घट में रखकर ले जाते समय घट से एक बूँद यहाँ गिरी थी, अतः यहाँ कुम्भपर्व का एक महीने भर चलने वाला मेला प्रत्येक बारह वर्ष पर होता है जो संसार का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मेला है।

कुम्भस्य चान्यत्कलशाभिधानं कात्सृष्टिकर्त्ता विहितो विधाता।
लाल्लालने विष्णुरिति प्रसिद्धः शाच्छङ्करो संहरणे प्रतीतः ।।203।।

कुम्भ का अन्य नाम कलश है। इसके तीन अक्षर 'क', 'ल' तथा 'श' जिसका प्रतीकात्मक तात्पर्य है 'क' याने जल 'अप् एव ससर्जादौ' अतः 'क' ब्रह्मा का सूचक है 'ल'

लालन का प्रतीक है लालन पालन करने वाले देव विष्णु हैं अत: 'ल' विष्णु का सूचक है। 'श' शङ्कर के नाम का प्रथमाक्षर है जो संहारकर्ता शिव का प्रतीक है। अत: कुम्भ या कलश त्रिदेवों का प्रतीक माना जाने के कारण अत्यन्त शुभ माना जाता है।

उत्पत्तिपोषप्रलयान् विधते सच्चिन्मयी या परमेशशक्तिः।
धातागुणैः सञ्जनने प्रसिद्धः पोषे च विष्णुः प्रलये शिवश्च ॥204॥

इन त्रिदेवों की सच्चिन्मयी शक्ति उत्पत्ति, पोषण और प्रलय करती है। अपने गुणों से उत्पत्ति के लिए ब्रह्मा, पालन-पोषण के लिए विष्णु और संहार के लिए शिव प्रसिद्ध है। अंग्रेजी में (ईश्वर) God शब्द के तीन अक्षर 'G' = Generator (उत्पत्तिकर्ता) 'O'= Organizer (व्यवस्थापक), और 'D' = Distroyer नष्ट करने वाला इस प्रकार यह शब्द भी सम्मिलित चिन्मयी शक्ति का द्योतक है।

इसी प्रकार 'अल्लाह' ईश्वर खुदा अल+इलाह से बना है। अल अरबी भाषा में अंग्रेजी भाषा के दी (The) की तरह प्रयुक्त होता है। इलाह अर्थात् पूज्य। अल्लाह आरम्भ से उसी सत्ता का नाम रहा है जो सम्पूर्ण सद्गुणों से युक्त विश्व का रचयिता सब का स्वामी और पालनकर्त्ता है। धात्वर्थ की दृष्टि से 'इलाह' उसे कहा जायेगा जो सर्वोच्च और रहस्यमय हो, हमारी आँखे जिसे देख न सकें जिसकी पूर्ण कल्पना भी संभव न हो, जो मनुष्य का शरणदाता हो, जिसकी ओर वह अपनी सम्पूर्ण आकांक्षा से लपक सके, जिसे वह संकटों में पुकार सके, जो शान्ति प्रदाता हो, जो अपने बन्दों को प्रेमपूर्वक बढ़ाता हो, जिसकी ओर बन्दे भी बढ़ सकें, जो मनुष्य का प्रिय और अभीष्ट हो, जिसे वह अपना आराध्य और पूज्य बना सके। ये समस्त विशेषताएँ केवल 'अल्लाह' में ही पाई जाती है, इसलिए वही अकेला 'इलाह' और पूज्य है। (कुरआन का हिन्दी अनुवाद : अनुवादक - मौलाना मुहम्मद फारुक खॉ तथा डॉ. मुहम्मद अहमद पृ. 597-98)

इरानी भाषा में 'ईल' शब्द अल्लाह के लिए प्रयुक्त हुआ है जैसे 'इजराईल' = अल्लाह का बन्दा। 'ईड' स्तुतौ, 'ईर' गतौ, 'अल' भूषण पर्याप्ति वारणेषु, 'अह' व्याप्तौ 'इल' प्रेरणे आदि संस्कृत भाषा की धातुओं में पूज्यादि भाव सन्निहित है। 'अल' धातु जो भूषण, पर्याप्ति और वारण अर्थ देता है और 'अह' व्याप्ति की सूचक है दोनों के मेल से 'अलआह' बनता है जो ईश्वर के वैशिष्ट्य को बताता है। इस प्रकार ईश्वर की अवधारण ही नहीं उसके लिए प्रयुक्त संज्ञाओं में भी साम्य दिखाई देता है।

प्रयाग का नवीन नाम इलाहाबाद है, एल राजा के वास के कारण इलावास है इसका भाषा प्रयोग के प्रवाह से परिवर्तन हो गया है अथवा अल्लाह बाद । 'अल्लाह' याने ईश्वर और 'बाद' निवास का सूचक है। बाद, आबादी आदि शब्दों का बहुधा प्रयोग मिलता है जो निवास के सूचक हैं। इलाहाबाद से भी ईश्वर के निवास या पवित्र भूमि की सूचना प्राप्त होती है। रोमन में इसका प्रथम अक्षर अ (A) से प्रारंभ होता है 'इ' (I) से नहीं अत: अल्लाहाबाद ही मूल शब्द है जिसे लेखन और भाषण में इलाहाबाद कर दिया गया है। इला वैवस्वत मनु की कन्या थी उसके निवास से इलावास (वास उर्दू में बाद कहा जाता है) कुछ दूरी पर मनइया गाँव हैं जिसे मनु की तपस्थली बताया जाता है। इलावृत्त जम्बूदीप के नौ वर्षो में से एक है जो सुमेरु पर्वत के चारों ओर फैला है। उत्तर में नील पर्वत, दक्षिण में निषध पश्चिम में माल्यवान् और पूर्व में गन्धमादन इसका वर्णन श्रीमद्भागवत के पञ्चम स्कन्ध और विष्णुपुराण 2.1.16-18 में प्राप्त होता है।

तीर्थानि देवा: सकलाश्च जीवा: कुम्भे वसन्तीति च मन्यमानै: ।।
कुम्भार्चनं यत्क्रियतेऽत्रहेतु: कुम्भस्तु परमेश्वररूप एव ।।205।।

प्रयाग के कुम्भ में जो दिव्य कुम्भ का प्रतीक है, सारे तीर्थ, सभी देवता, सभी जीव, आकर यहाँ निवास करते हैं। इसीलिए ऐसा मानने वाले कुम्भ के प्रतीकभूत कलश की पूजा करते हैं उसकी मंगलिक कार्यों में स्थापना करते हैं, स्वागत में दिखाते हैं उसकी शोभायात्रा निकालते है, क्योंकि कुम्भ को परमेश्वर का रूप माना जाता है।

जयत्वदो भारतराष्ट्रमाप्तं तीर्थाधिपो यस्य भुवि प्रयाग: ।
तमोपहन्त्री तमसा च यत्र रामायणं यत्पुलिने प्रणीतम् ।।206।।

उस पूजनीय भारत राष्ट्र की विजय हो, तीर्थराज प्रयाग जैसा पवित्र स्थल जिसकी धरती पर स्थित है, जहाँ अन्धकार (तम) का हनन करने वाली सदानीरा तमसा (वर्तमान में सतना-रीवा में जिसे 'टमस' और इलाहाबाद में 'टौंस' कहा जाता है।) नदी विद्यमान है जिसके तट पर महर्षि वाल्मीकि आदिकवि ने जीवन के उदात्त मूल्यों के प्रेरक रामायणम् की रचना की है। वाल्मीकि रामायण/बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में इसका वर्णन प्राप्त होता है। भरद्वाज वाल्मीकि के शिष्य थे, जो गंगा-यमुना के संगम पर रहते थे और वाल्मीकि से मिलने आते थे। उन्हीं को वाल्मीकि तमसा के पवित्र जल को दिखा रहे थे उसी समय एक व्याध ने क्रौञ्च युगल में से एक को मार दिया। वाल्मीकि के मुख से 'मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:' के रूप में जो शाप की लयपूर्ण श्लोकात्मक वाणी निकली, वही उनके काव्यरचना का हेतु बनी तथा कविता के लिए वरदान सिद्ध हुई। विशेष जानकारी के लिए पूरा सर्ग अवलोकनीय है।

वनप्रयाणावसरे ससीतः सलक्ष्मणो राम इहागतो ऽभूत् ।
मुनिं भरत्वाजममुष्य तीर्थमृषिञ्च वाल्मीकिमथो ववन्दे ॥207॥

वनगमन के समय इस प्रयाग तीर्थ में श्रीराम सीता तथा लक्ष्मण के साथ आए थे। पहले वे भरद्वाज से मिले और उन्हें नमन किया तथा उनसे ही वाल्मीकि के तपोवन का मार्ग पूछ कर वाल्मीकि को प्रणाम किया था। भरद्वाज ने उन्हें वाल्मीकि तपोवन का मार्ग बताया था कि यहाँ से दस कोश दक्षिण पूर्व की ओर तमसा के तट पर वाल्मीकि का आश्रम है - 'दश क्रोश इतस्तात !' तथा 'दक्षिणेन च मार्गेण सव्य दक्षिण मेव च।' अर्थात् उन्होंने कहा कि यहाँ से दस कोश (तीस किलो मीटर) पर वाल्मीकि का आश्रम है यहाँ से दक्षिण जाना है किन्तु दक्षिण बाएँ हाथ की तरफ जाना है दक्षिण तरफमुख करने पर बायाँ हाथ पूर्व की ओर होता है। इस प्रकार पूर्व दक्षिण की ओर जाने को कहा। आज भी गंगा में मिलने वाली तमसा नदी पूर्व दक्षिण और प्रयाग से तीस किलोमीटर की दूरी पर पड़ती है। उत्तर काण्ड में भी सीता को वाल्मीकि तपोवन में पहुँचाने के लिए लक्ष्मण को स्थान बताते हुए श्रीराम कहते हैं - 'गंगायास्तु परे पारे वाल्मीकेस्तु महात्मनः। आश्रमो दिव्यसङ्काशः तमसातीरमाश्रितः ॥' इस प्रकार वाल्मीकि का तपोवन तमसा और गंगा के संगम पर था, इसमें वाल्मीकि रामायण का वर्णन अन्तः साक्ष्य के रूप में इस तथ्य को दृढ़ता से प्रमाणित करता है। श्रद्धा के कारण जैसे अयोध्या के अतिरिक्त भी सारे देश में श्रीराम के मन्दिर हैं, उसी प्रकार श्रीराम के चरित के गायक और महर्षि वाल्मीकि के प्रति अतिशय श्रद्धा के कारण जहाँ-जहाँ उनके जाने का ग्रन्थों में प्रसंग मिलता है वहाँ-वहाँ वाल्मीकि के आश्रम बनाए गए हैं। ऐसा भारतीय संस्कृति के उदात्त जीवन मूल्यों के आदर्श (माडल) श्रीराम और उसके प्रणेता वाल्मीकि के प्रति आस्था के कारण हुआ है। जिसका उद्देश्य यह है कि श्रीराम कथा के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था के विविध केन्द्र राष्ट्र में बने रहें। कोई यदि उन्हें अपने प्रदेश, जिले, तहसील कस्बा या गाँव का मानता है इससे श्रीराम और वाल्मीकि का महत्त्व ही आरेखित होता है। अतः वाल्मीकि के तपोवन की अवस्थिति के विवाद से कोई लाभ नहीं है। तमसा का गंगा से मिलन इलाहाबाद जिले में सिरसा और पनासा के पास होता है वाल्मीकि रामायण के वर्णनों से यही स्थान वाल्मीकि का तपोवन सिद्ध होता है। वाल्मीकि का केन्द्रीय मुख्य आश्रम तमसागंगा के संगम पर ही सिद्ध होता है ।

तत्त्वावबोधेन विना न मुक्तिः किन्त्वत्र तीर्थे सवने विमुक्तिः ।
सर्वे क्षयान्ता निचया जगत्यां बटोऽक्षयः किन्तु विराजतेऽत्र ॥208॥

तीर्थराज प्रयाग का अद्भुत वैशिष्ट्य यह है कि सामान्य मान्यता है - 'विना ज्ञान के मुक्ति

नहीं होती किन्तु गंगा और यमुना के संगम में स्नान करने से बिना ज्ञान के मुक्ति होती है' कालिदास कहते हैं -

समुद्रपत्न्योर्जलसन्निपाते पूतात्मनामत्र किलाभिषेकात् ।
तत्त्वावबोधेन बिनाऽपि भूयः तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्धः ।।209।।

(रघुवंश त्रयोदश सर्ग)

दूसरा वैशिष्ट्य यह है - 'सभी का नाश होता है' यह शास्त्रीय मत है किन्तु यहाँ अक्षय बट है, जो कभी समाप्त नहीं होता ।।

आदित्यमासा ननु राशयश्च ते द्वादशाङ्का सम एव कुम्भे
यान् धारयन् पोषयति प्रकामंविष्णुर्हि भगवान् सर्वात्मभूतः ।।210।।

चैत्रादि बारहों मासों और मेषादि बारहों राशियों को धारण करते हुए सर्वात्मा भगवान् विष्णु सारे जगत् का पोषण करने के लिए कुम्भ में यहाँ निवास करते हैं।

स्कान्दे च मात्स्ये किल कीर्तिरस्य संवर्णिता येन हि तीर्थराजः ।
शोकाच्च रोगाच्च भयाद्विमुक्तिः तीर्थेऽत्र नित्यं सुलभा विभाति ।।211।।

स्कन्दपुराण तथा मत्स्य पुराण में प्रयाग की कीर्ति का वर्णन करते हुए इसे तीर्थराज (तीर्थों का राजा) कहा गया है। 'निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ।' उपकूल जलाशय, आगम (वेदादिशास्त्र), ऋषियों द्वारा सेवित जल, गुरु (उपाध्याय) को तीर्थ कहा जाता है। 'गङ्गे!च यमुने!चैव गोदावरि ! सरस्वति ! नर्मदे ! सिन्धुकावेर्यौ ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।' ये सात नदियाँ पवित्र मानी जाती हैं। विशिष्ट पर्वों पर इनमें स्नान किया जाता है। भारतीय स्नान के समय सभी पवित्र नदियों का अपने स्नानीय जल में आवाहन करते हैं। प्रयाग में तीन पवित्र नदियों का सङ्गम माना जाता है। लुप्त सरस्वती में प्रवाहित होने वाला जल भी गंगा और यमुना में मिल कर प्रयाग आता है। सभी पवित्र नदियों की तुलना में एक साथ तीन नदियों के स्नान का फल प्राप्त होने से इसे तीर्थराज कहा जाता है। प्राचीन काल में आवागमन नदियों से होता था इस दृष्टि से यदि नदियों की स्थिति पर विचार करें तो आसाम से ब्रह्मपुत्र, मध्यप्रदेश से सोन और तमसा गंगा में तथा केन, वेतवा, धसान और कालीसिन्ध यमुना में मिलती हैं, अतः प्रयाग की ओर अधिकतम स्थानों से जल मार्ग से आया जा सकता है। जलमार्ग से यात्रा नावों से की जाती है, इनमें टक्कर न हो इसलिए एक मार्गीयात्रा (वनवे ट्राफिक) के लिए दिक्शूल का विधान

ऋषियों ने किया है। पहले 12 वर्ष में कुम्भ के समय सभी सन्त, महात्मा, तथा हर्षादि सम्राट् यहाँ आते थे, राष्ट्र के धर्म विनिर्णय आदि पर विचार कर के सभी को अवगत कराया जाता था। अत: विश्व का सबसे बड़ा मेलापक प्रयाग में होता रहा है इसीलिए इसे वैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टि से तीर्थराज कहा जाता रहा है।

गङ्गातरङ्गैरभिमिश्रिताऽपि विलोक्यते सूर्यसुता विभिन्ना।
न केवलं लभ्यत आत्मशुद्धिर्नेत्रस्य निर्वाणफलं सुलभ्यम् ॥212॥

गंगा की लहरों से मिली हुई यमुना अपने नीले (स्वच्छ) जल के कारण अलग दिखाई देती रहती है। (रघुवंश के त्रयोदश सर्ग में गंगा और यमुना के मिलन का दृश्य अत्यन्त मनोहारी रूप में वर्णित है।) यहाँ केवल आत्मशान्ति ही नहीं मिलती अपितु नेत्र भी गंगा यमुना की मिश्रित चितकवरी धारा को देखकर तृप्ति का अनुभव करते हैं।

पुरा प्रतिष्ठानपुरं पुरस्तात् नताः समस्ता नृपराजिरासीत्।
नृपः पुरुर्वा नहुषो ययातिःदुष्यन्त आर्यो भरतश्च यत्र ॥213॥

प्राचीन काल में संगम पर स्थित राजधानी प्रतिष्ठानपुर (झूँसी) के समक्ष सारे अन्य राजा नतमस्तक थे। यहाँ राजा पुरुरवा, नहुष, ययाति, दुष्यन्त और भरत आदि राजा राज्य कर चुके हैं।

वार्यध्वना प्राक् सुलभाऽत्र यात्रा माघे महत्कूलमपीह लभ्यम्।
तेनात्र सम्मेलनयागयोग्यं येन प्रयागोऽन्विततीर्थराजः ॥214॥

प्राचीनकाल में लोग जलमार्ग से ही विशेष रूप से यात्रा करते थे, प्रयाग आना जल मार्ग से सुलभ है क्योंकि गंगा-यमुना में राष्ट्र के अधिकतम और प्रसिद्धतम स्थलों के निकट से बहने वाली नदियों से यह नगर जुड़ा हुआ है। माघ के महीने में बिना किसी साफ-सफाई के एक करोड़ से अधिक लोगों के आगमन और निवासादि के लिए प्रयाग के संगम का अत्यन्त विशाल रेतीला तट स्वयं उपलब्ध हो जाता है। इसीलिए यहाँ सन्त समागम तथा यागादि अन्य कार्यक्रमों के लिए स्थल सुलभ रहता है। यह सबसे बड़ा जलीय तीर्थ है। ध्यातव्य है तीर्थ शब्द का अर्थ विद्वान और पवित्रजल दोनों होता है। अत: विद्वानों और भरद्वाज, वाल्मीकि, दुर्वासा आदि ऋषियों के स्थायी आश्रम यहीं रहे हैं।

अशोकहर्षौ किल चन्द्रगुप्तः चागत्य तीर्थं ददतिस्म पूर्णम् ।
हर्षस्तु कुम्भेषु धनं समग्रं ददत्स आसीद्यशसा प्रसिद्धः ।।215।।

अशोक, हर्षवर्धन, और चन्द्रगुप्त आदि सम्राट् कुम्भपर्व पर यहाँ आकर-मेले को पूर्णता प्रदान करते थे। हर्षवर्धन कुम्भ मेले में अपना समस्त धन दान कर देता था ऐसी जन श्रुति है एक बार उसने अपने पहनने के कपड़े तक दान कर दिए और बहन राजश्री से वस्त्र माँगकर पहना। इसलिए वह यश का भाजन था।

अनेकराज्ञामिह राजधानी पुराऽभवत् सम्प्रति भाति दुर्गः ।
अकब्बरस्यात्र तटे विशालः यस्मिन् हि देवाश्च बटोऽक्षयश्च ।।216।।

यहाँ अनेक प्रशस्त राजाओं की राजधानी रही है। अकबर के द्वारा बनवाया गया विशाल किला गंगा-यमुना के पश्चिमी तट पर स्थित है इसमें नीचे के भाग में अनेक हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित है ऊपरी भाग भारतीय सेना के लिए आरक्षित है अक्षयवट भी इसी किले से लगा हुआ है। ऐसा कहा जाता है यह वट वृक्ष प्रलयकाल में भी सुरक्षित रहता है।

वटोऽक्षयो यो यमुनातटस्थो दुर्गस्य सीम्नि स्थित आर्यपूज्यः ।
अत्रैव पातालपुरीप्रतिष्ठाः सन्मूर्तयो देवमुनीश्वराणाम् ।।217।।

अक्षय वट विशेष रूप से यमुना से लगा हुआ है। यह दुर्ग (किले) की सीमा पर है। इसका पूजन सीता ने वनगमन के अवसर पर किया था। महाकवि कालिदास ने रघुवंश के त्रयोदश सर्ग में लिखा है - राम सीता को अक्षयवट दिखाते हुए कहते हैं -

'त्वया पुरस्तादुपयाचितो यः सोऽयं बटश्याम इति प्रतीतः ।
राशिर्मणीनामिव गारुडानां सपद्मरागः फलितो विभाति ।।'218।।

आज भी वटसावित्री पर्व पर वट वृक्ष की पूजा की जाती है। इसीलिए इसे आर्यपूज्य कहा गया है।यहीं पर किले के नीचे भाग में, जिसमें पाताल पुरी प्रतिष्ठापित है, इसमें ऋषियों और देवताओं की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित है। यह भाग दर्शनार्थ खुला रहता है।

दुर्गे कुलस्तम्भकृताभिलेखो राज्ञो ह्यशोकस्य परः प्रसिद्धः ।
बन्धादधो मारुतिनन्दनस्य मूर्तिः शयाना भुवि राजमाना ।।219।।

इस किले में सम्राट् अशोक का प्रसिद्ध कुलस्तम्भ अभिलेख सुरक्षित है। गंगा के

पश्चिमी तटबन्ध से नीचे गंगा की ओर संकटमोचन हनुमान् की लेटी हुई विशाल प्रतिमा धरातल से आठ दश फीट नीचे हैं यह अत्यन्त प्राचीन और दिव्यमूर्ति अत्यन्त शक्ति सम्पन्न मानी जाती है। संगम स्नान के बाद अधिकांश यात्री इसका दर्शन अवश्य करते हैं।

न्यायालयश्चोच्च इह प्रवृत्तः सद्विश्वविद्यालय आप्त विद्यः।
शिक्षानिदेशालय उत्तरस्थः साहित्यसम्मेलनमत्र हिन्द्याः ॥220॥

वर्तमान काल में यहाँ कार्यरत उत्तरप्रदेश उच्च न्यायालय (हाई कोर्ट) है। प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश का शिक्षा निदेशालय, लोक सेवा आयोग, माध्यमिक शिक्षा परिषद् आदि प्रदेश स्तर की प्रमुख संस्थाएँ हैं तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन है।

यो विश्वविद्यालयपार्श्व एव सिद्धो भरद्वाजशिवो विभाति।
फणैः सहस्त्रैरिह शेषनागः चानन्दगेहं किल नेहरोश्च ॥221॥

जो विश्वविद्यालय के समीप में ही भरद्वाज आश्रम है वहाँ सिद्ध भरद्वाज शिव की प्रतिमा स्थित है। इसी स्थान पर हजार फणों वाले वासुकि नाग का विग्रह विद्यमान है। विश्वविद्यालय के समीप में आनन्द भवन है जो पं. जवाहरलाल नेहरू (भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री) के पिता श्री मोती लाल नेहरु द्वारा बनवाया गया था। आज-कल यह सरकारी नियन्त्रण में है। दर्शनार्थी नियमानुसार इसका अवलोकन कर सकते हैं।

पूर्वं प्रतिष्ठानपुरं हि झूसी पुराऽत्र दुर्गं किल कूटरूपः।
कूपद्वयी हंससमुद्रनाम्नी योगाधृतं कुण्डलिनी गृहञ्च ॥222॥

ऐतिहासिक ग्रन्थों में प्रतिष्ठानपुर नाम से जो नगर जाना जाता है वह वर्तमान में झूँसी कहा जाता है। यह गंगा के पूर्वी किनारे पर स्थित है प्रयाग की मुख्य बस्ती पश्चिमी किनारे पर है जिसे इलाहाबाद नगर कहा जाता है। झूँसी में दो पवित्र कूप हैं 1. हंस कूप 2. समुद्र कूप यहीं एक कुण्डलिनी भवन भी है जो योग साधना के लिए विख्यात था।

षद्सेतवश्चात्र विशालकायाः येन प्रयागागमनं सुलभ्यम्।
भव्यं तदैतिह्यममुष्य पूर्वं क्षेत्रावशेषैरवबोधनीयम् ॥223॥

इलाहाबाद नगर से लगे गंगा के चार और यमुना के दो विशालकाय पुल हैं। जिनसे प्रयाग आना सुलभ है। (माघ और बारह वर्ष में पड़ने वाले कुम्भ मेले में पीपे वाले अनेक पुल

बनाए जाते हैं।) इसके आस-पास के अनेक अवशेष इसके भव्य प्राचीन धार्मिक ऐतिह्य को प्रमाणित करते हैं।

यमद्वितीया सुजनावनीशः दुर्वाससः किङ्करकूटभूमिः।
लाक्षागृहं तत्तमसानुगङ्गं महर्षिवाल्मीकितपोवनञ्च ॥224॥

यमद्वितीया (यमुना के किनारे भीटा के पास यहाँ प्राचीन मिट्टी की दिवारों वाला एक किला भी है जहाँ रथारूढ़ दुष्यन्त की मूर्ति मिली है) सुजावन देवता, दुर्वासा-आश्रम ककरा कोटना के पास झूसी से कुछ दूरी पर है। दुर्वासा ने ही शकुन्तला को शाप दिया था ऐसा कालिदास की नाट्यकृति अभिज्ञानशाकुन्तल में वर्णित है। लाक्षागृह (लक्षागीर) जहाँ लाख के भवन में पाण्डवों को रखकर उन्हें जलाने का विफल प्रयास किया गया था, गंगा और तमसा के संगम पर वाल्मीकि का आश्रम था जैसा कि वाल्मीकि रामायण में वर्णन प्राप्त होता है – 'गंगायास्तु परे पारे वाल्मीकेस्तु महात्मनः। आश्रमो दिव्यसंकाशस्तमसातीरमाश्रितः।।' और भरद्वाज ने राम को वाल्मीकि के आश्रम की दूरी भी यहीं बताई है –'दशक्रोश इतस्तात ! गिरिर्यस्मिन् निवत्स्यति।' तमसा गंगा-यमुना के संगम से पूर्व दक्षिण की ओर गंगा से मिलती है।

ऋषे रसा या सिरसा प्रसिद्धा तत्पर्णशाला कथिता पनासा।
सीतासुतौ चेह जनिं ह्यधत्तां रामायणं सर्जितमत्र रम्यम् ॥225॥

वाल्मीकि और अन्य ऋषियों के निवास के कारण पहले इसे ऋषिरसा कहा जाता था अब सिरसा कहते हैं। तमसा संगम के पश्चिमी तट पर पनासा है जो पर्णशाला का वर्तमान नाम है, महाभारत के अनुशासन पर्व में इसका उल्लेख मिलता है –

मध्यदेशे महान् ग्रामो ब्राह्मणानां बभूव ह।
गङ्गायमुनयोर्मध्ये यामुनस्य गिरेरधः ॥
पर्णशालेति विख्यातो रमणीयो नरधिप।
विद्वांसस्तत्र भूयिष्ठा ब्राह्मणाश्चावसंस्तथा ॥ 226॥

(महा. अनु. 68. 3, 4)

गङ्गा और यमुना के मध्य यामुन पर्वत (यमुनापार गंगा और यमुना के संगम के पूर्वदक्षिण के भूभाग को कहा जाता है) यमुना वन या यामुन गिरि क्षेत्र ही चित्रकूट क्षेत्र है। गंगा और यमुना के बीच में कोई पर्वत नहीं है। 'यामुनस्य गिरेरधः' का तात्पर्य पर्वत का नीचा भाग होता है।

रामायण में भी राम के वनगमन में चित्रकूट मार्ग में 'चेरतुर्यमुनावने' लिखा हुआ है। इस प्रकार पर्णशाला वर्तमान पनासा गाँव ही सिद्ध होता है। तमसा के पूर्व में सिरसा के पास विजवरा गाँव विज्ञवर का अपभ्रंश है। इससे महाभारत का वर्णन इसी स्थल की पुष्टि करता है। सीता से कुश और लव का जन्म भी यहीं होना वाल्मीकि रामायण के वर्णनों से सिद्ध है। राम ने मथुरा के लवणासुर के वध के लिए शत्रुघ्न को भेजते समय अकेले ही तमसा के तट पर जाने के लिए कहा था -

'तत्र स्थाप्य बलं सर्वं नदीतीरे समाहितः ।
अग्रतो धनुषा सार्द्धं गच्छ त्वं लघुविक्रमः ।।'227।।

(वा.रा.उत्त.66 सर्ग)

वाल्मीकि आश्रम में जिस रात में वे आते हैं उसी रात में कुश-लव का जन्म होता हैं -

यामेव रात्रिं शत्रुघ्नः पर्णशालां समाविशत् ।
तामेव रात्रिं सीतायाः प्रसूतं दारकद्वयम् ।।228।। (वही.66.1-3)

अयोध्या से मथुरा पश्चिम और दक्षिण है, अतः शत्रुघ्न ने वाल्मीकि से सायंकाल पहुँचने पर कहा था प्रातः मैं पश्चिम की ओर लौट जाऊँगा -

'भगवन् वक्तुमिच्छामि गुरोः कृत्यादिहागतः ।
श्वः प्रभाते गमिष्यामि प्रतीचीं वारुणीं दिशम् ।।229 ।।

(वही. 65.4)

तमसा तट से मथुरा जाने पर दो बार यमुना पार करने का वर्णन आता है जैसी कि स्थिति आज भी है। पूर्व में भरद्वाज और वाल्मीकि के तमसा तट के वार्तालाप और क्रौंचबध का उल्लेख किया जा चुका है, जहाँ रामायण रचना का श्रीगणेश होता है।

कौशाम्बिकेलामलकी च देवी श्रृङ्गं दधद्वेरपुरं प्रसिद्धम् ।
कड्डास्थमाणिक्यपुरीयदेवी ऋष्यायनं श्रील कुशाङ्गणञ्च ।।230।।

कौशाम्बी (जो अब जिला बन चुकी है) अमिलियन देवी, मनःकामेश्वर (लालापुर) श्रृंगवेरपुर (जहाँ से राम ने गंगा पार की थी) सिराथू के पास कड़ेमानिकपुर देवी, ऋष्यायन, कुशांगण (कोसगढ़) आदि प्रसिद्ध स्थल है। इसके अतिरिक्त मनैया (मनु की तपोभूमि) संगमनी देवी (तमसा के तट पर समहन गाँव में स्थित) निर्वहणी देवी (निवहरा देवी) सैदाबाद में

स्थित भरत की पत्नी के नाम से बसी राजधानी माण्डा, औता महावीर हनुमान मन्दिर तथा गंगा के तटवर्ती सभी गावों में देवमन्दिर हैं। सिरसा में बाबा विश्वनाथ मन्दिर, रामनगर में शीतलादेवी का मन्दिर आदि अनेक मन्दिर और तीर्थस्थल है जहाँ मेला लगा करता है। अलोपी देवी का वर्णन शक्ति पीठों में किया गया है।

पञ्च सरोवरा:

सरोवरा: पञ्च पुनीततायां भागीरथीवारिसमानमाना: ।
एतान् समागत्य च तीर्थनिष्ठा: स्वजन्मन: पुण्यफलं लभन्ते ॥231॥

भारत राष्ट्र के पाँच प्रसिद्ध पवित्र सरोवर है जिनका जल गंगा-जल के समान पावन माना जाता है। भक्तगण तीर्थयात्रा के प्रसंग में इन सरोवरों में स्नान करके अपने मानवजन्म का पुण्यफल प्राप्त करते हैं।

श्रीमानस: पुष्करनामकश्च बिन्दुश्च नारायणनामधेय: ।
पम्पेतिनामा शिववारिपूर्ण: सरोवरा: पञ्च विभान्ति दिव्या: ॥232॥

पवित्रजल वाले पाँच सरोवर इस प्रकार हैं -

1. मानसरोवर, 2. पुष्करसरोवर, 3. बिन्दुसरोवर, 4. नारायणसरोवर, 5. पम्पासरोवर

मानसरोवर :-

हिमालये तिब्बतभूमिभागे सरोन्वितश्रीरजताद्रिरस्ति ।
क्षेत्रं त्विदं मानसखण्डमास्ते पूर्वश्रुतो मेरुगिरिश्च यत्र ॥233॥

हिमालय में तिब्बत की ओर रजत पर्वत (गणपर्वत) (हिम से आच्छादित होने से यह चाँदी के समान दिखाई देता है अत: रजतगिरि कहा जाता है।) इसे मानसखण्ड भी कहा जाता है पुराणों और महाकाव्यों में मेरुगिरि के रूप में इसका उल्लेख मिलता है इसी से लगा मानसरोवर तीर्थ है।

ऋषिर्मरीचिर्दशकन्धरश्च ब्रह्मा शिवो देवगणा अनेके ।
तपो ह्यकुर्वन्निह सिद्धिमाप्ता: पुराणतो ज्ञायत एव सर्वे ॥234॥

मरीचि ऋषि, रावण, ब्रह्मा, शिव और अनेक देवताओं ने यहाँ तपस्या करके सिद्धि प्राप्त की थी।

श्रीव्यासकृष्णादिकृतं पवित्रं श्रीशङ्कराचार्यविमुक्तिदञ्च ।
अष्टापदं जैनबुधेषु मान्यं यदाद्यतीर्थङ्करमुक्तितीर्थम् ॥235॥

भगवान् व्यास, श्रीकृष्ण, भीम, दत्तात्रेय और अर्जुन आदि द्वारा यह पवित्र मुक्तिप्रदान करने वाला तीर्थ है। आदि शंकराचार्य ने इसी के समीप अपनी जीवनयात्रा पूरी कर मुक्ति प्राप्त की थी। जैन धर्मावलम्बी इसे अष्टापद तीर्थ कहते हैं। प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव ने यहाँ निर्वाण प्राप्त किया था, अत: उनकी मुक्ति का तीर्थ इसे माना जाता है।

बौद्धा इदं मानसरः स्वतीर्थं पृथ्वीस्थितं स्वर्गसमं वदन्ति ।
उपत्यकायामिह कल्पवृक्षं श्रीधर्मपालं स्थितमामनन्ति ॥236॥

बौद्ध धर्म के मानने वाले लोग इसे पृथ्वी पर स्थित स्वर्ग कहा करते हैं। उनकी मान्यता है कि हिमालय की इस उपत्यका में कल्पवृक्ष है। यहाँ के लोग धर्मपाल (डेमचोक) को यहाँ का अधिष्ठाता देव स्वीकार करते हैं।

काश्मीरतो विस्तृतमेतदस्ति भूटानगं क्षेत्रमिदं विशालम् ।
यदुत्तरस्यां दिशि राजमानं श्रृङ्गं हि कैलासगिरेः शिवाभम् ॥237॥

कश्मीर से भूटान तक फैली हुई इस पर्वत श्रृंखला के उत्तरी भाग को कैलास कहा जाता है (यह शिव का निवास होने से तीर्थ है) दूर से अथवा हवाई जहाज से देखने पर श्रृंग की आकृति शिवलिंग की भाति दिखाई देती है।

परिक्रमायाः परमं महत्त्वं मान्यं सदाप्तैरिह तिब्बतीयैः ।
यस्यां कृतायां मनुजा विमुक्ताः संसारबन्धाच्च भवन्ति नूनम् ॥238॥

भारतीय सन्त महात्माओं और तिब्बत के निवासियों ने इस तीर्थ की परिक्रमा का बहुत महत्त्व बताया है। परिक्रमा करने से मनुष्य सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

हिमालयादुत्तरतो विभाति चतुर्दशक्रोशमितं पवित्रम् ।
तन्मानसं मानसहारि रम्यं हंसैर्युतं निर्मलवारिनीलम् ॥239॥

हिमालय के उत्तर की ओर चौदह कोश क्षेत्र में फैला हुआ यह पवित्र मानसरोवर है जो

अण्डाकर है। यहाँ हंस रहते हैं एक मटमैले किन्तु सफेद और दूसरे बदामी रंग के हैं। यहाँ राजहंस भी रहते हैं। अधिकांश हंसों का आकार बतख से मिलता जुलता है किन्तु इनकी चोंच बतखों से पतली दिखाई देती है। ये पर्याप्त ऊँचाई तक उड़ते हुए दिखाई देते हैं। इसका जल अत्यन्त स्वच्छ होने से नीला दिखाई देता है।

अण्डाकृतौ मानसरोवरेऽस्मिन् कराग्रभागः पतितश्च सत्याः ।
तेनाऽत्र जातं महनीयपीठं सिद्धिं लभन्तेऽत्र हि योगिवर्यः ।।240।।

अण्डाकार आकृति वाले इस मानसरोवर में सती का कराग्रभाग गिरा था, अतः एक महनीय शक्ति पीठ के रूप में भी इस स्थल की प्रतिष्ठा है। यहाँ योगी जन आकर तपस्या और योगसाधना द्वारा सिद्धि प्राप्त करते हैं।

सुनिर्मले मानसरोवरेऽस्मिन् आभान्ति रम्याः किल राजहंसाः ।
अन्ये च हंसा अपि राजमानाः श्वेताश्च पीता खगतौ प्रवीणाः ।।241।।

अत्यन्त स्वच्छ इस मानसरोवर में अति सुन्दर राजहंस रहा करते हैं दूसरे हंस भी सफेद और बदामी रंग के रहते हैं ये आकाश में ऊँची उड़ान भर कर कलाबाजियाँ दिखाने में प्रवीण हैं।

न मानसे मौक्तिक मेधमानं न वा क्वचित्पङ्कजराजिरास्ते ।
न कोऽपि वृक्षो न च पुष्पराजिः न हंसमुक्ताचितिरेव दृष्या ।।242।।

इस मानसरोवर में न मोती उत्पन्न होती दिखती है, न कहीं भी कमल खिलते हुए दिखते हैं न यहाँ कोई वृक्ष है न फूल खिले हुए दिखाई देते हैं, न मोती चुगते हुए हंस दिखाई देते हैं।

कण्टैर्युता गुल्मततिः सघासा हस्तप्रमाणेह च दृश्यमाना ।
लभ्यं क्वचिद्वै स्फटिकस्य खण्डं विचित्रवर्णोपलखण्डकं च ।।243।।

कण्टकों और घासों से युक्त एक हाथ की ऊँचाई वाली झाड़ी यहाँ दिखाई देती है। कहीं-कहीं स्फटिक के टुकड़े और रंग-बिरंगे पत्थरों के टुकड़े यहाँ अवश्य मिलते हैं।

परं सरो राक्षसतालनाम तन्नायतं नैव च गोलकं वा ।
भुजैश्च वक्रै र्गिरिलम्बमानैः स्थितं दशास्योऽत्र शिवं समापत् ।।244।।

यहाँ एक अन्य ताल है जो न गोला है न आयताकार इसकी टेढ़ी-मेढ़ी भुजाएँ पर्वत से

लगी हुई है। ऐसा कहा जाता है कि यहाँ रावण ने खड़े होकर शिव की आराधना करके उन्हें प्राप्त किया था।

कैलास आप्तः शिवलिङ्गरूपः त्रियोजनान्मानसतो विभाति।
श्रद्धानतास्तिब्बतवासिनो यं साष्टाङ्गपातैर्हि परिक्रमन्ति ॥245॥

मानसरोवर से 30-35 किलोमीटर दूर शिवलिंग सा दिखने वाला कैलास पर्वत है। अत्यन्त श्रद्धालु तिब्बत के भक्तगण साष्टाङ्ग प्रणाम करते हुए इसकी परिक्रमा करते रहते हैं।

पार्श्वे स्थितानां गिरिशीर्षकाणामुच्चं च दिव्यं शिखरं बिभर्ति।
कृष्णोपलाभ्यन्तरपोषितोऽपि शुभ्रो हिमाच्छादित आविभाति ॥246॥

कैलास पर्वत आस-पास के पर्वत की चोटियों से ऊँची और दिव्याभ चोटी धारण करता है। इसमें भीतर तो काले रंग के पत्थर हैं, किन्तु हिम से आच्छादित होने के कारण यह शुभ्र दिखाई देता है।

निसर्गतो मन्दिररूपकस्य शिवस्य लिङ्गाकृतिशोभिनोऽस्य।
चतुर्षु कोणेषु निसर्गजातान्याभान्ति भव्याकृतिमन्दिराणि ॥247॥

प्राकृतिक रूप से शिव की लिंगाकृति से शोभित इस कैलास पर्वत के चारों ओर - नैसर्गिक रूप से इसकी तुलना में छोटे मन्दिर की आकृति धारण करने वाले भव्य मन्दिरों के समान यहाँ प्राकृतिक दृश्य उपलब्ध हैं। कैलास के देखने स्पष्ट प्रतीत होता है कि यह असाधारण पर्वत है। बर्फीले स्थल तो हिमालय पर अनेक हैं किन्तु यह स्थल पूरे विश्व में सर्वाधिक सुन्दर और अनुपमेय है।

त्रिभिर्दिनैरस्य परिक्रमार्थं पदातिगो योजनमेति पञ्च।
आलोक्य कैलासमनुत्तमाङ्गं सम्पद्यते सन्मनसः प्रसादः ॥248॥

तीन दिन लगातार परिक्रमा करने वाला पैदल चलने वाला तीर्थयात्री पांच योजन (50 किलोमीटर) की यात्रा पूरी करता है। कैलास पर्वत के जिससे सुन्दर कहीं का दृश्य नहीं है इसे देखकर तीर्थयात्री का मन शान्ति से परिपूर्ण हो जाता है।

हिमत्वमाप्नोति न मानसस्य दिव्याम्बुराशिस्तरलः सदैव।
उष्णाम्बुभिः स्रोतसमुद्भवैर्यो ह्यधःस्थितैस्तापमवाप्यते यः ॥249॥

मानसरोवर परिसर भले ही बर्फ से आच्छादित हो किन्तु इसका जल जमता नहीं हमेशा तरल रहता है। इसके नीचे गर्म जल का स्रोत है जिसके ताप के कारण इसका जल ऊष्मा पाकर तरल बना रहता है।

सतालुजा सा सरयूसरिच्च स ब्रह्मपुत्रो गङ्गाङ्गतो यः ।
अयं समासां प्रभवः पवित्रः सदाजलो मानसरोवरोऽस्ति ।।250।।

सतलुज और सरयू ये दो नदियाँ और ब्रह्मपुत्र नद इन तीनों का उद्गम यही निरन्तर जल से परिपूर्ण पवित्र मानसरोवर है। सरयू और ब्रह्मपुत्र दोनों का मिलन गंगा में होता है और सतलुज उत्तर की ओर जाती है। मानसरोवर को विदेशी लोग राकास या रकास झील भी कहते हैं।

पुष्करसरोवरः

पितामहं भीष्ममतीव दिव्यं श्रेष्ठं पुलस्त्यो वदतिस्म तीर्थम् ।
तत्पुष्करं भारत पश्चिमस्थे नागे नगे भात्यजमेरभूमौ ।।251।।

महाभारत के अनुसार महर्षि पुलस्त्य ने भीष्म पितामह से पुष्कर के बारे में बताया था कि यह सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है। भारत के पश्चिम की ओर राजस्थान प्रदेश के अजमेर जिले में नाग पर्वत की घाटी में यह सरोवर स्थित है।

सरोवरेऽस्मिन्वसतिर्विधातुरतो जनाः कार्तिकमासवासम् ।
कुर्वन्ति पुण्यं हि समाप्नुवन्ति पापाद्विमुक्ताश्च भवन्ति नूनम् ।।252।।

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा यहाँ निवास करते हैं, ऐसी मान्यता रही है। अतः कार्तिक के महीने में भक्तगण यहाँ निवास कर पुण्यलाभ करते हैं। यहाँ निवास करने से पाप से मुक्ति मिल जाती है।

श्रीपुष्करस्थापनमत्र धात्रा व्यधायि तन्मन्दिरमत्र भाति ।
नागोच्च भागस्थमिदं हि गन्तुं सोपानमार्गो धवलोपलाभः ।।253।।

ब्रह्मा ने पुष्कर तीर्थ की स्थापना की है। पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड 15-19 में इसका वर्णन विस्तृत रूप से किया गया है। विश्वभ्रमण के प्रसंग में यहाँ सुरम्य नैसर्गिक वातावरण के स्वागत से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने यहाँ निवास करने का वचन दिया था, अतः यहाँ तीर्थ माना जाता है। यहाँ नाग पर्वत पर ब्रह्मा का भव्य मन्दिर है सीढ़ियों से यहाँ जाना पड़ता है। यह श्वेत प्रस्तरों से बनी

हैं।

धातुर्गृहद्वारि गजाधिरूढौ इन्द्रः कुबेरश्च विराजमानौ।
चतुर्दशस्तम्भविनिर्मितं यत् कलात्मकं मन्दिरमत्र भाति ।।254।।

ब्रह्मा के भव्य मन्दिर के प्रवेश द्वार पर हाथी पर इन्द्र और कुबेर की मूर्तियाँ सुशोभित हैं। चौदह खम्भों द्वारा निर्मित यह कलाकारी से भरपूर सुन्दर मन्दिर है।

चतुर्मुखी मूर्तिरिहास्ति धातुर्गायत्र्यपीहास्ति विराजमाना।
या ब्रह्मणे शापमदात्स्वयज्ञे सावित्र्यतस्तद्विमुखीह भाति ।।255।।

इस मन्दिर में ब्रह्मा की चतुर्मुखी मूर्ति है। इसके समीप में गायत्री (उनकी द्वितीय पत्नी) की प्रतिमा स्थापित है किन्तु सावित्री (उनकी प्रथम पत्नी) ने यज्ञ में उन्हें शाप दिया था अतः वह यहाँ भी विमुख है।

शप्तो विधिः पुष्करमात्रपूज्यः कृतो यया सा च ततोऽप्रसन्ना।
सावित्र्यतः पृष्ठगते वसन्ती सन्मन्दिरे राजति लोकपूज्या ।।256।।

सावित्री ने ब्रह्मा को शाप दिया था तभी से उनसे अप्रसन्न थीं। उन्हें यह शाप दिया था कि केवल पुष्कर में ही उनकी पूजा होगी। इसलिए ब्रह्मा के मन्दिर के पीछे लोकपूज्या सावित्री का सुन्दर मन्दिर है।

पतिः प्रजानां जगतो विधाता तथापि तन्मन्दिरमेकमात्रम्।
श्री शङ्कराचार्यवरेण धातुर्मूर्तिःश्रिता पुष्करमागतेन ।।257।।

सारे जगत् के स्वामी और स्रष्टा होने पर भी उनका केवल एक मन्दिर है। आदि शंकराचार्य ने ब्रह्मा की मूर्ति स्थापित कर मन्दिर का निर्माण कराया था जिसे औरंगजेब द्वारा नष्ट कर दिया गया था।

चतुःशतं निर्मितमन्दिरराणि श्रीपुष्करे देवयुतानि भान्ति।
अत्युच्चमेकं गृहमस्ति भव्यं वाराहदेवस्य विराजमानम् ।।258।।

पुष्कर में देव प्रतिमाओं से युक्त लगभग चार सौ मन्दिर हैं। एक अत्यन्त ऊँचा भव्य मन्दिर वाराह भगवान् का है।

श्रीराघवात्मेश्वरशम्भु-रङ्गवैकुण्ठ-लक्ष्मी-भवनानि तीर्थे
अति प्रसिद्धानि मनोहराणि शिवस्तु भूगर्भगतो विभाति ॥259॥

वाराह मन्दिर के अतिरिक्त राम मन्दिर, राम वैकुण्ठ मन्दिर (वैष्णवसम्प्रदाय का प्रमुख मन्दिर), आत्मेश्वर महादेव का प्राचीन मन्दिर (नदी के साथ भूगर्भ में है इसके ऊपर नया मन्दिर बना है), एक महादेव का अन्य मन्दिर है जिसमें संगमरमर से बनी महादेव की पाँच चेहरों वाली मूर्ति है, रंग मन्दिर वैष्णव सम्प्रदाय की रामानुज शाखा का मन्दिर है इसमें श्रीकृष्ण के जीवन से सम्बद्ध अनेक घटनाओं का चित्रण है। लक्ष्मी जी का भी मन्दिर है।

चौहानराज्ञा ह्यजमेरशास्त्रा वाराहगेहं समकारि चोच्चम् ।
पुनः प्रतापानुजशोधितं तत् पुरावरङ्गेण विनाशितं यत् ॥260॥

अजमेर के चौहान राजा 'आना' ने ऊँचा मन्दिर बवनाया था, बाद में महाराणा प्रताप के भाई राणा सागर ने बहुत रूपए खर्च कर उसकी मरम्मत कराकर उसे भव्यता प्रदान की थी किन्तु औरंगजेब ने इसे तोड़ दिया।

इदं पुनः श्रीजयसिंहराज्ञा विनिर्मितं रक्षितमद्य भाति ।
जलाद् धरोद्धारकृते प्रसिद्धं देवं हि भक्ताः प्रणमन्ति नित्यम् ॥261॥

इस बाराह मन्दिर को औरंगजेब द्वारा ध्वस्त कर दिए जाने पर पुनः सवाई जयसिंह राजा ने बनवाया। वही इस समय भक्तों की आस्था का केन्द्र है। जल से पृथ्वी को ऊपर निकालने वाले वाराह भगवान् का भक्त गण श्रद्धापूर्वक पूजन करते हैं।

बिन्दुसरोवर

श्राद्धं गयायां पितुरस्ति मान्यं मातुश्च तद्बिन्दुसरोवरेऽस्मिन् ।
यच्छ्रीस्थलं पूर्वमिदं प्रसिद्धं तत्कथ्यते सिद्धपुरं सुतीर्थम् ॥262॥

पिता का श्राद्ध गया में और माता का श्राद्ध बिन्दुसरोवर तीर्थ में करने की मान्यता है। इसे श्रीस्थल तथा सिद्धपुर के नाम से भी जाना जाता है।

श्रीसिद्धराजो जयसिंहवर्यः महालयं रुद्रकृते चकार ।
तदा प्रभृत्येव जनेषु मान्यं सिद्धं पुरं सिद्धिदमार्यतीर्थम् ॥263॥

सिद्धराज जयसिंह ने अपने पिता द्वारा प्रारंभ रुद्रमहालय को पूरा किया तभी से इसे सिद्धपुर कहा जाने लगा जो सिद्धि प्रदान करने वाला तीर्थ है।

साङ्‍ख्ये श्रुतश्री कपिलो महात्मा लेभे जनिं चात्र शुभाश्रयश्च ।
श्रीकर्दमर्षेरपि मान्य आसीदौदीच्यविप्रा अपि चात्र जाताः ।।264।।

साङ्ख्य शास्त्र के प्रवर्तक महर्षि कपिल का यह जन्म स्थल माना जाता है। कर्दम ऋषि का निवास स्थल भी यहीं रहा है। औदीच्य ब्राह्मणों का उत्पत्ति स्थल भी इसी तीर्थस्थल को माना जाता है।

देवासुरैरत्र समुद्रमन्थात् प्राप्ताऽत्र लक्ष्मीरत एव जातम् ।
श्रियस्स्थलं श्रीशकृपाश्रुबिन्दुरत्रापतत्तेन च बिन्दुतीर्थम् ।।265।।

देवताओं और असुरों द्वारा समुद्रमन्थन के बाद यहाँ लक्ष्मी को प्राप्त किया गया था अत: इसे श्रीस्थल कहा जाता है। कर्दम की तपस्या से द्रवित भगवान् नारायण के नेत्रों से कुछ अश्रु बिन्दु गिरे थे अत: इसे बिन्दुतीर्थ कहा जाता है।

स्वयम्भुवा श्रीमनुना स्वकन्या श्रीदेवहूतिर्हि समर्पिताऽत्र ।
श्रीकर्दमायाप्तवराय यस्यै ज्ञानोपदेशं कपिलश्चकार ।।266।।

स्वायंभुव मनु ने अपनी कन्या देवहूति को यही आप्तवर कर्दम को समर्पित किया था। उस देवहूति को यहीं महर्षि कपिल ने साङ्ख्य शास्त्र का ज्ञानोपदेश किया था।

सा देवहूतिः कपिलस्य माता गता परां सिद्धिमिहैव मान्या ।
यस्या वपुःप्रद्रववारिरूपमत्राभवत् तीर्थमयं च जातम् ।।267।।

देवहूति कपिल की माता थीं उन्हें ही उन्होंने उपदेश दिया था। देवहूति का शरीर द्रवित होकर जल रूप में हो गया अत: यही जल तीर्थ के रूप में मान्य हुआ।

अल्पा विधातुस्तनयाऽपि तद्वत् साङ्‍ख्योपदेशं कपिलाद् गृहीत्वा ।
सा देवहूतीव च वारिरूपा जातास्तदल्पाख्यमिदं सरोऽभूत् ।।268।।

ब्रह्मा की पुत्री अल्पा ने भी महात्मा कपिल से साङ्ख्य का उपदेश ग्रहण किया और कपिल की माता देवहूति के समान ही अन्त में जलरूप हो गई उसी के नाम से इसे अल्पा सरोवर कहा जाने लगा।

आज्ञां समाधाय पितुः सहर्षं रामः स्वमातुर्हि शिरो ह्यकर्तत् ।
पितुर्वराज्जीवितमातृकोऽपि चात्रागतोऽभूत् वधदोषमुक्त्यै ।।269।।

पिता का आदेश मानकर सहर्ष परशुराम ने अपनी माता (रेणुका) का शिर काट डाला उनके पिता ने अपने आदेश के पालन से प्रसन्न होकर वर माँगने को कहा तब परशुराम ने कहा – 'मेरी माँ को जीवित कर दीजिए', अतः पिता ने रेणुका को जीवित कर दिया। तथापि मातृवध के दोष की मुक्ति के लिए परशुराम यहाँ आए थे और अल्पा सरोवर में स्नान कर मुक्ति प्राप्त की थी।

सरस्वतीहास्ति सदाल्पनीरा यस्या जलं नैति समुद्रपार्श्वम् ।
स्नात्वाऽत्र भक्ता जननीविमुक्त्यै श्राद्धं विधायाप्तफला भवन्ति ।।270।।

यहाँ सरस्वती नदी बहुत अल्प जलवाली है (कच्छ की मरुभूमि में यह आगे जाकर लुप्त हो जाती है) पहले भक्त इसमें स्नान करके तब बिन्दु सरोवर में स्नान करते हैं। यहाँ स्नान कर माता की विमुक्ति के लिए तीर्थयात्री श्राद्ध करके अपने अभीष्ट फल की प्राप्ति करते हैं।

बिन्दौ कृतश्राद्धविसर्जनाय अल्पासरो मान्यमिहास्ति नूनम् ।
तीर्थे ह्यनेकानि सुमन्दिराणि देवप्रतिष्ठानि विभान्ति नित्यम् ।।271।।

बिन्दु सरोवर में किए गए श्राद्ध का विसर्जन अल्पासर में किया जाता है। इस तीर्थ में अनेक देवी देवताओं के मन्दिर तथा दर्शनीय स्थल है। यथा – कर्दम, कपिल, देवहूति, लक्ष्मी नारायण, राम, लक्ष्मण, सीता, सिद्धेश्वर और महादेव के मन्दिर, वल्लभाचार्य की बैठक आदि। ज्ञानवापी रुद्रमहालय, भूतनाथ महादेव, नीलकण्ठेश्वर, ब्रह्माण्डेश्वर सहस्रकला माता, अम्बा माता और कनकेश्वरी आदि।

पम्पासरोवरः

पम्पासरो दक्षिणदिग्विभागे यत्तुङ्गभद्रासरितः समीपे ।
त्रियोजनाद्राजपथानुसङ्गं रेलस्थलाद्राजति हासपेठात् ।।272।।

पम्पासरोवर राष्ट्र की दक्षिण दिशा की ओर तुंगभद्रानदी के समीप है, हासपेठ रेलवे स्टेशन से तीन योजन (36 किलोमीटर) पर राजमार्ग से लगा हुआ है।

रेलस्थलात्पार्श्वगतं हि तीर्थं स्थितं विरूपाक्षनिकेतनं यत् ।
भक्ता इतो दर्शनपुण्यलाभं पम्पासरस्तीर्थगता लभन्ते ।।273।।

हासपेठ स्टेशन से एक किलोमीटर दूर विरूपाक्ष (शिव) का सुन्दर मन्दिर है। पम्पासर जाने वाले भक्त इस शिवतीर्थ का भी पुण्यलाभ प्राप्त करते हैं।

चैत्रे च मासे किल पूर्णिमायां श्रीमद्विरूपाक्षरथस्य यात्रा ।
आयोज्यते भक्तवरैः सहर्षं या राजमार्गेण प्रवर्तमाना ।।274।।

चैतमास की पूर्णिमा को भगवान् शिव (विरूपाक्ष) की रथयात्रा का भक्तों द्वारा सहर्ष आयोजन किया जाता है। यह रथयात्रा मुख्य सड़क से निकाली जाती है।

विशालकक्षाणि च मण्डपानि बहूनि देवायतनानि सन्ति ।
श्रीमद्विरूपाक्षशिवस्य गेहे हेमावृतं यत्कलशं विभाति ।।275।।

विरूपाक्ष के मन्दिर में अनेक विशाल कक्ष और मण्डप हैं। उसमें अनेक देवों के मन्दिर बने हैं उसके गुम्बद का कलश सोने से मढ़ा है।

सन्त्युत्तरस्यां दिशि मण्डपस्य अम्बागणेशौ भुवनेश्वरी च ।
नवग्रहाणामपि मूर्तयोऽत्र पृष्ठे सरो निर्मलवारिपूर्णम् ।।276।।

विरूपाक्ष मन्दिर के मण्डप में उत्तर की ओर जगदम्बा पार्वती, गणेश और भुवनेश्वरी देवी की मूर्तियाँ हैं इसी मण्डप में नव ग्रहों की मूर्तियाँ भी हैं, मन्दिर के पीछे की ओर निर्मल जल से परिपूर्ण तालाब है।

अत्र स्थितं पर्वतखण्डमेकं देवालयास्तत्र विभान्ति भव्याः
अत्राग्निकोणेऽस्ति गजाननस्य मूर्त्तिर्विशाला करतश्च भग्ना ।।277।।

यहाँ समीप में एक पर्वतभाग में बहुत से सुन्दर देवमन्दिर हैं। यहीं अग्निकोण में भगवान् गणेश की विशाल प्रतिमा है जिसका एक हाथ टूटा है।

गुहा अनेका इह पर्वतेषु प्रायः शिलाखण्डसमावृतास्ताः ।
श्रीरामभद्रस्य निवासहेतौ पुरा शिलाभिः कपिभिः कृतास्ताः ।।278।।

यहाँ पर्वतों में अनेक गुफाएँ हैं जिन्हें शिलाखण्डों से आवृत किया गया है। (ऐसा कहा

जाता है कि) श्रीराम के बनवास की अवधि में उनके निवास के लिए वानरों ने इसे बनाया था।

अन्या च भग्ना गणनायकस्य मूर्तिः समीपे च विराजमाना ।
या राजधानी विजये प्रसिद्धा समूर्तिनष्टाऽऽक्रमणैः विधर्मैः ।।279।।

बड़े गणेश जी से दक्षिण पश्चिम एक छोटे गणेश की टूटी हुई मूर्ति है। यह स्थल हम्पीनगर दक्षिण के वैभवशाली राज्य विजयनगर की राजधानी था। अन्यधर्मावलम्बी आक्रमणकारियों ने इस राज्य को तथा यहाँ की मूर्तियों को नष्ट कर दिया।

अत्रैव गोपाल निकेतनं यत् प्राकाररम्यं प्रतिमाविहीनम् ।
यद्गोपुरद्वारमतीव रम्यं तत्प्राङ्गणं भाति च दुर्गभूमेः ।।280।।

यहीं कुछ दूरी पर श्रीकृष्ण का मन्दिर है। यह मन्दिर विशाल घेरे में है किन्तु इसमें कोई मूर्ति नहीं है इसका प्राकार गोपुर आदि कलाकारी के कारण सुन्दर है। इस मन्दिर के सामने के मैदान को किले का मैदान कहा जाता है।

श्रीमन्नृसिंहस्य च मन्दिरं यत् तस्मिन् विशाला प्रतिमा विभाति ।
फणातपत्रेण समावृता सा एकं शिलाखण्डमिह प्रयुक्तम् ।।281।।

यहाँ से दक्षिण भगवान् नृसिंह का मन्दिर है जिसमें विशाल प्रतिमा है। नृसिंह की प्रतिभा के ऊपरीभाग में शेषनाग के फण का छत्र लगा है। इसकी विशेषता यह है कि यह मूर्ति एक ही पत्थर से बनी है।

क्रोशत्रये माल्यवतो नगस्य प्रवर्षणः पर्वत एक भागः ।
स्वाश्रूणि सीताविरहे विमुञ्चद्रामेण वर्षर्तुरिह व्यतीतः ।।282।।

माल्यवान् पर्वत का तीन कोस (9 किलोमीटर) पर स्थित एक भाग प्रवर्षण कहा जाता है। सीताजी के विरह में आँसू बहाते हुए श्रीराम ने यहाँ वर्षाऋतु का समय बिताया था।

प्राकारमध्यस्थितमन्दिरेऽत्र सौमित्रिसीतायुतराममूर्तिः ।
सप्तर्षयोऽप्यत्र च मूर्तिरूपा शुभ्रस्फुटा चात्रशिला सुरम्या ।।283।।

प्राकार के मध्य स्थित मन्दिर में श्रीराम सीता और लक्ष्मण की मूर्तियाँ हैं यहाँ सप्तर्षियों की प्रतिमाएँ भी हैं। यहाँ सुन्दर स्फटिकशिला होने से इस स्थान की प्रसिद्धि स्फटिक शिला के रूप में है।

इतः समुच्चावचमार्गलभ्यः स ऋष्यमूकश्च गिरिर्विभाति ।
जलैरगाधेह च तुङ्गभद्रा चक्राकृतिः चक्रसुतीर्थरूपा ।।284।।

विरूपाक्ष मन्दिर से कुछ ऊँचे नीचे मार्ग से वह प्रसिद्ध ऋष्यमूक पर्वत है (जिसे गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है - आगे चले बहुरि रघुराई, ऋष्यमूक पर्वक निअराई।) यहाँ तुङ्गभद्रा गहरे जल वाली तथा धनुषाकार है या चक्राकार है, इसीलिए इसे चक्रतीर्थ कहा जाता है।

अत्रापि मातङ्गनगान्तराले सौमित्रिसीतायुतराममूर्तिः ।
मातङ्गनाम्ना गिरिरत्र भाति महर्षिमातङ्गशुभाश्रमश्च ।।285।।

यहाँ भी मातंग पर्वत के मध्य श्रीराम लक्ष्मण और जानकी की भव्य मूर्तियाँ है। इस पर्वत का नाम मातंग ऋषि के नाम पर है यहाँ मातंग ऋषिका आश्रम भी है।

नालेन्द्रनामाचलचित्रकूटः चान्यो नगो दुन्दुभिरत्र पारे ।
अग्रे गिरिर्मादनगन्धपूर्वः शेषे शयानस्य हरेः सुमूर्तिः ।।286।।

यहाँ नालेन्द्र और चित्रकूट नाम के पर्वत हैं। तुंगभद्रा के उस पार यहाँ से दुन्दुभि नाम का पर्वत दिखाई देता है। इस चक्रतीर्थ में ही गन्धमादन नाम का पर्वत है। (उसकी एक भित्ति में विष्णु की मूर्ति खोदकर बनाई गई है।) कुछ आगे जाने पर गुफा में श्रीरंग (भगवान् विष्णु) की शेषनाग पर शयन करती हुए मूर्ति है।

अत्रैव सीताकृतकुण्डमेकं सीतापदाभ्यां परिपूतमास्ते ।
मूर्तिर्गुहायामिह राजमाना सौमित्रिसीतायुतराघवस्य ।।287।।

यहीं पर एक सीता कुण्ड है, जिसमें सीता ने स्नान किया था, यहाँ सीताजी के चरण चिह्न बने हैं जिससे वह पवित्र स्थल माना जाता है। यही पर गुफा में श्रीराम लक्ष्मण और सीता की मूर्तियाँ हैं।

पम्पासरो नास्ति विशालकायं तस्यान्तिके मानसरो लघिष्ठम् ।
सप्तर्षिभिः श्रीयुतरङ्गनाथः संस्थापितो भाति गिरेर्गुहायाम् ।।288।।

पम्पासर बहुत बड़े आकार वाला नहीं है, उसके समीप ही मानसरोवर नामक छोटा सा तालाब है। सप्तर्षियों सहित लक्ष्मी और विष्णु (रंगनाथ) की प्रतिमाएँ पर्वत की गुफा में स्थापित है।

क्रोशार्द्धमात्रं सरसो विदूरं हनूमतो मातुरगो विभाति।
अत्राञ्जनीमारुतिमूर्तयोऽपि वासः पुराऽत्रैव यदीय आसीत् ॥289॥

पप्पासर से मात्र दो किलोमीटर की दूरी पर हनूमान् जी माँ अंजनी का पर्वत है जहाँ शैशव में हनुमान् जी अपनी माँ के साथ रहा करते थे।

शक्तिपीठानि

पुरा प्रजापतिर्दक्षो यज्ञे नामंत्रयच्छिवम्।
शिवेन प्रतिरुद्धाऽपि सती यज्ञस्थलं ययौ ॥290॥

पुराणों के अनुसार दक्ष प्रजापति ने अपने यज्ञ के आयोजन में शिव को नहीं आमन्त्रित किया। शिव के द्वारा मना किये जाने पर भी सती यज्ञ स्थल में पहुँच गयीं।

अदृष्ट्वा शिवभागं सा पित्रायोजिते मखे।
योगाग्नावपमानेन प्राणान् त्यक्तवती सती ॥291॥

यज्ञ में शंकर का भाग न देखकर उन्होंने अपमान का अनुभव किया और स्वयं से उत्पन्न योगाग्नि में जलकर अपने प्राणों का परित्याग कर दिया।

तेन शम्भोर्गणैः क्रुद्धैर्दक्षयज्ञो विनाशितः।
दक्षस्यापि शिरश्छेदो विहितः शम्भुना क्रुधा॥292॥

सतीदाह से कुद्ध शिव के गणों ने दक्ष प्रजापति के यज्ञ का विध्वंस कर दिया, शिव ने कुद्ध होकर दक्षप्रजापति का शिर काट दिया। (विस्तृत जानकारी के लिए श्रीमद्भागवत आदि को देखा जा सकता है।)

प्राणहीनं सतीदेहं स्कन्धे कृत्वा शिवः पुनः।
ताण्डवं कर्तुमारेभे तद्भीता अभवन् सुराः ॥293॥

इसके बाद सती के प्राणहीन शरीर को कन्धे पर रखकर शिव ने ताण्डव नृत्य करना प्रारंभ कर दिया। इससे सभी देवगण भयभीत हो गए।

ज्ञात्वैवं विष्णुना चक्रं सुदर्शनमथ स्वकम्।
प्रेषितं तत्सतीदेहं खण्डं - खण्डं चकर्त तत् ॥294॥

ऐसा ज्ञात कर विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र को भेजा उसने सती के उस मृत शरीर को टुक्ड़े-टुकड़े कर डाला।

सतीदेहस्य खण्डानि तस्या आभूषणानि च।
तानि भूत्वा द्विपञ्चाशत् पतितानि स्थले स्थले ॥295॥

अत: सती के शरीर के तथा आभूषणों के बावन (52) भाग हो गए। वे स्थान-स्थान पर गिरे।

तत्र तत्राभवच्छक्तिरेकोऽभूच्च भैरवः।
एतानि शक्तिपीठानि जातानीति ततः परम् ॥296॥

जहाँ-जहाँ सती के शरीर के टुकड़े गिरे वहाँ-वहाँ शक्तिपीठ बन गए। उन सभी के साथ एक-एक भैरव भी अपने स्वरूप प्राप्त कर स्थित हुए।

1. **भैरवी सा महादेवी भीमलोचनभैरवः।**
ब्रह्मरन्ध्रस्थिते पीठे विलोचिस्तानमण्डले ॥297॥
पाके हिङ्गोसनद्याश्च पुलिनेऽस्या गुहा स्थिता।
हिङ्गलाजमिदं तीर्थं मरुमार्गेण साध्यते ॥298॥
भैरवीह महज्जोतिः कूपं चेहोष्णवारियुक्।
उष्ट्रमात्रसहाया वै तीर्थं गच्छन्ति यात्रिणः ॥299॥

हिंगलाज तीर्थ वर्तमान समय में भारत के विभाजित भाग पाकिस्तान (वलोचिस्तान) में है। पाकिस्तान में गोसनदी के तट पर इसकी गुफा स्थित है। हिंगलाज तीर्थ में रेगिस्तान के मार्ग से जाना पड़ता है यहाँ भैरवी देवी की श्रेष्ठ ज्योति और एक कुआँ है जिसका जल गरम रहता है। यहाँ जाने का एक मात्र साधन ऊँट हैं।

2. **विमला या किरीटस्था किरीटाख्यश्च भैरवः।**
बङ्गे गङ्गातटे भातो वटाख्यनगरे स्थितौ ॥300॥

बंगाल में गंगा तट पर विमला देवी का पीठ है यहाँ सती का किरीट (मुकुट) गिरा था उसी पर इन्हें स्थित माना जाता है, यहीं किरीट भैरव हैं।

3. **उमाशक्तिश्च भूतेशभैरवेण सह स्थिता।**
वृन्दावने स्थिते पीठे सतीकेशसमन्विते ॥301॥

जहाँ सती के केश गिरे थे वहाँ शक्ति उमा हैं तथा भूतेश नामक भैरव है। यह शक्तिपीठ वृन्दावन में है।

4. महिषासुरमर्दिन्या पीठं नेत्रस्थले स्थितम् ।
क्रोधेशभैरवो यत्र यच्च कोल्हापुरे स्थितम् ।।302।।

महिषासुरमर्दिनी का शक्तिपीठ सती का नेत्र जहाँ गिरा था महाराष्ट्र के कोल्हापुर रेल्वे स्टेशन के समीप है। यहाँ क्रोधेश भैरव हैं। इसे महालक्ष्मी मन्दिर भी कहा जाता है।

5. उग्रतारा महादेवी पीठे नासासमन्विते ।
सुनन्दापुलिने बङ्गे यत्र त्र्यम्बकभैरवः ।।303।।

सती के नासा स्थल पर यह तीर्थ उग्रतारा पीठ वर्तमान में बंगला देश में है। (खुलना रेल्वे स्टे. उतरकर स्टीमर से जाने पर बटीसाल नगर से 20 किलोमीटर उत्तर शिकारपुर ग्राम में) सुनन्दा नदी के तट पर स्थित है। यह अति प्राचीन मन्दिर खण्डहर के रूप में है। यहाँ महादेवी उग्रतारा तथा त्रम्बक भैरव हैं।

6. अपर्णावामनौ यत्र वामपादस्थले स्थितौ ।
करतोयानदीतीरे बङ्गदेशे हि राजतः ।।304।।

यह पीठ भी बंगलादेश में (बोगरा रेल्वे स्टेशन से 35 किलामीटर दूर भवानीपुर ग्राम में) करतोया नदी के किनारे स्थित है। यहाँ अपर्णा नाम की देवी तथा वामन नामक भैरव है। यह मन्दिर भी खण्डहर की स्थिति में है। यहाँ सती के बाएँ पैर का तलवा गिरा था।

7. सुन्दरी सुन्दरानन्दौ स्थितौ पादे च दक्षिणे ।
लद्दाखे श्रीगिरौ यद्धि सुरक्षायै नियन्त्रितम् ।।305।।

सुन्दरी नाम की देवी तथा सुन्दरानन्द नामक भैरव सती के दाएँ पैर के तलवे के स्थल पर स्थित हैं। यह पीठ लद्दाख में श्रीपर्वत के शिखर पर है। वर्तमान में सुरक्षा की दृष्टि से यहाँ जाना नियन्त्रित कर दिया गया है।

8. विशालाक्ष्या हि पीठं यत् कर्णकुण्डलसंयुतम् ।
यन्मणिकर्णिकाघट्टे काश्यां कालश्च भैरवः ।।306।।

विशालाक्षी देवी का पीठ सती के कर्णकुण्डल के स्थल पर मणिकर्णिकाघाट के

समीप वाराणसी में स्थित है। यहाँ इनके पास काल भैरव का मन्दिर है।

9. **यद् विश्वमातृकापीठं वामगण्डस्थलेश्रुतम् ।**
गोदावरीनदीतीरे कुम्ब्वूरे कोटितीर्थके ।।307।।
सा विश्वमातृकैवास्ते देवी रुक्मिणी श्रुता ।
भैरवो दण्डपाणिश्च पीठं भग्नं च दृश्यते ।।308।।

गोदावरी नदी के किनारे (गोदावरी स्टेशन से गोदावरी नदी पार करने पर आन्ध्रप्रदेश में) विश्वमातृका पीठ है विश्वमातृका को रुक्मिणी देवी भी कहा जाता है। यहाँ दण्डपाणि भैरव हैं। यहाँ सती का बाया गाल गिरा था। यह स्थल कुम्ब्बूर कोटितीर्थ के समीप है। भग्न अवस्था में है।

10. **मुक्तेश्वरी च नेपाले गण्डकीप्रभवस्थले ।**
भैरवश्चक्रपाणिश्च गण्डे च दक्षिणे स्थितौ ।।309।।

नेपाल में गण्डकी नदी के उद्गम स्थल के समीप मुक्तेश्वरी पीठ है। यहाँ चक्रपाणि भैरव हैं यह पीठ सती के दाहिने गाल पर स्थित है। (नेपाल के मध्य में मुक्तिनाथ सिद्ध पीठ है। नेपाल की राजधानी काठमाण्डू से यहाँ जाने का मार्ग है)

11. **नारायणी च संहारो भैरवो यत्र राजतः ।**
पार्श्वे कन्याकुमार्या यत् पीठं चोर्ध्वदन्तगम् ।।310।।

कन्याकुमारी से 12 किलोमीटर दूर नारायणी देवी का पीठ है, यहाँ संहार भैरव हैं। यहाँ सती के ऊपरी दाँत गिरे थे।

12. **वाराही च महारुद्रो राजेते पम्पसागरे ।**
अधोदन्तयुतं पीठं मध्ये सागरमस्ति तत् ।।311।।

सागर के मध्य में सती के नीचे के दाँत गिरे थे जिसे पम्पासागर कहते हैं यहाँ वाराही पीठ तथा महारुद्र भैरव का स्थान माना जाता है।

13. **ज्वालामुखी महादेवी जिह्वास्थाने विराजते ।**
उन्मत्तभैरवोऽप्यत्रकाङ्गडामण्डले गिरौ ।।312।।
प्रज्ज्वलन्ति स्वयं शश्वज्जोतींष्यत्र चतुर्दश ।
आद्यं श्रीभूमिचन्द्रेण राज्ञा पीठं विनिर्मितम् ।।313।।

सती के जिह्वा स्थल पर ज्वालामुखी देवी तथा उन्मत्त भैरव स्थित है यह स्थान कांगड़ा जिले में पर्वत पर है। यहाँ निरन्तर (14) ज्योतियाँ जलती रहती हैं। (कुछ कभी-कभी लुप्त हो जाती हैं) कहा जाता है कि राजा भूमिचन्द्र ने इन ज्योतियों की खोज की थी तथा मन्दिर बनवाया था।

14. **अवन्ती च महादेवी लम्बकर्णश्च भैरवः।**
उज्जयिन्यां हि शिप्रायास्तटे चोर्ध्वोष्ठपीठकम् ॥314॥

महादेवी अवन्ती और लम्बकर्ण भैरव मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में शिप्रा के किनारे हैं। यहाँ सती का ऊपरी ओठ गिरा था ऐसी मान्यता है।

15. **देवी च फुल्लरा यत्र विश्वेशो भैरवो स्थितः।**
अधरोष्ठयुते पीठे वर्धमानान्तिके स्थिते ॥315॥

जहाँ सती का नीचे का ओठ गिरा था वहाँ फुल्लरा देवी का शक्तिपीठ माना जाता है यहाँ भैरव विश्वेश हैं। (दिल्ली- हावड़ा रेल मार्ग पर वर्धमान स्टेशन से बस द्वारा अहमदपुर में कटवा लाइन पर लाभपुर स्टेशन के पास फुल्लारा देवी का मन्दिर है। इस स्थान का नाम अहहास है।)

16. **भ्रामरी भद्रकालीह विकृताक्षश्च भैरवः।**
सत्या हि चिबुके भातः पञ्चवट्यां च नासिके ॥316॥

भ्रामरी भद्रकाली तथा विकृताक्ष भैरव सती के चिबुक स्थल पर विराजमान हैं। यह स्थान नासिक (महाराष्ट्र) में पंचवटी में है। (यहीं लक्ष्मण ने सूर्पणखा के नाक और कान काटे थे।)

17. **महामाया महादेवी त्रिसन्धेश्वरभैरवः।**
विद्येतेऽमरनाथे च सतीकण्ठसमन्विते ॥317॥

अमरनाथ की गुफाओं में जहाँ सती का कण्ठ गिरा था वहाँ महामाया देवी और त्रिसन्धेश्वर भैरव हैं।

18. **नन्दिनी नन्दिकेशश्च भैरवः कण्ठहारगौ।**
हावड़ाक्यूलमार्गस्थे सैन्धिया स्थानके स्थितौ ॥318॥

नन्दिनी देवी और नन्दिकेश भैरव जो सती के कण्ठहार पर विराजमान हैं यह स्थान हाबड़ा-क्यूल मार्ग पर सैंथिया रेल्वे स्टेशन के निकट है। (इस स्थान का नाम नन्दीपुर है। विशाल वटवृक्ष के नीचे देवी की मूर्ति है।)

19. भ्रमराम्बा महालक्ष्मी शम्बरानन्दभैरवः ।
ग्रीवापीठे विराजेते मल्लिकार्जुनपर्वते ।।319।।

भ्रमराम्बा महालक्ष्मी तथा शम्बरानन्द भैरव सती की ग्रीवा पर स्थित हैं। यह स्थान मल्लिकार्जुन पर्वत पर स्थित है जहाँ मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग भी है।

20. महाकाली च योगेशो भातोऽन्त्राङ्गे च पीठके ।
हावड़ाक्यूलमार्गस्थे नलहाटी समीपतः ।।320।।

सती की आँत गिरने के स्थल पर नलादेवी (महाकाली) तथा योगेश भैरव का पीठ है। (नला को आँत कहते हैं) यह हावड़ा से क्यूल जाने वाले रेल पथ में नलहाटी रेलवे स्टेशन से तीन किलोमीटर पर है। यहाँ एक टीले पर आँत जैसा आकार है भक्तगण उसी की पूजा करते हैं।

21. वामस्कन्ध उमादेवी भैरवश्च महोदरः ।
मिथिलायां स्थिते पीठे यत्रोमा मिथिलेश्वरी ।।321।।

सती के बाएँ कंधे पर मिथिलेश्वरी महादेवी उमा और महोदर भैरव हैं। यह स्थल मिथिला (बिहार) में है। ज्ञातव्य है कि यहाँ सीता की जन्मभूमि भी है जो पार्वती की पूजा करती थीं यहाँ अनेक देवी मन्दिर हैं अतः मुख्य शक्ति पीठ अनुसन्धान का विषय है।

22. **कुमारी दक्षिणस्कन्धे शिवेन सह विद्यते ।**
रत्नावलीगिरेः पीठे किन्तु चान्यमते परा ।।322।।
रामेश्वरसमीपे या देवी कन्याकुमारिका ।
दक्षिणस्था कुमारीयं पयोधेः पार्श्वगा मता ।।323।।

सती के दाहिने कंधे पर शिव भैरव के साथ कुमारी देवी हैं। यह शक्तिपीठ रत्नावली पर्वत पर कुछ विद्वान् मानते हैं किन्तु शिव भैरव होने से रामेश्वर मन्दिर के समीप कन्या कुमारी देवी का मन्दिर होने ने समुद्र के समीप स्थित भारत की दक्षिण दिशा में यह पीठ मानना उचित प्रतीत होता है। राम ने रामेश्वर की स्थापना की है अतः एक दिशा में होने से शिव मन्दिर के समीप

के कन्याकुमारी को भी शक्तिपीठ मानने की परम्परा प्रचलित हो गई होगी।

23. **चन्द्रभागा महादेवी वक्रतुण्डश्च भैरव:।**
उदरस्थे महापीठे प्रभासस्थे हि राजत: ॥324॥

प्रभासतीर्थ में सती का उदर गिरा था, अत: वहाँ चन्द्रभागा महादेवी तथा वक्रतुण्ड भैरव स्थित हैं। (गिरनार पर्वत पर अम्बाजी तथा महाकाली के मन्दिर है दोनों को शक्तिपीठ माना जाता है।)

24. **जालन्धरी महादेवी भैरवश्चात्र भीषण :।**
वामस्तनस्थपीठे हि जालन्धरपुरेस्थितौ ॥325॥

जालन्धरी देवी तथा भीषण भैरव का शक्तिपीठ सती के बाएँ स्तन पर जालन्धर में स्थित है यहाँ तीन देवी पीठ भक्तगणों द्वारा माने जाते हैं -

1. चितापूर्णी 2. ज्वालामुखी और 3. नगरकोट की देवी।

25. **चण्डभैरवसंयुक्ता शिवानी विद्यते परा।**
स्तने वामेतरे चित्रकूटे रामगिरौ स्थिता ॥326॥
शारदामन्दिरं पीठं मैहरे सुप्रतिष्ठितम्।
चित्रकूटं च रामस्य तीर्थं जगति विश्रुतम् ॥327॥

विन्ध्याचल की पर्वत शृंखला में चित्रकूट पर्वत का क्षेत्र मध्यप्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की सीमा पर है एक ओर मध्यप्रदेश का सतना जिला है दूसरी ओर उत्तरप्रदेश का चित्रकूट जिला है। यहाँ चण्डभैरव तथा शिवानी देवी की स्थिति सती के दाहिने स्तन पर मानी जाती है। रामगिरि या कामदगिरि चित्रकूट में है यहाँ वाल्मीकि के साथ आकर श्रीराम सीता और लक्ष्मण ने अनेक वर्षों तक निवास किया। सतना और कटनी रेलमार्ग के मध्य मैहर स्टेशन है शारदा देवी का शक्तिपीठ पर्वत की चोटी पर स्थित है। चित्रकूट मानिकपुर से झाँसी रेलमार्ग पर चित्रकूटधाम स्टेशन के समीप है। वर्तमान में शारदा मन्दिर (मैहर) अत्यन्त विशिष्ट शक्तिपीठ माना जाता है।

26. **हृदयस्थे च पीठे सा जयदुर्गा हृदीश्वरी।**
वैद्यनाथयुता देवी वैद्यनाथे च धामनि ॥328॥

सती का हृदय जहाँ गिरा था वहाँ हृदयेश्वरी देवी तथा भैरव वैद्यनाथ हैं। दिल्ली हावड़ा रेलवे लाइन में पटना मार्ग से जाने पर जसीडीह जंक्शन से वैद्यनाथ धाम तक रेल मार्ग है। वैद्यनाथ धाम में एक ही प्रांगण में आमने सामने देवी शक्तिपीठ और वैद्यनाथ शिव का मन्दिर है। इन दोनों मन्दिरों में ऊपर के गुम्बदों से जुड़े रक्षासूत्र प्राय: बँधे रहते हैं।

27. **वक्रेश्वरी महादेवी वक्रनाथश्च भैरव: ।**
सतीमन:स्थले भातो दुबराजपुरे स्थितौ ।।329।।
प्रसिद्धेयं महादेवी शक्तिर्महिषमर्दिनी ।
देहली हावड़ा मार्गे वर्धमानान्तिके स्थिता ।।330।।

सती का मन गिरने के स्थान पर महादेवी वक्रेश्वरी तथा वक्रनाथ भैरव हैं। इन्हें महिषमर्दिनी देवी भी कहा जाता है इस शक्तिपीठ के लिए दिल्ली-हावड़ा मार्ग में वर्धमान से बस द्वारा जाया जा सकता है। यह अण्डाल-सैन्थिया रेल लाईन के दुबराजपुर स्टेशन के समीप है।

28. **शर्वाणी च महादेवी निमिषश्चात्र भैरव: ।**
सती चित्ते स्थिता कन्याकुमारीपार्श्वसंस्थिता ।।331।।

सती के चित्त के स्थल पर महादेवी शर्वाणी तथा निमिष भैरव हैं। यह पीठ दक्षिण में समुद्र के पास है। (वस्तुत: कन्याकुमारी को ही शक्तिपीठ माना जाता है। कुमारी जो दक्षिण कंधे पर स्थित रत्नावली पर्वत के समीप हैं, उसमें कुमारी नाम के कारण भ्रम की स्थिति है। ये दोनों ही शक्तिपीठ हैं एक दक्षिण कंधे से सम्बद्ध दूसरा सती के चित्त पर स्थित है।)

29. **बहुला चण्डिका देवी भीरुकश्चात्र भैरव: ।**
बङ्गे च वामबाहुस्थे पीठे यत्कटवान्तिके ।।332।।

बंगाल प्रदेश में कटवा रेलवे स्टेशन के पास (केतुब्रह्म ग्राम में) यह शक्तिपीठ है यह सती की बायीं भुजा पर स्थित है। यहाँ भीरुक नाम के भैरव हैं।

30. **भवानी दक्षिणे बाहौ चन्द्रशेखरसंयुक्ता ।**
सीताकुण्डे हि बङ्गस्थे चन्द्रशेखरपर्वते ।।333।।

सती को दक्षिणी भुजा पर भवानी देवी तथा भैरव चन्द्रशेखर स्थित हैं। बंगाल में यह पीठ चन्द्रशेखर पर्वत पर है। (बंगलादेश में चटगाँव से 40 किलोमीटर दूर सीताकुण्ड रेलवे

स्टेशन के समीप पर्वत पर यह स्थल है।)

31. **श्रीदेवी मङ्गलाचण्डी कपिलाम्बरभैरवः।**
कुपरस्थोज्जयिन्यां या हरसिद्धिरियं मता ॥334॥

उज्जयिनी में मंगलाचण्डी देवी जिन्हें वर्तमान में हरसिद्धि कहा जाता है। यह पीठ सती की कोहनी पर स्थित है यहाँ कोई मूर्ति नहीं है। कोहनी की ही पूजा होती है। यहाँ कपिलाम्बर नाम के भैरव हैं।

32. **गायत्री यत्र देव्यस्ति सर्वानन्दश्च भैरवः।**
मणिबन्धस्थले जातं पीठं पुष्करे स्थितम् ॥335॥

सती की दोनों कलाइयों पर पुष्करतीर्थ में माता गायत्री देवी और सर्वानन्द भैरव स्थित हैं। पुष्कर में गायत्री पर्वत पर यह पीठ है।

33. **दाक्षायणी महादेवी भैरवामरसंयुता।**
या च मानसरः पार्श्वे दक्षिणे करभे स्थिता ॥336॥

सती की दाहिनी हथेली पर महादेवी दक्षायणी और अमर भैरव हैं। यह पीठ मानसरोवर के समीप है। इसे मानस पीठ भी कहते हैं।

34. **यशोदेवी यशोहारे बङ्गदेशे विराजते।**
चण्डभैरवसंयुक्ता बामे च करभे स्थिता ॥337॥

यशदेवी तथा चण्डभैरव नाम से यह पीठ बंगलादेश के यशोहार नगर में है। भारत के वन गाँव स्टेशन जाकर, वहाँ से सीमा पार कर खुलना जाने वाली गाड़ी से यहाँ जाते हैं। इस स्थान को ईश्वरीपुर कहते हैं। यह पीठ सती की बाई हथेली पर है।

35. **अलोपी ललिता देवी भैरवो भवनामकः।**
अलोपीबागपीठे सा प्रयागे यत्कराङ्गुलौ ॥338॥

इलाहाबाद शहर में (गंगा यमुना संगम के समीप) अलोपी बाग मुहल्ले में सती के हाथ की उँगली पर यह पीठ है यहाँ ललिता देवी (जिन्हें वर्तमान में अलोपी देवी कहते हैं) का भव्य मन्दिर है, इनके साथ भव भैरव हैं।

36. **विमला विरजाक्षेत्रे पुरीतीर्थे विराजते ।**
सत्या नाभौ स्थिते पीठे जगन्नाथोऽत्र भैरवः ॥339॥

जगन्नाथपुरी तीर्थ (उड़ीसा) में विरजा क्षेत्र में सती की नाभि पर स्थित यह शक्ति पीठ हैं। यहाँ विमला देवी तथा जगन्नाथ भैरव हैं।

37. **वेदगर्भा महाकाली भैरवो रुरुनामकः ।**
शिवकाञ्च्यां विराजेते सतीकङ्कालसंस्थितौ ॥340॥

महाकाली वेदगर्भा तथा रुरु नामक भैरव सती का कंकाल गिरने के स्थल पर शिवकाञ्ची में विराजमान हैं। (शिवकांची में काली मन्दिर प्रसिद्ध पीठ है।)

38. **महाकाल्यसितोङ्गेन भैरवेण सह स्थिता ।**
सत्या वामे नितम्बे या कालमाधवपीठके ॥341॥

सती के बायें नितम्ब के स्थल पर असितांग भैरव के साथ महाकाली पीठ है। यह कालमाधव पीठ कहा जाता है।

39. **शोणाक्षी भद्रसेनौ हि नितम्बे दक्षिणे स्थितौ ।**
शोणोद्गमस्थले पीठेऽमरकण्टकपार्श्वगे ॥342॥

शोणाक्षी महादेवी तथा भद्रसेन भैरव सती के दाहिने नितम्ब के स्थल पर शहडोल जिले के अमरकण्टक में स्थित है। यहीं से शोणभद्र नद निकलता है।

40. **कामाख्या कामरूपा या सतीयोनिस्थले स्थिता ।**
प्रसिद्धे शक्तिपीठे साऽसमे कामगिरौ स्थिता ॥343॥
न स्थिता मन्दिरे मूर्तिः कुण्डमत्र हि पूज्यते ।
भाद्रे तथाऽश्विने माघे जायन्तेऽत्र महोत्सवाः॥344॥
ब्रह्मपुत्रनदे दिव्ये शिलाखण्डेऽत्र भैरवः ।
उमानन्दः शिवो यत्र नौभिर्गन्तुं हि शक्यते ॥345॥
पञ्चपीठानि चान्यानि कामाख्यामन्दिरान्तिके ।
रुद्रसौभारविष्णुश्रीरत्ननाम्नेति चासते ॥346॥

कामरूपा कामाख्या महादेवी का शक्तिपीठ आसाम में काम गिरि पर स्थित है यह

स्थल सती की योनि के स्थान पर है। यहाँ कोई मूर्ति नहीं है केवल कुण्ड की पूजा की जाती है भाद्रपद तथा आश्विन मास में यहाँ विशेष उत्सव मनाए जाते हैं। ब्रह्मपुत्र नद के मध्य उमानन्द नामक भैरव (शिव) एक शिलाखण्ड पर स्थित है यहाँ दर्शन पूजन के लिए नाव से जाना पड़ता है। इस शक्तिपीठ के समीप पाँच पीठ और हैं - 1. रुद्रपीठ, 2. सौभारपीठ, 3. विष्णुपीठ, 4. श्रीपीठ, 5. रत्नपीठ। रेलमार्ग से गोहाटी पहुँचने पर यहाँ जाने के लिए साधन उपलब्ध हैं।

41. **गुह्येश्वरी महामाया सत्या जानुस्थले स्थिता।**
कपालो भैरवो यत्र पीठे बागमतीतटे ॥347॥

सती के घुटने पर महामाया गुह्येश्वरी का पीठ है यहाँ इनके साथ कपाल भैरव हैं। यह पीठ बागमती नदी के तट पर है। नेपाल के सुप्रसिद्ध पशुपतिनाथ मन्दिर के समीप यह पीठ है।

42. **जयन्ती च महादेवी क्रमदीश्वरभैरवः।**
विद्येते वामजङ्घायां शिलाङ्गे च जगद्गिरौ ॥348॥

सती के बाएँ जंघे पर महादेवी जयन्ती तथा क्रमदीश्वर भैरव शिलांग में जयन्तिया पहाड़ी पर स्थित हैं। शिलांग से पचास किलोमीटर दूरी पर जयन्ती मन्दिर है।

43. **सर्वानन्दकरी देवी व्योमकेशश्चभैरवः।**
भातो दक्षिणजङ्घायां पटनास्थितपीठके ॥349॥

सती के दाहिने जंघे पर बिहार की राजधानी पटना में स्थित पीठ में सर्वानन्दकरी देवी और व्योमकेश भैरव विराजमान हैं।

44. **भ्रामरी भैरवश्चेशो वामे पादे हि राजतः।**
जलपाहगुडीपार्श्वेऽसमे त्रिस्रोतस्तटे ॥350॥

भ्रामरी महादेवी और ईश्वर भैरव सती के बाएँ पैर के स्थल पर विराजमान हैं। बंगाल में जलपाईगुड़ी में तीस्ता नदी के तट पर यह पीठ है।

45. **भैरवस्त्रिपुरेशो हि देवी त्रिपुरसुन्दरी।**
त्रिपुरायां गिरौ पीठे सत्याः पादे च दक्षिणे ॥351॥

सती के दाहिने पैर के स्थान पर देवी त्रिपुरसुन्दरी तथा त्रिपुरेश भैरव हैं। शिलचर स्टेशन से त्रिपुर सुन्दरी के पर्वत पर स्थित पीठ के लिए साधन उपलब्ध हैं।

46. **काली कपालिनी देवी सर्वानन्दश्च भैरवः ।**
वामजानुस्थिते पीठे बङ्गे तमलुकस्थले ॥352॥

सती के बाएँ टखने पर काली कपालिनी देवी और सर्वानन्द भैरव बंगाल में तमलुक में है। आसनसोल मिदनापुर जिले के पचकुड़ा स्टेशन से बस द्वारा यहाँ जा सकते हैं।

47. **सावित्री भैरवः स्थाणुर्दक्षिणजानुसंस्थिते ।**
पीठे भातः कुरुक्षेत्रे द्वैपायनसरोऽन्तिके ॥353॥

सती के दाहिने टखने पर कुरुक्षेत्र में द्वैपायन सर के समीप देवी सावित्री स्थाणु भैरव के साथ प्रतिष्ठित हैं।

48. **इन्द्राक्षी च महादेवी राक्षसेश्वरभैरवः ।**
नूपुरपातिते स्थाने लङ्कायां प्रतिष्ठितौ ॥354॥

महादेवी इन्द्राक्षी तथा राक्षसेश्वर भैरव जहाँ सती का नूपुर गिरा था उस स्थान पर लंका में विराजमान हैं।

49. **भूतधात्री युगाद्या च क्षीरकण्टकभैरवः ।**
वर्धमानान्तिके भातः पादाङ्गुष्ठे हि दक्षिणे ॥355॥

महादेवी युगाद्या भूतधात्री और क्षीरकण्टक भैरव वर्धवान स्टेशन से 35 किलोमीटर उत्तर क्षीरग्राम में स्थित है यहाँ सती के दाहिने पैर का अँगूठा गिरा था।

50. **अम्बिका च महादेवी भैरवामृतसंयुता ।**
जयपुरेऽथ वैराटे दक्षिणायां पदाङ्गुलौ ॥356॥

महादेवी अम्बिका अमृत भैरव के साथ जयपुर (राजस्थान) से सत्तर किलोमीटर उत्तर वैराट नामक स्थान पर सती के दायें पैर की उँगली पर स्थित हैं।

51. **कालिका नकुलीशश्च वामपादाङ्गुलिश्रिते ।**
पीठे च कालिकातायां कालीघट्टे व्यवस्थिते ॥357॥

महादेवी कालिका और नकुलीश भैरव सती के बाएँ पैर की अँगुली पर कलकत्ता के कालीघाट में अत्यन्त व्यवस्थित पीठ में स्थित है।

52. **जयदुर्गा महादेवी शङ्करो भैरव श्रुतः ।**
सत्याः कर्णौ समाश्रित्य प्रान्ते कर्णाटके स्थितौ ।।358।।
सतीकर्णावपातेन प्रान्तः कर्णाटकोऽभवत् ।
हन्त ! कुत्र स्थितं पीठं नाधुना प्राप्यते क्वचित् ।।359।।

जयदुर्गा महादेवी तथा भैरव शंकर ऐसा ज्ञात होता है कि सती के कर्ण स्थल पर कर्णाटक प्रदेश में स्थित हैं। सती के कर्ण गिरने के कारण ही संभवतः इस प्रदेश का नाम कर्णटक है किन्तु खेद है कि इस पीठ की मूल स्थिति कहाँ है यह ज्ञात नहीं है।

विद्यते सुप्रसिद्धाम्बा विन्ध्याचलनिवासिनी ।
अत्रैवाष्टभुजादेवी पर्वते भैरवान्विता ।।360।।
यशोदागर्भसम्भूता योगमाया सुकन्यका ।
कंसहस्ताद्वियन्मार्गाद्विन्ध्यमागत्य संस्थिता ।।361।।

मिर्जापुर जिले में विन्ध्याचल स्टेशन से थोड़ी दूर पर विन्ध्यवासिनी देवी का मन्दिर है, यहीं कुछ दूरी पर पहाड़ पर अष्टभुजा देवी का मन्दिर है, श्रीमद्भागवत के अनुसार कंस जब देवकी की पुत्री समझकर उसको शिला पर पटककर मारना चाहता था तब उसके हाँथ से उड़कर विन्ध्याचल पर्वत पर आकर स्थित हो गई इन्हीं को अष्टभुजा (अष्टभुजी) कहा जाता है। योगमाया यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुईं थीं किन्तु नवजात अवस्था में वसुदेव अपने पुत्र श्रीकृष्ण को वहाँ रखकर योगमाया को देवकी के पास उठा लाए थे। दुर्गासप्तशती में भी विन्ध्याचलनिवासिनी का उल्लेख है।

चामुण्डा च महादेवी देवासे च विराजते ।
मुम्बादेवी मुम्बय्यां चान्यदेव्यः प्रतिष्ठिताः ।।362।।

मध्यप्रदेश के देवास शहर में पर्वत पर चामुण्डा का मन्दिर है। बम्बई में मुम्बादेवी तथा अन्य अनेक देवी मन्दिर है।

झौतेश्वरतीर्थे च श्रीधामनिकटे स्थिता ।
त्रिपुरसुन्दरी देवी शिवश्चात्र प्रतिष्ठितः ।।363।।

नरसिंहपुर (म.प्र.) जिले के श्रीधाम स्टेशन उतर कर जाने पर झौतेश्वर तीर्थ में त्रिपुरसुन्दरी का भव्य मन्दिर है, यहाँ शिव भी प्रतिष्ठित हैं।

जाबालिपुरेऽप्येकं मन्दिरं सिविकसेण्टरे ।
स्वामिस्वरूपानन्देन देव्या निर्मापितं नवम् ।।364।।

स्वामीस्वरूपानन्द सरस्वती ने पूर्ववर्णित त्रिपुर सुन्दरी का मन्दिर झौतेश्वर में तथा एक जबलपुर शहर के मध्य सिविक सेण्टर में बनवाया है। (यहाँ तेवर शक्तिभवन के समीप तथा सदर में भी त्रिपुरसुन्दरी तथा काली मन्दिर हैं।)

होशंगाबादे महादेवी सल्कनपुरवासिनी ।
पीताम्बरामहापीठं दतियामण्डले स्थितम् ।।365।।

होशंगाबाद से बीस किलोमीटर की दूरी पर सल्कनपुर में महादेवी का मन्दिर है। मध्यप्रदेश के ग्वालियर के समीप दतिया में पीताम्बरा सिद्धपीठ स्थापित है।

कालप्यां च महादेवी नाथः कालप्रियस्तथा ।
अम्बा खर्जूरवाहेऽपि शिवेन सह विद्यते ।।366।।

कालपी (ग्वालियर के निकट) में दुर्गा महादेवी तथा कालप्रियानाथ शिव मन्दिर है। छतरपुर (म.प्र.) जिले के खजुराहो में दुर्गा देवी का तथा शिव का भव्य मन्दिर है यहाँ अनेक भव्यमन्दिर परकोटे में बने हैं। यहाँ महोबा अथवा सतना रेलवे स्टेशन से बस द्वारा अथवा वायुयान से जाया जा सकता है। यहाँ आने के लिए रेलवे लाइन भी बनने वाली है।

राष्ट्रमातुर्महद्दिव्यं भारतमातृमन्दिरम् ।
हरिद्वारे परञ्चात्र गायत्र्याश्च तपः स्थलम् ।।367।।
गायत्र्याः सुपीठानि श्रीरामेण शर्मण ।
बहूनि स्थापितान्यत्र राष्ट्रे भान्ति समन्ततः ।।368।।

स्वामी सत्यानन्द गिरि ने हरिद्वार में भारत माता का प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया है। यहीं गायत्री मन्दिर तथा गायत्री साधना की तपः स्थली है, आचार्य श्रीराम शर्मा ने पूरे राष्ट्र में गायत्री मन्दिर तथा गायत्री साधना के केन्द्र बनाए हैं।

प्रयागस्थे कड़ायां च माणिक्यपुरवासिनी ।
रामस्य नगरे चान्या शीतलामन्दिरे स्थिता ।।369।।

प्रयाग जिले के सिराथू स्टेशन के समीप कड़े मानिकपुर में देवी का मन्दिर है। यहीं मेजा तहसील में गंगा-तमसा-संगम के समीप रामनगर में शीतलादेवी का मन्दिर है। यहाँ बैलों का

विशाल बाजार भी गुरुवार और रविवार को लगता है।

विजयस्य पुरे मान्या विजया हि विराजते ।
विन्ध्याचलसमीपे या माण्डायां माण्डवी स्थिता ।।370।।

मिर्जापुर जिले में गैपुरा रे.स्टे. के समीप विजयपुर में विजया देवी का मन्दिर है। माण्डा (इलाहाबाद) में माण्डवी देवी का मन्दिर है।

सङ्गमा सङ्गमनीया तमसातटवासिनी ।
ग्रामे समहने ख्याता सम्यग्गमनदायिनी ।।371।।

सङ्गमनी देवी गंगा तमसा के संगम के निकट समहन ग्राम में विराजमान हैं। सम्यग् गमन की प्रेरणा के लिए इनकी आराधना की जाती है।

सर्वत्र नगरे ग्रामे काचिद्देवी विराजते ।
पराम्बायास्तु पूजायाः सर्वत्राऽस्ति परम्परा ।।372।।

भारत राष्ट्र के प्राय सभी नगरों और ग्रामों में निश्चित ही ग्राम देवी अथवा नगर देवी के मन्दिर हैं। इस प्रकार सारे राष्ट्र में देवी पूजा की परम्परा है। नवरात्रों में पूरे नगर और गाँव के लोग अर्चन पूजन के लिए विशेष रूप से इन मन्दिरों में जाते हैं।

यत्र-यत्र विराजन्ते मन्दिराणि शिवालयाः ।
भवानीशङ्करौ तत्र विराजेते न शंसयः ।।373।।

समूचे भारत राष्ट्र और विदेशों में भी जहाँ भी शिव मन्दिर हैं - वहाँ निश्चित रूप से शंकर और पार्वती की मूर्ति अवश्य दिखाई देती है। अविभाजित भारत के अनेक शक्तिपीठ वर्तमान में पाकिस्तान बंगलादेश तथा नेपाल में स्थित हैं। इनका भी वर्णन बावन शक्ति पीठों में यहाँ किया जा चुका है।

'ॐ नमः शिवाय' की ध्वनि सभी मन्दिरों में पूजन के समय तथा मन्दिर की ओर जाने वाले भक्तों की टोलियों में सुनाई देती है। शिव परिवार से विषम स्थिति में भी शान्ति की प्रेरणा प्राप्त होती है। गणेश का वाहन चूहा है, शिव के गले का हार सर्प है चूहे को शिव के गले का सर्प नहीं खाता, दुर्गा का वाहन सिंह है, शिव का वाहन बैल (नन्दी) है किन्तु वह सिंह से सुरक्षित है, कार्तिकेय का वाहन मयूर है फिर भी उसका भक्ष्य शिव के गले का हार सर्प सुरक्षित है। इसलिए

नमः शिवाय कहने से शान्ति का अनुभव होता है। केवल ॐ कहने से भी शान्ति मिलती है। नादपूर्वक ध्यान करने से हृदयगति और रक्तचाप सन्तुलित अवस्था में रहता है। ॐ नमः शिवाय कहते हुए शिव लिंग पर दूध चढ़ाने से पारिवारिक कलह समाप्त हो जाता है। ॐ नमः शिवाय के जप और रुद्राक्ष की माला धारण करने से उस दिन दुर्घटना में मृत्यु नहीं होती। रुद्राक्ष की माला धारण करने से हृदय की गति भी ठीक रहती है, हृदयाघात जैसा कष्ट नहीं होता। इन विधानों को करके स्वयं इनके परिणामों का अनुभव किया जा सकता है।

ग्रामे देवी कुले देवी देवी दीप्तिस्तु सर्वतः।
नवरात्रे शरत्काले महापूजा विधीयते ॥374॥
व्यक्तिशः क्षेत्रशः पूजाविधानं भरतावनौ।
समूहेन विधीयन्ते चण्डीयागास्तु सर्वतः ॥375॥

भारत राष्ट्र में ग्राम देवी कुलदेवी आदि के रूप में देवी सर्वत्र विद्यमान हैं। नवरात्र में विशेषतया शरत्कालीन नवरात्र में मिट्टी की विशालकाय सुसज्जित मूर्तियाँ बनाकर सामूहिक पूजा मुहल्ले - मुहल्ले की जाती है। व्यक्तिगत रूप से तथा क्षेत्रीय स्तर पर पूजा की जाती है। प्रायः समूहिक रूप से शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लक्षचण्डी यज्ञ का विधान किया जाता है। कुम्भादि पर्वों में भी इस प्रकार के आयोजन किए जाते हैं।

गङ्गासागरः

यत्र गङ्गा हि बङ्गेऽङ्गते सागरं कापिले चाश्रमे तीर्थमेतन्महत्।
अध्वराश्वाय चेक्ष्वाकुवंशोद्भवैर्वारिधेर्यत्तटं वर्द्धितं वर्तते ॥376॥

जहाँ, बंगाल की खाड़ी में गंगा, सागर में गिरती है वहीं कपिल मुनि का आश्रम भी है इसे गंगासागर कहा जाता है। इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न सगर के पुत्रों द्वारा अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की खोज के लिए यहाँ खुदाई की गई थी जिससे सागर का किनारा बढ़ गया था। रघुवंश त्रयोदश सर्ग में कालिदास ने राम द्वारा सागर का परिचय सीता को कराते हुए कहा गया है - 'पूर्वैः किलायं परिवर्द्धितो नः'

पूर्वमावर्तितं तत्र गङ्गाननं सागरद्वीपमभ्येति धारैकला।
अत्र पञ्चाह्निके माकरे पर्वणि स्नान्ति भक्ताश्च पुण्यं लभन्ते परम् ॥377॥

पहले गंगा की पूर्ण धारा सागर में मिलती थी किन्तु अब सागर द्वीप के पास एक पतली

धारा समुद्र में मिलती है वहीं मेला लगता है। मेला सागर द्वीप में ही लगता है। मकर संक्रान्ति के समय प्रायः पाँच दिनों का मेला होता है। भक्तगण गंगा में स्नान करते हैं तथा सागर की प्रार्थना कर पुण्य लाभ करते हैं।

कापिलं मन्दिरं मज्जितं वारिधौ तस्य मूर्ति परा रक्षिता पूजकैः।
ताम्रवर्णप्रभा सा समानीयते सैव सङ्क्रान्तिमेलापके पूज्यते ॥378॥

कपिल मुनि का मन्दिर सागर में डूब गया है किन्तु उनकी ताम्रवर्णी मूर्ति पुजारियों द्वारा सुरक्षित कर ली गई है। संक्रान्ति के मेले में भक्तगण उसी की पूजा करते हैं।

बालुकास्फालितं क्षेत्रमत्राश्रयः एकमात्रे तडागेऽत्र पेयं जलम्।
अन्यतीर्थानि गच्छन्ति प्रायो जनाः सागरं चैकवारं वरं मन्वते ॥379॥

गंगासागर के तीर्थ यात्रियों के लिए रेतीला तट ही एकमात्र आश्रय है। रात्रि में तीर्थयात्री रेत पर ही विश्राम करते हैं। यहाँ एक ही तालाब है जिसका जल पीने योग्य है। अन्य तीर्थों में तीर्थयात्री अनेक बार जाते हैं किन्तु गंगासागर प्रायः एक बार ही जाते हैं।

यमुनोत्तरी (यमुनोत्री)

गङ्गा यथा भाति परा पवित्रा तथैव चास्ते यमुनाऽपि दिव्या।
हिमालयाद्यत्र विनिर्गते ते पदं च तन्नाम तदोत्तरीयम् ॥380॥

जिस प्रकार गंगा पवित्र नदी है उसी प्रकार यमुना को भी दिव्य माना जाता है। हिमालय के जिस क्षेत्र से ये दोनों पवित्र नदियाँ निकलती हैं उन्हें क्रमशः गंगोत्री तथा यमुनोत्री कहा जाता है।

गङ्गोत्तरी वा यमुनोत्तरी वा स्थली प्रसिद्धा ह्यनयोर्जनित्री।
हिमालयस्रोतस एव जाते कलिन्दकन्याऽपि च जह्नुकन्या ॥381॥

गंगोत्री अथवा यमुनोत्री गंगा और यमुना के उद्गम स्थल के रूप में प्रसिद्ध तीर्थ हैं। दोनों का स्रोत हिमालय है। यमुना को सूर्यसुता तथा कलिन्दकन्या, कालिन्दी भी कहा जाता है। इसी प्रकार गंगा को भागीरथी, विष्णु पदी, जह्नुकन्या, देवापगा आदि नाम से अभिहित किया जाता है।

शैत्यं महद्वारिणि सूर्यजायाः स्नातुं समर्थोऽस्ति जले न कोऽपि ।
कुण्डेषु किन्तूष्णजलानि पार्श्वे स्पृष्टानि यानि ज्वलयन्ति देहम् ॥382॥

यमुना के उद्गम स्थल का जल इतना शीतल है कि उसमें स्नान करने का साहस कोई नहीं कर पाता। समीपवर्ती कुछ कुण्डों में जल इतना गर्म है कि उसका स्पर्श करने पर हाथ जल जाता है।

स्वतण्डुलान् वस्त्रपुटेषु कृत्वावह्निं विनाऽप्यत्र पचन्ति भक्ताः ।
तप्तं च शीतं जलमेकपात्रे सम्मेल्य च स्नान्ति जनाः सहर्षम् ॥383॥

तीर्थयात्री अपने चावल की पोटली बनाकर गर्म पानी के कुण्ड में डाल देते हैं उससे भात पक जाता है। शीतल जल में गर्म जल को किसी पात्र में मिलाकर स्नान करते हैं।

पूर्वं महर्षेरसितस्य चात्र शुभाश्रमः श्रूयत उद्गमेऽस्मिन् ।
इतश्च नित्यं सवनाय गङ्गां गच्छन् स आसीदिति सुप्रसिद्धिः ॥384॥

प्राक्तन काल में यहाँ महर्षि असित का आश्रम था, ऐसी जनश्रुति है। यहाँ से वे प्रतिदिन गंगा स्नान के लिए जाया करते थे।

वृद्धं मुनिं तं गमनेऽसमर्थं दृष्ट्वा च गङ्गा स्वयमागताऽत्र ।
स्रोतोऽत्र दिव्योज्ज्वलमेकमेवं गङ्गाजलस्यापि विराजमानम् ॥385॥

जब असित महर्षि वृद्ध हो गए और प्रतिदिन गंगास्नान के लिए जाने की उनकी शक्ति क्षीण हो गई तब गंगा स्वयं उनके समीप आ गईं। यमुनोत्री के समीप एक ऐसा स्रोत है जो गंगा का स्रोत कहा जाता है। गंगा जल के समान उसका जल उज्ज्वल है।

सूर्यस्य पुत्र्याश्च यमानुजायाः कृष्णप्रियायाश्च कलिन्दपुत्र्याः ।
सुमन्दिरे स्थापितमूर्तिरास्ते विधीयते धर्मविधानमत्र ॥386॥

सूर्य की पुत्री, यमराज की बहन, श्रीकृष्ण की प्रिया तथा कलिन्द की पुत्री यमुना का यहाँ एक सुन्दर मन्दिर है जिसमें यमुना की मूर्ति प्रतिष्ठित है। यहाँ अनेक प्रकार के धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न होते रहते हैं।

गङ्गोत्री (गङ्गोत्तरी)

विष्णोः पदाभ्यां च पुनर्विधातुः कमण्डलोः शम्भुशिरोजटायाः ।
पूता हि गङ्गा निजपूर्वजानां मुक्त्यै च नीताऽत्र भगीरथेन ॥387॥

जब वामनावतार में भगवान् विष्णु ने विराट् रूप धारण कर तीनों लोक नापे उस समय ब्रह्मा ने उनके चरण को धोकर कमण्डल में रख लिया। भगीरथ ने अपने पूर्वजों की मुक्ति के लिए गंगा को धरती पर लाने के तपस्या की, गंगा ने कहा कि मेरे वेग को धरती नहीं सह पाएगी अतः शंकरजी ने अपनी शीशजटा में धारण किया वहाँ से वे धरती पर हिमालय से प्रवाहित होती हुई बंगाल की खाड़ी में समुद्र में जाकर मिल गईं।

गङ्गोत्तरी तत्प्रभवस्थली या हिमालये सा परमा पवित्रा ।
भागीरथीमन्दिरमत्र मुख्यं यस्मिन् प्रवेशः सुलभः समेषाम् ॥388॥

जो गंगा का उद्गम स्थल है वह हिमालय क्षेत्र का पवित्र तीर्थस्थल है। यहाँ भागीरथी का मन्दिर मुख्य है जिसमें सभी भक्तों को प्रवेश करने की पात्रता है।

श्री शङ्कराचार्यवरेण भव्या प्रतिष्ठिता मूर्तिमयीह गङ्गा ।
सुवर्णसम्भूषितमूर्तिरेषासरस्वतीश्रीयमुनासमेता ॥389॥

श्री शंकराचार्य ने यहाँ गंगा की भव्य मूर्ति स्थापित की है। यह मूर्ति सोने से सुसज्जित है। गंगा के साथ यहाँ सरस्वती और यमुना भी प्रतिष्ठित हैं।

श्रीशङ्कराचार्यभगीरथौ च तन्मन्दिरे मूर्तिमयौ विभातः ।
श्रीसूर्यदेवस्य तथा विधातुर्विष्णोश्च कुण्डानि विभान्ति पार्श्वे ॥390॥

इस मन्दिर में श्रीशंकराचार्य तथा भगीरथ की मूर्तियाँ भी विराजमान हैं। यहाँ समीप में ही सूर्य, ब्रह्मा तथा विष्णु के कुण्ड भी सुशोभित हैं।

शिला विशाला प्रसृताऽत्र चैका भगीरथोऽस्यां कृतवान् तपस्याम् ।
कुर्वन्ति भक्ताः पितृपिण्डदान मस्यां शिलायां हि विराजमानाः ॥391॥

यहाँ अत्यन्त बड़ी फैली हुई शिला है जिस पर स्थित होकर भगीरथ ने तपस्या की थी। सम्प्रति इस शिला पर तीर्थयात्री भक्त पितरों के लिए पिण्डदान किया करते हैं।

शैत्ये हिमाच्छादितमन्दिरस्थं मृकण्डुसूनोस्तपसस्स्थलं वै ।
गिरेरधस्तात् सकलाश्चलास्ता मूर्तीः समानीय च पूजयन्ति ।।392।।

शीतकाल में बर्फ से ढके मन्दिर जो मार्कण्डेय महर्षि की तपस्थली मानी जाती है, वहाँ की मूर्तियों को पर्वत से नीचे लाकर सभी भक्तगण पूजा किया करते हैं।

गङ्गोत्तरीतोऽध इहास्ति गौर्याः कुण्डं पवित्रं किल रम्यतीर्थम् ।
केदारगङ्गाऽत्र गता ततः सा भागीरथी सङ्गमनं करोति ।।393।।

गंगोत्तरी के नीचे पवित्र गौरी कुण्डतीर्थ है। केदार गंगा यहाँ से आगे बढ़कर भागीरथी में मिल जाती है। भगीरथ द्वारा आनीत गंगा को भागीरथी कहा जाता है।

पातङ्गनी क्षेत्रमिहैव यद्धि तपःस्थली भाति च पाण्डवानाम् ।
द्वियोजनानन्तरमत्र गङ्गोत्पत्तिस्थलं गोमुखनामधेयम् ।।394।।

गंगोत्री के समीप ही तीन किलो मीटर पर पातंगनी नामक पाण्डवों की तपोभूमि है ऐसा बताया जाता है कि यहाँ पाण्डवों ने बारह वर्ष तक तपस्या की थी। यहाँ से बीस-इक्कीस किलोमीटर की दूरी पर गंगा का उत्पत्ति स्थल है इसे गोमुख कहा जाता है। यहाँ का मार्ग दुर्गम है।

अनोकहैरोषधिभिश्च गुल्मैर्गङ्गोत्तरीक्षेत्रमिहातिदिव्यम् ।
हिमप्रवाहं परमाभिरामं लब्ध्वा जनैः तीर्थफलं सुलभ्यम् ।।395।।

यह स्थल वृक्षों, वनस्पतियों और झाड़ियों से आच्छादित है। गंगोत्तरी क्षेत्र बहुत दिव्य है। बर्फ से निकलने वाली धारा जिसे गोमुख कहा जाता है उसके दर्शन और स्नान से भक्तों का जीवन तीर्थफल प्राप्त कर धन्य हो जाता है।

उत्तरकाशी

तीर्थस्थली योत्तरखण्डभूमौ यथार्थनामोत्तरपूर्वकाशी ।
अत्रापि गङ्गावरुणा ह्यसी च वाराणसीयं ननु चोत्तरस्य ।।396।।

उत्तराखण्ड की तीर्थस्थली उत्तरकाशी वाराणसी के नाम को भी सार्थक करती है क्योंकि यहाँ भी अन्य दो नदियाँ वरुणा और असी हैं। उत्तरकाशी गंगा, वरुणा और असी नदी के मध्य

स्थित है (वाराणसी विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग वाली भी इन तीन नदियों के मध्य स्थित है।) वस्तुतः यह उत्तरकाशी नाम को सार्थक करती है।

सन्मन्दिराण्यत्र बहूनि सन्ति तद्विश्वनाथस्य परं प्रसिद्धम्।
युद्धस्य देवासुरशक्तिरूपं त्रिशूलमेकं किल दर्शनीयम् ॥397॥

यहाँ बहुत से मन्दिर है। यहाँ विश्वनाथ मन्दिर प्रसिद्ध है। देवासुर संग्राम की शक्ति का प्रतीक मन्दिर के सामने स्थित त्रिशूल दर्शनीय है।

गोपीशदत्तात्रिजभैरवाणां रुद्रेशलक्ष्येश्वरशङ्कराणाम्।
सदान्नपूर्णाभरतादिकानांसुमन्दिराण्यत्र विभान्ति तीर्थे ॥398॥

यहाँ गोपेश्वर, दत्तात्रेय, भैरव, रुद्रेश्वर, लक्ष्येश्वर आदि शिवविग्रहों, अन्नपूर्णा, जड़भरत आदि के सुन्दर मन्दिर बने हैं।

स्नात्वा पुरा वै वरुणाजलेन कृत्वार्चनं श्री विमलेश्वरस्य।
क्रोशाधिकं योजनमत्र भक्ताः परिक्रमार्थं प्रचलन्ति नूनम् ॥399॥

यहाँ पहले भक्तगण वरुणा नदी में स्नान कर विमलेश्वर भगवान् की पूजा करते हैं पुनः पंचकोशी (15 किलोमीटर) परिक्रमा करते हैं।

अत्राश्रमः श्रीभरतस्य भाति जडस्य बोधे प्रथितस्य तस्य।
श्रीब्रह्मणः कुण्डजले हि गाङ्गे स्नात्वा च पिण्डं ददतेऽत्र भक्ताः ॥400॥

यहाँ श्रीजडभरत का आश्रम हैं। (श्रीमद्भागवत के पंचम स्कन्ध में जडभरत की विस्तृत कथा है।) जडभरत वीतराग और ज्ञानी महात्मा थे। इसी आश्रम में ब्रह्मकुण्ड है जहाँ भक्तगण स्नान करते हैं तथा पितरों को पिण्डदान करते हैं।

वैष्णवी देवी

काश्मीरजम्बूधरणौ प्रसिद्धं श्रीवैष्णवीमन्दिरसिद्धपीठम्।
गिरेर्गुहायामिदमस्ति दिव्यं देवीत्रयी यत्र समष्टिरूपा ॥401॥

वैष्णवी देवी जम्मूकाश्मीर की धरती पर स्थित सिद्धपीठ है। इनका मन्दिर पर्वत की गुफा में स्थित है। सरस्वती, लक्ष्मी और काली यहाँ समष्टि रूप में विद्यमान है।

सरस्वती सृष्टिकरी प्रसिद्धा लक्ष्मी च सम्पालनसंविधात्री ।
काली च या संहरणे समर्थाश्रीवैष्णवी सर्वकरी पराम्बा ।।402।।

सरस्वती जी सृष्टि करने में प्रसिद्ध हैं, लक्ष्मी जी पालन पोषण करने वाली हैं महाकाली दुष्टों के संहार में समर्थ हैं किन्तु श्री वैष्णवी देवी सृष्टि, पालन और संहार तीनों की समष्टि रूप पराम्बा मानी जाती हैं।

पुरा श्रुता दक्षसुता सतीयं शिवस्य पत्नी प्रथमा प्रसिद्धा ।
दक्षस्य यज्ञे निजयोगदग्धा पुनश्च देवात्मन आत्मजेयम् ।।403।।

पहले ये दक्षप्रजापति की पुत्री थीं इनका विवाह भगवान् शंकर से हुआ था। ये शिव की प्रथम पत्नी सती थीं। दक्ष प्रजापति शिव से अप्रसन्न थे अत: अपने यज्ञ में उन्होंने शिव को आमन्त्रित नहीं किया। शिव के मना करने पर भी वे पिता के यज्ञ में चली गईं। वहाँ शिव का भाग न देख कर बहुत व्यग्र हुई और स्वयं योगाग्नि उत्पन्न कर वे जल गई। पुन: देवतात्मा हिमालय की पुत्री पार्वती हुई जिनका विवाह शिव से हुआ।

याऽति प्रसिद्धाभिजनस्य नाम्ना सा पार्वती पर्वतवासिनीयम् ।
ॐमन्यमानेयमुमेति नाम्ना सा चाम्बिकेथं जगत: प्रसिद्धा ।।404।।

इनका पार्वती नाम अभिजन के नाम से प्रसिद्ध है पर्वत पर निवास करने के कारण पार्वती हैं। 'ॐ शिवं मन्यत इति उमा' ॐ अर्थात् शिव को मानने के कारण अथवा महाकवि कालिदास के अनुसार 'उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम। कुमार सं. 1.26)' 'उ' (विस्मयबोधक अव्यय) मा (मत करो)। पार्वती की माता मेना जब शिव की प्राप्ति के लिए तपस्या करने जाने लगीं तब उ (अरे) मा ऐसा मत करो इस प्रकार कहा अत: उनका नाम 'उमा' पड़ गया। 'मा' लक्षी का भी पर्याय है उ (शिव) की पत्नी इस दृष्टि से उमा नाम सार्थक है। कालिदास ने इन्हें सभी की माँ कहा है। रघुवंश के मंगलाचरण में उन्होंने लिखा है -

'वागर्थाविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ।।'405।।

इस प्रकार शिव को जगत् का पिता और उमा को जगत् की माता माना जाता है।

हिमालयस्यात्मजयाऽनया वै कृता तपस्या महती शिवाय ।
तपस्ययाऽस्या: परमप्रसन्नो भवोऽत्र पाणिग्रहणं चकार ।।406।।

हिमालय की पुत्री पार्वती ने शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए महती तपस्या की। पार्वती की इस तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने पार्वती के साथ विवाह किया।

गिरौ त्रिकूटे प्रकृतिस्वरूपा पिण्डत्रयीयं जगतः प्रसिद्धा।
काङ्क्षन्ति भक्ता इह सिद्धपीठे यत्तस्य पूर्तिं कुरुते ध्रुवं सा ॥407॥

त्रिकूट गिरि पर प्रकृति स्वरूपा देवी की तीन मूर्तियाँ (महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की) हैं। इस सिद्धपीठ में दर्शन करने से भक्त की जो कामना होती है उसकी पूर्ति निश्चित रूप से होती है।

अत्रैव सिद्धाश्च तपस्विनश्च सकिन्नरा देवगणाश्च सर्वे।
सेवन्त आद्यां च शिवं च नित्यं भक्तेष्वयं प्रत्यय आदिमान्यः ॥408॥

भक्तों की प्राक्तन काल से यह अवधारणा है कि यहाँ सिद्ध, तपस्वी, किन्नर और सभी देवता आद्या शक्ति वैष्णवी देवी तथा शिव की आराधना करते हैं।

आयान्ति भक्ताः सततं सहर्षं विशेषतस्ते नवरात्रकाले।
आध्यात्मिकं सौख्यमितः सुरम्यं दृश्यं निसर्गस्य परं लभन्ते ॥409॥

यहाँ भक्तगण निरन्तर आते रहते हैं। नवरात्र में अधिक तीर्थ यात्री आते हैं। यहाँ भक्तगण आध्यात्मिक सुख के साथ यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द प्राप्त करते हैं।

जम्मूतवीतः कटरां च गत्वा क्रोशं पदातेः गमनस्य मार्गः।
सोपानमार्गोऽपरमार्ग एको लम्बायमानः सुगमस्तथापि ॥410॥

जम्मूतवी रेलवे स्टेशन से कटरा तक बस द्वारा जाने पर तीन किलो मीटर पैदल जाना पड़ता है। वहाँ से एक सीढ़ियों वाला मार्ग है दूसरा मार्ग कुछ लम्बा पड़ता है किन्तु सुगम है।

देव्यर्चकानां जयगानघोषै देवीमयं सर्वजगद्विभाति।
ज्योतिर्मयी सिंहसमाधिरुढा सङ्कीर्त्यते वर्त्मनि भक्तवर्यैः ॥411॥

वैष्णवदेवी के दर्शन के लिए जाते समय मार्ग में जय मा दी, जय माता दी, जय शेरावाली और ज्योतिर्मयी आदि के नारे लगाते हुए तीर्थयात्री पदयात्रा करते हैं।

अमरनाथः

तीर्थं महच्छ्रीनगरस्य पार्श्वे गिरौ हिमाभे दशयोजनान्ते ।
गुहास्थितोऽत्रामरनाथशम्भुः लिङ्गं हिमस्येह च यस्य पूज्यम् ॥412॥

यह तीर्थ श्रीनगर के समीप है । श्रीनगर से लगभग एक सौ दस किलोमीटर पर है। यह पर्वत हिम से आच्छादित रहता है। यह मन्दिर एक प्राकृतिक गुफा में है। यहाँ बर्फ के शिवलिंग की पूजा की जाती है।

न मन्दिरं किञ्चिदिहास्ति शम्भोर्न शिल्पिभिस्तस्य गुहा कृतास्ते ।
द्वारं विना प्राकृतिकी गुहेयं हिमस्य लिङ्गं स्वयमुद्गतं च ॥413॥

यहाँ शिव का कोई मन्दिर नहीं है। इसकी गुफा को किन्ही कारीगरों ने बनाया भी नहीं है। बिना दरवाजे की यह प्राकृतिक गुफा है यह बर्फ के शिवलिंग का निर्माण स्वयं होता है। (इस गुफा के ऊपरी भाग में एक छिद्र है, उससे रिसकर एक-एक बूंद पानी गिरता है वही यहाँ इकठ्ठा होकर शिवलिंग का निर्माण कर देता है।)

पक्षे च शुक्ले हिमलिङ्गवृद्धिः कृष्णेह्यपक्षीयत एतदत्र ।
वर्षर्तुकाले क्रम एष भक्तैर्विलोक्यते विस्मयमादधानैः ॥414॥

शुक्ल पक्ष में यहाँ यह शिवलिंग बढ़ता है तथा कृष्ण पक्ष में गलकर क्षीण होता है। वर्षाकाल में यह क्रम भक्तगण विस्मय के साथ देखते हैं।

शिवः पुरा श्रावणपूर्णिमायां समागतोऽस्यां किल सद्गुहायाम् ।
अतोऽत्र भक्ताः शिवदर्शनार्थमायान्ति ते श्रावणपूर्णिमायाम् ॥415॥

ऐसी जनश्रुति है कि श्रावण की पूर्णिमा को भगवान शिव इस गुफा में आए थे। अतः भक्तगण विशेष रूप से श्रावण की पूर्णिमा को आते हैं।

श्री शङ्कराचार्यवरेण साकं भक्ताःसदा श्रावणपञ्चमीतः ।
गच्छन्ति ते श्रीनगरात्सुतीर्थं रौप्ये च दण्डे ध्वजमादधानाः ॥416॥

श्री शंकराचार्य के साथ प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल पंचमी को भक्तगण श्रीनगर से अपनी तीर्थयात्रा प्रारंभ करते हैं चाँदी के दण्ड में ध्वज लगाकर भक्तगण यहाँ आते है।

गृहस्थसंन्यासिविरक्तभक्ताः श्रद्धायुताःश्रीनगरे मिलन्ति ।
इयं महात्संसदितश्चलन्ती सङ्कीर्तनैर्यात्यमरेशतीर्थम् ।।417।।

संन्यासी, विरक्तऔर गृहस्थ भक्त श्रीनगर में इकठ्ठे होते हैं। यह महती संसद संकीर्तन करती हुई अमरनाथ भगवान के दर्शन के लिये एक साथ तीर्थ यात्रा पर निकलती है।

काश्मीरजा वास्तुकला प्रसिद्धा विख्यातमार्तण्डनिकेतनस्य ।
साऽनन्तनागस्य समीप एव ध्वंसावशेषा किल दर्शनीया ।।418।।

काश्मीर की अत्यन्त प्रसिद्ध वास्तुकला का दर्शन प्रसिद्ध सूर्यमन्दिर में किया जा सकता है। यह अनन्त नाग के समीप पहाड़ी पर स्थित है। यद्यपि यह ध्वंस अवस्था में तथापि प्राक्तन वस्तुकला का अनुभव कराने में समर्थ है।

पशुपतिनाथः

नेपालदेशस्य च राजधान्यां पशोःपतिर्नाथ इहा विभाति ।
तन्मन्दिरं विष्णुमतीतटेऽस्ति यत्काठमाण्डूनगरस्य पार्श्वे ।।419।।

नेपाल देश की राजधानी काठमाण्डू नगर के समीप विष्णुमती नदी के किनारे पशुपतिनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है।

क्रोशद्वयं मन्दिरमस्ति शम्भोः यत्काण्ठमाण्डूनगरान्न दूरम् ।
शताधिकान्यत्र सुमन्दिराणि यान्यत्र मार्गं परितो विभान्ति ।।420।।

काठमाण्डू से यह मन्दिर लगभग छः किलोमीटर की दूरी पर है काठमांडू से साधन उपलब्ध हैं। मार्ग के दोनों ओर शताधिक मन्दिर हैं अतः पदयात्रा करते हुए जाने पर सभी का सम्यक् दर्शन करते हुए यहाँ पहुँचा जा सकता है।

न लिङ्गरूपं शिवविग्रहस्य मनुष्यरूपाकृतिरस्य भव्या ।
अस्याश्च कट्युत्तरभाग एव जापानशिल्पाश्रितमन्दिरेऽस्ति ।।421।।

इस मन्दिर में शिव की लिंगमयी मूर्ति नहीं है अपितु मानवरूपाकृति है इस मूर्ति में कटि के ऊपर का भाग ही है। यह मन्दिर जापान के शिल्प में निर्मित है।

गवाक्षभागो रजतप्रणीतः भक्तप्रवेशोऽत्र नियन्त्रितोऽस्ति ।
सम्पूजका मन्दिरसन्नियुक्ताः प्रवेशमर्हन्ति शिवार्चनोत्काः ॥422॥

इसकी खिड़की चाँदी से बनी है, इससे भक्तों का प्रवेश वर्जित है। मन्दिर में नियुक्त पुजारी यहाँ हैं जिनके सहयोग से शिव की अर्चना करने के इच्छुक भक्त इसमें प्रवेश के लिए पात्र होते हैं।

शाकुन्तले मङ्गलपद्यलभ्यं तदष्टतत्त्वान्वितमूर्तिरूपम् ।
यथाऽस्ति मूर्तिः किल मन्दसौरे तथाऽत्र संस्थापितमूर्तिरूपम् ॥423॥

कालिदास के अभिज्ञान शाकुलम् में अष्टमूर्ति शिव का स्वरूप वर्णित है -

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्यविश्वम् ।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥(1.1)424॥

पशुपतिनाथ अष्टमूर्ति शिव हैं। इस प्रकार की एक मूर्ति मन्दसौर में नदी के किनारे है। मन्दसौर म.प्र. का जिला है। उसी प्रकार की काठमाण्ड् की मूर्ति है। किसी न किसी रूप में दोनों समान संस्कृति और पूजा के क्षेत्र से सम्बद्ध रहे हैं।

पञ्चानना मूर्तिरियं शिवस्य या पारसप्रस्तरनिर्मितास्ते ।
लोके प्रसिद्धिर्नहि किन्तु कैश्चित् लौहे सुवर्णत्वमितो व्यधायि ॥425॥

यहाँ शिव की मूर्ति पाँच मुख वाली है। यह पारस पत्थर से निर्मित है। लोक में ऐसी प्रसिद्धि है कि पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है। किन्तु किसी ने यहाँ लोहे से सोना नहीं बनाया। वस्तुतः मूर्ति के स्पर्श और दर्शन से भक्त को शिव स्वयं समृद्ध बना देते है यही पारस प्रस्तर की मूर्ति की संगति है।

शम्भोश्च यन्माहिषरूपमास्ते शिरोंश एवात्र विराजमानः ।
शिवस्य नन्दीप्रतिमासमीपे देव्या विशालं सुनिकेतनञ्च ॥426॥

भगवान् शिव का जो माहिषरूप है उसका केवल शिरोभाग यहाँ दृष्टिगत होता है। शिव और नन्दी की प्रतिमा के समीप में ही जगदम्बा का विशाल सुन्दर मन्दिर है।

गुह्येश्वरीमन्दिरशक्तिपीठं सत्याश्च जानुद्वयसंस्थितं यत् ।
भव्यं विशालं प्रथितं पृथिव्यां तीर्थं महत्तान्त्रिकसाधकानाम् ।।427।।

सती के जानुद्वय पर स्थित महादेवी गुप्तेश्वरी का मन्दिर यहाँ का शक्तिपीठ है। यह भव्य और विशाल है। यह तीर्थ तान्त्रिक साधना का जगत् प्रसिद्ध केन्द्र है।

इतश्च यद्विंशति योजनान्ते सन्मन्दिरं भाति विभाति तत्र
श्रीमुक्तिनाथो हि यथार्थनामा भक्ता इहाऽयान्ति विमुक्तिकामाः ।।428।।

यहाँ से दो सौ अस्सी किलोमीटर दूर विमुक्तिनाथ का मन्दिर है। जो यथा नाम तथा गुण के प्रतीक हैं। मुक्ति की कामना से भक्तगण यहाँ आते हैं।

कुरुक्षेत्रम्

गीताऽदिपद्ये श्रुतमेव धर्मक्षेत्रं कुरुक्षेत्रमतिप्रसिद्धम् ।
युद्धात्कुरुक्षेत्रमिदं च धर्मक्षेत्रं तु गीताविहितोपदेशात् ।।429।।

राष्ट्र के प्रसिद्धतम ग्रन्थ श्रीमद्‌भगवद् गीता के प्रथम श्लोक – 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे – 0' से इस स्थान का नाम प्रायः सभी को विदित है। यहाँ कौरवों और पाण्डवों का युद्ध हुआ था, अतः इसका नाम कुरुक्षेत्र है। इसी युद्ध में अर्जुन अपने गुरु, पितामह और स्वजनों को सामने देखकर गाण्डीव फेंक कर युद्ध से विरत होने लगे तब उसके सारथी श्रीकृष्ण ने उन्हे युद्ध करने की प्रेरणा देने के लिए जो उपदेश दिया वहीं श्रीमद्‌भगवद् गीता है। भारतीय सन्दर्भ में धर्म अंग्रेजी के रिलीजन शब्द की तरह सीमित अर्थ का बोधक न होकर मानव कर्त्तव्य का बोधक है। मनुष्य कहे जाने के लिए मानव धर्म (मानव कर्त्तव्य) के दश घटक मनु ने बताए हैं। इन घटकों में यदि कोई घटक भी किसी मनुष्य में नहीं है तो उसे भर्तृहरि ने (नीतिशतक में) पशु कहा है – धर्मेण हीना पशुभिः समानाः। मनुप्रतिपादित मानव धर्म इस प्रकार हैं –

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।430।।

(1. धैर्य, 2. क्षमा, 3. सहनशक्ति 4. चोरी न करना, 5. मानसिक शारीरिक शुद्धि और पर्यावरण को पवित्र बनाए रखने का प्रयत्न 6. इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना, 7. धी (धीर्धारणावती मेधा मतिरागामिगोचरा, बुद्धिस्तात्कालिकी प्रोक्ता प्रज्ञा त्रैकालिकी मता।।) भूत, भविष्य और

वर्तमान का ध्यान रखने वाली प्रज्ञा होना 8. विद्या अर्थात् कुछ सीखना 9. सत्य का पालन 10. क्रोध न करना) ये दश मानव होने की पहचान हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेश के कारण इसे धर्मक्षेत्र कहा जाता है।

कर्त्तव्यबोधाय महोपदेशः श्रीकृष्णदत्तोऽर्जुनमाध्यमेन।
सम्बोधने भारतशाब्दबोधे राष्ट्राय सन्देश इहास्तु मान्यः ॥431॥

श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन का संबोधन भारत भी है जो भारत राष्ट्र के लिए संबोधन है अर्थात अर्जुन के माध्यम से श्रीकृष्ण ने सारे राष्ट्र को कर्त्तव्यों का उचित सन्देश दिया है।

क्षेत्रं हि पुण्यस्य महत्पवित्रं वेदादिदं ब्राह्मणकालतश्च।
यज्ञस्य वेदीह च देवतानां सरस्वती चात्रनदी विलुप्ता ॥432॥

यह परम पवित्र पुण्यक्षेत्र है इसका वर्णन वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है। यहाँ कभी सरस्वती नदी प्रवाहित होती थी किन्तु आज उसकी धारा विलुप्त हो गई है। प्राक्तन वाङ्मय में सरस्वती नदी का वर्णन मिलता है।

नृपः कुरुर्यत्र धरां सुवर्णहलेन चाकर्षितवान् सहर्षम्।
उग्रं तपोऽप्यत्र विधाय मुक्तः सुरेन्द्रदेवेन सभाजितश्च ॥433॥

राजा कुरु ने यहाँ की धरती को सोने के हल से जोता था। यहीं पर उन्होंने उग्र तपस्या की थी इसके लिए उनका सम्मान इन्द्रदेव ने किया था।

इन्द्रेण दत्तं कुरवे वरं यत् युद्धेऽथवा यो हि तपो रतः स्यात्।
मृतः कुरुक्षेत्रगतः कदापि गमिष्यति स्वर्गमितश्च नूनम् ॥434॥

इन्द्र ने कुरु को यह वरदान दिया कि कुरुक्षेत्र में जो युद्ध करते समय अथवा तपस्या में रत रहते हुए मरेगा वह निश्चित रूप से स्वर्ग जाएगा।

विषादयुक्तेन युधिष्ठिरेण प्रोक्तं वने पर्वणि भारतस्य।
तीर्थं कुरुक्षेत्रमतिप्रकृष्टं सरस्वतीपार्श्वगतं सुतीर्थम् ॥435॥

विषादयुक्त युधिष्ठिर ने महाभारत के वन पर्व में कहा है कि कुरुक्षेत्र अत्यन्त श्रेष्ठ तीर्थ है जहाँ पवित्र सरस्वती नदी बहती है।

व्यासस्थली चात्र वराहतीर्थं ब्राह्मं सरश्चास्थिपुरं प्रसिद्धम् ।
श्रीचक्रतीर्थं च पृथूदकं च तत्तैजसं तीर्थमथो विभाति ।।436।।

यहाँ व्यासस्थली, वाराह तीर्थ, ब्रह्मसर, अस्थिपुर, चक्रतीर्थ, पृथूदक तैजस तीर्थ आदि यहाँ विद्यमान है।

सूर्यग्रहे सन्निहतीति तीर्थे यज्ञाश्वमेधस्य फलं सुलभ्यम् ।
कुण्डं पवित्रं च निकेतनस्थौ लक्ष्मीश्च विष्णुश्च विराजमानौ ।।437।।

सूर्यग्रहण के समय यहाँ संनिहति तीर्थ में अश्वमेघ यज्ञ करने का फल मिलता है। यहाँ एक पवित्र जलकुण्ड है तथा मन्दिर में लक्ष्मी और विष्णु की मूर्तियाँ विराजमान हैं । कुरुक्षेत्र में सातवनों की प्रसिद्धि रही है - काम्यक, अदिति, व्यास, कलकी, सूर्य, मधु और सीता-वन।

मणिकर्णम्

हारीन्द्रनाम्न्यां गिरिश्रृंखलायां यत्पार्वतीव्याससरित्समीपे ।
धारान्तराले मणिकर्णनाम हिमालयक्षेत्रगतं सुतीर्थम् ।।438।।

हिमालय पर्वत की हारीन्द्र नामक पर्वत श्रृंखला में जो पार्वती और व्यास नदियों के समीप है। धारा के मध्य स्थित क्षेत्र को मणिकर्ण कहा जाता है। यह भी हिमालय क्षेत्र का सुन्दर तीर्थ है।

यत्पश्चिमे शीतलवारिपूर्णं सरः परं चोष्णजलेन पूर्णम् ।
ब्राह्मी च गङ्गेह लसत्प्रवाहा पूर्वप्रभागे परमा पवित्रा ।।439।।

इसके पश्चिम की ओर शीतल जल वाला और दूसरा गरम जल वाला तालाब है। यहाँ पूर्व की अविरल धारा वाली ब्राह्मी और गंगा नदी हैं।

शम्भोः शिवाया इह वारिलीला काले शिवाकर्णमणिः पपात ।
त्रिलोचनोन्मीलितदिव्यनेत्रात् प्राप्तस्ततोऽभून्मणिकर्णतीर्थम् ।।440।।

कभी यहाँ शिव और पार्वती जलक्रीडा कर रहे थे। उसी समय पार्वती का कर्णमणि यहाँ गिर गया। शिव ने अपने दिव्य नेत्र से उसे प्राप्त किया। तभी से इसे मणिकर्ण तीर्थ कहा जाने लगा।

निसर्गसौन्दर्यमयेऽत्र तीर्थे दृश्यं मनोहारिविलोकयन्तः ।
मार्गश्रमं नानुभवन्ति भक्ताः नेत्रस्य निर्वाणफलं लभन्ते ॥441॥

इस तीर्थ में प्राकृति सौन्दर्य अत्यन्त मनोहारी है। इसके नैसर्गिक सौन्दर्य का अवलोकन करते हुए पैदल चलने वाले यात्रियों को मार्गश्रम का अनुभव नहीं होता। तीर्थ का पुण्य प्राप्त करने के साथ नेत्रों को भी परम सन्तुष्टि प्राप्त होती है।

अत्रागतास्तीर्थकृतो हि कुण्डे चोष्णे जले स्नान्ति सुखानुभूत्या।
आवासभोज्यौषधसुव्यवस्थां तीर्थस्थलं तत्कुरुते सहर्षम् ॥442॥

यहाँ आने वाले तीर्थयात्री गरम जल के कुण्ड में स्नान करने में सुख की अनुभूति करते हैं। तीर्थस्थल की ओर से आवास, भोजन और दवाइयों की व्यवस्था की जाती है।

सरस्सु वाष्पायितधूमलेखा निरन्तरं दृश्यत एव तीर्थे ।
धराऽपि तप्ता क्वचिदत्र पादत्राणं बिना नैव गतिः पदातिः ॥443॥

इस तीर्थ में तालाबों से उठता हुआ वाष्पधुवाँ जैसा दिखाई देता है। यहाँ जमीन भी कहीं कहीं इतनी तप्त है कि बिना जूता पहने पदयात्रा नहीं की जा सकती।

अत्यन्ततप्तेषु च कुण्डकेषु भोज्यं पदार्थं हि पचन्ति सन्तः ।
सरोवराः शीतलवारिपूर्णाः सन्त्यत्र केचित्प्रकृतिप्रदताः ॥444॥

यहाँ बहुत गर्म जल वाले कुण्डों में सन्त महात्मा अपना भोजन पकाते हैं। अनेक शीतलजल वाले तालाब भी यहाँ प्राकृतिक रूप से विद्यमान हैं।

अनोकहानेकवनस्पतीनां सदौषधीनां महती समृद्धिः ।
दिव्यौषधान्यत्र फलानि नूनं भद्रङ्कराण्यत्र बहूनि तीर्थे ॥445॥

वृक्षों और वनस्पति से यह तीर्थ समृद्ध है। यहाँ दिव्य औषधियाँ और फल प्राप्त होते हैं,जो लोगों की स्वास्थ्य रक्षा में समर्थ होने के कारण अत्यंत कल्याणकारी हैं।

तीर्थस्य मध्येऽत्र शिवालयोऽस्ति यः पार्वतीकूलगतः सुरम्यः।
ग्रामे मनोवाञ्छितपूर्तिकर्त्री निकेतनस्था परमा च देवी ॥446॥

तीर्थ क्षेत्र के मध्य में एक सुन्दर शिव मन्दिर पार्वती नदी केकिनारे है। समीपवर्ती गाँव में

महादेवी का मन्दिर है जहाँ देवी के दर्शन से भक्तों की मन: कामनाएँ पूरी होती है।

फणाकृतौ यत्र जलप्रपात: तद्रुद्रनागाख्यमिहास्ति तीर्थम् ।
धातुस्तप:पूतजला पवित्रा सा ब्रह्मगङ्गे ऽति च तीर्थरूपा ।।447।।

नाग के फन की आकृति वाले जल प्रपात को रुद्रनाग तीर्थ कहा जाता है । ब्रह्मा की तपस्थली पवित्र जल वाली ब्रह्म गंगा भी तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है।

चित्रकूटतीर्थम्

मन्दाकिनीकूलगतं सुतीर्थं कर्वीति रेलस्थलपार्श्ववर्ति ।
प्रयागतो द्वादश योजनान्ते विन्ध्याचले राजति चित्रकूट: ।।448।।

मन्दाकिनी नदी के तट पर (कर्वी) चित्रकूट धाम रेल्वे स्टेशन के समीप करीब 8 किलोमीटर दूर प्रयाग तीर्थ से लगभग एक सौ किलोमीटर दूर विन्ध्याचल पर्वत की श्रेणी में चित्रकूट स्थित है। म.प्र. के सतना तथा उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के भूभाग पर संयुक्त रूप से स्थित है।

वनप्रयाणावसरे ससीत: सलक्ष्मणो राम इहागतश्च ।
वाल्मीकिना तेन सहागतेन तस्य प्रवासाय कृता व्यवस्था ।।449।।

वनवास के समय तमसा गंगा के संगम पर निवास करने वाले वाल्मीकि राम, सीता और लक्ष्मण के साथ यहाँ आए थे और उनके आवास आदि की व्यवस्था की गई थी।

त्रिंशत् पदान्यत्र विभान्ति यानि तीर्थानि भक्तैरुररीकृतानि ।
विशेषतस्तेषु च कोटितीर्थं गोदावरी गुप्त विशेषणोक्ता ।।450।।
हनूमत: सा च विशेषधारा देवाङ्गना श्री भरतस्य कूपम् ।
शिला च दिव्या स्फटिकी प्रसिद्धा धातुस्तपोभूमि निकेतनं च ।।451।।

चित्रकूट क्षेत्र में ऐसे लगभग तीन स्थान हैं जिन्हें भक्तगण तीर्थ मानते हैं। इनमें विशेष रूप से गुप्तगोदावरी, कोटितीर्थ, हनुमानधारा, देवांगना, भरतकूप, स्फटिक शिला आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। मन्दाकिनी घाट पर ब्रह्मा के यज्ञ स्थल पर निर्मित मन्दिर है।

क्रोशे स्थितं श्रीजनकात्मजाया: कुण्डं च सीतापुरपुण्यभूमौ ।
रम्यासु शुभ्रासु शिलासु दिव्यो नदीप्रवाहस्तनुको विभाति ।।452।।

तीन किलोमीटर पर जानकी कुण्ड है, जो सीतापुर की पुण्यभूमि पर स्थित है। यहाँ सुन्दर श्वेत शिलाओं के मध्य नदी का क्षीणकाय प्रभाव मनोमोहक है।

आचार्यवर्यस्य च यत्र रामानन्दस्य पीठं महितं विभाति ।
श्रीरामभद्रस्य कथाप्रसङ्गै: तद्दर्शनोत्का: सततं रमन्ते ।।453।।

चित्रकूट के तुलसीपीठ के परमाचार्य श्री रामानन्दाचार्य का पीठ है वर्तमान में स्वामी रामभद्राचार्य तुलसी पीठाधीश्वर हैं। इसी पीठ में एक मानस भवन है जिसमें तुलसीदास कृत रामचरित मानस सम्पूर्ण रूप से उट्टंकित है। इसके मध्य विशाल सभा कक्ष है जहाँ प्राय: श्रीरामादि कथा पर स्वामी श्री रामभद्राचार्य तथा सन्त महात्माओं और विद्वानों के प्रवचन होते रहते हैं। जिसका भक्तगण दर्शन और श्रवण लाभ कर प्रसन्न होते हैं। इसी पीठ में श्रीराम का भव्य मन्दिर बना है। कामदगिरि की परिक्रमा अनसूया-आश्रम आदि का दर्शन कर तीर्थ यात्री पुण्य लाभ करते हैं।

राष्ट्रस्य लक्ष्म्या जनकात्मजाया: सत्स्वागते भारतभारतीयै: ।
दीपावली या विहिता स्वराष्ट्रे तस्यां तिथौ ह्यत्र च मुख्यपर्व ।।454।।

राष्ट्र लक्ष्मी (अयोनिजा) सीता जो जनक द्वारा पालित होने से जनकात्मजा कही जाती हैं। रावण वध केबाद उनके साथ राम दीपावली (कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या) को भारत लौटे अत: उस दिन भारतीयों ने उनके स्वागत में दीप जलाए थे, तभी से यह दीपावली पर्व होता है। इस तिथि को चित्रकूट में बहुत बड़ा मेला होता है। यहाँ दीपक जलाने भक्तगण अत्यधिक संख्या में आते हैं। इस समय अनेक स्थानों पर रामकथा आदि का यहाँ आयोजन होता है। यही यहाँ का मुख्य पर्व है।

रामायणस्यापि च यत्र सम्यक् मेलापकायोजनमत्र दिव्यम् ।
विधीयते तत्र मनीषिवर्या रामस्य काव्यानि विवेचयन्ति ।।455।।

इधर कुछ वर्षों से यहाँ दीपावली पर्व पर रामायण मेले का आयोजन किया जाता है। इसमें रामकथा के विशेषज्ञ विद्वान् रामकथा का सम्यक् विवेचन करते हैं।

अनेकयूथानि च वानराणां मन्दाकिनीकूलतटप्ररूढाः ।
पदे-पदे रामकथाप्रसङ्गा नाश्रित्य चिह्नानि च पूजितानि ॥456॥

रामकथा के विशेष रूप से ऐसे प्रसङ्ग जो चित्रकूट से सम्बद्ध हैं उन स्थानों का भक्तगण दर्शन पूजन करते है। यहाँ वानरों की संख्या बहुत अधिक है। मन्दाकिनी तट के वृक्षों पर तथा बस्ती में इनके झुण्ड के झुण्ड दिखाई देते हैं।

ग्रामोदयार्थेऽत्र च विश्वविद्यालयोऽपि संस्थापित एक आस्ते ।
नानाजिसङ्कल्पितभारतस्य राष्ट्रात्मिका भान्ति सुयोजनाश्च ॥457॥

यहाँ ग्रामीण विकास के लिये नानाजी देशमुख के प्रयास से ग्रामोदय विश्वविद्यालय स्थापित है। नानाजी की भारत राष्ट्र की अस्मिता को उजागर करने वाली अनेक योजनाएँ प्रवर्तित हैं।

गोपालनं पाककला चिकित्सा विद्यालयो धार्मिकमन्दिराणि ।
लघूद्यमान्यत्र पुरस्कृतानि नानाजिना यानि मनोहराणि ॥458॥

नानाजी द्वारा यहाँ अनेक योजनाएँ प्रवर्तित हैं, गोपालन, पाक कला, चिकित्सा, विद्यालय, रामदर्शन आदि धार्मिक भवन और अनेक लघु उद्योग यहाँ देखे जा सकते हैं। यहाँ लघु उद्योगों का निःशुल्क प्रशिक्षण भी गरीबों को दिया जाता है।

नेत्रस्य शल्याद्युपचारकेन्द्र मकिञ्चनानां च कृते विशालम् ।
निशुल्कसौविध्यमितः सुलभ्यं भद्रङ्करं डालमियाप्रवृत्तम् ॥459॥

आमोद वन क्षेत्र में तुलसी पीठ के समीप आँखों का एक बहुत बड़ा चिकित्सालय है। विशेष रूप से गरीबों के लिये यहाँ नि:शुल्क सुविधा आसानी से उपलब्ध है इसका निर्माण उद्योगपति डालमिया ने कराया है। इसकी व्यवस्था के लिये ट्रस्ट बना है।

हीनाङ्गकानामथ विश्वविद्यालयोनवीनः किल राजतेऽत्र ।
आचार्यवर्येण हि रामभद्रा चार्येण संस्थापित एष आस्ते ॥460॥

यहाँ श्री तुलसी पीठाधीश्वर रामानन्दाचार्य श्री रामभद्राचार्य ने विकलांगों के लिये नवीन विश्वविद्यालय स्थापित किया है। वर्तमान में वही इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं। यह विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश की सीमा में स्थापित है। चित्रकूट के समीप में अनेक आश्रम और मन्दिर दर्शनीय हैं।

नाथद्वारा

श्रीवैष्णवे वल्लभसम्प्रदाये नाथस्य द्वारं प्रथमं प्रकृष्टम् ।
सरः सुरम्यादुदयात्पुराच्च यद्द्वादशक्रोशमितं विभाति ।।461।।

वैष्णव धर्म के वल्लभ सम्प्रदाय का प्रमुख तीर्थ नाथद्वारा है। (यह उदयपुर जिले में बनास नदी के तट पर स्थित है) उदयपुर सुन्दर झीलों की नगरी है। यह तीर्थ उदयपुर से लगभग तीन किलोमीटर दूर है। नाथद्वारा रेलवे स्टेशन भी है। वहाँ से छह किलोमीटर है।

बनासनद्यास्तटभूमिभागे श्रीकृष्णसद्विग्रहपुण्यधाम ।
श्रीनाथनामा किल लब्धकीर्तिः मूर्त्यात्मना मन्दिरमध्यशोभी ।।462।।

बनास नदी के तट पर भगवान श्रीकृष्ण का सुन्दर मन्दिर है। इनकी प्रसिद्धि श्रीनाथ भगवान के नाम से है। इनकी भव्य मूर्ति मन्दिर में विराजमान है।

श्रीकृष्णमूर्तिं मथुरास्थितां तां विधर्मिणः खण्डयितुं प्रवृत्तान् ।
दृष्ट्वा च तां वल्लभ आप्तभक्तो गोस्वामिवर्योऽनयदत्र विज्ञः ।।463।।

पहले यह मूर्ति मथुरा के समीप गोकुल में थी विधर्मी (औरंगजेब आदि) जब इसे तोड़ने को प्रवृत्त हुए तब वल्लभ गोस्वामी जो कृष्ण के परम भक्त थे, यहाँ उठा लाए।

ररक्ष मूर्तिं नृपराजसिंहः लक्षाधिकारक्षिनिवेशनेन ।
घने च सिंहाड़वने च मूर्त्यै निकेतनं निर्मितवान् ततश्च ।।464।।

सिंहाड़ ग्राम के घोर जंगल में उदयपुर (राजस्थान) के राजा महाराणा राजसिंह ने (भगवान की प्रेरणा से) श्रीनाथ की मूर्ति स्थापित करने के लिये भव्य मन्दिर का निर्माण कराया। मूर्ति, मन्दिर और भक्तों की रक्षा भी राजसिंह ने एक लाख से अधिक सैनिकों को नियुक्त कर की।

ततः परं विग्रहदर्शनाय समागतान् भक्तवरान् विलोक्य ।
तदाश्रयार्थं महती पुरीयं क्रमेण जातेह परा पवित्रा ।।465।।

मन्दिर में मूर्ति स्थापित होने के बाद बहुत से भक्त दर्शन के लिये यहाँ आने लगे अतः उनको आश्रय प्रदान करने की दृष्टि से श्रीनाथद्वारा के रूप में एक विशाल नगरी बस गई।

प्राकारतश्चावृतमस्ति गेहं न तस्य कश्चिच्छिखरः कृतोऽस्ति ।
आच्छादनं खर्परराजिजातं सुदर्शनं चक्रमिहास्ति मध्ये ॥466॥

यह मन्दिर चारों तरफ से घेरी गई दीवारों से आवृत है। इसमें कोई गुम्बद नहीं बनाया गया है। इसे खपरों से आच्छादित किया गया है। मध्य में एक सुदर्शन चक्र बनाया गया है।

चक्रे च सप्तध्वजराजिरास्ते गोलोकरूपं च पदं समग्रम् ।
आभ्यन्तरः सङ्कुचितोऽस्ति मार्गः एकैकशो गच्छति भक्तवर्गः ॥467॥

सुदर्शन चक्र पर सात पताकाएँ फहराती रहती हैं। मन्दिर के विविध स्थलों को गोलोक का विविध स्थल माना जाता है। मन्दिर के भीतर जाने का मार्ग सकरा होने से क्रमशः एक-एक तीर्थ यात्री भीतर दर्शन के लिये जाता है।

मूर्तेश्च संभूषणवस्त्रभोगा: विभिन्नरूपा: परिवर्तमानाः।
रत्नैश्च हेमाभरणैश्च पात्रैः समृद्धिमन्मन्दिरमेतदस्ति ॥468॥

मूर्ति के आभूषण, वस्त्र और भोग सामग्री एक रूप में नहीं होती यथावसर परिवर्तित की जाती रहती है। यहाँ रत्नों, सोने के आभूषणों और पात्रों को देखने से यह मन्दिर अत्यंत समृद्ध प्रतीत होता है।

श्रीनाथसन्मन्दिरपार्श्व एव श्रीविठ्ठलः श्रीनवनीतःभक्तः ।
विराजमानौ किल मूर्तिरूपौ तौ चापि भक्तैरिह पूज्यमानौ ॥469॥

श्रीनाथ मन्दिर के परिसर में दो भक्तों श्रीविठ्ठल और श्री नवनीत की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। भक्तों द्वारा इन मूर्तियों की भी पूजा अर्चना की जाती है।

श्री नाथनाम्नः परमेश्वरस्य धाम्नि स्थितैका महती च शाला ।
सहस्रशो यत्र विभान्ति गावः राष्ट्रे परा या किल मन्यमाना ॥470॥

भगवान् श्रीनाथ के परिसर में ही एक विशाल गोशाला है जहाँ हजारों गायें रहती हैं। यह भारत की सबसे बड़ी गोशाला मानी जाती है।

सद्भोजनानां पचने च चित्रे विचित्रवर्णे वसने कलानाम् ।
यदद्भुतं रूपमिहागतानामाकर्षणं मोददमस्ति नूनम् ॥471॥

यहाँ पवित्र भोजन की पाककला, चित्रकला विविधवर्णी वस्त्रों की कलाएँ अद्भुत है जो भक्तों को आकर्षित कर आनन्द प्रदान करती हैं।

श्रीद्वारिकाधीशनिकेतनं च यत्काङ्करोल्यां स्थितमस्ति भव्यम्।
यद्विग्रहं पूजितवान् पुराऽत्र राज्ञां च राजा परमम्बरीशः।।472।।

कांकरोली में श्रीद्वारिकाधीश का भव्य मन्दिर है। इस मूर्ति की पूजा महाराज अम्बरीश किया करते थे।

यद्वैष्णवं धाम परं प्रसिद्धं सरोऽन्वितं छत्रयुतं विशालम्।
सम्पुष्टिमार्गस्य च शोधकेन्द्रं ग्रन्थालयोऽप्यस्य महत्त्वपूर्णः ।।473।।

कांकरोली वैष्णव सम्प्रदाय का महत्त्वपूर्ण तीर्थयात्रा धाम है। यहाँ एक ग्रन्थालय है जिसमें अन्य ग्रन्थों के साथ पुष्टि मार्ग के ग्रन्थों का संग्रह किया गया है। पुष्टि मार्ग का यह एक महत्वपूर्ण शोधकेन्द्र है।

डकोरतीर्थम्

तीर्थस्थलं वैष्णवमस्ति भव्यं डकोरगं गुर्जरभूमिलग्नम्।
यत्र स्थितं त्यक्तरणस्य विष्णोरानन्दतः पार्श्वगतं निकेतम् ।।474।।

डकोर तीर्थ भी वैष्णव तीर्थ है। यह गुजरात में आनन्द के समीप है। यहाँ रणछोण भगवान् का मन्दिर है।

श्रीवाजसिंहेन पुराऽत्र नीता या द्वारिकातश्च सुभव्यमूर्तिः।
तन्मन्दिरं चात्र विशालकायं शिल्पं मनोहारि विलोभनीयम् ।।475।।

ऐसी जनश्रुति है कि राजपूत वाजेसिंह (बोडड़ों) इस मूर्ति को द्वारिका से (चुरा कर) लाए थे। यह मन्दिर भव्य और विशाल है। इसकी शिल्पकला दर्शकों का मन मोह लेती है।

श्री द्वारिकाधीशसमानरूपा मूर्तिं सुकृष्णोपलनिर्मिता या।
सशंखचक्रा च गदासमेता चात्र स्थिता त्यक्तरणस्य विष्णोः ।।476।।

यह सुन्दर काले पत्थर से निर्मित मूर्ति है जो शंख, चक्र, गदादि से युक्त है। भगवान् रणछोड़ की यह मूर्ति द्वारिकाधीश के मन्दिर की मूर्ति के समान है।

पार्श्वे सरो गोमतिनामधेयं श्रीडङ्कनाथस्य शिवस्य गेहम् ।
विष्णोः परं भीमकमन्दिरं च निकेतने भक्तवरोऽपि वाजः ।।477।।

डकोर के समीप गोमती नाम का एक तालाब है। यहाँ श्री डंकनाथ शिव का मन्दिर है विष्णु का एक भीमक मन्दिर है। राजपूत वाज (वोडाणों) का भी यहाँ एक छोटा सा मन्दिर बना है।

आरासुराम्बिका

यद् गुर्जरादुत्तरदिग्विभागेऽर्वुदाञ्चलारासुरपर्वताग्रे।
सरस्वती स्रोतसि विद्यमानं पराम्बिकातीर्थमिदं प्रसिद्धम् ।।478।।

यह तीर्थ गुजरात के उत्तर (अर्वुदांचल माउण्ट आबू) (अरावली पर्वत के दक्षिण पश्चिम) में स्थित है। आरासुर अम्बिका का मन्दिर सरस्वती के उद्गम स्थल पर है। (वैदिक वाङ्मय में सरस्वती के प्रवाहित होने की स्थिति वर्णित है । वर्तमान में यह अपने उद्गम स्थल से निकलती है किन्तु कच्छ के मरुस्थल में लुप्त हो जाती है। किसी प्राकृतिक बड़े परिवर्तन के कारण ऐसा हुआ है।) यह परम्बा का प्रसिद्ध तीर्थ हैं।

मुनेर्वसिष्ठाश्रमनन्दिनीं तां गर्ताद्बहिष्कर्तुमिहागतेयम् ।
सरस्वती पूतजलापगाऽत्र तदुद्गमे हेतुरयं श्रुतोऽस्ति ।।479।।

एक बार महर्षि वसिष्ठ की गाय (कामधेनु की पुत्री) नन्दिनी गर्त में गिर गई। वसिष्ठ ने अपने तपोबल से सरस्वती को प्रकट कर गर्त को रेत से भरने के लिये कहा। यही सरस्वती के प्रवाह का हेतु है। (वैज्ञानिक तथ्य यह है कि सरस्वती का उद्गम स्थल रेतीला होने से जल प्रवाह से अधिक रेत आने से इसका प्रवाह अवरुद्ध हो गया।)

स्कान्देऽ र्वुदाखण्डनिरूपणेऽत्र स्थितानि तीर्थानि च वर्णितानि ।
कात्यायनी,चात्र सरस्वती च कोटेश्वरी काप्यचलेश्वरी च ।।480।।

स्कन्दपुराण के अर्वुद खण्ड के निरूपण में यहाँ स्थित तीर्थों का सम्यक् वर्णन किया गया है। कात्यायनी, सरस्वती, कोटेश्वरी और अचलेश्वरी महादेवियों का वर्णन अवलोकनीय है।

आरासुराम्बासुनिकेतनेऽस्मिन् न काऽपि मूर्तिः किल विद्यमाना।
यन्त्रस्य पूजा भवतीह दुर्गा शिवस्य पत्नीति वदन्ति सन्तः ।।481।।

आरासुराम्बिका के मन्दिर में देवी की कोई प्रतिमा नहीं है। यहाँ यन्त्र की पूजा होती है। (उसे इस प्रकार सज्जित कर दिया जाता है कि मूर्ति सा प्रतीत होता है) यहाँ देवी को शिव की पत्नी के रूप में तथा जगज्जननी के रूप में पूजा की जाती है।

आबू समीपे दिलवाडभूमौ राजिः सुरम्या सुरमन्दिराणाम्।
निसर्गरम्या गिरि शृङ्खलाभा मूर्तेः कला शुभ्रशिलासु शिल्पम् ।।482।।

आबू के निकट दिलवाड़ में अनेक सुन्दर मन्दिर बने हैं। पर्वत की शृंखला सुन्दर वनस्पतियों से रमणीय हैं। यहाँ की मूर्तिकला और श्वेत पत्थर की कलाकारी मोहक है।

कृत्वा निकेतं विमलाख्यशाही स्वर्णस्य मूर्त्या तदलञ्चकार।
अत्रादिनाथस्य च मूर्तिरम्या बहिश्च तीर्थङ्करमूर्तयोऽपि ।।483।।

आबू रेलवे स्टेशन 32 किलोमीटर दूर विमलशाह द्वारा निर्मित सुन्दर मन्दिर है। इसमें आदि नाथ की सोने की प्रतिमा है तथा मन्दिर के बाहर तीर्थङ्करों की मूर्तियाँ हैं।

श्रीमद्वसिष्ठाश्रमकुण्डमेकं यद् गोमुखाद्भिः परिपूर्णमास्ते।
अरुन्धती श्रीलवसिष्ठमूर्तिः निकेतने चात्र विराजमाने ।।484।।

यहाँ वसिष्ठाश्रम है, उसमें एक कुण्ड है जिसमें गोमुख से जल गिरता रहता है जिससे वह परिपूर्ण रहता है। नीचे की ओर मन्दिर है, जिसमें वसिष्ठ और अरुन्धती की मूर्तियाँ है।

श्री गौतमस्यापि तपोवनं यत् चाधः स्थितं नागसुकुण्डपार्श्वे।
ध्यानस्थिता गौतममूर्तिरत्र धेनुः सवत्साऽर्वुददेविका च ।।485।।

यहाँ महर्षि गौतम का तपोवन है, जो नीचे की ओर नागकुण्ड के समीप है। यहाँ के मन्दिर में गौतम जी की मूर्ति ध्यान मुद्रा में प्रतिष्ठापित है। अर्वुदा देवी तथा गाय और बछड़े की मूर्तियाँ भी हैं।

नखी तडागोत्तरतो विभाति सदर्वुदाम्बा महनीयमूर्तिः।
बहिश्च शम्भोरपि लिङ्गमास्ते सन्मन्दिरेऽत्रैव सरः समीपे ।।486।।

आबू बाजार के पास नखी नामक विस्तृत झील है। कहा जाता है कि देवताओं ने इसे अपने नखों से खोदा है। यहाँ अनेक मन्दिर हैं। इसके उत्तर में शिखर पर गुफा में अर्बुदा देवी की मूर्ति है तथा बाहर शिव मन्दिर है जिसमें शिवलिंग स्थापित है।

यहाँ पर्यटन स्थल और तीर्थ स्थल, अनेक प्राचीन मन्दिर और वृक्षाच्छादित सुरम्य पर्वत मालाएँ दर्शनीय हैं।

अमरकण्टकम्

श्रीनर्मदाशोणमहानदीनां समुद्गमक्षेत्रमिदं पवित्रम् ।
विशेषतः केन्द्रगता हि रेवा यदुद्गमे देवगृहाणि सन्ति ।।487।।

मध्यप्रदेश के शहडोल जिले की पर्वत श्रृंखला में अमरकण्टक से नर्मदा, शोणभद्र और महानदी ये तीन प्रसिद्ध नदियाँ निकलती हैं। विशेष रूप से इनमें अमरकण्टक का केन्द्रीभूत स्थल नर्मदा (रेवा) का उद्गम स्थल है जहाँ अनेक देवों के मन्दिर बने हैं।

गङ्गादिषु स्नानविधानतो यत् फलं समाप्नोति च भक्तवर्गः ।
तन्नर्मदादर्शनमात्र लभ्यं सोमोद्भवेयं च शिवस्य पुत्री ।।488।।

गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान का जो फल भक्तगण प्राप्त करते हैं। वह नर्मदा के दर्शन मात्र से प्राप्त होता है। इसे सोमोद्भवा कहा जाता है। ('उमया सहितः सोमः' अर्थात् शिवः) इसे शिवपुत्री भी कहा जाता है। गंगा भी शिव की शीशजटा से होती हुई प्रवाहित होती हैं ऐसी पौराणिक मान्यता है।

यदा शिवेनात्र जगत्प्रपञ्चः तृतीयनेत्रेण च भस्मभूतः ।
तदा हि मैनाक गिरौ तदीयः स्वेदादिबिन्दुः पतितः स रेवा ।।489।।

जिस समय भगवान् शिव के तृतीय नेत्र से जगत्प्रपञ्च समाप्त हो गया, तब उनके शरीर से पसीने की जो बूँदें मैनाक पर्वत पर गिरी वे ही नर्मदा के रूप में प्रवाहित हैं।

सा शाङ्करी तत्तनयैव रेवा शिवोपदेशाज्जनताशिवार्थम् ।
मैकालतः सा भृगुकच्छसिन्धुं चाभ्येति भद्रङ्करवारिरम्या ।।490।।

नर्मदा भगवान् शंकर की पुत्री ही है। शिव के उपदेश से जनता के कल्याण के लिए

भृगुकच्छ (भड़ौच गुजरात) के समीप सागर में अपने कल्याणकारी मनोहर जल के साथ मिलती है।

यत्पर्वतक्षेत्रमहाविरावः प्रपाततः श्रूयत एव नित्यम् ।
अतोहि रेवाऽग्रगता च नर्म ददात्यतोऽन्वर्थकनर्मदेति ॥491॥

पर्वतीय क्षेत्र में जिसके जल प्रवाह के पत्थर से टकराने से धर-धर की तेज आवाज सुनाई दती है अतः रेवा कही जाती है। जब आगे बढ़ती है, तब नर्म (नर्म रतिसुखं राति ददाति-इति नर्मदा) प्रदान करने से इसे नर्मदा कहा जाता है। अतः यह अन्वर्थ नाम वाली पवित्र नदी है।

पुराकथातोऽमरकण्टकस्य रेवाप्रपातं च वनोषधींश्च ।
दृष्ट्वाऽत्र मुग्धेन दशाननेन शम्भोर्हि लिङ्गं मणिना ह्यकारि ॥492॥

पौराणिक कथा के अनुसार अमरकण्टक के रेवाप्रपात और वन की औषधियों को देखकर आनन्दविभोर होकर रावण ने भगवान् शंकर के मणिमय शिवलिंग की स्थापना की थी।

श्री नर्मदाया इह मुख्यकुण्डे भित्त्यावृते राजति नर्मदेशः ।
बहूनि कुण्डानि च मन्दिराणि सद्भिश्च भक्तैर्भरितानि भान्ति ॥493॥

यह नर्मदा का मुख्य कुण्ड (उद्गम स्त्रोत) चारों ओर दीवारों से आवृत कर दिया गया है। बहुत से कुण्डों और मन्दिरों पर यहाँ सन्त महात्माओं और भक्तों की भीड़ लगी रहती है।

प्राकाररम्ये सुनिकेतनेऽत्र चोङ्कारशम्भोरिह लिङ्गमास्ते।
एकात्र कृष्णोपलनिर्मिता या गजस्य मूर्तिश्च विराजमाना ॥494॥

प्राकार के भीतर सुन्दर मन्दिर में ॐ कारेश्वर शिव का लिंग स्थापित है। काले पत्थर से बनी हाथी की एक मूर्ति भी यहाँ स्थित है।

श्रीशङ्कराचार्यवरेण वासो व्यधायि तीर्थेऽत्र निवासहेतौ ।
तत्कल्चुरीचेदिनृपैः सुभक्तैर्व्यवस्थितं तीर्थमिदं पुनश्च ॥495॥

ऐसा बताया जाता है कि यहाँ शकाराचार्य जी ने अपने निवास हेतु आवास बनाया था। कल्चुरि और चेदि वंश के भक्त राजाओं ने इस तीर्थ में पुनर्निर्माण करा कर व्यवस्थित करने का प्रयास किया था।

श्रीकेशवस्यात्र चतुर्भुजस्य दशावतारस्य च मन्दिरस्थाः ।
सन्मूर्तयो भान्ति विशेषरम्या भक्तैः समभ्यर्चितपादपद्माः॥496॥

यहाँ के मन्दिर में चतुर्भुज भगवान् विष्णु और दशावतार की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित हैं। इन मूर्तियों के चरणकमलों की भक्तगण पूजा करते रहते हैं।

श्रीकर्णदेवेन नृपेण शम्भोः रामेश्वरस्यापि कृतं निकेतम् ।
तन्मूर्तयोऽप्यत्र विभान्ति रम्याः ज्योतिर्मयं लिङ्गमिहाविभाति ॥497॥

राजा कर्ण देव ने भगवान् रामेश्वर शिव का मन्दिर बनवाया है।उस मन्दिर में भी भव्य मूर्तियाँ हैं। यहाँ रामेश्वर ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई है।

क्रोशादितः शोणनदोद्गमोऽपि रम्ये गिरौ प्रस्तरमध्यशोभी ।
तन्वी च धारा प्रथितप्रवाहा मनोहरा साधुनिवासपूता ॥498॥

नर्मदा के उद्गम स्थल से 2-3 किलोमीटर दूर सुन्दर पर्वत शिलाओं के मध्य शोण का उद्गम सुशोभित है। यहाँ पतली किन्तु तेज धारा पहाड़ से नीचे गिरती दिखाई देती है जो रम्य है यहाँ कुछ साधु गण निवास करते हैं।

महानदी स्वोद्गमपर्वतस्था निगद्यते या किल रुद्रगङ्गा ।
रुद्रस्य शीर्षाच्च विनिर्गतत्वात् सा नर्मदा वारिसमानमाना ॥499॥

इसी पर्वत क्षेत्र से महानदी भी निकलती है जिसे रुद्रगंगा भी कहा जाता है। भगवान् रुद्र के सिर से निकलने के कारण इसको भी नर्मदा की तरह पवित्र नदी माना जाता है।

क्रोश द्वयं मन्दगतिर्गताऽपि प्रपातरूपं विदधाति रेवा ।
ख्याता च यस्याः कपिलस्य धारा चाग्रे परा दुग्धमयी च धारा ॥500॥

5-6 किलोमीटर तक तो नर्मदा की धीरे गति से चलने वाली धारा अमरकण्टक के उद्गम स्थल से निकलती है। उसके बाद ऊपर से नीचे गिरने के कारण प्रपात बनाती है। जिसे कपिल धारा कहा जाता है। इसी के आगे एक प्रपात और है जिसे दुग्धधारा कहा जाता है क्योंकि ऊपर से नीचे गिरने के कारण उसका जल दूध की तरह दिखाई देता है। बहुत आगे जाने पर जबलपुर में भेड़ाघाट जलप्रपात है जिसे धुवाँधार कहते है। सतपुड़ा और विन्ध्याचल पर्वत के बीच प्रवाहित होने से इसमें अनेक स्थलों पर प्रपात प्राप्त होते हैं।

यहाँ जाने के लिये कटनी बिलासपुर रेलवे लाइन पर स्थित पेण्ड्रारोड स्टेशन उतर कर बस द्वारा जाना पड़ता है वैसे अनेक स्थानों से यहाँ के लिये बसें उपलब्ध रहती हैं।

पण्ढरपुरम्

तीर्थं महाराष्ट्रगतं प्रधानं श्रीपण्ढरीनाथ इहास्ति पूज्यः ।
काराकरी मार्गमनुप्रयाता वारीति दत्त्वा मुदमालभन्ते ।।501।।

यह महाराष्ट्र का प्रसिद्ध तीर्थ है। पंढरी नाथ सन्त महात्माओं के पूज्य हैं। कार्तिक शुक्ल एकादशी (देवोत्थानी) को काराकरी सम्प्रदाय के लोग यहाँ परिक्रमा करते हैं यहाँ के लोग इसे 'करी' देना कहते हैं।

श्रीपुण्डरीकेण कृता प्रतिष्ठा पुरास्य तीर्थस्य ततश्च सन्तः ।
श्री नामदेवश्च नरो हरिश्च श्रीमत्तुकाराम इह प्रसिद्धाः ।।502।।

श्री पुण्डरीक जी ने प्राक्तन काल में इस तीर्थ की प्रतिष्ठा की थी उसके बाद सन्त नामदेव, नरहरि, तुकाराम आदि ने यहाँ प्रसिद्धि प्राप्त की।

श्रीचन्द्रभागाऽत्र च सैव भीमा यस्यास्तटे पण्ढरतीर्थमास्ते ।
श्रीविट्ठलस्यात्र निकेतनं यत् तदेव मुख्यं परमं प्रसिद्धम् ।।503।।

यह तीर्थ चन्द्रभागा नदी के तट पर है, इसे ही भीमा भी कहा जाता है। यहाँ श्री विट्ठल दास का मन्दिर है। वस्तुतः यही मुख्य और प्रसिद्ध है।

श्री रुक्मिणी सत्यवती च राधा श्रीसत्यभामेह च मूर्तिमत्यः ।
तन्मन्दिरे श्रीबलरामयुक्ताः विभान्ति सर्वा इह पूज्यमानाः ।।504।।

यहाँ रुक्मिणी,सत्यवती,राधा और सत्यभामा की मूर्तियों के साथ बलराम की भी मूर्ति है। इन सभी मूर्तियों की भक्तगण पूजा किया करते हैं।

समाधयः सन्ति सतां समीपे तन्मूर्तयोऽप्यत्र विराजमानाः।
श्रीचन्द्रभागातटभूमिभागे बहूनि रम्याणि च मन्दिराणि ।।505।।

यहाँ अनेक सन्तों की समाधियाँ हैं,यहाँ इनकी मूर्तियाँ भी बनी हैं। चन्द्रभागा नदी के तट पर अनेक सुन्दर मन्दिर हैं जहाँ विविध देवी देवताओं की प्रतिमाएँ हैं।

शिवस्य लिङ्गानि च सन्ति तीर्थे श्री नारदस्यापि निकेतनं च ।
विष्णोः पदं चापि चतुष्कपीठे नारायणः श्रीसहितोऽत्र भाति ।।506।।

इस तीर्थ के मन्दिर में अनेक शिवलिंग स्थापित हैं। यहाँ एक मन्दिर नारद का भी है। यहाँ एक चबूतरे पर विष्णु भगवान् के चरण चिह्न बने हैं जिसे विष्णु पद कहा जाता है। यहाँ लक्ष्मी और विष्णु का मन्दिर भी है।

ज्ञानेश्वरः श्रीयुतनामदेवो जनाख्यदेवी च स एकनाथः ।।
सत्सु प्रसिद्धाः सकला महान्तः ते मूर्तिमन्तोऽत्र निकेतनस्थाः ।।507।।

यहाँ सन्त ज्ञानेश्वर, सन्त नामदेव, जनाबाई और एकनाथ आदि की मूर्तियाँ मन्दिरों में प्रतिष्ठित हैं।

श्रीवल्लभाचार्यमहाप्रभोर्वै शुभाश्रमश्चान्यतटे विभाति ।
तत्सम्प्रदायान्वितभक्तवर्या मतं तदीयं परिपोषयन्ति ।।508।।

चन्द्रभागा के दूसरे तट पर महाप्रभु बल्लभाचार्य का आश्रम है। बल्लभ सम्प्रदाय के भक्तयहाँ विशेष रूप से उनके मत के प्रचार-प्रसार का प्रयास करते हैं।

या चार्द्धनारीश्वरमूर्तिरास्ते गौर्याः शिवस्यात्र विलोभनीया ।
सा पाण्ढराच्छिङ्गणमार्गलग्ने शिवालये भाति परा प्रसिद्धा ।।509।।

अर्द्ध नारीश्वर भगवान् शिव की आकर्षक मूर्ति पाण्ढरपुर से शिंगणापुर जाने वाले मार्ग में एक मन्दिर में स्थापित है।

भीमा च नीरा सरितौ मिलन्त्यौ तीर्थस्थलं चक्रतुरत्र दिव्यम् ।
प्रह्लादजन्मस्थलमत्रमान्यं नृसिंहदेवस्य निकेतनञ्च ।।510।।

जहाँ चन्द्रभाग और नीरा नदियाँ मिलती हैं वहाँ भी तीर्थ माना जाता है कहा जाता है यह प्रह्लाद की जन्म भूमि रही है।यहाँ एक नृसिंह मन्दिर है। ध्यातव्य है कि प्रह्लाद भगवान् के परम भक्त थे, उसके पिता हिरणकश्यप को अपने शत्रु भगवान् विष्णु की भक्ति पसंद नहीं थी अतः वह अपने पुत्र प्रह्लाद को खम्बे से बाँधकर मारना चाहता था उसी समय भगवान् नृसिंह रूप में प्रकट हुए और उन्होने हिरणकश्यपु का वध किया। यह कथा श्रीमद्भागवत में विस्तार से वर्णित है।

श्रीमत्सुदाम्नोऽत्र पुरी प्रसिद्धा गान्धी महात्मा जनिमत्र लेभे ।
तत्कक्षमद्यापि सुरक्षितं यज् जनिस्थलं गान्धिवरस्य मान्यम् ।।511।।

यहाँ सुदामा का भी मन्दिर है जो श्रीकृष्ण के उज्जयिनी के संदीपनि गुरु के आश्रम के सहपाठी थे। श्रीकृष्ण के वे परम भक्त थे उनकी तथा उनकी पत्नी की मूर्ति भी यहाँ एक मन्दिर में है। यह स्थान महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गाँधी की जन्मभूमि भी है। राष्ट्र को स्वतंत्र कराने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका विश्वविख्यात है। महात्मा गाँधी के जन्म स्थान का कक्ष आज भी सुरक्षित है। यह पोरबंदर के रूप में प्रसिद्ध है यह स्थल धार्मिक तथा राष्ट्रिय दोनों दृष्टियों से तीर्थ है। प्राक्तन इतिहास में देवों ने राष्ट्र के सन्त महात्माओं की रक्षा की तथा असुरों का विनाश किया था। महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों को भगाकर राष्ट्र को स्वतंत्र कराया, अत: उनकी जन्मस्थली भी देवस्थली जैसी भारतीयों के लिए मान्य है।

श्रीहर्षदा-माधव-सूर्य-गेहा-न्यत्रैव चाभान्ति मनोहराणि ।
कुण्डानि दिव्यानि च मन्दिराणि चेतस्ततस्तीर्थगतानि सन्ति ।।512।।

हर्षदा माता का मन्दिर द्वारका से 14 कि.मी.दूर, तथा माधवतीर्थ पोरबंदर से 70 कि.मी.है यहाँ श्रीकृष्ण रुक्मिणी का मन्दिर है। पोरबंदर के समीप श्रीनगर में सूर्य में मन्दिर है। यहाँ अनेक पवित्र कुण्ड तथा मन्दिर विविध स्थानों पर है। इस क्षेत्र के राजमार्गों से गुजरने पर अनेक देवी-देवताओं के मन्दिर मिलते हैं।

नासिकपञ्चवटी

गोदावरी वारि पुनीतमेतत् तीर्थं च यन्नासिकनामधेयम् ।
ज्योतिर्मयं त्र्म्बकलिङ्गमत्र यद्द्वादशाब्दं किल कुम्भतीर्थम् ।।513।।

पवित्र नदी गोदावरी के जल से पुनीत नासिक तीर्थ है। यहाँ भगवान् शिव का ज्योतिर्लिंग है। बारह वर्ष में एक बार यहाँ कुंभ मेला लगता है।

वनप्रयाणे सह सीतया वै सलक्ष्मणो राम इहागतोऽभूत् ।
नासां विना शूर्पणखाऽत्र जाता नासिक्यनामा स्पदमस्ति तेन ।।514।।

वनवास के समय राम सीता और लक्ष्मण के साथ यहाँ आए थे। यहीं शूर्पणखा के प्रणय प्रस्ताव को ठुकरा कर लक्ष्मण ने उसकी नाक काटी थी अत: इस स्थान का नाम नासिक्य

(नासिक) पड़ गया।

सप्तापगानां सलिलप्रवाहैर्गोदावरीवारि समेधमानम् ।
श्रीरामसीतासवनेन पूता गोदावरी पुण्यजला विभाति ।।515।।

सात नदियों के मिलने के कारण गोदावरी का जल प्रवाह बढ़ गया है। श्री राम सीता के स्नान के कारण गोदावरी विशेष पवित्र हो गई है।

नासिक्यमेकं तटमादधानं पारेऽपरे पञ्चवटी मनोज्ञा ।
गोदावरी मध्यगता पवित्रा कूलस्थसन्मन्दिरराजिरम्या ।।516।।

एक तट पर नासिक और विपरीत तट पर पंचवटी है। गोदावरी इन दोनों के बीच प्रवाहित होती है। इसके तट पर अनेक मन्दिर हैं।

विधर्मिभिर्ध्वंसिततीर्थमेतत् यत्पेशवाशासनतः समृद्धम् ।
तच्छासकैर्भव्यसुमन्दिराणि कृतानि देवप्रतिमायुतानि ।।517।।

विधर्मियों ने इस तीर्थ के मन्दिरों औ मूर्तियों को ध्वंस कर दिया था। पेशवा (बालाजी बाजीराव) के शासन काल में यहाँ सुन्दर भव्य मन्दिर बनवाए गए। इन सभी में देवप्रतिमाओं की पुनः प्राणप्रतिष्ठा की गई।

नारायणः सुन्दर नामधेय आदित्यवारस्थनिकेतनेऽत्र ।
मूर्तिद्वयं चात्र हरिप्रियायाः पार्श्वस्थितं राजति रम्यरूपम् ।।518।।

सुन्दरनारायण का मन्दिर आदितवार में स्थित है इसमें नारायण की मूर्ति प्रमुख है। दोनों ओर लक्ष्मी जी की मूर्तियाँ हैं जो नारायण के समीप में प्रतिष्ठित हैं।

गुहाऽत्र चैका जनकात्मजाया वटस्य वृक्षोऽत्र विशालकायः ।
भित्तौ गवाक्षे जनकात्मजाया मूर्तिस्थिता लक्ष्मणरामयुक्ता ।।519।।

यहाँ एक सीता गुफा है, इसके समीप एक विशाल-काय बरगद का पेड़ है। पीछे की दीवार की खुली अलमारी में सीता, राम और लक्ष्मण की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

लङ्कापतिर्भिक्षुकरूपधारी सीतां समाहर्तुमिहागतोऽभूत् ।
आसीद् गुहायामिहचैकला सा भिक्षाप्रदाने हृतवांश्च तां सः ।।520।।

रावण यहीं भिक्षुक के रूप में आया था जब वे एकाकिनी थी। लक्ष्मण ने अन्य के प्रवेश निषेध के लिये रेखा बना दी थी किन्तु सीता भिक्षा देने के लिये जब रेखा से बाहर निकली तब रावण ने उनका अपहरण कर लिया।

श्रीरङ्गरावेण विनिर्मितेऽत्र सुमन्दिरे भव्यतमे विशाले ।
सीतापतिः श्यामलरूपधारी सीतानुजाभ्यां सह राजमानः ।।521।।

श्रीरंग राव द्वारा बनवाये गये भव्यतम विशाल मन्दिर में यहाँ काले पत्थर से बनी श्रीराम की सुन्दर प्रतिमा सीता और लक्ष्मण के साथ विराजमान है।

चैत्रस्य शुक्ले च तिथौ नवम्यां महोत्सवो रामजनेः सुभक्तैः ।
आयोज्यते चात्र रथस्य यात्रा कार्यक्रमान्ते बहुलोभनीया ।।522।।

चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी को भक्तों द्वारा रामजन्म का महोत्सव मनाया जाता है, उस समय रथयात्रा का भी आयोजन होता है। रथयात्रा रामजन्मोत्सव के बाद होती है जो अत्यंत आकर्षक होती है।

गोदावरीवामतटे निकेते रामेश्वरः शम्भुरिहाविभाति ।
स्थापत्यशोभेह च मन्दिरस्य चात्यन्तरम्या ह्यनुभूयमाना ।।523।।

गोदावरी के बाएँ तट पर एक रामेश्वर मन्दिर है इसमें शिवलिंग प्रतिष्ठित है। इस मन्दिर की स्थापत्यकला अत्यंत रमणीय है जो मन को मोह लेती है।

श्रीरामरामानुजनामधेयान्यत्रासते पूतजलान्वितानि ।
कुण्डानि चात्रैव तपोवने वै श्रीराममूर्तिः सुनिकेतनस्था ।।524।।

यहाँ पवित्र जल से पूर्ण श्रीराम कुण्ड, श्रीलक्ष्मण कुण्ड और सीता कुण्ड हैं। समीप के तपोवन में सुन्दर मन्दिर में श्रीराम की मूर्ति प्रतिष्ठापित है।

नासिक्यतीर्थात्किल योजनेऽस्ति ज्योतिर्मयं लिङ्गमतिप्रसिद्धम् ।
शम्भोश्च श्री त्र्यम्बकनामधेयं यस्योत्सवः कार्तिकपूर्णिमायाम् ।।525।।

नासिक तीर्थ में दो योजन पर शिव का त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग है। यहाँ कार्तिक पूर्णिमा को मेले और उत्सव का आयोजन किया जाता है। (यह स्थल मुख्यतीर्थ नासिक से दक्षिण पश्चिम की ओर है।)

रामस्य वासेन परं पवित्रं तीर्थं स्थलं नासिकमस्ति भव्यम् ।
यद्दण्डकारण्यधराप्रभागः चात्रैव सा पञ्चवटी मनोज्ञा ।।526।।

यहाँ श्री राम के निवास से पवित्र हुआ सर्वश्रेष्ठ नासिक तीर्थ है जो दण्डकारण्य का भूभाग है और यहीं मनोहारी पंचवटी भी है।

तिरुपतितीर्थम्

आन्ध्रे तिरुपतिर्बालाजीत्याख्यं मन्दिरं परम् ।
प्रसिद्धं विद्यते यत्र विष्णुमूर्तिर्विराजते ।।527।।
तिरुर्लक्ष्मी पतिर्विष्णुश्चार्थदृष्ट्या सुसङ्गतौ ।
तीर्थं राराज्यते राष्ट्रे दक्षिणेऽदः प्रसिद्धिगम् ।।528।।

दक्षिण भारत में तिरुपति बालाजी का अत्यन्त प्रसिद्ध मन्दिर है। यहाँ भव्य मन्दिर में विष्णु भगवान् की मूर्ति स्थापित है। तिरु का अर्थ लक्ष्मी है उनके पति विष्णु हैं अतः तिरुपति का अर्थ विष्णु है।

तिरुमलै गिरौ सप्तशिखरेषु विराजते ।
महत्तीर्थमिदं विष्णोर्विश्वप्रसिद्धं परम् ।।529।।
तीर्थं श्रीवेङ्कटेशस्य ह्यादिशेषफणे स्थितम् ।
सप्तशृङ्गाणि मन्यन्ते फणरूपाणि धार्मिकैः ।।530।।

तिरुमलै नामक पर्वत के सात शिखर हैं विश्वप्रसिद्ध यह पवित्र तीर्थ इन्हीं पर विराजमान है। यह वेङ्कटेश भगवान का तीर्थ आदि शेष के फणों पर अवस्थित है। ये सातों शृंग धार्मिक जनता द्वारा आदि शेष के फण माने जाते हैं।

श्रूयतेऽत्र स्वयं मूर्तिराविर्भूता विराजते ।
चतुर्भुजमयी मूर्तिर्दृश्यते सा भयङ्करी ।।531।।
दुरितं नाशमाप्नोति चास्या दर्शने फलम् ।
कामनासिद्धये प्रायः प्रतिज्ञादानरूपिणी ।
भक्तैर्हि क्रियते तस्याः पूर्तिः सिद्धौ विधीयते ।।532।।

ऐसा कहा जाता है कि यह मूर्ति यहाँ स्वयं प्रकट हुई है। यह मूर्ति देखने में भयङ्कर सी

लगती है। इसके दर्शन से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं ऐसी फलश्रुति है। यहाँ भक्तगण अपनी मन:कामना की पूर्ति के लिए मनौती करते हैं और कार्य की सिद्धि होने पर प्रतिज्ञापित पदार्थ चढ़ाते हैं।

प्रथमं दर्शनं प्रातः मध्याह्ने च द्वितीयकम् ।
तृतीयं दर्शनं रात्रौ विधिरेषः प्रवर्तते ।।533।।

यहाँ पहला मूर्तिदर्शन प्रात:काल, दूसरा दोपहर में तथा तीसरा रात्रि में होता है।

परिधिर्मन्दिरस्यास्य त्रिधा राराज्यते परः ।
सुवर्णघटयुक्तानि गोपुराण्यस्य भान्ति वै ।।534।।
स्वर्णद्वारसमीपे च तिरुनामास्ति मण्डपम् ।
सहस्रस्तम्भयुक्तं यद्विशालं विद्यते परम् ।।535।।

इस मंदिर की तीन परिधियाँ हैं। इसके सभी गोपुर स्वर्णघट से युक्त हैं। स्वर्णद्वार के समीप तिरुमण्डप है। इसमें एक हजार स्तम्भ हैं, यह अन्यन्त विशाल मण्डप है।

वेङ्कटेश्वरभक्तानामनेकेषामिह स्थिताः ।
अस्याभ्यन्तरतो राज्ञां राज्ञीनां किल मूर्तयः ।।536।।

इस विशाल मण्डप में वेङ्कटेश भगवान् के अनेक भक्त राजा तथा रानियों की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

प्रथमे च द्वितीयेऽत्र परिक्रमणे हि विद्यते ।
विरजं नाम कूपं यद्विरजाया जलान्वितम् ।।537।।

प्रथम और द्वितीय परिक्रमा में विरज नामक कुआँ है, जिसमें नीचे से विरजा नदी का जल आता रहता है।

द्वितीयद्वारतश्चाग्रे नृसिंहस्य हरेस्ततः ।
रामानुजस्य सेनायाः पतेश्च निलयानि वै ।।538।।

द्वितीय द्वार के आगे भगवान् नृसिंह, रामानुज तथा सेनापति के मन्दिर बने हैं।

जयविजययोर्मूर्ती विद्येते चात्र मण्डपे ।
अत्रैव विद्यते 'हुण्डी' यस्यां भक्तैर्धनादिकम् ।
क्षिप्यते श्रद्धया नूनं मनसः कामनाप्तये ॥539॥

यहाँ मण्डप में जय और विजय की मूर्तियाँ हैं, यही पर एक हुण्डी है जिसमें भक्तगण अपनी कामना की पूर्ति के लिए धन आदि डालते हैं ।

पञ्चमद्वारलभ्यो वै जगन्मोहनमन्दिरे ।
श्यामली वेङ्कटेशस्य मूर्तिर्भव्या विराजते ॥540॥
उत्थिता शङ्खचक्राभ्यां गदया च समन्विता ।
श्रीदेवी चाथ भूदेवी पार्श्वे भातः प्रतिष्ठिते ॥541॥

पाँचवे दरवाजे पर जगमोहन मन्दिर में भगवान् वेङ्कटेश की भव्य श्यामल मूर्ति स्थापित है जो खड़ी स्थिति में है। हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म हैं। समीप में श्रीदेवी तथा भूदेवी की प्रतिमाएँ सुशोभित हैं।

कर्पूरतिलकं नित्यं विष्णोर्भाले विधीयते ।
इदं प्रसादरूपेण भक्ताः क्रीणन्ति तीर्थगाः ॥542॥

यहाँ भगवान् विष्णु (वेङ्कटेश) के मस्तक पर प्रतिदिन कपूर का तिलक किया जाता है, जिसे बाद में प्रसाद के रूप में भक्तगण खरीदते हैं।

मूर्तेराघातचिह्ने च ह्यौषधं लिप्यतेऽनिशम् ।
भक्तः प्रतिदिनं कश्चिदुग्धं भगवतः कृते ।
अर्पयतिस्म चाशक्तोऽभवत् स वृद्धतावशात् ॥543॥
स्वयं गोदुग्धपानाय मायामनुजरूपतः ।
गतोहरिर्हि भक्तेन ताडितोऽज्ञानतावशात् ॥544॥
हरिर्भक्ते प्रसन्नोऽभूत्तदाघातो न वारितः ।
अत आघातचिह्नेऽस्मिन्नौषधं हि प्रयुज्यते ॥545॥

भगवान् की प्रतिमा में बने चोट के निशान पर प्रतिदिन दवाई लगाई जाती है। एक भक्त प्रतिदिन भगवान् को दूध चढ़ाया करता था। जब वह वृद्ध हो गया तब अशक्त होने पर भी प्रतिदिन बड़ी कठिनाई से दूध लाकर चढ़ाता था। अतः भगवान् स्वयं मनुष्य का रूप धारण कर

गाय का दूध पी आया करते थे , अतः उसे दूध नहीं मिलता था, एक दिन वह छिपकर देखता रहा कि गाय का दूध कौन पी जाता है। उसने जब किसी व्यक्ति को गाय का दूध पीते देखा तो मार दिया। उसके मारने पर भगवान् ने उसे प्रकट होकर दर्शन दिया किन्तु उसके द्वारा किए गए आघात को नहीं त्यागा अतः मूर्ति में आधात का चिह्न बन गया। उसी चिह्न पर औषध लगाया जाता है।

शासनेन व्यवस्थायै समितिर्निर्मिता परा।
पञ्चमन्दिरसम्बद्धा व्यवस्था क्रियते तया ॥546॥
तिरुमलैवेङ्कटेशस्य श्रीकपिलेश्वरस्य च।
गोविन्दराजकोदण्डराममन्दिरयोस्तथा
पद्मावत्यालयस्यापि व्यवस्थां कुरुते च सा ॥547॥

सरकार ने मन्दिरों की व्यवस्था के लिए एक श्रेष्ठ समिति का गठन किया है । इस समिति द्वारा पाँच मन्दिरों की व्यवस्था की जाती है। श्री वेङ्कटेश मन्दिर, कपिलेश्वर मन्दिर, गोविन्दराज मन्दिर, कोदण्डराम मन्दिर और पद्मावती मन्दिर। इस क्षेत्र के इन पाँच मन्दिरों की व्यवस्था समिति के अधीन है।

तिरुपतेर्बसयानेन पदात्या वात्र गम्यते।
वेदक्रोशमितोदूरं वेङ्कटेश्वरमन्दिरम् ॥548॥
तिरुमल्लैगिरौ मुख्यं मन्दिरं विद्यते परम् ।
भक्ता निरन्तरं चात्र तीर्थमायान्ति भक्तितः ॥549॥

तिरुपति के बस स्टैण्ड से बस द्वारा अथवा पैदल जाने का मार्ग है, जो लगभग बारह किलोमीटर है। तिरुमलै पर्वत पर वेङ्कटेश भगवान् का मुख्य मन्दिर है। यहाँ भक्त निरन्तर आते रहते हैं।

तिरुवण्णमलैतीर्थम्

तिरुवर्णमलैतीर्थमग्नितत्त्वस्य विद्यते।
कर्पूरदीपितं ज्योतिः कार्त्तिकान्तेऽत्रपूज्यते ॥550॥
पात्रे महति कुण्डाभे ज्वलज्जोतिः परिक्रमाम्।
पूजाञ्च कुर्वते भक्ता अग्नितत्त्वं च मन्वते ॥551॥

तिरुवण्णमलै एक अग्नितत्त्वतीर्थ है कार्त्तिकमास की अन्तिम तिथियों में एक विशाल कुण्डनुमा पात्र में कपूर की ज्योति जलाई जाती है। भक्त इसी प्रज्ज्वलित ज्योति की पूजा तथा परिक्रमा करते हैं। इसे अग्नितत्त्व का तीर्थ माना जाता है।

ततोऽरुणाचलेशस्य शम्भोः पूजनं मुदा ।
अधोभागे स्थिते भव्ये मन्दिरे कुर्वते समे ॥552॥

पर्वत पर कर्पूर ज्योति का पूजन तथा उसकी परिक्रमा करके भक्त नीचे की ओर भव्य मन्दिर में विराजमान भगवान् अरुणाचलेश शिव की पूजा करते हैं।

चतुर्दिक्षु कृतान्यत्र दशखण्डोच्चगानि च ।
गोपुराणि विशालानि दृश्यन्ते यानि दूरतः ॥553॥

इस तीर्थ परिसर में दश मंजिल तक ऊँचे विशाल गोपुर चारों दिशाओं में बनाए गए हैं जिन्हे दूर से ही देखा जा सकता है।

त्रिधा विभाजितं चैतन्मन्दिरं सुन्दरं महत् ।
प्रथमे सरसि स्नानं श्रीसुब्रह्मण्यदर्शनम् ॥554॥
द्वितीयांशे सरोवारि पानार्थं ध्रुवीकृतम् ।
तृतीये विद्यते मुख्यं पञ्चास्यं शम्भुमन्दिरम् ॥555॥
पञ्चद्वारेषु सर्वत्र शिवलिङ्गं प्रतिष्ठितम् ।
परिक्रमागताश्चात्र देवानां बहुमूर्तयः ॥556॥

यह विशाल और रमणीय मन्दिर तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग के सरोवर में स्नान कर श्रीसुब्रह्मणस्वामी का दर्शन भक्तगण करते हैं। द्वितीय भाग में एक अत्यंत स्वच्छ जल वाला सरोवर है जिसका जल केवल पीने के लिए प्रयुक्त होता है। तृतीय भाग में पाँच दरवाजों का भगवान् शिव का मन्दिर है सभी दरवाजों पर शिवलिंग प्रतिष्ठित हैं। मन्दिर की परिक्रमा में अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

आश्रमः क्रोशमात्रेऽस्ति रमणस्य महर्षिणः ।
देव्या मूर्तिः सुभव्याऽत्र समाधिश्च महर्षिणः ॥557॥

यहाँ से तीन किलोमीटर की दूरी पर श्रीरमण स्वामी का आश्रम है यहाँ मन्दिर में देवी की भव्यमूर्ति है तथा रमण स्वामी की समाधि है।

मीनाक्षीमन्दिरतीर्थम्

मीनाक्षीमन्दिरं भव्यं विख्यातं विश्वमोहकम् ।
राष्ट्रस्य दक्षिणे क्षेत्रे चाद्वितीयं विराजते ।।558।।
'मधुरा' 'मथुरा' नाम चोक्तं संस्कृतवाङ्मये ।
मदुरै नाम विख्यातं लोके सम्प्रति विद्यते ।।559।।

भारत राष्ट्र के दक्षिण भाग में मीनाक्षी देवी का मन्दिर अत्यन्त भव्य विख्यात और सारे विश्व के आकर्षण का केन्द्र है इसके टक्कर का पूरे विश्व में दूसरा मन्दिर नहीं है। संस्कृत वाङ्मय में इसे दक्षिण मधुरा या मथुरा कहा जाता है। वर्तमान में इसे मदुरै या मदुरई कहा जाता है।

वेगानदीतटे तीर्थं प्रसृतं लोकविश्रुतम् ।
सुन्दरेश्वरलिङ्गस्य स्वयंभूतस्य पूजनम् ।।560।।
देवाः कुर्वन्त आसन् वै चात्र तीर्थे ततः परम् ।
स्वोद्गतं लिङ्गमाश्रुत्य पाण्ड्यः श्रीमलयध्वजः ।।561।।
मन्दिरं नगरं चात्र कृतवान् श्रद्धया मुदा ।
इमं नृपं स्वयं शम्भुः सर्परूपेण चागतः ।
नगरस्यास्य सीमानं दर्शितवानिति श्रुतम् ।।562।।

यह लोक विश्रुत तीर्थ वेगा नदी के किनारे विस्तृत रूप में अवस्थित है। ऐसा कहा जाता है, कि यहाँ स्वयंभू लिंग सुन्दरेश्वर शिव की आराधना करने देवता आया करते थे। पाण्ड्य नरेश मलयध्वज को जब तथ्य ज्ञात हुआ तब उन्होंने मन्दिर और नगर बनाने का संकल्प किया। राजा को स्वप्न देकर सुन्दरेश्वर शिव सर्प के रूप में आए और उनके आगे-आगे चलते गए जिससे उस तीर्थ परिसर का सीमाकंन कर दिया गया। इसी परिसर में मलयध्वज ने नगर और मन्दिर बनाया।

तपः कृतं नृपेणात्र श्रीमलयध्वजेन च ।
सन्ततिप्राप्तये तेन पत्न्या सह विधानतः ।।563।।

राजा श्री मलयध्वज ने सन्तति की प्राप्ति के लिए पत्नी के साथ यहाँ विधानपूर्वक तपस्या की।

तस्य पुत्री स्वरूपेण जाता देवी हि पार्वती ।
मीनाक्षी नामतः ख्याता रम्या भव्या स्वरूपतः ।।564।।
तां दिव्यां सुन्दरीं दृष्ट्वा सुन्दरेशः शिवः स्वयम् ।
अनया कन्यया साकं विवाहं कृतवान् स्वयम् ।।565।।

राजा मलयध्वज के यहाँ पुत्री के रूप में स्वयं पार्वती ने जन्म लिया। कन्या का नाम मीनाक्षी रखा गया। यह अत्यन्त भव्य और सुन्दर रूप वाली थी। युवती होने पर उसके सुन्दर रूप को देखकर स्वयं भगवान् सुन्देश्वर शिव ने उसके साथ विवाह किया।

सङ्ख्या सप्तदशेत्यास्ते गोपुराणां हि मन्दिरे ।
सुन्दराणि समुच्चानि बहुतलानि कृतानि च ।।566।।

इस मन्दिर में सत्रह गोपुर हैं सभी मनोहर हैं। कुछ बहुत ऊँचे और अनेक तल वाले बनाए गए हैं। (बड़े गोपुर ग्यारह मंजिल तक के हैं।)

प्रथमे मण्डपे प्राय आपणिका प्रवर्तते ।
मण्डपं चाष्टशक्तीनामग्रे विद्यते परम् ।।567।।
अत्र स्तम्भे हि देवीनां मूर्तयो भान्ति टङ्किता ।
सुब्रह्मण्यगणेशौ वै द्वारे संस्थापिताविह ।।568।।

मन्दिर परिसर में प्रवेश करने पर पहले मण्डप में बाजार मिलता है। इसके आगे अष्टशक्ति मण्डप है जिसमें खम्भों में विविध देवियों की मूर्तियाँ उट्टंकित हैं। इसके प्रवेश पर श्री सुब्रह्मण्य स्वामी और गणेश की मूर्ति स्थापित है।

अतः परं च मीनाक्षीनायकमिति मण्डपम् ।
अन्धकारयुतं पृष्ठे मण्डपं चात्र विद्यते ।।569।।
मोहिनीरूपविष्णोश्च ब्रह्मणश्च शिवस्य च ।
मूर्तयोऽत्रानसूयाया मूर्तिरेका प्रतिष्ठिता ।।570।।

इसके बाद मीनाक्षीनायक नाम का मण्डप है इसके पीछे की ओर अंधेरा रहता है। इस मण्डप में मोहिनी रूपधारी विष्णु, ब्रह्मा और शिव की मूर्तियाँ हैं तथा एक मूर्ति सती अनसूया की स्थापित है।

स्वर्णपुष्करिणीत्यग्रे सरो मण्डपसंयुतम् ।
चतुः षष्टिशिवक्रीडाश्चात्र चित्रीकृताः पराः ।।571।।
मन्दिरस्य समक्षस्थे मण्डपे पञ्चपाण्डवाः ।
स्तम्भेषु मूर्तिरूपेण चित्रितास्ते पृथक् पृथक् ।
सप्तस्तम्भेषु सिंहानां मूर्तयो विलसन्ति वै ।।572।।

अँधेरे मण्डप के आगे स्वर्णपुष्करिणी सरोवर है। सरोवर के चारों ओर मण्डप हैं। इन मण्डपों में तीन ओर भित्तियों पर भगवान् शिव की चौंसठ लीलाओं के चित्र बने हैं। मन्दिर के सामने स्थित मण्डप के स्तम्भों में पृथक् पृथक् पाँचों पाण्डवों की मूर्तियाँ बनी हैं। सात स्तम्भों में सिंह की मूर्तियाँ बनी हैं।

सरसः पश्चिमे भागे मण्डपं किलिकुण्डुकम् ।
पक्षिणः पालिताश्चात्र सिंहमूर्तिर्विलक्षणा ।।573।।

तालाब के पश्चिम की ओर किलिकुण्डु मण्डप है। यहाँ पक्षी पाले गए हैं यहाँ एक विलक्षण सिंह की मूर्ति है। (सिंह मुख में एक गोला है जबड़े में उंगली डालकर घुमाने में यह घूमता है इसे कितने कठिन श्रम से बनाया गया होगा तथा कैसे बना होगा यह आश्चर्यजनक है।)

मीनाक्षीमन्दिरद्वारं मण्डपस्यैव सम्मुखे ।
द्वारस्य दक्षिणे भाति सुब्रह्मण्यस्य मन्दिरम् ।।574।।
कार्त्तिकेयस्य पत्नीभ्यां सह मूर्तिरिह राजते ।
द्वारपालकयोमूर्ती पित्तलनिर्मिते स्थिते ।।575।।
अस्यैवाभ्यन्तरे देव्या मीनाक्ष्या मूर्तिराप्यते ।
श्यामा भव्या च दिव्येयं वस्त्राभरणसज्जिता ।।576।।

पाण्डवों की मूर्ति वाले मण्डप के सामने ही मीनाक्षी देवी के मन्दिर का दरवाजा है दरवाजे के दक्षिण में सुब्रह्मण्यस्वामी का मन्दिर है। यहाँ कार्त्तिकेय तथा उनकी दोनों पत्नियों की मूर्तियाँ हैं। इसके दरवाजे पर द्वारपालों की दो पीतल की मूर्तियाँ बनी हैं। इसी के भीतर श्मामल भव्य और दिव्य तथा वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित महादेवी मीनाक्षी की मूर्ति है।

दक्षिणे मन्दिरस्यास्य देव्याः शयनमन्दिरम् ।
मीनाक्षीमन्दिरे शीर्षं राजते स्वर्णमण्डितम् ।।577।।

समक्षं तस्य हेमस्य स्तम्भो भव्यो विराजते ।
दीर्घायामप्यनेकेषां देवानां मूर्तयः स्थिताः ॥578॥

इस मन्दिर के दक्षिण की तरफ मीनाक्षी देवी का शयनमन्दिर है। इनके मन्दिर का गुम्बद सोने से मढ़ा है। मन्दिर के दरवाजे के सामने एक भव्य स्वर्णस्तम्भ है। मन्दिर की दीर्घा में भी अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

ज्ञानस्य च बलस्यात्र शक्त्योर्मूर्ती व्यवस्थिते ।
मन्दिरस्यैकभागस्य निर्मातुर्नृपविग्रहः ।
तत्पत्नीद्वयमूर्ती च विद्येते चात्र टङ्किते ॥579॥

इस मण्डप में ज्ञानशक्ति और बलशक्ति की प्रतीकात्मक मूर्तियाँ हैं तथा मन्दिर के एक भाग के निर्माता राजा और उसकी दो पत्नियों की सुन्दर दो मूर्तियाँ भी यहाँ उट्टंकित हैं।

सुन्दरेश्वरशम्भोर्वै मन्दिरं चोत्तरे स्थितम् ।
दक्षिणे तस्य सत्पत्न्या मीनाक्ष्या मन्दिरं परम् ॥580॥

भगवान् सुन्दरेश्वर शिव का मन्दिर उत्तर की ओर है तथा दक्षिण की ओर उनकी पत्नी मीनाक्षी का अत्यन्त श्रेष्ठ सुन्दर मन्दिर है।

बण्डीपुरतडागस्योत्खनने या निनिर्गता ।
दीर्घा गणपतेर्मूर्तिर्मीनाक्षीं शम्भुमन्तरा ॥581॥

बण्डीपुर के तालाब की खुदाई में निकली श्रीगणेश जी की विशाल मूर्ति मीनाक्षी तथा सुन्देरश्वर शिव के मन्दिर के मध्य में स्थापित की गई है।

आलये सुन्दरेशस्यादौ दक्षिणपदुत्थिता ।
मूर्तिः श्रीनटराजस्य राजते रजतावृता ॥582॥

सुन्दरेश्वर मन्दिर में सर्वप्रथम नटराज की मूर्ति है जिसका दाहिना पैर ऊपर उठा है। (सामान्यतः नटराज की मूर्तियों में बायाँ पैर उठा रहता है।) नटराज की इस मूर्ति को चाँदी से मढ़ा गया है।

सम्मुखे सुन्दरेशस्य स्वर्णस्तम्भो विराजते ।
नैकद्वारान्तरे भाति लिङ्गं शम्भोः स्वजं परम् ॥583॥

लिङ्गे स्वर्णत्रिपुण्ड्रं यद् दिव्यं काशते पृथक् ।
बहिर्हि मण्डपे स्तम्भाः शिवलीलासु सज्जिताः ॥584॥

सुन्दरेश्वरमन्दिर के समक्ष एक सुन्दर स्वर्णस्तंभ है। अनेक ड्योढ़ियों के भीतर भगवान् शिव का स्वयम्भू लिंग स्थापित है। लिंग पर सोने का त्रिपुण्ड बना है जो अलग ही चमकता रहता है बाहर मण्डप के खंभों में भगवान् शिव की लीलाएँ उकेरी गई हैं।

भावाङ्कनकला रम्या श्लाघ्या चात्र विराजते ।
चतुस्तम्भैः कृतं चान्यं मण्डपमत्र विद्यते ॥585॥
अर्गला प्रस्तरीयाऽत्र निर्मितौ विस्मयावहा ।
भद्रान्तौ वीरघोरौ च गणौ शम्भोः प्रतिष्ठितौ ॥586॥
उग्रशक्तिप्रभे मूर्ती विद्येते चानयोरिह ।
आस्ते मूर्तिश्च भक्ताया एकस्याश्चात्रमण्डपे ॥587॥

मूर्तियों की भावांकन कलाएँ मन को मोह लेती है। मूर्तियों की जीवन्तता श्लाघनीय है। एक चार स्तम्भों वाला मण्डप है जिसमें पत्थर से निर्मित साँकल बनी है इसके छल्ले घूम सकते हैं यह भी आश्चर्यजनक है। यहीं वीरभद्र तथा घोरभद्र शिव के इन दो गणों की मूर्तियाँ स्थापित हैं दोनों मूर्तियों की उग्रता मूर्ति में स्पष्ट अनुभूत होती है। यहाँ एक भक्त महिला की मूर्ति भी स्थापित की गई है।

मूर्तिमन्तो विराजन्ते मण्डपेऽत्र नवग्रहाः ।
परिक्रमणे गणेशश्च सुब्रह्मण्यस्य मारुतिः ॥588॥
शारदा दक्षिणामूर्तिर्दण्डपाणिश्च भैरवः ।
प्रतीकोऽपि कदम्बस्य यत्तले च विवाहिता ।
मीनाक्षीसुन्दरेशेन श्रूयते चात्र पूजकैः ॥589॥

इस मण्डप में नवग्रहों की मूर्तियाँ स्थापित हैं। परिक्रमा में गणेश, सुब्रह्मण्य स्वामी, हनुमान, सरस्वती, दक्षिणामूर्ति, दण्डपाणि भैरव की मूर्तियाँ स्थापित हैं। यहाँ प्रतीकात्मक कदम्ब की डाल है ऐसा पुजारी कहते है कि इसी कदम्ब वृक्ष के नीचे सुन्दरेश्वर शिव और पार्वती का विवाह हुआ था।

आग्नेये चोत्सवाख्येऽस्मिन् मण्डपे सुन्दरेश्वरः ।
मीनाक्षी पार्वती गङ्गा विद्यन्ते हेमविग्रहाः ॥590॥

पश्चिमे चन्दनस्येकं महल्लिङ्गं विराजते ।
नदीमूर्तिर्निकेतस्य समक्षं विद्यते परा ॥591॥

आग्नेय कोण में उत्सव नामक मण्डप है इसमें सुन्दरेश्वर, मीनाक्षी, पार्वती और गंगा की सोने की मूर्तियाँ हैं। पश्चिम की ओर चन्दन का एक विशाल शिवलिंग है। मन्दिर के ठीक सामने नदी की मूर्ति भी बनाई गई है।

सहस्रस्तम्भसंयुक्तमग्रे हि मण्डपं महत् ।
सभामण्डपमित्येतन् नटराजस्य विद्यते ॥592॥
मनुष्याकारतोऽप्युच्चा मूर्तयो भान्ति मण्डपे ।
देवानामथ भक्तानां सरस्वत्याः कलामयी ॥593॥
अत्रैव नटराजस्य श्यामा मूर्तिर्विराजते ।
कण्णप्पाख्यस्य भक्तस्य विग्रहोऽप्यत्र विद्यते ॥594॥

आगे हजार स्तम्भों से युक्त विशाल मण्डप है। यह नटराज का सभा मण्डप कहा जाता है। मनुष्य के आकार और ऊँचाई से अधिक ऊँची यहाँ मूर्तियाँ स्थापित हैं। देवी-देवताओं के साथ भक्तों की भी मूर्तियाँ है सरस्वती की एक बड़ी कलापूर्ण मूर्ति है। इसी मण्डप में नटराज की श्यामल मूर्ति प्रतिष्ठित है। कण्णप्प नामक एक भक्त की मूर्ति भी यहाँ स्थापित है।

विंशाधिकशतस्तम्भैर्निर्मिते पूर्वमण्डपे ।
नायकवंशराज्ञां तद्राज्ञीनां चात्र मूर्तयः ॥595॥
द्वारे च मूर्तयः सन्ति पशूनां तद्वधार्थिनाम् ।
विशालं प्राङ्गणं चैवं नैव कुत्रापि दृश्यते ॥596॥

एक सौ बीस स्तम्भों से पूर्वमण्डप निर्मित है। इसमें प्रायः नायक वंशीय राजा और उनकी रानियों की मूर्तियाँ हैं। इसके दरवाजे पर अनेक पशुओं की तथा शिकारियों की मूर्तियाँ बनी हैं। इस प्रकार का विशाल परिसर कहीं भी दिखाई नहीं देता।

चैत्रे देव्याश्च मीनाक्ष्याः सुन्दरेशस्य चोत्सवः ।
वैवाहिकः सदुत्साहैरत्रैवायोज्यते परः ॥597॥
एतदर्थं कृतं भिन्नं मण्डपं यत्र योज्यते ।
सामूहिकविवाहोऽपि युवकल्याणकारकः ॥598॥

चैत्र के महीने में स्वामी सुन्देरेश्वर शिव और पार्वती स्वरूपा मीनाक्षी के विवाह का महोत्सव बड़े उत्साह के साथ भक्तों द्वारा आयोजित किया जाता है, इसके लिए यहाँ अलग मण्डप बना है। इसी में युवक-युवती के लिए हितकारी सामूहिक विवाह का आयोजन भी विधिपूर्वक सम्पन्न होता है।

अत्र सदुत्सवबाहुल्यं विद्यते नात्र संशयः।
उत्सवानां पुरी चैषा मन्यते लोकविश्रुता ॥599॥
उत्सवोऽयं विवाहस्य दशदिवसात्मकः परः।
तदैव रथयात्राऽपि भक्तैरायोज्यते परा ॥600॥

यहाँ उत्सवों की बहुलता है इसमें सन्देह नहीं है। इसलिए इसे उत्सवों की नगरी कहा जाता है। विवाह का उत्सव दश दिन चलता है। इसी समय रथयात्रा का आयोजन भी भक्तों द्वारा किया जाता है।

वैशाखे शुक्लपक्षे च पञ्चमीतो महोत्सवः।
योज्यतेऽत्र वसन्तस्य चायमष्टाह्निकः शुभः ॥601॥
आषाढे श्रावणे चापि महोत्सवपरम्परा।
श्रावणे शिवचतुःषष्ठीलीलायुक्ता महोत्सवाः ॥602॥
नवरात्रगता पूजा चात्र सर्वत्र विद्यते।
पौर्णमास्याममायां च सुयोज्यन्ते महोत्सवाः ॥603॥

वैशाख की शुक्ल पक्ष पंचमी से महोत्सव प्रारम्भ होता है। बसन्त का महोत्सव आठ दिनों का होता है। आषाढ़ और श्रावण मास में भी यहाँ उत्सव आयोजित किए जाते हैं श्रावण में भगवान् शिव की चौंसठ लीलाओं पर आधारित महोत्सव किए जाते हैं। नवरात्र में देवी पूजा का उत्सव यहाँ तथा पूरे राष्ट्र में हुआ करता है। प्रत्येक पूर्णमासी और अमावस्या को उत्सवों का आयोजन किया जाता है।

आर्द्रायां मार्गशीर्षे च नटराजाभिषेचनम्।
अष्टम्यां रथयात्रा च श्रीकालभैरवान्विता ॥604॥
मीनाक्षीरथयात्रा च पौषे पूर्णिमातिथौ।
स्मरणं शिवभक्तानां माघे मासे विधीयते ॥605॥

फाल्गुने मासि कामस्य दहनोत्सवयोजनम् ।
सुब्रह्मण्यविवाहोऽपि फाल्गुन एव योज्यते ।।606।।

आर्द्रा और मार्गशीर्ष में नटराज का अभिषेक किया जाता है तथा अष्टमी तिथि को कालभैरव की रथयात्रा निकाली जाती है। पौष मासकी पूर्णिमा को मीनाक्षी देवी की रथयात्रा का आयोजन किया जाता है। शिव के भक्तों के संस्मरण पर आधारित आयोजन माघ में किए जाते हैं। फाल्गुन के महीने में कामदहन की आयोजना की जाती है। फाल्गुन में ही स्वामी सुब्रह्मण्य के विवाह का आयोजन किया जाता है।

मीनाक्षीमन्दिरं मुख्यं किन्तु चात्रान्यशक्तयः ।
पूज्यन्ते श्रद्धया भक्तैर्धन्यता ह्यनुभूयते ।।607।।

यद्यपि यहाँ मीनाक्षी मन्दिर की मुख्यता है उन्हीं के नाम से तीर्थ स्थान है किन्तु भक्तों द्वारा सभी देवशक्तियों की पूजा श्रद्धापूर्वक की जाती है और ऐसा करके वे अपने को धन्य समझते हैं।

अर्द्धक्रोशमितो दूरं सुन्दरबाहुमन्दिरम् ।
विष्णुमन्दिरमस्तीदं रामगाथाऽत्र चित्रिता ।।608।।
श्रूयते भगवान् विष्णुर्मीनाक्षीसुन्दरेशयोः ।
कारयितुं समुद्वाहमत्रैवागतवान् स्थितः।।609।।

मीनाक्षी मन्दिर परिसर से एक किलोमीटर की दूरी पर सुन्दरबाहु विष्णु का मन्दिर है इसमें रामकथा के चित्र बनाए गए हैं। ऐसा कहा जाता है कि भगवान् विष्णु सुन्दरेश्वर और मीनाक्षी का विवाह कराने यहाँ आए थे, अतः यहाँ रुक गए।

चतुर्भुजमयी मूर्तिर्विष्णोरत्र विराजते ।
श्रीदेवी चाथ भूदेवी पार्श्वे सिंहासने स्थिते ।।610।।
मन्दिरस्योच्चभागे च स्वर्णकुम्भश्च काशते ।
मन्दिरस्योर्ध्वभागाय सोपानमपि विद्यते ।।611।।
विद्येते तत्र पूजार्हौ मूर्ती सूर्यनृसिंहयोः ।
पार्श्वे विद्यते चैकं सुन्दरं कृष्णमन्दिरम् ।।612।।

यहाँ विष्णु की सुन्दर चतुर्भुजी मूर्ति प्रतिष्ठित है समीप में श्रीदेवी तथा भूदेवी की मूर्तियाँ

सिंहासन पर विराजमान हैं। मन्दिर के ऊपर स्वर्ण कलश है। मन्दिर के ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। यहाँ सूर्य तथा नृसिंह भगवान् की पूज्य मूर्तियाँ हैं। इसी मन्दिर के समीप एक श्रीकृष्ण मन्दिर भी है।

बेलूरतीर्थम्

बंगलौरपुणेमार्गे बाणावरमितिस्थलात् ।
दशक्रोशमितो दूरं बेलूरं तीर्थमाप्यते ॥613॥

बंगलौर से पूना जाने वाले रेलमार्ग में स्थित बाणवर रेलवे स्टेशन से तीस किलोमीटर की दूरी पर बेलूर तीर्थ है।

चेन्नकेशवदेवस्य मन्दिरं मुख्यतां गतम् ।
विष्णुवर्धनराज्ञा च प्रतिष्ठा श्रूयते कृता ॥614॥

यहाँ चेन्नकेशव देव का मन्दिर मुख्य है इसकी प्रतिष्ठा विष्णुवर्धन हायसल ने की थी।

विष्णोश्चतुर्भुजीमूर्तिरुच्चा पुरुषसन्निभा ।
शङ्खचक्रगदायुक्ता पार्श्वे भूश्रियौ स्थिते ॥615॥
कप्पचेनिङ्गरायस्य चान्यं मन्दिरं कृतम् ।
विष्णुवर्धनपत्न्याऽत्र देवीदेवाः प्रतिष्ठिताः ॥616॥
लक्ष्मीः श्रीधरो विष्णुः श्रीगणेशः सरस्वती ।
दुर्गामहिषहन्त्री च वेणुगोपाल आसते ॥617॥

इस मन्दिर में विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति है जो एक ऊँचे पुरुष की तरह ऊँची है। मूर्ति शंख, चक्र, और गदादि से युक्त है। विष्णुवर्धन की पत्नी द्वारा कप्पचेनिंग राय का एक अन्य मन्दिर बनवाया गया है। इसमें देवी देवताओं की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं यहाँ - लक्ष्मी, विष्णु, गणेश, सरस्वती, महिषमर्दिनी दुर्गा तथा वेणुगोपाल की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

उच्चभित्तेश्च सीमायामुच्चस्थाने ऽस्ति मन्दिरम् ।
अस्य मूर्तिकला भव्या प्रायो ह्यन्यत्र दुर्लभा ॥618॥
प्रस्तरोद्टङ्कने सूक्ष्मं कार्यं विस्मयावहम् ।
परिधौ मन्दिरस्यास्य द्वेऽन्ये मन्दिरे स्थिते ॥619॥

एकः शिवालयश्चायं लक्ष्मीमन्दिरं परम् ।
एवं चानेकदेवानामत्रावस्थितिरश्नुते ॥620॥

ऊँची चहार दीवारी की सीमाओं ऊँचे स्थान पर यह मन्दिर बनवाया गया है। इसकी मूर्तिकला भव्य है। ऐसी कला बहुत कम देखने को मिलती है। पत्थरों की गढ़ाई की सूक्ष्मता अत्यन्त विस्मयकारक है। इस मन्दिर की परिधि में दो अन्य मन्दिर हैं। एक शिव का मन्दिर है दूसरा लक्ष्मी जी का। शिव मन्दिर में अत्यन्त ऊँचा शिवलिंग है जो मनुष्य के कद से ऊँचा है।

चिदम्बरतीर्थम

चिदम्बरमिति रेलस्य स्थानकं विद्यते ततः ।
क्रोशमात्रे स्थितं तीर्थमिदमाकाशलिङ्गकम् ॥621॥
प्रमुखं नटराजस्य मन्दिरं चात्र विद्यते ।
विशालः परिधिश्चास्य ह्यस्मिन्नेवामरालयाः ॥622॥

बिल्लुपुरम् से अस्सी किलोमीटर दूर चिदम्बर नाम का रेलवे स्टेशन है यहाँ से मन्दिर लगभग तीन किलोमीटर है। इसे आकाश लिंग का तीर्थ माना जाता है। वेदान्त के अनुसार आकाश प्रथम महाभूत है (आकाशाद्वायुः, वायोरग्निः, अग्नेरापः, अद्भ्यः पृथिवी' यह सृष्टिक्रम है।) यहाँ प्रमुख रूप से नटराज का मन्दिर बना है। इसकी परिधि विशाल है यहीं अनेक देवताओं के मन्दिर हैं।

गोपुराण्यत्र विद्यन्ते लघुदीर्घाण्यनेकधा ।
द्वितीये गोपुरे रम्ये नाट्यशास्त्रानुसारतः ॥623॥
नृत्यमुद्रा यथारूपं मूर्तिरूपाः प्रदर्शिताः ।
दक्षिणतः प्रवेशेऽत्र ह्यन्यस्मिन् परिधौ स्थितम् ॥624॥
मन्दिरं श्रीगणेशस्य सुन्दरं विद्यते ततः ।
उत्तरे चास्य ह्येकस्मिन् मन्दिरे नन्दिविग्रह : ॥625॥
विशालः प्राप्यते तस्मादग्रे च परिधौ परे ।
मन्दिरं नटराजस्य परिधिद्वयमावृतम् ॥626॥

यहाँ छोटे तथा बड़े अनेक गोपुर हैं। द्वितीय गोपुर में भरत मुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार विविध नृत्य-मुद्राओं की मूर्तियाँ बनी हैं। दक्षिण की ओर से प्रवेश करने पर दूसरी परिधि में

श्रीगणेश का सुन्दर मन्दिर मिलता है। इसके उत्तर में एक मन्दिर में नन्दी की विशाल मूर्ति है। इसके आगे अन्य परिधि में नटराज का मन्दिर है यह मन्दिर दो परिधियों से घिरा है।

पञ्चमे परिधौ चास्ते नटराजस्य मण्डपम् ।
स्वर्णस्तम्भो विभात्येकः चान्यस्तम्भेषु मूर्तयः ॥627॥
मध्ये प्राङ्गणं तत्र कृष्णप्रस्तरसर्जितम् ।
मन्दिरं नटराजस्य यच्छृङ्गं स्वर्णमावृतम् ॥628॥

पाँचवी परिधि में नटराज का मण्डप है। इसमें एक सोने का स्तम्भ है तथा अन्य स्तम्भों में मूर्तियाँ बनी हैं। प्राङ्गण के मध्य में काले पत्थरों से बना नटराज का मन्दिर है जिसका ऊपरी कलश सोने का है।

नटराजशिवस्यात्र स्वर्णमूर्तिर्विराजते ।
अत्यन्तं सुन्दरीमूर्तिः विद्यते भद्रकारिणी ॥629॥
समीपे पार्वतीदेवी तुम्बरुर्नारदस्तथा ।
रम्या भव्याश्च वर्तन्ते स्वर्णमूर्तिमया समे ॥630॥

यहाँ नटराज शिव की सोने की मूर्ति है जो अत्यन्त सुन्दर है तथा कल्याणकारिणी है। समीप में पार्वती तुम्बरु और नारद की मूर्तियाँ हैं। ये सभी मूर्तियाँ रम्य भव्य तथा सोने की हैं।

आकाशतत्त्वलिङ्गं वै नटराजस्य दक्षिणे ।
नीलभित्तौ विभात्येतद् यन्त्ररूपेण निर्मितम् ॥631॥
महाभूतात्मलिङ्गानि दक्षिणे भान्ति भारते ।
आकाशलिङ्गमत्रास्ते कालहस्तिनि वायुमत् ॥632॥
तिरुवर्णेऽग्निमद् भाति जलमज्जम्बुकेश्वरे ।
पृथिव्या लिङ्गमास्ते वै श्रीकाञ्चीपुरमण्डले ॥633॥

नटराज की मूर्ति की दक्षिण दिशा की ओर नीली दीवाल पर आकाशतत्त्व लिंग प्रतीकात्मक यन्त्र के रूप में बना है। (दक्षिण भारत में पाँचों महाभूतों के लिंग स्थापित हैं, चिदम्बरम् में आकाश लिंग, कालहस्ती में वायुलिंग, तिरुवण्ण में अग्निलिंग, जम्बुकेश्वर में जललिंग और पृथ्वीलिंग कांचीपुर में है।)

अत्र लिङ्गप्रतीकं च स्वर्णमालासमावृतम् ।
केवलमभिषेकस्य काले तदवलोक्यते ॥634॥
मध्येदिनं तथा सायमेतद्भक्तैर्हि दृश्यते ।
सम्पुटे स्फटिकं लिङ्गं चान्यं नीलमणेः कृतम् ।
सञ्चितेऽत्र तथा शङ्खं दक्षिणावर्तकं कृतम् ॥635॥

यहाँ आकाश लिंग का प्रतीक यन्त्र स्वर्णमाला से आवृत है यह ढका रहता है केवल अभिषेक के समय देखा जा सकता है। दोपहर में तथा सायं काल इस यन्त्र का दर्शन सुलभ है। यहाँ सम्पुट में एक स्फटिक लिङ्ग है तथा दूसरा नीलमणि द्वारा निर्मित लिंग रखा गया है। यहाँ एक दक्षिणवर्त शंख भी रखा गया है।

गोविन्दराजगेहं च वामपार्श्वे विराजते ।
विष्णोः शेषे शयानस्य लक्ष्म्याश्चात्र विग्रहौ ॥636॥
श्रीपुण्डरीकवल्ली च लक्ष्मी वै मूर्तिरूपिणी ।
पार्श्वे निकेतने भाति चात्यन्तं मनोहरा ॥637॥

इसके बाएँ भाग में श्रीगोविन्दराज मन्दिर है। इसमें शेषनाग पर लेटे हुए विष्णु और लक्ष्मी की मूर्तियाँ हैं। मन्दिर के बगल में पुण्डरीक वल्ली तथा लक्ष्मी की अत्यन्त मनोहर मूर्ति मन्दिर में प्रतिष्ठित है।

चतुर्थे परिधौ मूर्तौ शिवाङ्के भाति पार्वती ।
मारुते राजते मूर्ती रजतेन समावृता ॥638॥
एकस्मिन् मण्डले चात्र नवग्रहगणः स्थितः ।
अत्रैव च विराजन्ते चतुःषष्ठेश्च मूर्तयः ॥639॥

चतुर्थ परिधि में एक मूर्ति ऐसी है जिसमें शिव की गोद में पार्वती स्थित हैं। यहाँ एक हनुमान् जी की मूर्ति है जिस पर चाँदी की परत चढ़ी है। एक घेरे में यहाँ नवग्रहों की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। यहीं पर एक ओर चौसठ योगिनियों की मूर्तियाँ सुशोभित हैं।

पार्वत्या मूर्तयो नैका अत्र भान्ति प्रतिष्ठिताः ।
नटराजोत्तरेभागे चैकं सभामण्डपम् ॥640॥
आभ्यन्तर इहाभाति श्रीचिदम्बरलिङ्गकम् ।
इयमेव परामूर्तिर्यन्नाम्ना तीर्थमुच्यते ॥641॥

महर्षिर्व्याघ्रपादश्च महामुनिपतञ्जलिः ।
अस्या मूर्तेः पुरा पूजां कृतवन्तावितीर्यते ।।642।।

इस परिसर में पार्वती की अनेक मूर्तियाँ है । नटराज मन्दिर के उत्तर की ओर एक सभामण्डप है। इसमें कई दरवाजों के भीतर चिदम्बर शिवलिंग है। यही यहाँ की प्रमुख मूर्ति है जिसके नाम से इस तीर्थ को जाना जाता है । ऐसी प्रसिद्धि है कि यहाँ महर्षि व्याघ्रपाद और पतञ्जलि ने इस मूर्ति की पूजा की थी जिससे चिदम्बर स्वामी ने उन्हे दर्शन दिया था।

प्रसन्नेन शिवेनात्र नृत्तं वै ताण्डवंकृतम् ।
अतोऽत्र नटराजस्य मूर्तिरत्र प्रतिष्ठिता ।।643।।

यहाँ प्रसन्न होकर शिव ने ताण्डव नृत्त किया था अत: यहाँ नटराज की मूर्ति प्रतिष्ठित की गई है।

विशाले मन्दिरे भाति श्रीशिवकामसुन्दरी।
अस्या मनोहरा मूर्तिः सभाकक्षश्च सुन्दरः ।।644।।
सुब्रह्मण्यालयो रम्यो बहिर्मूर्तिश्च बर्हिणः ।
मण्डपे तत्कृता लीला भित्तौ चित्रमयी कृता ।।645।।
मन्दिरे कार्त्तिकेयस्य भव्या मूर्तिः प्रतिष्ठिता ।
शिवगङ्गासरोऽप्यत्र पार्श्वे प्राक्तनमण्डपम् ।।646।।

एक विशाल मन्दिर में श्रीशिवकामसुन्दरी (पार्वती) की सुन्दर मूर्ति है सामने का सभामण्डप भी सुन्दर है। यहाँ सुब्रह्मण्य का एक सुन्दर मन्दिर है जिसके बाहर एक मयूर की मूर्ति है। मण्डप में उनकी लीलाएँ चित्रों द्वारा प्रस्तुत की गई हैं। मन्दिर में कार्त्तिकेय की भव्य मूर्ति है। यहाँ एक शिवगंगा सरोवर है, समीप में एक पुराना सभामण्डप हैं।

भक्तानां रजकस्यात्र चाण्डालस्य शूद्रयोः ।
परिधौ मूर्तयो भान्ति सर्वसम्मानबोधिकाः ।।647।।

इस मन्दिर परिसर में अनेक भक्तों की मूर्तियाँ बनी हैं सभी को बिना जातिगत भेद के यहाँ महत्त्व दिया गया है क्योंकि यहाँ एक धोबी, एक चाण्डाल तथा दो शूद्रों की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

तीर्थस्यास्य समीपे च पौराणिककथानुगाः ।
त्रियोजनेषु विद्यन्ते देवानामालया शुभाः ।।648।।
तिरुवेट्टकलं चात्र काट्टुमन्नोरगुण्डिका ।
वेदनारायणाख्यं च वृद्धाचलमवस्थितम् ।।649।।
श्रीमुखं च सिलायी च वैदीश्वरनकोइलम् ।
तिरुवेङ्काण्डुरुद्रश्च विद्यन्ते निर्जरालयाः ।।650।।

इस तीर्थ स्थान के तीस-चालीस किलोमीटर के दायरे में अनेक सुन्दर देवालय हैं। तिरुवेट्टकलम्, काट्टुमन्नोरगुण्डी, वेदनारायण, वृद्धाचलम्, श्रीमुखम्, सिलायी, वैदीश्वरन कोइल और तिरुवेंकाण्डु इन स्थानों पर विविध देवी देवताओं के मन्दिर बने हैं जो भक्तों की आस्था के केन्द्र हैं।

कुम्भकोणतीर्थम्

रेलस्थानवथारेति पुणेतो दशयोजनम् ।
तत्समीपगतं तीर्थं कुम्भकोणमितीर्यते ।।651।।
कुम्भघोणेति शब्दस्य कुम्भकोणमितिस्थितिः ।
नासिका शब्दपर्यायः घोणाशब्दो हि विद्यते ।।652।।

पुणे रेलवे स्टेशन से एक सौ बीस किलोमीटर दूर वथार नामक रेलवे स्टेशन है उसी के समीप यह कुम्भकोण तीर्थ है। वस्तुतः कुम्भघोणा मूल शब्द है, जिसे सम्प्रति लोग कुम्भकोण कहते हैं। घोणा शब्द नासिका (नाक) का पर्यायवाची शब्द है।

अमृतस्य घटश्चात्र ब्रह्मणा स्थापितः पुरा ।
अमृतं चात्र भूभागे तस्योर्ध्वच्छिद्रतोऽपतत् ।।653।।
अतोऽत्रद्वादशे वर्षे कुम्भमेलापकं परम् ।
कावेरीपुलिने चात्र जायतेऽदो निरन्तरम् ।।654।।

यहाँ ब्रह्मा ने अमृतघट रखा था, उसके ऊपरी भाग के छिद्र से यहाँ धरती पर अमृत गिर गया। इसलिए प्रत्येक बारह वर्ष में कुम्भ मेला लगा करता है। यह श्रेष्ठ मेला कावेरी नदी के तट पर लगा करता है।

कुम्भेश्वरनिकेतं यन्मुख्यं विद्यते परम् ।
अन्ये देवावलाश्चात्र राजन्ते ते प्रसिद्धिगाः ॥655॥
शार्ङ्गपाणेस्तथा चक्रपाणेर्नागेश्वरस्य च ।
श्रीरामस्वामिनश्चात्र मन्दिराणि विभान्ति वै ॥656॥

कुम्भेश्वर यहाँ का श्रेष्ठ और मुख्य मन्दिर है। अन्य अनेक सुप्रसिद्ध मन्दिर हैं शार्ंगपाणि मन्दिर, नागेश्वरमन्दिर, रामस्वामीमन्दिर और चक्रपाणिमन्दिर इनके अतिरिक्त अन्य छोटे मन्दिर हैं।

कावेरिकातटे चैकं महाकालस्य मन्दिरम् ।
अनेकानि च सन्त्यत्र देवानां मन्दिराणि च ॥657॥
सुन्दरेश्वरमीनाक्षीमन्दिरमत्र विद्यते ।
कामकोटिमठश्चापि तीर्थेऽस्मिन् विराजते ॥658॥

कावेरी नदी के तट पर एक महाकाल का मन्दिर है, तट पर अन्य मन्दिर भी बने हैं। सुन्दरेश्वर और मीनाक्षी का एक मन्दिर यहाँ भी है। कामकोटि मठ (शङ्कराचार्य पीठ) भी इस तीर्थ में है।

कथ्यते या स्वयम्भूता महाकालीति विद्यते ।
महामाया निकेते सा राजते ह्यभयङ्करी ॥659॥
सरो महामघं चात्र विशालं विद्यते परम् ।
कावेरिकाजलाभावे स्नानं सरसि साध्यते ॥670॥
कुम्भे प्रायः सरः पूर्णमद्भिर्जायते स्वयम् ।
सर्वाः पूतजलानद्य आयन्तीति जनश्रुतिः ॥671॥

कहा जाता है कि यहाँ महाकाली दुर्गा स्वयं प्रकट हुई थी, महामाया मन्दिर में यही देवी प्रतिष्ठित की गई हैं। यहाँ महामघ नाम का विशाल सरोवर हैं कावेरी में जल न होने पर इसी सरोवर में भक्तगण स्नान करते हैं। महामघ सरोवर कुम्भ के समय जल से स्वयं पूर्ण हो जाता है। ऐसी जनश्रुति है कि इसमें सभी पवित्र नदियों का जल स्वयं आ जाता है।

अत्र देवाः समायन्ति कुम्भे पर्वणि कथ्यते ।
अतोऽस्मिन्नवगाहेन सर्वं पापं विनश्यति ॥672॥

ऐसी मान्यता है कि इस सरोवर में सभी देवता स्नान करने आते हैं। अतः इसमें अवगाहन करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

समीप एव विद्यन्ते चान्ये देवालया इह ।
नागेश्वरश्च कुम्भेशः राधास्वामी ततः परम् ।।673।।
शार्ङ्गपाणिश्च सोमेशः वेदनारायणस्तथा ।
चक्रपाणिश्च देवा वै तीर्थेऽस्मिन् मन्दिरस्थिताः ।।674।।

समीप में ही अनेक प्रमुख देवालय हैं। नागेश्वर, कुम्भेश्वर, राधास्वामी, शांर्गपाणि, सोमेश, वेदनारायण तथा चक्रपाणि ये सभी देवता सुन्दर मन्दिरों में प्रतिष्ठित हैं।

आचार्यःशङ्करश्चात्र काञ्चीतः स्वयमागतः ।
यवनशासनेऽकारि तेन पीठं सुरक्षितम् ।।675।।

पूज्य शङ्कराचार्य ने यवनशासनकाल में यहाँ आकर अपने पीठ को स्थापित और सुरक्षित किया जो अभी प्रवर्तित है।

गोकर्णतीर्थम्

महाबलेश्वरं कोटितीर्थं पञ्चगनी तथा ।
गोकर्णाख्येति तीर्थं वा चात्मलिङ्गं हि तीर्थकम् ।।676।।
नामान्यतानि सर्वाणि सूचयन्त्येकतीर्थकम् ।
बथारस्थानकं चास्य पुणेतो दशयोजनम् ।।677।।

महाबलेश्वर, कोटितीर्थ, पञ्चगनी, गोकर्ण आदि सभी नाम एक ही तीर्थ के अभिधान हैं। बथार रेलवे स्टेशन के समीप यह तीर्थ है। यह स्टेशन पूना से एक सौ बीस किलोमीटर दूर है।

आत्मतत्त्वात्मकं लिङ्गं चात्र शम्भोर्विराजते ।
मन्दिरार्ध्ये शिरः किञ्चिद् दृश्यमानं विलोक्यते ।।678।।
महाबलेश्वरं चैतत्कथ्यते शिवलिङ्गकम् ।
मृगशृङ्गसमं लिङ्गमष्टबन्धमहोत्सवे ।
स्थापने चाष्टबन्धानां केवलं दृश्यते जनैः ।।679।।

यहाँ शिव का आत्मतत्त्व लिंग है। मन्दिर के अर्घ्य में थोड़ा सा लिंग का शिर दिखाई देता है। इसे महाबलेश्वर शिवलिंग कहा जाता है। इसे जब अष्टबन्ध स्थापित करने के लिए निकाला जाता है तब यह हिरण की सींग जैसा दिखाई देता है। अष्टबंध की स्थापना के समय उपस्थित लोगों को ही यह दिखाई देता है।

त्रिदेवस्य तपः स्थानं तीर्थमेतत्प्रचक्षते ।
ब्रह्मणो यज्ञकालेऽत्रातिबलश्च महाबलः ।। 680।।
असुरौ विघ्नकर्त्तारौ हरिणा दुर्गया हतौ ।
ततो महाबलेशाख्यः शम्भुश्चातिबलेश्वरः ।
विष्णुः, कोटीश्वरो ब्रह्मा मन्दिरेष्वत्र भान्ति वै ।।681।।

यह त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) की तपोभूमि कही जाती है। ब्रह्मा जब यज्ञ कर रहे थे तब यहाँ महाबल और अतिबल नामक दो असुर आकर उसमें बाधा डालने लगे, अतः महाबल को दुर्गा जी ने तथा अतिबल को विष्णुभगवान् ने मारा। महाबल को स्त्री से न मरने का वरदान था अतः वह जीवित हो गया जब शिव ने उसे अपने तेज से समेट लिया तब शिव को महाबलेश्वर तथा विष्णु को अतिबलेश्वर कहा जाने लगा। इस प्रकार शिव तथा विष्णु और कोटीश्वर नाम से ब्रह्मा इस तीर्थ में मन्दिर में प्रतिष्ठित हैं।

महाबलेश्वरेशस्य वारिस्यन्नं च लिङ्गकम् ।
शृङ्गारे सिक्तिरक्षायै चावरणं निधीयते ।।682।।

महाबलेश्वर शंभु के लिंग के ऊपरी भाग के वारीक छिद्रों से जल रिसता रहता है। अतः शृंगार के समय शृंगार की सामग्री गीली न हो इसके लिए लिंग पर एक जलरोधी आवरण डालकर इनका शृंगार किया जाता है।

अस्याग्रमण्डपे देवी पार्वती मूर्तिरूपिणी ।
नन्दीश्वरस्य मूर्तिश्च गणेशस्यापि सिद्धिदा ।।683।।

महाबलेश्वर मन्दिर के अग्रमण्डप में देवी पार्वती, गणेश, नन्दी बाबा तथा सिद्ध गणेश की मूर्ति स्थापित है।

कोटितीर्थेऽत्र शम्भोश्च सप्तकोटीश्वरी छविः ।
नन्दीमूर्तिस्तथा कालभैरवस्यास्ति मन्दिरम् ।।684।।

इसी परिसर के आग्नेय कोण को कोटितीर्थ कहा जाता है। यहाँ शिव जी की सप्तकोटीश्वरी मूर्ति है, यहाँ नन्दी की मूर्ति है तथा कालभैरव का मन्दिर है।

एकस्मिन् मन्दिरे चात्र विष्णुशङ्करमिश्रिता।
मूर्तिर्विलक्षणा भाति नैवं प्रायो हि लभ्यते ॥685॥

एक मन्दिर में विष्णु भगवान् का आकार आधी मूर्ति में है और आधी मूर्ति में शंकर की आकृति है। यह विलक्षण मूर्ति है ऐसी मूर्ति प्राय: नहीं दिखाई देती। अर्धनारीश्वर शिव की अनेक मूर्तियाँ मिलती हैं किन्तु ऐसी मूर्ति यहीं है।

सागरस्य तटेऽप्यत्र देवीदेवा: प्रतिष्ठिता: ।
बहुतीर्थानि विद्यन्ते परिक्रमणे विशेषत: ॥686॥
कृष्णा ककुद्वती वेण्या सावित्री च परा सरित् ।
गायत्री च मिलन्त्यत्र चैतत् सङ्गमतीर्थकम् ॥687॥
तेन पञ्चगनीत्याख्यं नामाप्यस्य प्रसिद्धिगम् ।
गोकर्णाख्ये शुभग्रामे वेङ्कटेशस्य मन्दिरम्॥688॥
चक्रपाणियुतो विष्णुर्जगत्कल्याणकारक: ।
शतशृङ्गगिरिश्चात्र समुद्रस्य तटे स्थित: ॥689॥
गरुणादीनि तीर्थानि सन्ति देवा प्रतिष्ठिता: ।
परिक्रमणेऽस्य तीर्थस्य देवानां बहुमूर्तय: ॥690॥
अत्र पर्वतदृश्यानि वर्षाकाले विशेषत: ।
मनोहारीणि दृश्यन्ते चात्रत्यैर्गुल्मपादपै: ॥691॥

इस तीर्थ में सागर के तट पर भी अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं तथा बहुत से स्थानीय तीर्थ हैं। यहाँ पाँच नदियों का संगम है जो स्वयं तीर्थ है इनके नाम हैं- कृष्ण, ककुद्वती वेण्या, सावित्री और गायत्री। इसी के कारण इसे पंचगनी तीर्थ कहा जाता है। गोकर्ण गाँव में श्रीवेंकटेश भगवान् का मन्दिर है। यहाँ भगवान् के हाथ में सुदर्शन चक्र है जो सभी का रक्षक है। समुद्र के तट पर ही एक शतशृंग पर्वत है इसमें गरुण अगस्त आदि नाम के तीर्थ हैं स्थान-स्थान पर देवमूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। इस तीर्थ परिसर की परिक्रमा में पद-पद पर बहुत से देवस्थान मिलते हैं। यहाँ का पर्वतीय नैसर्गिक सौन्दर्य विशेष रूप से बरसात में बहुत ही अच्छा रहता है।

वेदगिरिपक्षितीर्थम्

चेङ्गलपीठपार्श्वे वै तीर्थमेतद् विराजते ।
अत्र वेदगिरेः सम्यक् परिक्रमणं विधीयते ॥692॥
खगानां पालनं चात्र विक्रयणं प्रर्वतते ।
अतः स्थानमिदं सर्वैः पक्षितीर्थं हि कथ्यते ॥693॥

चेंगलपीठ के समीप यह तीर्थ है। यहाँ वेदगिरि की परिक्रमा की जाती है जैसे चित्रकूट में कामदगिरि की परिक्रमा की जाती है। यहाँ पक्षियों का पालन और विक्रय भी किया जाता है इसलिए इसे पक्षी तीर्थ कहा जाता है। यहाँ कुछ विशेष प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं जो गृद्ध से छोटे तथा कौवे से बड़े आकार के होते हैं।

शङ्खतीर्थसरश्चात्र शम्भोर्मन्दिरं परम् ।
रुद्रकोटिसरोऽप्यत्र रुद्रकोटिश्च शङ्करः ॥694॥
पार्वतीमन्दिरं पार्श्वे परिधावेव वर्तते ।
तीर्थे सोपानमार्गेण वेदाचलोपरि स्थितम् ॥695॥
शम्भोर्मन्दिरं यान्ति भक्ताः पद्भ्यां हि पर्वतम् ।
कदलीस्तम्भतुल्याभं शम्भोर्लिङ्गं हि विद्यते ॥696॥
अत्र पार्श्वे गुहायां च पार्वतीविग्रहः परः ।
पक्षिणां दर्शनं चात्र सुलभं यात्रिणां कृते ॥697॥

यहाँ शंख तीर्थ सर तथा उसके समीप शिव का मन्दिर है। यहाँ एक अन्य रुद्रकोटि सर है तथा यहाँ रुद्रकोटि शिव स्थापित हैं। परिधि के भीतर ही पार्वती मन्दिर है नीचे गुफा में भी पार्वती स्थापित हैं। यह तीर्थ वेदाचल पर स्थित है यहाँ भक्तगण सीढ़ियों से पैदल ऊपर जाते हैं। मन्दिर में शिव की मूर्ति केले के स्तम्भ सी लम्बी और चिकनी है। यहाँ सीढ़ियों से पक्षियों का दर्शन भी तीर्थ यात्री करते हैं। यहाँ कुछ पुजारी पक्षियों को ऋषियों का अवतार बता कर उन्हें चारा देने के लिए दक्षिणा आदि माँगते हैं।

महाबलिपुरतीर्थम्

महाबलिपुरं तीर्थं मद्रासात्पञ्चयोजनम् ।
काञ्चीपुरादिदं दूरं सपादं पञ्चयोजनम् ॥698॥

क्रोशद्वयमिदं तीर्थं प्रसृतं च गुहायुतम् ।
समुद्रतटवर्तीदं प्रायः प्रस्तरान्वितम् ।।699।।

महाबलीपुर तीर्थ मद्रास से साठ किलोमीटर तथा कांचीपुरम् से लगभग सत्तर किलोमीटर दूर है। यह तीर्थ लगभग पाँच-छह किलोमीटर में फैला है। यह समुद्रतटवर्ती तीर्थ है, प्रायः पत्थर की चट्टानों में है।

शिवलिङ्गान्यनेकानि श्रीदुर्गामूर्तयस्तथा ।
अर्द्धनारीश्वरस्यापि मूर्तिरेका विराजते ।।700।।
भित्तौ चाष्टभुजी मूर्तिर्विष्णोर्मूर्तिश्च विद्यते ।
देवालया अनेकेऽत्र सिन्धौ विनिमज्जिताः ।।701।।

यहाँ अनेक शिवलिंग स्थान-स्थान पर स्थापित हैं तथा दुर्गाजी की मूर्तियाँ हैं, एक अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति भी है। एक अष्टभुजी मूर्ति दीवाल पर अंकित है तथा विष्णु की प्रतिमा भी है। यहाँ के अनेक मन्दिर समुद्र में डूब गए हैं।

मुख्यः शिवालयश्चैको यत्र शम्भुश्च पार्वती ।
द्वारभागे विराजेते विष्णुः पश्चिमतो स्थितः ।।702।।
अस्य पश्चिमभागे च मण्डपं च सरोवरः ।
सरोवरस्य मध्येऽपि चैकं मण्डपं महत् ।।703।।

यहाँ एक मुख्य शिव मन्दिर है जिसमें द्वार भाग में शिव और पार्वती की प्रतिमाएँ हैं और पश्चिम की तरफ विष्णु की मूर्ति स्थापित है। मन्दिर के पश्चिम में एक मण्डप तथा सरोवर है सरोवर के बीच में भी एक विशाल मण्डप है।

क्रोशमात्रमितोदूरे बाराहस्वामिमण्डपम् ।
बाराहस्येकपादोऽत्र हिरण्याक्षे हि संस्थितः ।।704।।
वामनीया तनुर्भित्तौ विशाला किन्तु विद्यते ।
एकः पादश्च तस्यास्ते मापनाय समुत्थितः ।।705।।
उभयोश्चरणयोः पार्श्वे ह्यनेका देवमूर्तयः ।
गङ्गालक्ष्म्योश्च विष्णोर्वै भित्तौ भान्ति सुमूर्तयः ।।706।।

मुख्य तीर्थ (शिवमन्दिर) से तीन किलोमीटर दूर श्री बाराह स्वामी का मण्डप है। इसमें

बाराह भगवान् का एक पैर हिरण्याक्ष के ऊपर है। भगवान् वामन की मूर्ति दीवाल पर अंकित है कहने को वामन मूर्ति है किन्तु यह अत्यन्त विशाल है क्योंकि भगवान् का एक पैर नापने के लिए उठा हुआ है। दोनों चरणों के पास अनेक देवताओं की मूर्तियाँ बनी हैं। दीवालों पर ही गंगा, लक्ष्मी तथा विष्णु की मूर्तियाँ हैं।

गणेशस्य गुहा चैका ह्यर्जुनस्य तप:स्थली।
महाभारतवृत्तान्तसूचिका: सन्ति मूर्तय: ॥707॥
दुर्गादेव्याश्च विष्णोश्च मूर्तयो सन्त्यनेकधा।
कर्तयित्वा शिलां दीर्घां गुहानामत्र निर्मिति :॥708॥
नृपै: पल्लववंशीयैर्मन्दिराणि कृतानि च।
अत्रत्यै: प्रस्तरैरेव प्रायो मन्दिरनिर्मिति: ॥709॥

यहाँ गणेश की एक गुफा है, अर्जुन की तपस्थली भी यहीं बताई जाती है। यहाँ महाभारत कथा की सूचना देने वाली अनेक मूर्तियाँ बनी हैं। यहाँ दुर्गा माता तथा भगवान् विष्णु की अनेक मूर्तियाँ हैं। प्राय: अनेक देव गुफाएँ पत्थरों को काटकर बनाई गई हैं। यहाँ के मन्दिरों का निर्माण पल्लववंशी राजाओं द्वारा कराया गया है। यहाँ के मन्दिरों का निर्माण यही के पत्थरों से प्राय: किया गया। अधिकांश गुफाएँ पर्वत की चट्टानों को काट कर बनाई गई हैं।

जम्बुकेश्वरतीर्थम्

जम्बुकेश्वरतीर्थं यज्जलतत्त्वात्मकं परम्।
श्रीरङ्गान्नातिदूरस्थं क्रोशाभ्यन्तरत: स्थितम् ॥710॥
जम्बुवृक्षस्य बाहुल्यादत्रत्यस्य तपस्विन:।
जम्बुनामाऽभवत्तेन तदीशो जम्बुकेश्वर: ॥711॥

जम्बुकेश्वर तीर्थ जलतत्त्वात्मक तीर्थ है। यह श्रीरंग के समीप ही तीन किलोमीटर तक है। जामुन के पेड़ों की अधिकता से यहाँ तपस्या करने वाले तपस्वी को जम्बुस्वामी कहा जाता था अत: उसके आराध्य ईश्वर का नाम जम्बुकेश्वर पड़ गया।

शिवलिङ्गे न पत्रं स्यादतो लूता स्वजालत:।
रक्षन्ती शिवं ह्यासीद् भक्तो हस्ती च नित्यश: ॥712॥

शुण्डाज्जलं क्षिपन्नासीत् जालं दृष्ट्वा चुकोप सः ।
जालं नष्टं कृतं तेन लूता शुण्डं विवेश सा ॥713॥
अतो मृतावुभौ चात्र कथेयमिह टङ्किता ।
एतयोर्दृश्यमानास्तेऽत्र स्तम्भे सम्प्रदर्शिता ॥714॥

शिवलिंग पर पत्ते न गिरें अतः एक मकड़ी शिवलिंग के ऊपर जाला बना देती थी। एक भक्त हाथी प्रतिदिन सूँड़ में जल भरकर शिव को अर्पित करता था। एक दिन गुस्सा होकर हाथी ने जाला तोड़ दिया, ऐसा देखकर मकड़ी उनकी नाक में घुस गई। इससे मकड़ी और हाथी दोनों मर गए यह दृश्य यहाँ मन्दिर में स्तम्भ पर प्रदर्शित किया गया है।

परिसरो विशालोऽस्य मन्दिरस्य विराजते ।
प्राङ्गणत्रययुक्ते हि परिधौ तीर्थमिदं परम् ॥715॥
प्रथमे मण्डपे लग्नाः स्तम्भाभव्याश्चतुश्शतम् ।
प्राङ्गणे दक्षिणे चात्र तेप्पाकुलसरोवरः ॥716॥
अधःस्रोतोजलैश्चायं जलपूर्णो विभाव्यते ।
मण्डपं चास्य मध्येऽपि यत्रोत्सवविधौ शुभा ॥717॥
मूर्तिः श्रीरङ्गनाथस्य भक्तैरानीयते मुदा ।
प्राङ्गणवामभागेऽपि मण्डपं विद्यते परम् ॥718॥

इस मन्दिर का परिसर अत्यन्त विशाल है तीन प्रांगणों से युक्त इसका परिसर है। इसके प्रथम मण्डप में चार सौ भव्य स्तम्भ लगे हैं। इसके दक्षिण प्रांगण में तेप्पाकुल सरोवर है। नीचे स्रोतों से इसमें जल आता रहता है अतः इसमें सदा जल भरा रहता है। इसके मध्य में भी मण्डप है जिसमें उत्सव के समय श्रीरंगनाथ स्वामी की मूर्ति भक्तों द्वारा लायी जाती है प्रांगण के बाएँ भाग में भी एक श्रेष्ठ मण्डप है।

ततोऽग्रे प्राङ्गणेऽप्यस्ति सहस्रस्तम्भमण्डपम् ।
अत्राप्येकं सरो भाति सजलं सुन्दरं परम् ॥719॥
पञ्चमे परिधौ भाति जम्बुकेश्वरमन्दिरम् ।
जलप्रवाहसंयुक्तो ह्यधोभागोऽस्य विद्यते ॥720॥
जलोर्ध्वं दृग्गतं लिङ्गं श्रद्धयाऽत्र विलोक्यते ।
शङ्कराचार्यवर्यस्य मूर्तिरेकाऽत्र विद्यते ॥721॥

इसके आगे के प्रांगण में हजार स्तम्भों वाला एक मण्डप है। यहाँ भी एक सरोवर है जो सुन्दर और सजल है। पाँचवी परिधि में स्वामी जम्बुकेश्वर का मन्दिर है। इसके तल में सदा जल प्रवाहित रहता है। प्रवाहित होते हुए जल से कुछ ऊपर उठे हुए जम्बुकेश्वर लिंग का भक्तगण श्रद्धापूर्वक दर्शन करते हैं। यहाँ स्वामी शंकराचार्य की भी एक मूर्ति प्रतिष्ठित है।

बाह्ये परिसरे भान्ति नटराजादिमूर्तयः ।
मण्डपानि बहून्यत्र विद्यन्ते दशाधिकाः ॥722॥
देवानामुत्सवानां च कृते निर्धारितानि च ।
अखिलाण्डेश्वरी देवी जगदम्बाऽत्र राजते ॥723॥
श्रीयंत्रकुण्डले भातो जगदम्बाकर्णयोः परे ।
तत्पुत्रस्य गणेशस्य मूर्तिस्निग्धा विराजते ॥724॥
सम्मुखं हि निकेतस्य स्तम्भे मूर्तौ महेश्वरः ।
वृषारुढैकपादोऽयं त्रिमूर्तिर्भाति सुन्दरः।
विशालं मन्दिरं चास्याः प्राङ्गणे मण्डपानि च ॥725॥

बाह्य परिसर में नटराज आदि देवताओं की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। इस परिसर में बहुत मण्डप हैं। लगभग दस से अधिक मण्डप बने हैं जो देवताओं की मूर्तियों एवं उत्सवों के आयोजन के लिए बनाए गए हैं। इस परिसर में जगदम्बा अखिलाण्डेश्वरी देवी का मन्दिर है, इनका विशाल मन्दिर है। इसके प्रांगण में भी मण्डप बने हैं। मन्दिर के सामने स्तम्भ में महेश्वर मूर्ति बनी है। देवी के कानों में श्रीयंत्र के कुण्डल हैं। सामने गणेश की मूर्ति है। मन्दिर के सामने नन्दी पर बैठे महादेव (शिव) सुन्दर त्रिमूर्ति रूप में स्थित है। यह विशाल मन्दिर है तथा इसके प्रांगण में मण्डप भी बने हैं।

योजनाभ्यन्तरे सन्ति देवानां शुभालयाः ।
श्रीनिवासो विभात्यत्र श्रीकोणेश्वरमन्दिरे ॥726॥
समयस्यपुरे देवी मारी चाम्बेति विश्रुता ।
औरैयुरे महालक्ष्म्या मन्दिरं विद्यते परम् ॥727॥
सुब्रह्मण्यमूर्तिश्च पलणौ विद्यते परा ।
एवं तीर्थेह्यनेकानि मन्दिराणि कृतानि वै ॥728॥

यहाँ दश किलोमीटर के दायरे में अन्य अनेक देवस्थान हैं। कोणेश्वर मन्दिर में श्रीनिवास (भगवान् विष्णु) का मन्दिर है। समयपुर में मारी अम्बा का श्रेष्ठ मन्दिर है। पलणि में सुब्रह्मण्य

स्वामी (कात्तिकेय) का मन्दिर है। इस प्रकार इस तीर्थ में अनेक देव मन्दिर विराजमान हैं।

कालहस्तितीर्थम्

रेलस्थानकं चैतत्कालहस्तीति नामकम् ।
रेणुगुण्टासमीपे वै विद्यते योजनद्वयम् ।।729।।
पञ्चतत्त्वेषु वायोर्वै लिङ्गमत्र विराजते ।
सत्याः स्कन्धे स्थितं पीठं तीर्थे चास्मिन् विराजते ।।730।।
स्थानकान्मन्दिरं शम्भोः क्रोशाभ्यन्तरे स्थितम् ।
लिङ्गरूपाऽत्र मूर्तिर्या वायुतत्त्वात्मिका परा ।।731।।
पूजकैरपि नो स्पृश्या प्रथैता चात्र विद्यते ।
सुवर्णपटलं चैकं समक्षं स्थापितं परम् ।।732।।
अत्रैव पूज्यसामग्री चार्प्यमाणा विभाव्यते ।
मूर्तौ चिह्नानि लूतायाः हस्तिदन्तभुजङ्गयोः ।।733।।
विद्यते तेन वै कालहस्तीदं तीर्थमुच्यते ।
मन्दिरे पार्वतीमूर्तिः परिक्रमणेऽन्यमूर्तयः।।734।।
पर्वते वर्तते तीर्थं सोपानं नाद्य विद्यते ।
पदात्यैव गता भक्ता अर्चनं कुर्वते समे ।।735।।

कालहस्ती नाम का रेलवे स्टेशन है जो रेणुगुण्टा से समीप में ही 12 किलामीटर की दूरी पर है। पंच महाभूतों में एक वायुतत्त्व का लिंग यहाँ प्रतिष्ठित है। यह सती का स्कन्ध पीठ भी है (यहाँ सती का स्कन्ध गिरा था)। रेलवे स्टेशन से शिवमन्दिर तीन किलोमीटर के भीतर ही है। यहाँ जो प्रतीकात्मक लिंग मूर्ति है वह वायुतत्त्व की मूर्ति है। यहाँ एक नियम है कि मूर्ति का स्पर्श पूजारी भी नहीं कर सकते मूर्ति के सामने एक सोने का पटा (पीढ़ा) रखा है उसी पर पूजा की सामग्री चढ़ाई जाती है। मूर्ति पर मकड़ी, हाथी के दाँत सर्प के फन का निशान बना है इसलिए इसे काल हस्ती तीर्थ कहा जाता है। (पूर्वतीर्थ के वर्णन में मकड़ी और हाथी की भक्ति और उनकी मृत्यु का वर्णन किया जा चुका है सर्प का फन स्वभावत: शिवलिंग पर रहा करता है।) मन्दिर में पार्वती की मूर्ति है तथा परिक्रमा भाग में अन्य अनेक मूर्तियाँ है। यह तीर्थ पर्वत पर है यहाँ जाने के लिए सीढ़ियाँ अभी नहीं बनी हैं पैदल ही जाना पड़ता है सभी भक्त पैदल ही जाते हैं।

गुरूवायूरतीर्थम्

रेलस्थलात्त्रिचूराद्धि विद्यते योजनत्रयम् ।
कोचीनमार्गमध्यस्थं तीर्थं विद्यते परम् ।।736।।
देवकीवसुदेवाभ्यां विष्णोर्मूर्तिरहर्निशम् ।
या पूजितैकदा सैव ममज्ज वारिधौ च सा ।।737।।
शिष्येन वायुना साकं गुरुदेवो वृहस्पति : ।
तामुद्धृत्य समुद्रात्स स्थापितवानिहालये ।।738।।
अतो हि गुरुवायूरनाम तीर्थस्य चाभवत् ।
उमेशयोः प्रिया चेयं मूर्तिरित्यपि कथ्यते ।।739।।

यह तीर्थ स्थान त्रिचूर रेलवे स्टेशन से 36 किलोमीटर दूर है। यह कोचीन के रास्ते में मध्य में है। कहा जाता है कि देवकी और वसुदेव इस मूर्ति की पूजा किया करते थे। कालान्तर में यह मन्दिर समुद्र में डूब गया। अपने शिष्य वायु के साथ वृहस्पति ने आकर इस मूर्ति को समुद्र से निकालकर मन्दिर में स्थापित किया। इसलिए इस तीर्थ स्थल को गुरुवायूर कहा जाता है। यह शिव और पार्वती की प्रिय मूर्ति बताई जाती है।

ममीयूरस्थले चात्र शम्भोरपि च मन्दिरम् ।
ममीयूरप्पनेत्याख्यं नाम शम्भोरिह स्थिरम् ।।740।।
कथ्यते गुरुवायूरप्रतिष्ठा शम्भुना कृता ।
अत्रत्यं मन्दिरं चापि देवैरेव विनिर्मितम् ।।741।।

ममीयूर स्थान पर भगवान् शिव का मन्दिर बना है। यहाँ शिव को ममीयूरप्पन नाम से पुकारा जाता है। कहा जाता है कि गुरुवायूर की प्रतिष्ठिा भगवान् शिव ने की है। यह भी कहा जाता है कि यहाँ के मन्दिरों का निर्माण देवताओं ने किया है।

श्रूयते पाण्ड्यराजस्य सर्पदंशात्सुनिश्चितः ।
मृत्युः प्रोक्तः तथाप्यत्र मन्दिरकार्यसंरतः ।।742।।
न मृतः सर्पदंशेऽपि विष्णुशक्तिर्महीयसी ।
विष्णुशक्तिमहत्त्वं वै लोके चैवं प्रतिष्ठितम् ।।743।।

ऐसा कहा जाता है कि पाण्ड्यनरेश की कुण्डली में सर्पदंश से उनकी मृत्यु लिखी थी फिर भी वे मन्दिर के नवनिर्माण के कार्य में निरन्तर लगे रहे। सर्प ने काटा तो किन्तु उन्हें इसका

पता ही नहीं चला न उनकी मृत्यु ही हुई ऐसी विष्णु की शक्ति की महिमा है। इस प्रकार लोक में इस तीर्थ और विष्णु की शक्ति प्रतिष्ठित है।

कथ्यते विष्णुना दत्ता स्वमूर्तिर्ब्रह्मणे पुरा।
यदा सृष्टिगते कार्ये ब्रह्मा व्यस्तोऽभवत्तदा ।।744।।
पृश्निसुतपसोः प्रीत्या प्रीतेन ब्रह्मणा पुनः ।
एताभ्यां सा प्रदत्ता वै समाराधनहेतवे ।।745।।
अनेन सुप्रसन्नात्मा हरिः पुत्रत्वमागतः ।
पृश्निगर्भ इतिख्यातः पुराणे वर्णिता कथा ।।746।।
अभूतां च पुनश्चैतौ कश्यपादितिरूपतः ।
देवकीवसुदेवौ च पुनर्जातौ हि द्वापरे ।। 747।।
ययोः श्रीकृष्णनामायं विष्णुर्जातो भुवस्तले ।
एवं भगवतो मूर्तिः क्रमशो वसुदेवतः ।।748।।
अत्र तीर्थे स्थिता सेयं परमा देवपूजिता ।
एवं विष्णुप्रदत्तेयं मूर्तिर्भव्या पुरातनी ।।749।।

ऐसा कहा जाता है विष्णु की इस मूर्ति को स्वयं ब्रह्मा को उनके पिता विष्णु ने दिया था। जब ब्रह्मा सृष्टि कार्य में व्यस्त हो गए तब उन्होंने पृश्नि और सुतपा की तपस्या से प्रसन्न होकर इस मूर्ति को उन्हें प्रदान किया। विष्णु की पूजा से पृश्निगर्भ उत्पन्न हुए। यह कथा पुराणों में वर्णित है। ये दोनों पुनः कश्यप और अदिति के रूप में हुए वे भी विष्णु की भक्ति करते रहे। अगले जन्म में यही वसुदेव और देवकी हुए जो विष्णु के उपासक रहे। देवकी के गर्भ से भगवान् श्रीकृष्ण पैदा हुए जिनका पालन यशोदा और नन्द ने किया। बाद में कंस का उन्होंने वध किया। इस मूर्ति की पूजा वसुदेव और देवकी करते रहे। बाद में यह समुद्र में डूब गई और वृहस्पति और उनके शिष्य वायु द्वारा इसे निकाल कर पुनः स्थापित किया गया। यही मूर्ति गुरूवायूर के मन्दिर में स्थापित है इस प्रकार यह विष्णु द्वारा स्वयं ब्रह्मा को प्रदत्त भव्य और प्राचीनतम मूर्ति मानी जाती है।

कन्याकुमारीतीर्थम्

सीमान्ते दक्षिणे तीर्थं भारते विद्यते परम् ।
इदं कन्याकुमार्या यत्सागरस्य तटे स्थितम् ।।750।।

बाणासुरवधार्थाय देवैर्यागः कृतः परः ।
तस्माच्चिच्छक्तिरूपेण कन्या चेयं समुद्गता।।751।।
कन्येयं पतिरूपेण शिवं प्राप्तुं तपोरता ।
तेन शंभुरिमां कन्यां परिणेतुं चलन् समैः ।
दृष्टोऽमरैस्तदा चिन्ताकुलाजाता विवाहतः ।।752।।
चेदियं शिवपत्नी स्यात् तदा बाणासुरः कथम् ।
हन्यत इति तैः सर्वै शिवोद्वाहनिवारणे ।।753।।
नियुक्तो नारदः शम्भुं रोधितवान् शुचिस्थले ।
रात्र्या सह विवाहस्य मुहूर्तोऽपि समापितः ।।754।।
स्थाणुरभवच्छम्भुः शुचीन्द्रे तेनं संस्थितः ।
अतः कुमारिरूपेण देव्या बाणासुरो हतः ।।755।।

भारत की अन्तिम दक्षिणी सीमा पर समुद्र तट पर कन्याकुमारी तीर्थ स्थित है। बाणासुर के वध के लिए सभी देवताओं ने यहाँ एक यज्ञ किया। उसमें चित् शक्ति के रूप में एक कन्या आविर्भूत हुई। यथा समय कन्या ने शिव से विवाह करने के लिए तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर शिव इससे विवाह के लिए चल पड़े। देवताओं ने देखा कि शिव कन्या से विवाह के लिए जा रहे तो चिन्ताकुल हो उठे क्योंकि कुमारी कन्या से ही बाणासुर का वध हो सकता था तब देवताओं ने नारद को इस विवाह को रोकने के लिए लगाया। नारद ने शुचि (पवित्र) स्थान पर शिव को रोक लिया, पूरी रात रोके रहे जिससे रात बीत गई, विवाह का मुहूर्त निकल गया। शंकर वही स्थाणु के रूप में स्थित हो गए। शुचीन्द्र तीर्थ में यही शिव विद्यमान हैं। अतःकुमारी के रूप में देवी ने बाणासुर का वध किया। और यहीं स्थित हो गईं जिससे यह कन्याकुमारी तीर्थ बन गया।

आश्विननवरात्रेऽत्र ह्युत्सवायोजनं परम् ।
भक्तैर्विधीयते सम्यक् तीर्थेऽस्मिन् समागतैः ।।756।।
सागरोऽरबहिन्दौ च बंगश्चात्र समागताः ।
मिलन्त्यत एतद्वै सङ्गमतीर्थमीर्यते ।।757।।

आश्विन मास के नवरात्र में इस तीर्थ में आने वाले भक्तों द्वारा सम्यक् रूप से उत्सव का आयोजन किया जाता है। यहाँ हिन्द, अरब और बंग सागर आकर मिलते हैं, अतः सागरों का संगम तीर्थ भी है।

कूले मण्डपमित्यत्र यत्र पिण्डादिकाः क्रियाः ।
आगतैरत्र भक्तैश्च सम्पद्यन्ते यथायथम् ।।758।।
सागरेऽपि सुरक्षार्थं परिधिश्चात्र निर्मितः ।
महिलानां वस्त्रामाधातुं कक्षाः सन्ति पृथक् पृथक् ।।759।।

समुद्र के तट पर एक मण्डप है जिसमें यहाँ आने वाले भक्तगण पिण्डदानादि की धार्मिक क्रियाएँ सम्पन्न करते हैं। सागर में सुरक्षा दृष्टि से परिधि बना दी गई है। तट पर महिलाओं को स्नान के बाद वस्त्र परिवर्तन आदि के लिए अलग-अलग कक्ष बनाये गए हैं।

समुद्रे चात्र गायत्री सावित्री च सरस्वती ।
कन्या विनायकश्चेति नाम्ना तीर्थानि चासते ।।760।।
दक्षिणे मातृतीर्थं च पितृतीर्थं विभान्ति वै ।
पश्चिमे स्थाणुतीर्थं च शुचीन्द्रमिति कथ्यते ।।761।।

समुद्री भाग में गायत्री, सावित्री, सरस्वती, कन्या और विनायक तीर्थ हैं। इस परिसर में दक्षिण में माता और पिता का तीर्थ पश्चिम में स्थाणुतीर्थ शुचीन्द्र कहा जाता है।

स्नानघट्टसमीपे च गणेशस्य हि मन्दिरम् ।
पूजां गणपतेः कृत्वा ततो देवी प्रपूज्यते ।।762।।
द्वितीये परिसरे चापि हीन्द्रकान्तो विनायकः ।
श्रूयत इन्द्रदेवेन मूर्तिरेषा प्रतिष्ठिता ।।763।।

समुद्र तट पर स्नानघाट के समीप गणपति का एक मन्दिर है, अतः भक्त पहले गणेश की पूजा करते हैं तब कन्याकुमारी की पूजा के लिए जाते हैं। दूसरे परिसर में इन्द्रकान्त विनायक (गणेश) की एक मूर्ति है। ऐसा कहा जाता है कि इसकी प्रतिष्ठा स्वयं इन्द्र ने की थी।

कन्याकुमारिकागेहद्वारत्रयमनन्तरम् ।
भक्ता देवाः सुमूर्तें वै दर्शनं क्रियतेऽधुना।।764।।
विग्रहे नासिकाकीले जटितं हीरकंपरम् ।
तेनेयं मूर्तिराभाति दिव्याभेन तेजसा ।।765।।
नंबूद्रीब्राह्मणैरत्र देव्याः पूजा विधीयते ।
आभाति प्रतिमा रम्या दिव्याभरणभूषिता ।।766।।

कन्याकुमारी की मूर्ति की नासिका में जो कील लगी है उसमें बहुत उत्तम कोटि का हीरा लगा है जिससे मूर्ति से दिव्य आभा बिखरती रहती है। यहाँ नम्बूदरी ब्राह्मण देवी के पुजारी के रूप में कार्य करते हैं। देवी की प्रतिमा बहुत ही महँगे वस्त्राभरणों से सुसज्जित रहती है।

उत्तरे चाग्रिमे द्वारे सत्सखी भद्रकालिका।
सत्याः पृष्ठभागेदं पीठं वै विद्यते परम् ॥767॥
पार्श्वे स्वादुजला चात्र पुष्करिणी विभाव्यते।
श्रुतमस्या जलं दिव्यं विद्यते पापनाशकम् ॥768॥

उत्तर के अग्रिम द्वार पर कन्याकुमारी की सहेली भद्रकाली की मूर्ति है। यहाँ सती का पृष्ठ भाग गिरा था अत: इसे शक्तिपीठ माना जाता है। समीप में एक स्वादु (मीठे) जल वाली पुष्करिणी है, कहा जाता है कि इसका जल दिव्य और पाप नाशक है।

अत्रैव सागरे चास्ते विवेकानन्दमन्दिरम्।
प्रसिद्धाऽत्र शिला रम्या विवेकानन्दनामतः ॥769॥
निर्जलं वसता तेन चात्र ध्यानं कृतं पुरा।
सवनाय कृतं घट्टं परिधिश्चात्र निर्मितः ॥770॥
सूर्योदयास्तदृश्ये च ह्यत्र भातो मनोहरे।
योजनान्ते शुचीन्द्रस्य गेहं ज्ञानवने स्थितम् ॥771॥

यहीं पर सागर में टापू पर स्वामी विवेकानन्द का मन्दिर है। यहीं विवेकानन्द के नाम की प्रसिद्ध शिला है। कहा जाता है कि स्वामी ने निर्जल रहकर यहाँ ध्यान किया था। यहाँ स्नान करने के लिए घाट बने हैं तथा इसकी परिधि भी बनाई गई है। यहाँ सूर्यादय और सूर्यास्त का दर्शन बहुत ही रमणीय लगता है। यहाँ से लगभग दस किलोमीटर दूर ज्ञानवन में शुचीन्द्र शिव का प्रसिद्ध मन्दिर है।

इन्द्रो गौतमशापाद् वै मुक्तो जातोऽत्र कथ्यते।
प्रज्ञाकुण्डसरश्चात्र त्रिदेवमन्दिराणि च ॥772॥
गोपुरेऽस्य शिवो विष्णुश्चात्र मन्दिरयोः स्थितौ।
श्रीदेवीचात्र भूदेवी विष्णुश्चात्र मन्दिरे ॥773॥
गरुडस्य कृता मूर्तिर्मारुतेश्चापि विद्यते।
शिवस्य मन्दिरे लिङ्गं स्थापितं विद्यते परम् ॥774॥

कहा जाता है कि इस शुचीन्द्र तीर्थ में गौतम के शाप से इन्द्र को मुक्ति मिली थी। (संभवत: शुचीन्द्र इसीलिए इस तीर्थ का नाम है) यहाँ एक प्रज्ञाकुण्ड सरोवर है और ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के मन्दिर हैं। विष्णु के मन्दिर में श्रीदेवी तथा भूदेवी की भी प्रतिमाएँ हैं। यहाँ गरुड़ और हनुमान की भी मूर्तियाँ हैं। शिव के मन्दिर में श्रेष्ठ शिवलिंग स्थापित है।

आननास्याकृतिर्लिङ्गे निर्मितात्र विलोक्यते ।
मन्दिरस्य समक्षं च नन्दिमूर्तिश्च विद्यते ॥775॥

यहाँ शिवलिंग के ऊपरी भाग में मुखाकृति बनी है। मन्दिर के सामने नंदी की मूर्ति स्थापित है।

एतयोर्मन्दिरे सन्ति रक्षिता चलमूर्तयः ।
ब्रह्मणोऽपि कृतं चात्र मन्दिरं विद्यते परम् ॥776॥
परिक्रमणेऽपि देवानां विलोक्यन्ते सुमूर्तयः ।
त्रयाणामपिगेहानां परिक्रमणं विधीयते ॥777॥

इन मन्दिरों में कुछ चल मूर्तियाँ भी सुरक्षित हैं। यहाँ विष्णु और शिव के साथ एक मन्दिर ब्रह्मा का भी है जो प्रमुख मन्दिरों में है। तीनों मन्दिरों की परिक्रमा की जाती है परिक्रमा भाग में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं।

नागरकोइलेत्याख्यं तीर्थं क्रोशद्वयान्तरे ।
विद्येते तत्र शेषस्य महादेवस्य मन्दिरे ॥778॥

यहाँ से छह किलोमीटर दूर नागर कोइलनामक स्थान में शेष और महादेव शिव के मन्दिर हैं।

जैनतीर्थानि

रत्नत्रयं हि जैनानां मते प्रायो निभाल्यते ।
यतन्ते ते समे येषां निष्ठा धर्मस्य पालने ॥779॥
प्रथमं दर्शनं सम्यग् ज्ञानं सम्यग् द्वितीकम् ।
सम्यक् चारित्रमेतेषां मते रत्नं तृतीयकम् ॥780॥
अधीतिरवबोधश्चाचरणं च प्रचारणम् ।

श्रीहर्षोऽपि गदत्येवं नैषधे नलवर्णने ॥781॥
अतो भारतराष्ट्रस्य सदाचारप्रवृत्तय: ।
वैदिकेषु च जैनेषु दृश्यन्ते प्रायश: समा: ॥782॥
धर्मात्मानो हि काङ्क्षन्ति दिव्यं जीवनं समे ।
सर्वे सन्तो महात्मान: सम्यग्वर्त्मप्रदर्शका: ॥783॥
यथा ज्ञातं यथा दृष्टं तथा च पठितं यथा ।
तथात्र सुप्रसिद्धानां तीर्थानां वर्णनं कृतम् ॥784॥

जैन दर्शन नास्तिक दर्शन कहा जाता है। वैदिक दर्शनों से कुछ बातों में मतभेद भी है, जिससे होकर आस्तिक विचारधारा प्रवर्तित है, उसी मार्ग का यह भी पथिक है। दु:ख की निवृत्ति या परमसुख की प्राप्ति इनका भी चरम लक्ष्य है। अंत:करण की शुद्धि और परमात्मा का साक्षात्कार इनका भी उद्देश्य है। जैन लोग तीन रत्नों को मानते हैं। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र ये तीन रत्न हैं, इसके लिए वे जीवन भर प्रयास करते हैं - 'अधीतिबोधाचरणप्रचारणै:' लिखकर श्री हर्ष ने पुण्यश्लोक राजा नल का वर्णन किया है। इस दृष्टि से जैनागम और भारतीय चतुर्दश विद्याओं के अनुपालन में प्रवृत्तिगत साम्य है। सभी धर्मात्मा दिव्य जीवन चाहते हैं, जितने सच्चे सन्त महात्मा हैं, सभी सम्यक् (उचित/ठीक) मार्ग पर जाने की प्रेरणा देते हैं। जैन तीर्थों में जाने का विशेष अवसर नहीं मिला है तथापि यथाज्ञात यथाश्रुत यथापठित वर्णन करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। यहाँ विशेष प्रसिद्ध तीर्थों का ही वर्णन किया गया है।

प्रायशो यत्र जैनानां सन्ति मन्दिरमूर्तय: ।
तत्र व्यासोक्तदेवानामपि मन्दिरविग्रहा:॥785॥

प्राय: जहाँ जैन मन्दिर हैं वहाँ वेदव्यास के पुराणों में वर्णित देवी देवताओं के मन्दिर और मूर्तियाँ भी प्राप्त होती हैं।

गिरनारतीर्थम्

गुर्जरे काठियावाडगिरिशृङ्गेष्वनेकधा ।
देवस्थानशिलालेखा: प्रसिद्धा सन्ति ते समे ॥786॥
अम्बा गोरक्षनाथश्च दत्तात्रेयश्च कालिका ।
देवरूपा विराजन्ते शिखरेषु यथायथम् ॥787॥

गुजरात के काठियावाड़ के पर्वत शिखरों पर स्थित अनेक प्रकार के देवस्थान और शिलालेख आदि प्रसिद्ध हैं। अम्बादेवी, गोरक्षनाथ, दत्तात्रेय, कालका देवी आदि के मन्दिर प्रसिद्ध हैं।

अशोकस्य शिलालेखा अधोभागे चतुर्दश।
धर्मात्मकाः समुत्कीर्णा शिलायां ते सुरक्षिताः ॥788॥
रूद्रदामनलेखोऽपि सुदर्शनसरोऽन्वितः।
संस्कृतेन समुत्कीर्णः तडागोद्धारसूचकः ॥789॥

पहाड़ी के नीचे के हिस्से में अशोक के चौदह शिलालेख हैं इनमें अधिकांश धार्मिक शिलालेख हैं। इसी चट्टान पर रुद्रदामन का 120 ई. का प्रसिद्ध अभिलेख संस्कृत भाषा में है इसमें सुदर्शन तालाब के पुनरुद्धार का वर्णन किया गया है।

रैवतकगिरेर्यस्य माघे भारते कथा।
गिरौ तस्मिन्निदं तीर्थं जैनधर्मावलम्बिनः ॥790॥
शिखरे मल्लिनाथादिमन्दिराणि विभान्ति वै।
नेमिनाथस्य तेष्वस्ति विशालं मन्दिरं हि यत् ॥791॥
नेमिनाथोच्चभागे च निर्झरो गोमुखाभिधः।
अत्रापि मन्दिरं चैकं पराम्बाशिखरे स्थिता ॥792॥
भवनाथाग्रिमे भागे कुण्डे च भीमसूर्ययोः।
भर्तृहरेर्गुहाऽप्यत्र यत्र देवाः प्रतिष्ठिताः ॥793॥

जिस रैवतकपर्वत का महाकवि माघ के शिशुपाल वध में तथा महाभारत में वर्णन है उसी पर जैन धर्म को मानने वालों का तीर्थ स्थान है। इसके शिखर पर मल्लिनाथ आदि के मन्दिर सुशोभित हैं। उसमें भी नेमिनाथ का मन्दिर सबसे विशाल है। नेमिनाथ के मन्दिर से ऊपर जाने पर एक झरना मिलता है जिसे गोमुख कहा जाता है। यहाँ भी पर्वत के शिखर पर पराम्बा पार्वती देवी का मन्दिर है। उसके आगे भीम कुण्ड और सूर्यकुण्ड हैं। यहाँ भर्तृहरि की गुफा भी है जिसमें देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

शत्रुञ्जयतीर्थम्

पालीटाणा हि सौराष्ट्रे शत्रुञ्जय गिरौ स्थिता।
भावनगर पार्श्वे या जैनतीर्थपरा पुरी ॥794॥
अष्टकोटिमुनीनां वै मोक्षं चात्र वर्णितम्।
सिध्याचलाख्यजैनानामिदं तीर्थं विशेषतः ॥795॥

पालीटाणा गुजरात के शत्रुंजय गिरि पर स्थित है। यह भावनगर के पास है विशेषतः जैन तीर्थ नगरी है। कहा जाता है यहाँ आठ करोड़ मुनियों को मोक्ष प्राप्त हुआ है। विशेष रूप से यह सिध्याचल जैनों का विशेष तीर्थ है।

ऋषभदेवकैवल्यं चात्र तीर्थेऽभवत् पुरा।
ऋषभस्यादिनाथस्य शान्तिनाथस्य मूर्तयः ॥796॥
मन्दिरेषु विराजन्ते या रत्नैः समलङ्कृताः।
दिलवाडास्थितं रम्यं प्रसिद्धं जैनमन्दिरम् ॥797॥
दिगम्बरपरं सोनगढे चैकं सुमन्दिरम्।
भावनगरपार्श्वेऽपि सुन्दरं जैनमन्दिरम् ॥798॥
बौद्धकालगुफाःकाश्चिदत्र सन्ति विनिर्मिताः।
शुभ्राश्मनिर्मितः स्तम्भः सुन्दरश्च कलात्मकः॥799॥

इस तीर्थ में ऋषभदेव को कैवल्य की प्राप्ति हुई थी। यहाँ ऋषभदेव, आदिनाथ और शान्तिनाथ की भव्य मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित हैं। ये सभी मूर्तियाँ रत्नों से अलकृंत हैं। दिलवाड़ा में अत्यन्त सुन्दर सुप्रसिद्ध जैन मन्दिर है। भावनगर के समीप भी एक जैन मन्दिर है। यहाँ पर्वत में बौद्धकालीन गुफाएँ भी मिलती हैं। भावनगर के समीप सोनगढ़ में मन्दिर के साथ सुन्दर कीर्त्ति स्तंभ है जो संगमरमर से बना है और कलापूर्ण है।

रणकपुरतीर्थम्

आरावलीगिरिक्षेत्रे शुभ्रप्रस्तरनिर्मिताः।
जैनालया विभान्त्यत्र बहवो हि मनोहराः ॥800॥
दीपाकारितभक्तस्य कल्पनाकारितं शुभम्।
धरनाशाहभक्तेन क्षेत्रं निर्मापितं परम् ॥801॥

राजस्थान में आरावली पर्वत के क्षेत्र में अनेक जैन मन्दिर हैं जो प्रायः संगमर्मर से बने हैं। कहा जाता है कि दीपाकारित नामक किसी सामान्य भक्त ने इस तीर्थ की कल्पना की थी बाद में धरनाशाह ने इस परिसर को विकसित किया।

भव्यं चतुर्मुखं चात्र निर्मितं जैन मन्दिरम् ।
तीर्थङ्करस्य चाद्यस्य ह्यत्र मूर्तिः प्रतिष्ठिता ॥802॥
आदिनाथस्य मूर्तिर्हि मन्दिराभ्यन्तरे स्थिता ।
त्रितले मन्दिरे चास्मिन् शिखराणि विभान्ति वै ॥803॥

यहाँ चार भागों से युक्त विशाल जैन मन्दिर बनाया गया है। यहाँ आदितीर्थंकर की मूर्ति स्थापित की गई है। आदिनाथ की मूर्ति मन्दिर के भीतर स्थित है। यह मन्दिर तिमंजिला है इसमें ऊपर बहुत से शिखर बने हैं। इसमें चौवालिस शिखर हैं।

शिखराणि चतुश्चत्वारिंशदत्र निकेतने ।
दूरतो हि विलोक्यन्ते भक्तैः श्रद्धासमन्वितैः ॥804॥
आरार्तिक्यवेलायां महान् घण्टाध्वनिः परः ।
क्रोशं यावन्मुदा लोकैः श्रूयते श्रद्धया सदा ॥805॥
न केवलं हि जैनानां मूर्तयः सन्ति मन्दिरे ।
वैष्णवानां च सम्बद्धा मूर्तयोऽप्यत्र संस्थिताः ॥806॥

इस मन्दिर में चौवालिस शिखर हैं जिनको श्रद्धा पूर्वक भक्तजन दूर से ही देखते हैं। आरती के समय यहाँ घण्टे की आवाज इतनी तेज हो जाती है कि 2-3 किलोमीटर दूर से सुनाई देती है। यहाँ केवल जैन मूर्तियाँ ही नहीं है अपितु वैष्णव मूर्तियाँ भी यथास्थल स्थापित हैं।

सम्मेदशिखरतीर्थम्

सम्मेदशिखरं तीर्थं हजारीबागमण्डले ।
बिहारे विद्यते भव्यं ब्राकराख्यसरित्तटे ॥807॥
सामागनामकः कश्चिद् गृही शालतले स्थितः ।
तपः कृत्वाऽत्र कैवल्यज्ञानं प्राप्तवा न् परम् ॥808॥
श्रूयते विंशतिश्चात्र तीर्थङ्करपदान्विताः।
मुनयश्चात्र निर्वाणं लब्धा मुक्तिं गता समे ॥809॥

गिरिडीहादिह तीर्थस्य यात्राकाले जिनालयाः ।
विद्यन्ते बहवस्तेषां दर्शनं कुर्वते जनाः ॥810॥

बिहार के हजारीबाग जिले में ब्राकर नदी के किनारे भव्य सम्मेदशिखर तीर्थ है। सामाग नामक गृहस्थ ने यहाँ शाल वृक्ष के नीचे बैठकर तप किया तथा कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया। ऐसा सुना जाता है कि यहाँ बीस तीर्थंकरों ने निर्वाण प्राप्त किया है। गिरिडीह से चलने पर मार्ग में अनेक जैन मन्दिर मिलते हैं जिनका दर्शन भक्तगण करते हैं।

पावापुरीतीर्थम्

पावागढाचले तीर्थं गुर्जरे वर्तते परम् ।
अम्बा महाबला चात्र शिखरे विद्यते परा ॥811॥
शैववैष्णवजैनानामिदं तीर्थं विभाव्यते ।
पावागढमतः सर्वे समायान्ति हि धार्मिकाः ॥812॥
द्विक्रोशारोहणे चात्र सप्तद्वाराणि सन्ति वै ।
पञ्चमाज्जैनभक्तानां मन्दिराणि विभान्ति हि ॥813॥
षष्ठे दुग्धसरश्चैकं जैनमन्दिरसंयुतम् ।
अग्रे चाथ पराम्बाया मूर्तेरर्द्धं विलोक्यते ॥814॥

यह तीर्थ गुजरात में पावागढ़ पर्वत पर है यहाँ पर्वत की चोटी पर पराम्बा महाबला स्थित हैं। यह शैवों वैष्णवों और जैनों का संयुक्त तीर्थ है, अतः सभी इस तीर्थ में आते हैं। पाँच-छह किलोमीटर की चढ़ाई पर सात द्वार इसमें बने हैं। पाँचवे से जैन मन्दिर मिलते हैं। छठवें में एक दुग्धसर है जहाँ जैन मन्दिर बना है। इसके आगे जाने पर पराम्बादेवी का स्थान है जहाँ उनकी आधी मूर्ति दिखाई देती है।

श्रवणबेलगोलातीर्थम्

श्रवणबेलगोलेति मैसूरादष्टयोजने ।
मध्ये विराजते चैतद् गिर्योरिन्द्रचन्द्रयोः ॥815॥
मौर्येण चन्द्रगुप्तेन राज्ञा कालोऽतिवाहितः ।
राज्याकर्षणं त्यक्त्वा तीर्थेऽस्मिन् शान्तिपूर्वकम् ॥816॥
सर्वोच्चा गोम्मटेशस्य मूर्तिस्तीर्थेऽत्र विद्यते ।

दुर्लभैतादृशी मूर्तिर्न कुत्रापि विलोक्यते ॥817॥

श्रवणबेलगोलातीर्थ मैसूर से लगभग एक सौ किलोमीटर है यह तीर्थ इन्द्र और चन्द्र पर्वत के मध्य स्थित है। यहाँ राजा चन्द्रगुप्त मौर्य ने राज्यादि का आकर्षण छोड़कर शान्तिपूर्वक अपना अन्तिम समय बिताया था। यहाँ गोम्मटेश की अत्यन्त ऊँची प्रतिमा है इस प्रकार की मूर्ति अन्यत्र दुर्लभ है।

अन्यजैनतीर्थानि

प्रायशो यत्र जैनानां वासो राष्ट्रे विराजते ।
तत्र प्रायो हि जैनानां मन्दिराण्यपि चासते ॥818॥
जैनानां कुले प्रायो नित्यं मन्दिरदर्शनम् ।
अस्ति परम्पराप्राप्तं तेन सर्वत्र मन्दिरम् ॥819॥

देश में प्राय: जहाँ-जहाँ जैन समाज के लोगों की बस्ती है वहाँ इनके मन्दिर भी बने हैं। जैनों की पारिवारिक परम्परा है कि प्रतिदिन ये लोग मन्दिर में दर्शन करने जाते हैं, अत: जहाँ ये लोग रहते हैं वहाँ मन्दिर भी बने हैं।

श्रावस्त्यामथ कौशाम्ब्यामहिच्छेत्रेऽङ्कलेश्वरे ।
हस्तिनाख्यपुरे रम्ये वैशाल्यां द्रोणभूधरे ॥820॥
विदिशायां गुहायाञ्च देवे चर्षभनामके ।
पार्श्वनाथान्तरिक्षे च ग्रामे सिरपुरे स्थितम् ॥821॥
बाहुबलिनि सोनाख्ये गिरौ ह्युदयनामके ।
शिवापुर्यां तथाऽन्यत्र महावीरस्य मूर्तय: ॥822॥
पिष्टिकामढिया ख्याता श्रीजाबालिपुरे गिरौ ।
नगरेऽपि विशालानि मन्दिराणि कृतानि च ॥823॥
हनुमत्ताले सराफायां ग्रीनसिद्‌यां लसन्ति वै ।
मन्दिरं पार्श्वनाथस्य किञ्चिद्दूरे विभाव्यते ॥824॥

श्रावस्ती, कौशाम्बी, अहिच्छेत्र, अंक्लेश्वर, हस्तिनापुर, वैशाली, द्रोणगिरि, विदिशा, ऋषभदेवगिरि, अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, सिरपुर, बाहुबली, सोनगिरि, उदयगिरि, शिवपुरी आदि स्थानों पर प्राय: स्वामी महावीर की मूर्तियाँ स्थापित हैं। जबलपुर में पिसनहारी की मढ़िया

प्रसिद्ध तीर्थ है। हनुमानताल के समीप तथा सराफा और ग्रीनसिटी आदि स्थानों पर जैन मन्दिर बने हैं। जबलपुर में कई पार्श्वनाथ के मन्दिर हैं।

सिक्खतीर्थानि

श्रीरामदासस्य गुरोः प्रयत्नैस्तीर्थं सरश्चामृतनामधेयम् ।
ततः परं चार्जुनदेववर्यैस्तन्मन्दिरं स्वर्णमयं व्यधायि ।।825।।
धनं प्रभूतं किल तीर्थहेतौ व्ययीकृते श्रीरणजीतराज्ञा ।
ततः सुरम्यं च महत्प्रसिद्धं सरोऽमृतं तीर्थमभूत्प्रशस्तम् ।।826।।

गुरु श्रीरामदास की प्रेरणा और प्रयास से अमृतसर नामक तीर्थ स्थापित किया गया। तदनन्तर श्री अर्जुन देव ने इसे स्वर्णमय करने का प्रयास किया। उसके बाद राजा रणजीत सिंह ने प्रभूत धन खर्च करके इसको अत्यन्त रमणीय बना दिया जिससे यह विश्व का सुप्रसिद्ध सिक्ख तीर्थ बन गया।

हरमन्दिरमितिप्रोक्तं पुरेदं स्वर्णमन्दिरम् ।
दरबारसाहिबेत्याख्यं चाधुना कथ्यते जनैः ।।827।।
मध्ये सरोवरं भाति सदेत्स्वर्णमन्दिरम् ।
परिक्रमणयोग्यं यत् सङ्गमर्मरनिर्मितम् ।।828।।
ग्रन्थसहिबनामाऽत्र धर्मग्रन्थो विराजते ।
प्रणमन्ति समे भक्ताः पवित्रं धर्मपुस्तकम् ।।829।।
गुरुद्वारे ध्वजाराजिर्वीचिवद्घर्घरायते ।
निशानसाहबेत्याख्यं स्थानमेतन्निगद्यते ।।830।।

पहले इसे हरमन्दिर कहा जाता था, इस समय इसे लोग दरबार साहब कहते हैं। यह स्वर्ण मन्दिर सरोवर के मध्य में स्थित है इसके चारों ओर परिक्रमा का स्थान है यह सफेद संगमर्मर से निर्मित है। इस मन्दिर में गुरुग्रन्थ साहब को भी रखा गया है जिसको सभी भक्त श्रद्धापूर्वक माथा टेकते हैं। मन्दिर के प्रवेश द्वार पर बहुत सी पताकाएँ जल की लहरों सी घर घर आवाज करती रहती हैं। इस स्थान को निशान साहब कहा जाता है।

अकालीपीठमत्रैव हरगोविन्दसद्गुरुः ।
अत्याचारविरोधाय करवालमधारयत् ।।831।।

गुरुगोविन्दशस्त्राणि चान्येषां शस्त्रधारिणाम् ।
अस्त्रशस्त्राणि पीठेऽस्मिन् सम्यक् संरक्षितानि च ।।832।।

यहीं पर आकाली पीठ है सद्गुरु हरगोविन्द ने यहाँ अत्याचार के विरोध में तलवार धारण किया था। यहाँ उनके तथा अन्य वीरों के अस्य शस्त्र सुरक्षित रखे गये हैं।

गुरुद्वाराणि चान्यानि ह्यमृताख्यसरोऽन्तिके ।
विद्यन्ते यानि संद्रष्टुमायन्ति श्रद्धयान्विताः ।।833।।

अमृतसर सुप्रसिद्ध तीर्थ के समीप अन्य अनेक गुरुद्वारे भी बने हैं, जिन्हें देखने और माथा टेकने भक्तगण आते रहते हैं। मुख्य रूप से चार पीठ विशेष महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध हैं- अमृतसर, आनन्दपुर साहब, पटनासाहब और नादनेड़ ये सभी अकाली तख्त माने जाते हैं।

दरबारसाहबे चैका बदरी दुःखभंजिका ।
तदधः स्नानमात्रेण सर्वं दुःखं विनश्यति ।।834।।
बाबाह्यटलरायस्य गुरुद्वारं हि दक्षिणे ।
सर्वोच्चं भवनं यस्य ग्रहसंख्यातलान्वितम् ।।835।।
एतस्मादुच्चगेहं वै धार्मिकैर्नानुमोदितम् ।
गुरु श्रीहरगोविन्दपुत्रस्मृतिकृतं परम् ।।836।।

दरबार साहब के सरोवर से लगा एक बेर का वृक्ष हैं यह कष्ट मोचक वृक्ष है इसके नीचे के जल में स्नान करने से सारे कष्ट दूर हो जाते हैं ऐसी मान्यता है अतः यहाँ भक्तगण स्नान करने आते हैं। स्वर्ण मन्दिर के कुछ दूर दक्षिण दिशा में बाबा अटलराय का गुरुद्वारा है इसका निर्माण गुरु श्री हरगोविन्द ने अपने पुत्र की स्मृति में करवाया था। यह बहुत ऊँचा है इसमें नौ मंजिले हैं। भक्तों की धारणा है कि इससे ऊँचा भवन बनाना उचित नहीं है।

अस्योपरितले नित्यं ज्वलज्जोतिर्विभाव्यते ।
अस्यापि दर्शनं भक्तैः श्रद्धया क्रियतेऽनिशम् ।।837।।
गुरुणाऽत्रैव शिष्यायाः कैलाया पुण्यसंस्मृतौ ।
कैलासरोविनिर्माणं कारितं तीर्थपार्श्वतः ।।838।।

अटलराय गुरुद्वारे के ऊपरी मंजिल पर नित्य ज्योति प्रकाशित रहती है इसका भक्तगण श्रद्धापूर्वक दर्शन करते हैं। इसी के पास गुरुजी द्वारा अपनी भक्त शिष्या कैला की स्मृति में एक सरोवर का निर्माण कराया गया है।

गुरुरर्जुनवर्योऽत्र गुरुग्रन्थं प्रणीतवान् ।
रामाख्यं च विवेकाख्यं सरसी भातोऽत्र तीर्थके ॥839॥
वीरःश्रीदीपसिंहोऽत्र युद्धं कुर्वन् दिवङ्गतः ।
तस्य स्मृतिगुरुद्वारं शहीदाख्यं विनिर्मितम् ॥840॥
होलिकामेलनं यत्र गुरुद्वारे ह्यकालिनाम् ।
फूलासिंहगुरुद्वारं तत्र राराज्यते शुभम् ॥841॥

गुरुवर्य अर्जुन ने यहाँ गुरुग्रन्थ साहब का प्रणयन किया था, यहीं रामसरोवर तथा विवेकसरोवर हैं। बहादुर श्री दीपसिंह यहाँ युद्ध करते हुए शहीद हो गए थे अतः उनकी स्मृति में यहाँ शहीद गुरुद्वारा बनाया गया है। यहीं पर एक फूलासिंह नामक गुरुद्वारा है जहाँ अकाली भक्त होली का उत्सव मनाने के लिए इकट्ठे होते हैं।

प्रथमं सिक्खतीर्थं तु नानकासाहबे स्थितम् ।
द्वितीयं चामृताख्यं हि सरस्तीर्थं हि मन्यते ॥842॥
ननकाना जनिस्थानं नानकस्य गुरोः परम् ।
तलवण्डी समीपे च ननकासाहबस्थितिः ॥843॥
भारतस्य विभागत्वाद् गुरुद्वारमिदं महत् ।
पाकस्थाने स्थितं यत्र तीर्थं गच्छन्ति भारताः ॥844॥

सिक्खों का प्रथम तीर्थ ननका साहब रहा है। अमृतसर द्वितीय स्थान पर है ननकाना गुरुवर्य नानक की जन्मभूमि है। यह तलबण्डी के समीप स्थित है। भारत राष्ट्र का विभाजन हो जाने से यह गुरुद्वारा पाकिस्तान की सीमा में हो गया है। अनेक भारतीय भक्त वहाँ भी पुण्य लाभ के लिए जाते हैं।

पटनासाहबस्थाने चान्तिमस्य गुरोर्जनिः ।
गुरुगोविन्दसिंहस्य पूज्यते चरणाविह ॥845॥
आनन्दसाहबे तीर्थे गुरुद्वाराण्यनेकशः ।
तेगबहादुरेणात्र गुरुद्वाराणि चक्रिरे ॥846॥
केशानन्दगढे शीशगंजं लौहगढं तथा ।
गुरुद्वाराणि चत्वारि विराजन्ते यथाक्रमम् ॥847॥

पटना साहिब अन्तिम गुरु गुरुगोविन्द सिंह का जन्म स्थान है। यहाँ इनके चरणों की

पूजा की जाती है। आनन्द साहिब तीर्थ में गुरु तेग बहादुर ने अनेक गुरुद्वारों का निर्माण कराया है-केशवगढ़, आनन्दगढ़, शीशगंज और लौहगढ़ यहाँ प्रसिद्ध गुरुद्वारे हैं।

केशाख्ये गुरुगोविन्दः सैन्यवेशावधारणम् ।
शिष्यान् स्वान् प्रेरयामास राष्ट्ररक्षाकृते मुदा ।।848।।
सत्पञ्जासाहबं तीर्थं पाके सम्प्रति विद्यते ।
राष्ट्रे सर्वत्र पूज्यानि गुरुद्वाराणि सन्ति वै ।।849।।
करतारपुरं तीर्थं गुरुनानकवासतः ।
जाबालिपुरे श्रेष्ठं ग्वारीघाटपारगम् ।।850।।
यत्राप्यस्ति सिक्खानां समुदायो हि तत्र वै ।
गुरुद्वाराणि राजन्ते चास्थाकेन्द्राणि भारते ।।851।।
सैनिकानां कृते प्रायः धर्मास्थापूर्तिहेतवे ।
हिन्दूनामथसिक्खानां मन्दिराणि कृतानि च ।।852।।
धर्मशिक्षकरूपेण नियुक्तिश्चात्र जायते ।
प्रायशश्चात्र धर्माणां नियुक्ताः सन्ति शिक्षकाः ।।853।।

प्रयागमण्डलान्तर्गतसमहनग्रामनिवासिनः सरयूपारीणवत्सगोत्रीयस्य सिद्धान्तज्योतिषाचार्यस्य पण्डितश्रीरामाभिलाषद्विवेदिनः पुत्रेण जाबालिपुरस्थरानीदुर्गावतीविश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागकलासङ्कायाचार्याध्यक्षचरेण वाराणसीस्थसम्पूर्णानन्दसंस्कृत विश्वविद्यालयानुसंधान संस्थाननिदेशकचरेण च महामहोपाध्यायेनाचार्यरहसविहारिद्विवेदिना प्रणीतमिदं तीर्थभारतं समाप्तम्।

केशवगढ़ गुरुद्वारे में गुरुगोविन्द सिंह ने राष्ट्र की रक्षा, कुप्रवृत्तियों की समाप्ति के लिए अपने शिष्यों को सैनिक वस्त्र धारण का उपदेश दिया था। पंजा साहिब तीर्थ इस समय पाकिस्तान की सीमा में है। सारे राष्ट्र में सिक्ख सम्प्रदाय के पूज्य गुरुद्वारे हैं। करतारपुर में गुरुनानक जी रहे हैं अतः उसे भी तीर्थ माना जाता है। जबलपुर में ग्वारीघाट में नर्मदा नदी के उस पर तट से लगा हुआ गुरुद्वारा है। जहाँ भी सिक्खों का समुदाय है वहाँ गुरुद्वारा भी अवश्य बनाया गया है। ये इनकी आस्था के केन्द्र हैं यहाँ समुदाय के लोग मिलते है तथा धर्म के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। सैनिकों के लिए सेना के सभी परिसरों में प्रायः गुरुद्वारे बनाए गए हैं सिक्ख गुरुद्वारों के साथ हिन्दुओं के भी धर्मस्थल मन्दिर बनाए गए हैं यहाँ नियमानुसार योग्य धर्म शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है। इससे सैनिकों को धर्म की प्रेरणा, राष्ट्र की रक्षा और कर्त्तव्य पालन में संलग्न रहने की प्रेरणा मिलती है।

कविवंशादिपरिचयः

जयत्यदो भारतराष्ट्रमाप्तं
तीर्थाधिपो यस्य भुवि प्रयागः।
तमोपहन्त्री तमसा च यत्र
रामायणं यत्पुलिने प्रणीतम्।।1।।
तीर्थराजप्रयागस्य गङ्गाया दक्षिणे तटे।
तमसोत्तरतीरे च ग्रामः समहनाभिधः।।2।।
समदानां मदारित्वात्समदारिद्विवेदिनः।
नासति मिश्रितत्त्वाच्च लोकेऽमिलवराःश्रुताः।।3।।
नैष्ठिकाश्च सुधीमन्तः प्रायशो राजपूजिताः।
वत्सगोत्रे श्रुताः विप्राः सरयूपारवासिनः।।4।।
पुरा देवरियाक्षेत्रादस्माकं पूर्वजाः स्वयम्।
विद्यार्थमागताः काशीं वाल्मीकेराश्रमं ततः।।5।।
'गङ्गायास्तु परे-पारे वाल्मीकेस्तु महात्मनः ।।
आश्रमो दिव्यसङ्काशस्तमसातीरमाश्रितः ।।' (वाल्मीकिरा. उत्तरका. 45.18)
यस्यावाच्यां प्रतीच्यां च तमसा सुजला नदी।
सङ्गमन्याः पराम्बाया मूर्तिर्भाति यदुत्तरे।।6।।
'आसीतत्सविधे शुभे 'समहन'-ग्रामे घनश्यामविद्
वाग्मीमानधनः पवित्रसरयूपारीणविप्रान्वयः।
पुत्रोऽस्येन्द्रमणिर्धरामरमणिः सद्वत्सगोत्रोद्भवः
श्रीमट्टेकधरोऽथ तस्य तनयो विद्यानवद्यान्तरः ।।'
(पं. रघुनन्दनत्रिपाठिविरचितहरिहरचरितचम्पूकाव्ये 1.23)
पण्डितश्रीधनश्यामपुत्रः श्रीन्द्रमणिर्बुधः।
तस्मात् टेकधरो यस्य वेद पुत्राश्चकाशिरे।।7।।
आद्यः स्फुरितरामोऽभूत् - शम्भुनाथस्ततोऽभवत्।
रामस्तृतीयपुत्रोऽभूत् तुरीयो लक्ष्मणाभिधः।।8।।
नोहरराम इत्याख्यः स्फुरितरामतोऽभवत्।
षडात्मजाश्चतस्यासन् विद्याविनयसंयुताः।।9।।
श्रीरमेश्वरदत्ताख्यो दीनानाथस्ततोऽभवत्।

जगन्नाथश्च दत्तान्तः **प्रयागाख्यो** महाबुधः ॥10॥
दत्तान्तौ च पुनर्जातौ **विश्वेश्वरपरमेश्वरौ**।
केवलं चाद्य विद्यन्ते विश्वेशपरमेशयोः।
कुलेजाताः प्रसिद्धा ये सुधीमन्तश्च विश्रुताः ॥11॥
विश्वेश्वरान्**महादेवो** स्वाभिमानी महाबुधः।
सूर्यनारायणस्तस्य कर्मकाण्डी सुतोऽभवत् ॥12॥
वृजनारायणस्तस्य पुत्रो व्याकरणे बुधः।
पुत्रौ चास्य सुधीमन्तौ **श्रीप्रभाकरभास्करौ** ॥13॥
टेकधरप्रपौत्रश्रीपरमेश्वरधीमतः।
चत्वारो ह्यभवन् पुत्राः सर्वे **रामान्त**संज्ञिताः।
तुलसी-जानकी-राजा दशरथेति विश्रुताः ॥14॥
आद्यः **श्रीतुलसीरामो** ज्योतिषे लोकविश्रुतः।
तस्य पुत्रौ सुधीमन्तौ जातौ मम पितामहौ ॥15॥
पञ्चविंशतिवर्षीये **श्रीमद्रामनोरथे**।
पितामहे दिवं याते वात्सल्येनात्मपुत्रवत् ॥16॥
पितामहाग्रजेन **श्रीदामोदरद्विवेदिना**।
श्रीमान् रामाभिलाषो मे पिता तेनाभिरक्षितः ॥17॥
वंशस्नेहेन काश्यां च **श्रीहरिहरकृपालुना**।
पाठितो मत्पिता येन ज्योतिषाचार्यताङ्गतः ॥18॥
श्रीमद्भागवताख्याने तुलसीदासमानसे।
ज्योतिषे कर्मकाण्डे च पिता मे लोकविश्रुतः॥19॥
श्रीमद्भागवतस्याद्यं पदं पद्यस्य वाचितम्।
श्रुत्वा पूर्ति समग्रस्य कर्तुं शक्तो हि यो बुधः ॥20॥
श्रीमद्भागवतं पूर्णमेकस्मिन्नासने स्थितः।
योऽपूपुरदखण्डं वै तस्मै पित्रे नमोनमः ॥21॥
वारं चतुःशतं पूर्णं तुलसीदासमानसम्।
अखण्डं पठितं येन तस्मैपित्रे नमोनमः ॥22॥
पितृव्यो **रामचन्द्रो** मे होशङ्गाबादमण्डले।
ज्योतिषे कर्मकाण्डे च विनीतः पण्डितोऽभवत् ॥23॥

अथ **रहसविहारी** मेऽनुजो भ्रात्**युमेश:**
कवनमननदक्षोऽध्यापकोऽयं प्रशस्त:।
जबलपुरनिवास: साम्प्रतं मे च तस्य
समहनजनिभूमिर्भाति नित्यं प्रिया मे ।।24।।

जानकीरामसत्पुत्रो **दुग्धनाथो**ऽभवद्बुध:।
वैद्यके कर्मकाण्डे च प्रसिद्धो लोकविश्रुत: ।।25।।
राजारामपुत्रोऽभूद् **रघुनाथो** हि पण्डित:।
दशरथस्य सत्पुत्रा: **प्रसादान्ता**स्त्रयोऽभवन् ।।26।।
यमुनाराघवौ ज्येष्ठौ **सरयू**नामकोऽवर:।
श्रीयमुनाप्रसादोऽभूज्ज्योतिषे लोकविश्रुत: ।।27।।
तस्य पुत्रौ बुधौ **रामानुग्रहश्च सुधाकर:**।
आद्यो वैद्योऽधिवक्ताऽसीत्कनिष्ठो लोकविश्रुत: ।।28।।
रामानुग्रह पुत्रौ**श्रीपद्माकरदिवाकरौ**।
श्रीराजेशामितौ पौत्रौ **देहल्यां** साम्प्रतं स्थिता: ।।29।।
राजकुमाररमेशौ श्रीसुधाकरपुत्रकौ।
प्रयोगे कीडगंजे च वसत: सकुलं स्थितौ ।।30।।
श्रीराघवप्रसादो वै शास्त्रार्थी पण्डितो महान्।
अभवत् तस्य षट्पुत्रा: सुधीमन्तश्च विश्रुता: ।।31।।
सत्यदेव इतिख्यात: पुत्रश्चास्य विराजते।
छिन्दवाड़ागतो विज्ञ: स च तत्र कृतालय: ।।32।।
प्रयागस्यानिलो नेता जिलाध्यक्षश्च विद्यते।
कमलाकान्तपुत्रोऽयं **राघवस्य** च पौत्रक: ।।33।।
श्रीसरयूप्रसादस्य विधिज्ञो लोकविश्रुत:।
सुत: **श्रीज्ञानचन्द्रो**ऽभूद् विधानसदसि स्थित: ।।34।।
अजयो ज्ञानचंद्रस्य पुत्र: प्रयागे स्थित:।
उच्च न्यायालये चायमधिवक्ताविराजते ।।35।।
श्रीटेकधरपुत्रस्य शम्भुनाथस्य वंशजा:।
पण्डिताख्यपुरे ग्रामे कर्मापार्श्वे वसन्ति ते ।।36।।
तस्य पौत्रस्य चैकस्य **होलीदत्तस्य** वंशजा:।
ग्रामे **समहने** सन्ति **केदारनाथ**तोऽग्रिमा: ।।37।।

लक्ष्मणस्य चतुर्थस्य परिवारोऽपि साम्प्रतम्।
श्रीमथुराप्रसादाच्च जातः समहने स्थितः ॥38॥
श्रीमथुराप्रसादाच्च नीठुरः प्रथमः सुतः।
श्रीकामताप्रसादोवै कनिष्ठस्तत्सुतोऽभवत् ॥39॥
नारायणान्तनामानौ देवादित्यौ च नीठुरात्।
देवनारायणाज्जातो वंशगोपालनामकः ॥40॥
वाग्मी पण्डितो नेता चाद्यो ग्रामसमापतिः।
नन्दगोपाल आदित्यनारायणसुतोऽभवत् ॥41॥
राष्ट्रस्वातन्त्र्यमुद्दिश्य कारावासं गतो मुदा।
यस्य कारागृहे मित्रं **शास्त्री लालबहादुरः** ॥42॥
श्रीकामताप्रसादस्य पुत्रो व्याकरणे सुधीः।
बुधः**श्रीवासुदेवो**ऽभूद् वेदपुत्रसमन्वितः ॥43॥
आद्यः**कृष्णकुमारो**ऽसौ ज्योतिषी **कटनीं** गतः।
प्राचार्योऽभूदिहावासे **गङ्गासागरः** स्थितः ॥44॥
भोला-श्री-प्रभुपूर्वाख्या नाथान्तास्त्रयः श्रुताः।
भोलानाथस्य षट्पुत्राःसर्वे सर्वाधिकोन्नताः ॥45॥
रसायने य आचार्य **श्रीकमलाकरो** बुधः।
मधुकरो जिलाधीशः प्रदेशे चोत्तरे कृतः ॥46॥
ज्योतिषी कर्मकाण्डी च बुधः **शशिकरः** श्रुतः।
रेलसेवासुलग्नोऽस्ति तुरीयः **कुसुमाकरः** ॥47॥
अस्थिरोगविशेषज्ञो विद्यते **करुणाकरः**।
षष्ठपुत्रोऽपि सेवायामभियन्ता **विभाकरः** ॥48॥
सेवास्थले निवासाय कैश्चिद् वासा विनिर्मिताः।
देहल्यां दरियागंजे **पटनायां** तथा कृताः।
काशीलखनऊनैनीप्रयागादिषु सन्ति ते ॥49॥
महोपाध्याय**श्रीहरिहरकृपालो**श्चरितयुक्।
महच्चम्पूकाव्यं परमकमनीयं विरचितम्[1]।
तदादौ काण्डे मे समहनकुलस्यातिसरसं
कृतं व्याख्यानं यत्तदिह कथने नो मम मतिः ॥50॥
महामहोपाध्यायस्य कृपालोरात्मजे बुधे।

शिक्षाशास्त्रे च साहित्ये विख्यातस्य सुधीमत: ।।51।।
श्रीलवाचस्पतेस्ताते लोके **बाबेति** विश्रुते।
राष्ट्राध्यक्षपुरस्कारे वाग्दर्शनविदांवरे ।।52।।
लब्धवाचस्पतौ **श्रीलब्रह्मदत्ते** दिवङ्गते।
मयाविरचित चैकं शतकं यत्प्रकाशितम्[2] ।।53।।
तत्रापि स्वस्य वंशस्य यथार्थं वर्णनं मया।
कृतं चेदस्ति जिज्ञासा द्रष्टव्यं तन्मनीषिभि: ।।54।।
विद्याविनय सम्पन्ने कुले मे भूरिभाग्यत:।
जन्मजातमहं येन संस्कृतज्ञोऽभवं स्वयम् ।।55।।



1. पं. रघुनन्दन त्रिपाठिना महामहोपाध्याय पं. श्रीहरिहरकृपालुद्विवेदिनश्चरितमाश्रित्य प्रणीतं हरिहरचरित-चम्पूकाव्यम् - चौखम्बा वाराणसीत: प्रकाशितम्।
2. संस्कृतसम्मेलनमिति पटनात: प्रकाशितायां पत्रिकायां श्रीब्रह्मदत्तवंशमिति मम शतकं काव्यं प्रकाशितम्।

कविपरिचय



नाम - रहस विहारी द्विवेदी

पिता का नाम - स्व.पं.रामाभिलाष द्विवेदी सिद्धान्तज्योतिचार्य

जन्मतिथि - दो जनवरी उन्नीस सौ सैतालीस

जन्मस्थान - समहन, मेजारोड, इलाहाबाद (उ.प्र.)

योग्यताएं - एम.ए. संस्कृत लब्धस्वर्णपदक, साहित्याचार्य, विद्यावाचस्पति मानद उपाधि-महामहोपाध्याय

सेवाकार्य

1. 1971 में म.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित संस्कृत व्याख्याता मन्दसौर, शाजापुर, छतरपुर के शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में।
2. रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर के संस्कृत विभाग में 2 मार्च 1978 से व्याख्याता फरवरी 1983 से उपाचार्य, 1998 से आचार्य एवं अध्यक्ष, कलासंकाय अध्यक्ष आदि। से. नि. जनवरी 2009
3. लियनपर रहकर 1998 सितम्बर से 28 दिसम्बर 1998 तक निदेशक शोधसंस्थान सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणासी (उ.प्र.)

प्रकाशितशोधपत्र - 150 विविध शोधपत्रिकाओं में प्रकाशित

प्रकाशित ग्रन्थ - अर्वाचीनसंस्कृतमहाकाव्यानुशीलनम्, श्रीकृष्णस्य स्वस्तिसन्देशः, संस्कृतमहाकाव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन (1961-70), साहित्यविमर्शः, तीर्थभारतम्, साहित्यानुसन्धानावबोधप्रविधिः, संस्कृतवाङ्मये विज्ञानमं, सम्पादित, त्रयी एवं चतुष्टयी सम्पा. म. प्र. की बी.ए.प्रथम, द्वितीय की पाठ्यपुस्तक।

पुरस्कार सम्मान- आचार्यश्री : 1984, जबलपुर, सारस्वतसम्मान : 2000, वाराणसी, भारतभारती : 2002 - महाकोशल साहित्य एवं संस्कृतिपरिषद्, भाषारत्न : 2006 - जैमिनी अकादमी पानीपत, बाणभट्टपुरस्कार : 2006, मध्यप्रदेश शासन, राजशेखरपुरस्कार : 2009, मध्यप्रदेश शासन।

मानद उपाधि- महामहोपध्याय : 2005 - हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

निर्देशन में उपाधि प्राप्त- 1 -डी.लिट्, 25- पी-एचडी.

Tirthabhārtam

















Designed & Printed by The GRENADIERS Association Printing Press, Jabalpur Ph. : 0761-2620184, Mob : 09425151241